AN INTRODUCTION TO PARAPSYCHOLOGY

परामनोविज्ञान—
एक परिचय

[An Introduction to Parapsychology]
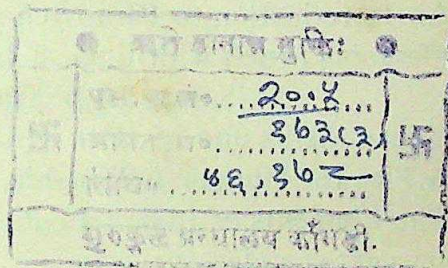
भीखन लाल आत्रेय, एम० ए०, डी० लिट्०
अवकाश प्राप्त प्रोफ़ेसर तथा अध्यक्ष
दर्शन, मनोविज्ञान और भारतीय धर्म तथा दर्शन विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी—५

प्रथम हिन्दी संस्करण

१९६६

दर्शन प्रिंटर्स, मुरादाबाद

डा० आत्रेय रचित पुस्तकें

No.	Title	Price
1.	भारतीय नीतिशास्त्र का इतिहास	20.0
2.	The Philosophy of the Yogavasistha (Second Edition) [Under Print]	
3.	योगवासिष्ठ और उसके सिद्धांत	10.0
4.	Yogavasistha and Its Philosophy (Third Edition)	12.0
5.	An Introduction to Parapsychology	6.0
6.	वासिष्ठदर्शनम् (संस्कृत) with English Introduction [Saraswati Bhavan Varanasi]	4.0
7.	Yogavasistha and Modern Thought	3.7
8.	A Plea for Human Fellowship	3.0
9.	The Elements of Indian Logic	3.0
10.	योगवासिष्ठ की कहानियाँ और उपदेश	2.5
11.	The Spirit of Indian Culture	2.0
12.	Moral & Spiritual Foundations of Peace	2.0
13.	भारतीय संस्कृति	1.0
14.	The Essence of Yogavasistha	1.0
15.	An Epitome of the Philosophy of the Yogavasistha [under print]	1.0
16.	Deification of Man	1.0
17.	Essence of Yogavasistha	1.0
18.	शंकराचार्य का मायावाद	1.0
19.	श्री योगवासिष्ठसार (English, Hindi & Sanskrit)	1.0
20.	Practical Vedanta of Swami Rama Tirtha	0.5
21.	वसिष्ठयोग: (संस्कृत)	0.5
22.	परामनोविज्ञान (हिन्दी)	6.0

Can be had of—

DARSHANA PRINTERS
MORADABAD—19 (*India*)

विषय-सूची

पुस्तक-परिचय

वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है, जिसमें संसार की सभी वस्तुओं एवं घटनाओं का ज्ञान वैज्ञानिक पद्धति द्वारा प्राप्त किया जाता है। वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा प्राप्त ज्ञान के अतिरिक्त ज्ञान को आज मान्यता प्राप्त नहीं है। आज मानव सम्बन्धी ज्ञान भी वैज्ञानिक रीति से ही प्राप्त किया जा रहा है। आधुनिक मनोविज्ञान का अध्ययन तो पूर्णरूपेण वैज्ञानिक ही है। मनोविज्ञान प्रारम्भ में वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा मानव के गहरे स्तरों का ज्ञान प्रदान नहीं कर सका। मनोवैज्ञानिक ज्ञान का विकास निरन्तर होता आ रहा है। मनोविश्लेषण आदि अनेक साधनों से मनोवैज्ञानिक ज्ञान का क्षेत्र काफी विस्तृत हो गया, किन्तु फिर भी मानव के समस्त गहरे स्तरों एवं उसकी सम्पूर्ण शक्तियों का ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाया। मानव में बहुत सी अलौकिक शक्तियाँ हैं, जो कि वैज्ञानिकों को अमान्य होने के कारण अज्ञात रहीं। अतः मनुष्य के सम्बन्ध का ज्ञान अधूरा ही बना रहा। अलौकिक शक्तियों को वैज्ञानिक रूप से न समझ पाने पर भी हम उनकी तथ्यात्मकता को अस्वीकार नहीं कर सकते, जिसके परिणाम स्वरूप अर्ध उन्नीसवीं शताब्दी के कतिपय प्रवीण उच्चकोटि के वैज्ञानिकों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ, तथा उन्होंने मनुष्य के अद्भुत स्वभाव एवं शक्तियों का शुद्ध वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा निरीक्षण तथा अध्ययन प्रारम्भ किया, जिसके परिणाम स्वरूप एक नवीन विज्ञान की उत्पत्ति एवं विकास प्रारम्भ हुआ, जिसे पाश्चात्य देशों में आध्यात्मिक-अनुसंधान (Psychic Research) अथवा अतिमानसविज्ञान (Parapsychology) कहते हैं। इसकी उत्पत्ति सन् १८८२ ई० में इंगलैण्ड में हुई। इसका उद्देश्य अलौकिक शक्तियों एवं घटनाओं का अध्ययन करना था। इस विषय के ऊपर अनेक पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रस्तुत पुस्तक में इस विज्ञान के आरम्भ तथा इसके द्वारा मानव की ज्ञानवृद्धि के विषय में सरल एवं स्पष्ट रूप से बताने का प्रयत्न किया गया है। सर्व प्रथम हिन्दू-विश्वविद्यालय के दर्शन एवं मनोविज्ञान के विद्यार्थियों को इस विषय से परिचित कराने के लिये लेखक ने इस विषय पर अंग्रेजी में यत्र,तत्र छपे हुए अपने व्याख्यानों तथा लेखों को संग्रहित रूप में छपवाया, जो कि *"An Introduction to Parapsychology"* नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित है।

इस पुस्तक की मांग अत्यधिक होने के कारण शीघ्र ही दूसरा संस्करण प्रकाशित कराना पड़ा। अब इस विज्ञान का प्रचार सब देशों में बढ़ता जा रहा है। भले ही प्रारम्भ में बहुत दिनों तक इसे अवैज्ञानिक कहकर वैज्ञानिक मनोविज्ञान ने मान्यता प्रदान

नहीं की थी, किन्तु आज प्रयोगशालाओं में अनेक प्रकार से इसका प्रयोगात्मक ज्ञान प्राप्त किया जा रहा है तथा अलौकिक घटनाओं की यथार्थता सिद्ध की जा रही है। डा जे. बी. राइन ने इस विषय पर महत्त्वपूर्ण खोजें की हैं, जिनकी अवहेलना नहीं की ज सकती है।

इस विकसित नवीन विज्ञान से हिन्दी भाषी लोगों को परिचित कराने के लि यह आवश्यक समझा गया कि इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया जाय अतः लेखक ने 'परामनोविज्ञान' नामक पुस्तक के रूप में उपर्युक्त पुस्तक का अनुवा हिन्दी भाषा में प्रस्तुत किया। आशा है कि इस पुस्तक के द्वारा इस नवीन एवं अत्य महत्त्वपूर्ण विज्ञान का हिन्दी भाषी लोगों में यथोचित प्रचार होगा।

इस पुस्तक के अनुवाद करने में लेखक को अपने शिष्य, मित्र तथा प्रसिद्ध लेख एवं अनुवादक श्री डा० गोवर्धन प्रसाद भट्ट से बहुत सहायता मिली है। इसके लिये उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

भी० ला० आत्रेय

आत्रेय निवास
वाराणसी-५
अगस्त १५, १९६६

अध्याय १

मनोवैज्ञानिकों को परामनोविद्या में क्यों रुचि लेनी चाहिए

आज के मनोविज्ञान में एक अत्यन्त आश्चर्य की बात यह देखने में आती है कि यह परामनोविद्या से बराबर बचता चला आ रहा है। परामनोविद्या (Psychical Research) वैज्ञानिक अनुसन्धान की एक शाखा है और, जैसा कि इसके नाम से ज्ञात होता है, मनोविज्ञान से इसका निकट सम्बन्ध है। परामनोविद्या का जन्म एक आन्दोलन के रूप में आज से लगभग अस्सी साल पूर्व हुआ था और इस अर्से में इसने ऐसी ऐसी महत्वपूर्ण खोजें की जो न केवल मनोविज्ञान के अनेक अन्धकारमय कक्षों में प्रकाश फेंकती है, बल्कि जिनसे मनोविज्ञान में क्रान्ति हो जाने की आशा है, और जिनके कारण मनोविज्ञान को अपने अनेक सामान्यतः स्वीकृत और असन्दिग्ध माने जाने वाले निष्कर्षों को बदलना पड़ेगा। फिर भी, मनोविज्ञान की प्रचलित पाठ्य पुस्तकों में परामनोविद्या का उल्लेख शायद ही कहीं मिलता हो। मनोविज्ञान पूर्णतया एक विज्ञान बनने के उत्साह में वस्तुत: अपनी आत्मा से वंचित हो गया है, और गणित, भौतिकी और रसायन का अंधानुकरण करने में अपनी शक्ति बहुत क्षीण करता रहा है। लेकिन गणित इत्यादि निम्न स्तर के विज्ञान जिस विधि का अवलम्बन करते हैं वह मनोविज्ञान के क्षेत्र में तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक उसे मनोविज्ञान की अपनी निराली विधि का बल न मिले। मनोविज्ञान अपने पावों पर खड़ा रह सकता है और अपनी स्वतन्त्र सत्ता बनाये रख सकता है। लेकिन इसके बजाय यह दूसरे विज्ञानों के ऊपर अनावश्यक रूप से निर्भर रहता है और स्वतन्त्रता पूर्वक अपनी विधि और पदावली का निर्माण करने में हिचकता है। इतना ही नहीं, बल्कि इसे जीव विज्ञान की शाखा कहलाने में सन्तोष होता है तथा पग पग पर शरीर विज्ञान का सहारा लेने में आनन्द आता है। जब हम निम्नलिखित उक्तियों को पढ़ते हैं तो कितना आश्चर्य होता है "मनोविज्ञान में चेतना का कोई उल्लेख नहीं होना चाहिये" (Watson: *Behaviour* p. 7) मानव व्यवहार का निरीक्षण और अध्ययन (अ) जैव भौतिक उत्तेजनाओं, (व) जैव भौतिक प्रतिक्रियाओं, (स) जैव सामाजिक उत्तेजनाओं, (द) जैव सामाजिक प्रतिक्रियाओं का वर्णन मात्र है। .... मनस्तत्व को छोड़ दिया गया है, क्योंकि यह मानने का कोई औचित्य नहीं है कि शैशव और प्रौढत्व के बीच के विकास काल में उन शक्तियों से अलावा कोई अन्य शक्ति भी काम कर रही है जिनका वर्णन प्राकृतिक विज्ञानों में मिलता है। (Weiss : *Psy-*

chologies of 1930. chap. XV, pp. 301-2). एक समय था जब विज्ञान ने आत्मा का परित्याग किया, फिर एक समय आया जब उसने मन भी दिया; और अब ऐसा प्रतीत होता है कि मनोविज्ञान से चेतना भी निकल गई। हम रहे हैं कि आज मनोविज्ञान जीव विज्ञान अथवा उसकी एक शाखा शरीर विज्ञान एक अध्याय मात्र कहे जाने में सन्तुष्ट है और इनके सिद्धान्तों से शासित है। कुछ वैज्ञानिक तो तभी सन्तुष्ट होंगे जब मनोवैज्ञानिक तथ्यों को रसायन, यंत्र विज्ञान गणित के सूत्रों और समीकरणों में बदल दिया जा सकेगा। मनोविज्ञान, जो कि आत्मा का विज्ञान था, के इससे अधिक पतन की क्या कल्पना हो सकती है। दया इस बात पर आती है कि वह आज भी उस ऊंचे नाम को धारण किये हुए है शताब्दियों पूर्व रखा गया था।

अब वह समय आ गया है जब मनोविज्ञान को जाग पड़ना चाहिये और योग्य एक स्वतन्त्र स्थान प्राप्त करना चाहिये। विज्ञानों की बिरादरी का एक सदस्य रहने के लिये, जो कि इसकी महत्वाकाँक्षा है, इसे इससे अधिक और कुछ करने आवश्यकता नहीं है कि वह यथाशक्ति वैज्ञानिक अनुसन्धान की आगमनात्मक विधि अनुसरण करता रहे। मनोविज्ञान को अनुभव मूलक और प्रयोगात्मक तो होना पड़ेगा, लेकिन इसका मतलब यह कदापि नहीं हो सकता कि इसे अपने अनुसन्धान क्षेत्र को कृत्रिम सीमा के अन्दर बाँध लेना चाहिये, मनुष्य के जीवन में रोजाना वाली साधारण बातों पर ही प्रयोग करने चाहिये और जीवन और चेतना के स्तर वस्तुतः होने वाले दुर्लभ और गम्भीर और साथ ही आसानी से समझ में न आने तथ्यों को उपेक्षा की दृष्टि से देखना चाहिये। सत्य तो यह है कि एक मात्र इस के तथ्य ही ऐसे है जो हमें जीवन के रहस्यों को समझा सकते हैं तथा हमारे गलत संकीर्ण मतों और सिद्धान्तों का भण्डा फोड़ सकते है। मनोवैज्ञानिकों को चाहिये कि इस प्रकार के तथ्यों का उसी तरह स्वागत करें जिस तरह ज्योतिर्विदू, भौतिक शा और भूगर्भवत्ता अपने अपने क्षेत्रों की दुर्घटनाओं का करते हैं। वस्तुतः एक वैज्ञानिक मनोवैज्ञानिक कहलाने का कोई अधिकार नहीं है यदि वह जीवन की ऐसी घटनाओं उपेक्षा करता है जो उसके अत्याधिक सीमित और साधारण निरीक्षणों तथा प्रयोगों ऊपर आधारित सिद्धान्तों के दायरे के अंदर नहीं आती। यह बात हमें भली भाँति है कि अधःसाधारण और असाधारण मनोवैज्ञानिक तथ्यों के अध्ययन से मनोविज्ञान हाल ही में कितना लाभ हुआ है और कितने छिपे छिपे और अनिच्छापूर्वक मनोवि ने मानव स्वभाव के बारे में अपने मतों को पागलपन इत्यादि मनोव्याधि ग्रस्तों अनुसन्धान करने में लगे हुये उन कार्यकर्त्ताओं के सिद्धान्तों के प्रभाव में आकर बदला जिनको मनोवैज्ञानिक कहने तक में इसे आपत्ति थी। यह सत्य है कि कहीं कहीं मा जीवन के सामान्य तथ्यों को, उन लोगों के द्वारा, जो मनोवैज्ञानिक नहीं थे, बनाये असाधारण मनोविज्ञान के सिद्धान्तों स समझने का प्रयत्न किया गया है। इस प्रवृत्ति मनोविज्ञान की उतनी ही क्षति हुई है जितनी मानव स्वभाव को गणित, भौतिक, रसा और जीव विज्ञान से समझ ने की प्रवृत्ति से।

इन दोनों गलत प्रवृत्तियों से बचाव के लिये मेरा सुझाव यह है कि मनोवैज्ञानि को अब मानव जीवन के अलौकिक, दुर्लभ और रहस्यपूर्ण तथ्यों के अध्ययन से स

करना और प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिये जो मनोवैज्ञानिकों की उपेक्षा असहनशीलता के अपेक्षा अस्सी से अधिक वर्षों से नितान्त युक्तियुक्त और वैज्ञानिक रीति से चलता रहा है। मुझे विश्वास है कि परामनोविद्या का सम्पर्क मनोविज्ञान को उतना ही, बल्कि उससे भी अधिक लाभ पहुँचायेगा, जितना मनोविश्लेषण, मनोविकृतिविज्ञान तथा मनश्चिकित्सा विज्ञान के सम्पर्क ने पहुँचाया है। इससे मनोविज्ञान के प्रत्ययों और सिद्धान्तों में अवश्य ही बहुत अच्छा परिवर्तन होगा।

दूसरी ओर, परामनोविद्या भी, जो कि इस समय प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिकों के सहयोग के अभाव में चल रही है, उनसे सहयोग, सुझाव और नेतृत्व प्राप्त करके लाभान्वित होगी। बड़े दुर्भाग्य की बात है कि भारत में परामनोविद्या सम्बन्धी अनुसन्धान प्रायः नहीं हो रहे हैं, मनोवैज्ञानिकों का इससे सम्पर्क स्थापित करने का तो प्रश्न ही दूर का रहा। अन्य देशों की अपेक्षा भारत में ऊर्ध्वं साधारण, दुर्घट और रहस्यपूर्ण घटनायें शायद अधिक संख्या में घटती हैं। किन्तु यहाँ शायद ही कोई दक्ष वैज्ञानिक हो जिसने इन घटनाओं के अध्ययन में अपने समय और शक्ति को लगाया हो। भारत में कोई पुस्तकालय ऐसा नहीं है जिसमें परामनोविद्या सम्बन्धी साहित्य प्रचुर मात्रा में हो और न कोई ऐसा विश्वविद्यालय ही है जो इस विद्या के अध्ययन को प्रोत्साहन देता हो। इस विषय का अध्ययन अन्य उद्देश्यों की पूर्ति के लिये नहीं कम से कम इसके दावों और सिद्धान्तों की परीक्षा और खण्डन के उद्देश्य से तो होना ही चाहिए जो कि विज्ञान के निष्कर्षों से आश्चर्यजनक रूप से बेमेल बैठते हैं। टिरेल (Tyrrell) ने भी अपने महत्वपूर्ण ग्रन्थ साइंस एण्ड साइकिक फेनोमेना (*Science and Psychic Phenomena*) में परामनोविद्या के अध्ययन का महत्व दिखाया है, कोई भी जो जीवन की बड़ी और महत्वपूर्ण बातों में रुची रखता है, जो यह जानने को उत्सुक है कि उसका अपना अस्तित्व क्या है, किस तरह की दुनिया में वह रहता है, विज्ञान की खोजों को कहाँ तक अन्तिम सत्य मान लेना चाहिये, विश्व में धर्म का क्या स्थान है तथा उन अन्य तथ्यों (परामनोविद्या) की इस पर क्या प्रतिक्रिया होती है, परामनोविद्या की उपेक्षा नहीं कर सकता (पृ० XIII) परामनोविद्या ही केवल ऐसा विज्ञान है जो मानव व्यक्तित्व की गहराई में उतरता है और उन आवश्यक समस्याओं पर प्रकाश डालता है जिन्होंने अब तक हमें परेशान कर रखा है तथा जो पकड़ में नहीं आतीं। (पृ० XIII) परामनोविद्या विज्ञान, दर्शन और धर्म, मानवीय विचार की इन तीन महान् शाखाओं के सन्धि स्थल पर है और जिन बातों का अध्ययन यह करती है उनका इन तीनों के लिये अत्याधिक महत्व है (पृ० XII) परामनोविद्या अब इतनी दृढ़ स्थिति को प्राप्त कर चुका है कि दर्शन की तो बात दूर रही, मनोविज्ञान और अन्यविज्ञान भी इसकी उपेक्षा नहीं कर सकते। कोन्स्टेंटीन ओइस्टेरिच (Kanstantin Oesterrich) ने ठीक ही लिखा है कि अब यह बात निर्विवाद है कि परामनोविद्या की समस्यायें वास्तविक हैं, भ्रम और धोखा नहीं। प्रसिद्ध अन्वेषणकर्त्ताओं के, जिनमें कुछ विश्वविख्यात वैज्ञानिक भी शामिल हैं, एतद्विषयक कथन इतने अधिक और स्पष्ट हैं कि सन्देह के लिये कोई स्थान नहीं है। उनके सम्मिलित साक्ष्य की उपेक्षा करना नितान्त अवैज्ञानिक और दुराग्रहपूर्ण है। (*Occultism and Modern Science*, p. 156).

अब प्रश्न यह उठता है कि परामनोविद्या क्या है और इसकी महत्वपूर्ण खोजें क्या हैं ? सन् १८७० के आसपास सर विलियम क्रुक्स (Sir William Crooks) और सर विलियम बैरेट (Sir William Barrett) इन दो महान् विज्ञानवेत्ताओं ने कुछ विचित्र और अलौकिक तथ्यों की आश्चर्यजनक छानबीन की और इससे सन् १८८२ में इङ्गलैंड में एक संस्था का निर्माण हुआ जिसके उद्देश्य निम्नलिखित थे:—एक मन का दूसरे ऊपर पड़ने वाले साधारण प्रत्येक्षोत्तर प्रभाव के स्वरूप और विस्तार की जाँच, सम्मोहन और मोहनिद्रा में होने वाले दूर दर्शन इत्यादि बातों का अध्ययन, मृत्यु के या अन्य जो छाया में दिखाई देती हैं और भूत प्रेत के कारण घरों में जो उत्पात होते हैं उनके बारे में विश्वस्त सूत्रों से प्राप्त प्रामाणिक जानकारी की सावधानी से जाँच पड़ताल, 'आत्मा और परलोक' सम्बन्धी तथ्यों की मीमांसा और उनके कारण तथा सामान्य नियम निर्धारित करना। उक्त संस्था के संस्थापकों के शब्दों में इस संस्था का उद्देश्य उपर्युक्त विविध प्रश्नों का निष्पक्ष भाव से उत्तर पाना होगा और इसके कार्यों के पीछे सत्यानु-सन्धान की विशुद्ध प्रेरणा रहेगी जिसके द्वारा विज्ञान ऐसी ऐसी समस्याओं को हल करने में समर्थ हुआ है जो किसी समय अत्याधिक जटिल, दुर्बोध और विवादास्पद थीं। जब से इस संस्था की स्थापना हुई तब से यह अमेरिका और योरुप महाद्वीप में अपनी विविध शाखाओं के द्वारा नितान्त वैज्ञानिक विधि से अपने खोजपूर्ण कार्यों को आगे बढ़ाती रही। प्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता, दार्शनिक और साहित्यिक जिनमें बहुसंख्यक लोग सत्यप्रियता और ईमानदारी के लिये विख्यात हैं, इस संस्था के सक्रिय सदस्य, मन्त्री अथवा सभापति रह चुके हैं। प्रोफेसर हेनरी सिजविक (Henry Sidgwick) जो इङ्गलैंड में एक अत्यधिक सतर्क और सन्देहवादी व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध थे, इसके ख्यातिप्राप्त सभापतियों में प्रथम थे। प्रोफेसर स्टेवर्ड (Steward) अर्ल आफ़ बालफोर (Earl of Balfour) प्रो० विलियम जेम्स (William James) सर विलियम बैरेट (William Barrett)। सर ओलिवर लौज (Oliver Lodge), प्रो० चार्ल्स रिशे (Charles Richet) प्रो० हेनरी बर्गसों (Henry Bergson) प्रो० शिलर (F. C. S. Schiller) प्रो० गिल्बर्ट मरे (Guilbert Murray)। प्रो० विलियम मैकडूगल (William Mcdougall) और प्रो० हन्स ड्रीश (Hans Driesch) जैसे महापुरुषों ने इस संस्था के सभापति पद को सुशोभित किया। पत्रों और ग्रन्थों दोनों के रूप में इसकी खोजों का वर्णन और समीक्षा करने वाले बृहत् और मूल्यवान साहित्य की सृष्टि हुई। प्रो० विलियम जेम्स को भी यह कहने को बाध्य होना पड़ा कि "वास्तव में यदि कोई मुझे पूछे कि ऐसा वैज्ञानिक पत्र कौन है जिसमें निर्भ्रान्त विचार और गल्तियों के उद्गमों की सावधानी पूर्वक छानबीन, दोनों पूर्ण विकास में हों, तो मैं आश्वस्त होकर प्रोसीडिंग्स आफ दी सोसायटी आफ साइकिकल रिसर्च (*Proceedings of the Society of Psychical Research*) का नाम लूंगा (*Will to Believe and other Essays* p. 303-4) इस संस्था का स्वयं अपने अनुसन्धानों के प्रति इतना अधिक आलोचनात्मक पक्ष था जितना कि इसके आलोचकों का हो सकता था। इसके अनुसन्धानों के विरुद्ध कोई आलोचक जो आपत्ति कर सकता था। स्वयं इसके सदस्यों ने उस आपत्ति को उठाया, उसके ऊपर वाद-विवाद किया और उस पर विस्तारपूर्वक विचार किया। जिस विषय की खोज की गई उसके लोकोत्तर रूप को स्वीकार करने

पूर्व जितनी भी साधारण व्याख्यायें हो सकती थीं उनकी पूर्ण रूपेण परीक्षा की गई। कैरिंगटन (Carrington) के शब्दों में सतर्क अन्वेषकों ने छल के सभी सम्भव तरीकों पर खूब विचार किया और ऐसी शर्तें लागू की कि सभी परीक्षात्मक गोष्ठियों में धोखा देना एक तरह से असम्भव हो गया। अतीत में छल करने वाले माध्यमों का पर्दा फाश करने के जितने मामले हुये लगभग सभी स्वयं 'साइकिकल रिसर्च' संस्था के सदस्यों द्वारा हुये परामनोविद्या सम्बन्धी सभी प्रयोगों में हमने परिस्थितियों को ऐसा बनाने का प्रयत्न किया कि उनसे प्राप्त निष्कर्षों की व्याख्या ठगी के किसी भी सम्भावित रूप से नहो सके।

वैज्ञानिक विधि में निपुण अनुसन्धानकर्त्ताओं की इस संस्था के द्वारा जितनी भी खोजें हुई हैं और निरीक्षण तथा प्रयोग से प्राप्त विचित्र और रहस्यमय तथ्यों की व्याख्या करने के लिये उन्होंने जो परिकल्पनायें पेश की हैं वे निश्चय ही मनोविज्ञान और दर्शन के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण है। हमारे पास इतना समय नहीं है कि हम यहाँ परामनोविद्या सम्बन्धी अनुसन्धानों में प्रत्येक का विस्तृत और साँगोपाँग विवरण प्रस्तुत कर सकें। हम केवल उन्हीं का उल्लेख करेंगे जिनका मनोविज्ञान से अत्यधिक सम्बन्ध है। इस प्रसंग में कुछ विख्यात और सर्वमान्य विद्वानों के ऊद्धरण देना ठीक रहेगा। प्रो० चार्ल्स रिशे ने जो कि पेरिस विश्वविद्यालय में शरीर विज्ञान के प्राध्यापक थे, तीस वर्ष से अधिक परामनोविद्या सम्बन्धी अनुसन्धान करने के बाद लिखा प्रच्छन्नसंवेदन (Cryptesthesia) दूर किया (Telekinesis), ectoplasm और पूर्व ज्ञान (premonition) कड़ी चट्टान अर्थात् सैकड़ों निरीक्षणों और सैकड़ों कट्टर प्रयोगों पर आधारित है। ...... ज्ञान की एक ऐसी शक्ति है जो साधारण ज्ञानेन्द्रियों की शक्ति से मौलिक रूप से भिन्न है। प्रच्छन्न सवेदना दिन की भरपूर रोशनी में भी वस्तुओं में कुछ गतियाँ बिना छुये होती है। दूर क्रिया, समूचे हाथ, शरीर और वस्तुयें एक बादल से आकृति ग्रहण करते हुये प्रतीत होते हैं और उनमें जीवन के सभी लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं। (ectoplasm)। पूर्वज्ञान होते हैं जिनकी व्याख्या न तो दैवयोग से हो सकती है और न सूक्ष्म दृष्टि से तथा जिनकी सूक्ष्म बातें तक कभी कभी सत्य सिद्ध हुई हैं ये मेरे दृढ़ और वैज्ञानिक निष्कर्ष हैं। (*Thirty Years of Psychical Research*, p. 599) विख्यात मनोवैज्ञानिक प्रो० विलियम मैकडूगल ने लिखा है:—मेरा विचार है कि विचार संक्रमण (telepathy) के पक्ष में अकाट्य प्रमाण है...... मैं समझता हूँ ऐसे जोरदार प्रमाण काफी संख्या में इकट्ठे हो चुके हैं जो यह दिखाते हैं कि मृत्यु के पश्चात् मनुष्य बिलकुल नष्ट नहीं हो जाता बल्कि उसके व्यक्तित्व का कुछ अंश तब भी जीवितों के ऊपर प्रभाव डालता रहता है। मेरी धारणा है कि दूर दर्शन (clairvoyance) के पक्ष में इतना जोरदार दलील है कि एतद्विषयक अनुसन्धान को आगे बढ़ाना नितान्त आवश्यक है और वही मैं माध्यम (Medium) से सम्बन्धित अधिकाँश अलौकिक बातों के बारे में भी कहूंगा (*Religion and Science of Life* p. 80) विचार संक्रमण (telepathy) एक निश्चित और मौलिक तथ्य।......मनः पर्याय (thought reading) भी काफी निश्चित रूप से स्थापित हो चुका है।......निष्पक्ष निरीक्षण के सदृश दूरदर्शन की सत्ता भी प्रतीत होती है ......लेकिन शायद यह विचार संक्रमण के ही प्रकारण होता है (Psychometry) पहिली दृष्टि में सत्य मालूम पड़ता है। भविष्यवाणी (prophecy) को मैं सत्य के करीब कहूंगा। (*Psychical Research*) एक

योग्यजीवशास्त्री डा० राइन (Rhine) के द्वारा ड्यूक विश्वविद्यालय में किये गये हा के प्रयोगों ने असन्दिग्ध रूप से अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष (extra sensory perception) को सत्य सिद्ध कर दिया है। डा० राइन ने लिखा है:—"अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष एक ऐसा तथ्य है जिसका वस्तुत: प्रदर्शन किया जा सकता है। (*Extra Sensory Perception* p. 222) अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष इन्द्रियजन्य ज्ञान है (वही, पृ० २२४) यह संवेदना से मूलत: भिन्न है। (*New Frontiers of Mind*, p. 144) यह शक्ति उपयुक्त परिस्थितियों के मौजूद रहने पर बराबर सक्रिय रहती है और इसके ऊपर निर्भर रहा जा सकता है (*Extra sensory perception*. p. 220) प्रो० प्राइस (H. H. Price) अक्टूबर १९ के 'फिलासफी' के अङ्क में क्वेश्चन्स अबाउट टेलीपेथी एण्ड क्लेयरवायन्स (Questions about Telepathy and Clairvoyance) नामक लेख में लिखते हैं:—विचार संक्रमण और दूर दर्शन के पक्ष में अच्छे और चतुर प्रमाण हैं, तथा पूर्वज्ञान, जो कि अलौकिक तथ्यों में शायद सर्वाधिक विरोधाभासयुक्त है के पक्ष में भी काफी प्रमाण है। परामनोविद्या के क्षेत्र में ३५ वर्ष से अधिक बहुत अच्छा काम करने वाले हियरवार्ड कैरिंगटन (Hereward Carrington) ने अपने विख्यात ग्रन्थ 'दि स्टोरी आफ साइकिक साइंग (*The story of Psychic Science*) में लिखा है प्राय: प्रत्येक परामनोविद्याविद् इस बात से सहमत है कि आत्मा के पक्ष में अब इतना प्रमाण इकट्ठा हो चुका है कि इसे एक काम चलाऊ सिद्धान्त के रूप में ग्रहण करना उचित है। (पृ० ३२३) मृत्यु के बाद आत्मा के अस्तित्व के पक्ष में प्रबल प्रमाण है (पृ० ३२४) इस तरह के असंख्यउद्धरण दिये जा सकते हैं, किन्तु इतना पर्याप्त होगा। इससे यह ज्ञात होता है कि परामनोविद्या के अन्वेषकों को कुछ ऐसे सच्चे और अच्छी तरह से छानबीन किये हुये दृष्टान्त मालूम हैं जो दूर क्रिया (telekinesis) ectoplasm अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष (extra sensory perception) विचार संक्रमण (telepthy) (psychometry) पूर्व ज्ञान (premonition) और मृत्यु के बाद आत्मा के अस्तित्व (survival) को असन्दिग्ध रूप से प्रमाणित करते हैं। इनके समान ही विचित्र किन्तु वस्तुत: होने वाले ऐसे अन्य तथ्यों को फिलहाल छोड़ा जा सकता है, जैसे, उत्थान (levitation dowsing, raps) बाधा (poltergeists) स्वतन्त्र लेख (independent writing) स्वतन्त्र भाषण (independent voice) भौतिकीकरण (materialisation) स्वयंलेखन (automatic writing) स्वयंभाषण (automatic speech) (apparition) दूरदर्शन (clairvoyance) दूरश्रवण (clairaudience) छाया प्रेत बाधा (haunting) तथा 'पूर्वजन्म' की स्मृति। दूरक्रिया (Telekinesis) से तात्पर्य किसी माध्यम की उपस्थिति में वस्तुओं का बिना स्पर्श किये हिलना डुलना। यदि यह सत्य है और इसके सत्य होने में अब कोई सन्देह बाकी नहीं रहा, तो क्या आधुनिक मनोविज्ञान शरीर विज्ञान मानव स्वभाव के बारे में पहिले से स्वीकृत अपने सिद्धान्तों और नियमों द्वारा इसकी व्याख्या कर सकता है यदि नहीं, तो क्या उन सिद्धान्तों और नियमों पर सन्देह करना तथा उनमें इन नवीव तथ्यों के अनुसार परिवर्तन करना जरूरी नहीं है (Ectoplasm) एक अर्धभौतिक पदार्थ होता है जो माध्यम के शरीर से निकलता है तथा उपस्थित लोगों के द्वारा देखा और स्पर्श किया जा सकता है। माध्यम की अधोचेतन इच्छा की शक्ति से यह विविध आकारों और ढांचों का रूप ले सकता है। बैरेन वोन श्रेंक नौट्जिं

Baron von Schrenk Notzing) तथा मैडम जे० जे० बिसन (Mm. J. J. Bissan) ने इवा सी (Eva C.) नामक एक माध्यम पर प्रयोग करते हुये सर्वप्रथम ectoplasm को स्पष्ट देखा, छुवा और समझा था तथा फोटो लिया था डा० गुस्टैव गेली (Dr. Gustave Galey) ने इवा सी० के शरीर से निकलने वाले ectoplasm से निर्मित होने वाले आकारों के बारे में लिखा हैं:—आदि से अन्त तक ये आकार मेरी आखों के सामने बनते रहे। ये दृश्य अवयव निर्जीव नहीं बल्कि जीवविज्ञान के मापदण्ड के अनुसार सजीव है। इसी प्रकार कैरिंगटन ने भी लिखा है:—मैंने स्वयं पूर्णतया नियंत्रित परिस्थितियों में आकृतियों को बनते देखा हैं और एक अस्थायी हाथ को, जिसे मैं अपने हाथ से पकड़े हुए था, अपने हाथ में समाते देखा है। जीव विज्ञान, अवयव रचना विज्ञान, शरीर विज्ञान और मनोविज्ञान परामनोविद्या के अन्वेषणों से प्राप्त ectopasm की तरह के किसी से जीव पदार्थ से अपरिचित है और इसलिये इनके मानव शरीर, उसकी शक्तियों और व्यापारों के बारे में अब तक के सिद्धान्त अपर्याप्त तथा सदोष हैं। मनोवैज्ञानिकों की यह धारणा है कि ज्ञानेन्द्रियों की सहायता के बिना प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं हो सकता तथा बाह्य जगत् का जितना भी ज्ञान है वह ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा प्राप्त होता है। प्रतीन्द्रिय प्रत्यक्ष जिसमें दूरदर्शन और दूर श्रवण भी शामिल हैं, इस धारणा के बिल्कुल विपरीत है। किन्तु जैसा कि राइन ने कहा है, अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष संवेदना से मूलत: भिन्न है तथा इससे यह सुझाव मिलता है कि मन भौतिक पदार्थों के विस्तार और दूरी जैसे सम्बन्धों से मुक्त है। हमारे पास पृथ्वी पर घटने वाली दूरस्थ घटनाओं के प्रत्यक्ष ज्ञान के ऐसे प्रमाणिक दृष्टान्त मौजूद है जिसमें घटना या तो पहले ही घट चुकी है या भविष्य में घटने वाली है, यद्यपि दिखाई ऐसे देता है कि जैसे हमारे सामने वर्तमान में वह घट रही है। अत: अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष देश और काल के प्रतिबन्धों से मुक्त प्रतीत होता है। इस प्रकार इसमें पूर्व ज्ञान का भी समावेश हो जाता है जो किसी भी प्रकार की भावी घटना की एक अलौकिक सूचना होती है। मनोविज्ञान को अभी तक इस प्रकार की किसी प्रत्यक्ष शक्ति का पता नहीं है और यदि देश काल के बन्धनों से मुक्त अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष सत्य है, जैसा कि परामनोविद्या की खोजों से प्राप्त प्रचुर प्रमाणों से प्रतीत होता है, तो मनोविज्ञान को अपनी कुछ मान्यताओं को छोड़ना होगा, और ज्ञान क्रिया के विषय में एक नई परि कल्पना ढूँढनी होगी। इतना तो निश्चय है कि ज्ञानेन्द्रियों को प्रत्यक्ष ज्ञान का एकमात्र उद्गम मानना छोड़ना होगा। प्रो० एच० एच० प्राइस ने लिखा है : यदि विचार संक्रमण और दूर दर्शन वास्तव में होते हैं और इससे इनकार नहीं कर सकता तो ये अवश्य ही बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि इनसे यह निष्कर्ष निकलता है कि मानव मन में ऐसी शक्तियाँ मौजूद है जो ऐन्द्रिय प्रत्यक्ष अन्तरदर्शन, स्मृति और अनुमान से नितांत भिन्न है। यदि पूर्व ज्ञान होता है तो हमें काल और कारण के अपने सिद्धांतों को आमूल बदलना होगा। (*Philosophy*, Oct. 1940, Questions about Telepathy and Clairvoyance) मनोमिति (Psychometry) के तथ्य तो ज्ञानविषयक आधुनिक मनोवैज्ञानिक सिद्धाँतों के लिये और भी कठिनाई पैदा करते हैं। मनोमिति (Psychometry) से हमारा तात्पर्य कुछ व्यक्तियों की उस शक्ति से है जिसके कारण वे किसी वस्तु का स्पर्शमात्र करते उसका अतीत इतिहास बता सकते हैं और साथ ही उसके परिवेश के बारे में भी कई बातें जान सकते हैं। जैसा कि पहले ही

बताया जा चुका है, प्रो० ड्रीश (Driesch) कहते हैं कि मनोमिति (Psychometry) प्रत्यक्षतः सत्य है । तथापि ज्ञान और प्रत्यक्ष के ज्ञात नियमों के द्वारा इसकी व्याख्या करने के सभी प्रयत्न अब तक व्यर्थ सिद्ध हुए हैं । महान जीव शास्त्री ड्रीश के शब्दों में हमारी व्याख्याओं को भौतिक परिकल्पना को त्याग कर "आध्यात्मिक" परिकल्पना की ओर उन्मुख होना चाहिए । हमारे नवीन विज्ञान ने जितनी चीजें, पेश का है उनमें psychometry शायद सबसे आश्चर्यजनक है । और इसके बारे में इतना मात्र पूर्णतया निश्चित है कि इसकी साधारण भौतिक व्यवस्था असम्भव है (*Psychical Research*) मनोविज्ञान को इस तथ्य से कि हमारे वास्तविक और सम्भावित ज्ञान के क्षेत्र में अद्यविधि ज्ञात वस्तुओं से भी अधिक वस्तुएँ हैं, नम्रता का पाठ सीखना चाहिये ।

परामनोविद्या के क्षेत्र में यदि कोई ऐसी चीज है, जिसकी सत्ता किसी भी अन्य चीज से अधिक निश्चित है और परामनोविद्या से कम से कम सम्पर्क रखने वाले जिसके बारे में लेशमात्र भी संदेह नहीं करते, तो वह विचार संक्रमण है । बहुत पहले मायर्स (Myers) ने इसकी परिभाषा देते हुये कहा था कि यह किसी भी तरह के विचारों का बिना किसी ज्ञात ज्ञानेन्द्रिय के सहारे एक मन से दूसरे मन में पहुँचना है । अब सभी परामनोविद्याविद् विचार संक्रमण को एक दृढ़ तथ्य और वास्तविक कारण मानते हैं । विचार संक्रमण को एक तथ्य और सभी मनुष्यों में रहने वाली एक शक्ति के रूप में स्वीकार करने का आधार वह अकाट्य साक्ष्य है जिसका परामनोविद्याविदों तथा इसमें रुचि रखने वाले अन्य लोगों द्वारा संग्रह किया गया है । यह दो तरह का होता है स्वाभाविक (spontaneous) और प्रायोगिक (experimental) पहले में ऐसे दृष्टांत शामिल है जिनमें कोई व्यक्ति कभी-कभी एकाएक ऐसे असाधारण विचार, प्रतिमा इच्छाएँ अथवा संदेश अप्रत्याशित रूप से प्राप्त करता है जिनके बारे में बाद की छानबीन से यह ज्ञात हुआ कि वे किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा जीवन की किसी किसी महान आपत्ति में यह ज्ञात हुआ गहरे संवेग के प्रभाव में ज्ञात अथवा अर्द्ध ज्ञात अवस्था में भेजे गये थे । स्वाभाविक विचार संक्रमण के अत्याधिक रोचक दृष्टांत वे हैं जिनमें उपलब्धि कर्त्ता (percipient) किसी ऐसे विभ्रम (hallucination) का अपनी ज्ञानेन्द्रियों से अनुभव करता है जो प्रेषक की किसी विपत्ति जैसे बीमारी, दुर्घटना या मृत्यु से हूबहू सादृश्य रखता है । ऐसे दृष्टांतों में प्रायः उपलब्धिकर्त्ता के सामने प्रेषक की एक छाया प्रकट होती है जो सीधे या सांकेतिक रूप में कोई सूचना या संदेश देती है । अनेक देशों में सत्य मात्र को जानने के लिये अधीर और वैज्ञानिक विधि से निष्णात कुछ लोगों ने विचार संक्रमण के ऊपर प्रयोग किये । पूर्णतया नियंत्रित परिस्थितियों में उपलब्धि कर्त्ताओं और प्रेषकों के ऊपर हजारों प्रयोग किये । उन्हें साधारण जाग्रत अवस्था में सम्मोहन की अवस्था में एक ही कमरे में, एक ही मकान के अलग-अलग कमरों में, एक ही शहर के अलग-अलग मकानों, अलग-अलग देशों में कुछ फुट की दूरी पर तथा हजारों मीलों की दूरी पर रखा गया । जो संदेश भेजे गये और जिनका प्रायः सही-सही उपलब्धि हुई उनकी संख्या अनगिनत है । संख्याओं, चित्रों, ताश के पत्तों, रेखाकृत्तियों, वास्तविक या काल्पनिक दृश्यों, घटनाओं, संवेगों, अनुभूतियों, विभिन्न प्रकार की संवेदनाओं जिनमें पीड़ा की संवेदना भी शामिल है, कार्य करने की प्रवृत्तियों, इच्छाओं इत्यादि का

फलतापूर्वक प्रेषण और उपलब्धि हो चुकी है। इन प्रयोगों में प्राप्त होने वाली सफलताओं की संख्या इतनी बड़ी हैं कि उन्हें आकस्मिक नहीं कहा जा सकता। इनसे ह असंदिग्ध निष्कर्ष निकलता है कि दो मनो के मध्य किसी भी भौतिक साधन के बिना चारों का आदान-प्रदान हो सकता है। यदि यह सच है तो आजकल का जड़वादी रीरिक मनोविज्ञान (Physiological psychology) कैसे इसकी व्याख्या करेगा ? ष्ट है कि इसके लिए व्याख्या करना किसी भी तरह सम्भव नहीं है। अपनी असमर्थता देखकर तथा अपनी कमियों के ज्ञान से ग्रस्त होकर यह विचार संक्रमण के अस्तित्व अस्वीकार करता है, यद्यपि इसके समर्थकों ने न तो परामनोविद्या का कोई ग्रंथ पढ़ा और न कोई प्रयोग ही किये हैं। वैज्ञानिक दुराग्रह का इससे बड़ा दृष्टांत कहाँ मिलेगा। र्य की बात है कि कई मनोवैज्ञानिक यह नहीं जानते कि विचार संक्रमण को अब सभी परा-मनोविद्याविद् निर्विवाद एक तथ्य स्वीकार कर चुके हैं और इससे भी जटिल समस्याओं की व्याख्या इसकी सहायता से करने लगे हैं। ये लोग यह भी नहीं जानते कि विचार संक्रमण की सहायता के बिना माध्यम को प्राप्त होने वाले अनेक संदेश, जिनकी एकमात्र सही व्याख्या आत्मवाद के द्वारा ही हो सकती है, आत्मवाद को न मानने वाले नहीं समझ सकते। कैरिंगटन के शब्दों, "यदि हम विचार संक्रमण को सत्य नहीं मानते तो आत्माओं के हस्तक्षेप के पक्ष में प्रमाण प्रबल हो जायगा।" जब मनोवैज्ञानिक विचार संक्रमण तक को मानने के लिये तैयार नहीं है तो वह एक मात्र उस दूसरे विकल्प को कैसे मान सकता है जो उसके सभी सिद्धान्तों और विश्वासों को पलट देगा ? तथापि सच्चे वैज्ञानिक के लिये तो सिद्धान्तों और विश्वासों की अपेक्षा तथ्यों का अधिक मूल्य और सम्मान होना चाहिये।

विचार संक्रमण एक तथ्य है और अब प्रश्न यह उठता है कि हम भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान तथा मनोविज्ञान के ज्ञात नियमों से इसकी व्याख्या कैसे कर सकते हैं ? विचार संक्रमण किस तरह होता है, यह अब तक अज्ञात और अनिर्णीत है। इसका प्रकार के संदेशों में तुलना करने पर पहिला सुझाव यह मिलता है कि शायद प्रेषक का मस्तिष्क एक तरह की शक्ति उत्पन्न करता होगा जो किसी भौतिक माध्यम में से होकर तरंगों के रूप में उपलब्धि कर्त्ता के मस्तिष्क में पहुँचती होगी। इस परिकल्पना के विरुद्ध कई आपत्तियां हो सकती है जिनमे से कुछ ये है विकीर्ण शक्ति (radiant energy) के जितने भी प्रकार अब तक विज्ञान को ज्ञात हैं वे सब 'विलोम वर्ग' के नियम (Law of inverse square) का अनुसरण करते हुये पाये गये हैं अर्थात् आगे बढ़ती हुई तरंगो के रूप में जब वे अपने उद्गम के चारों ओर फैलते हैं तब उद्गम से दूरी के वर्ग के अनुपात में उनका बल क्षीण होता जाता है। इस प्रकार काफी दूरी पर तरंगो का प्रभाव बनाये रखने के लिये उद्गम को अत्याधिक बल की आवश्यकता होगी। किन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं है कि प्रेषक को दूरस्थ विचार संक्रमण पर किये गये प्रयोगों में अत्याधिक प्रयत्न करना पड़ता है। वस्तुत: सफल विचार प्रेषण मे दूरी का कोई अन्तर नहीं पड़ता। विचार संक्रमण अत्यधिक दूरी पर भी उतना ही निर्बन्ध और प्रभाव-शाली होता है जितना कम दूरी पर। ऐसे बहुत से दृष्टान्त है जिनमे मरणासन्न व्यक्तियों ने जिनके अन्दर बहुत कम शक्ति बच रहती है, सफलतापूर्वक अत्यधिक दूर अपने विचारों और अनुभूतियों को प्रेषित किया है। फिर जब कोई विकीर्ण शक्ति आकाश से गुज़रती

है तो माध्यम में वह कोई प्रभाव उत्पन्न करती है । लेकिन अत्यधिक सूक्ष्म उपकरणों ढूंढने पर भी मस्तिष्क शक्ति का माध्यम पर ऐसे किसी प्रभाव का चिन्ह नहीं मि हुआ । शरीर विज्ञान या अवयव विज्ञान को अभी तक मानव मस्तिष्क के अन्दर कि भी प्रेषण या ग्रहण करने वाले अंग का पता नहीं चला । पुनः यदि विचार, अनुभू और इच्छायें तरंगों के रूप में आकाशस्थ किसी भौतिक माध्यम में से प्रेषित होती उनका तरंग रूप में परिवर्तन किसी निश्चित् संकेत पद्धति (code) के अनुसार होना लेकिन प्रायोगिक या स्वाभाविक विचार संक्रमण में प्रेषक या उपलब्धिकर्ता के द्वारा किसी संकेत पद्धति का इस्तेमाल होता हुआ नहीं देखा गया । विचार संक्रमण की भौ परिकल्पना के आधार पर यह समझना बहुत मुश्किल है कि दुनियां में रहने वाले अ मस्तिष्कों में से एक विशेष मस्तिष्क ही क्यों किसी अन्य मस्तिष्क के द्वारा प्रेषित सं को प्राप्त करता है । इस तरह की कठिनाइयों के कारण इस क्षेत्र में काम करने वा को विचार संक्रमण के विषय में यह भौतिक या शारीरिक सिद्धान्त जिसे सर विलि क्रुक्स ने सर्वप्रथम सन् १८९८ में ब्रिटिश असोशियेशन फार एडवान्समेंट आफ साय सभापति पद से दिये गये भाषण में प्रस्तुत किया था छोड़ देना पड़ा । अब वि संक्रमण को एक विशुद्ध मानसिक या आध्यात्मिक घटना माना जाने लगा है, जो तक मनुष्य को अज्ञात भौतिक और शारीरिक नियमों से ऊँचे नियमों के द्वारा शा होती है । कुछ लोग एक तरह के मानसिक सादृश्य (affinity) में विश्वास करते हैं, कुछ एक तरह के आध्यात्मिक गुरुत्वाकर्षण में और कुछ एक तरह के सब मनो व्याप्त विराट मन में । किन्तु ये सब विचार वर्तमान मनोविज्ञान के लिये विजातीय अ अरोचक हैं, जो इन विचित्र तथ्यों के अनुसार अपने सिद्धान्तों को बदलने की अपेक्षा की सत्ता में भी इन्कार करता है और वह भी बिना कोई प्रयोग किये ।

मनोविज्ञान के लिये विचार संक्रमण से भी अधिक समस्या जनक प्रेत बा (possession) है जिसे परामनोविद्या में समाधि व्यक्तित्व (trance perso ality) भी कहते हैं । इनकी चाहे जो व्याख्या हो, फिर भी वास्तविक और अलौकि दृष्टांत तो इनके मिलते ही हैं । मनोवैज्ञानिकों का कर्तव्य है कि इनकी जांच और व्याख् करें और यदि सामान्य और असाधारण मनोविज्ञान के सिद्धान्तों से इनकी व्याख्या न हो सकती, तो वे अब ऊर्ध्वसाधारण मनोविज्ञान कहलाने वाले विज्ञान के नवीन अ पर्याप्त सिद्धान्त सूत्र बद्ध करें । प्रो० विलियम जेम्स ने एक आश्चर्य जनक माध्यम मिसे पाइपर (Mrs. Piper) को ढूंढ निकाला था जो समाधि (trance) में पहुंच जा करती थी और समाधि अवस्था में जिसके जरिये कुछ अन्य बिल्कुल भिन्न व्यक्ति अ धान कर्त्ताओं से वार्तालाप कर सकते थे । वह उच्चकोटि की समाधि में पहुँचने वा माध्यम थी और बहुत कुछ उसी की आध्यात्मिक शक्तियों के कारण अनुसन्धानकर्ता का एक समूह आत्मवाद के प्रामाण्य में विश्वास करने लगा । मिसेज पाइपर के बारे प्रो० विलियम जेम्स ने लिखा, "वह समाधि में ऐसी बातें जान लेती है जो वह किसी सम्भव उपाय से जाग्रत अवस्था में नहीं सुन सकती थी ।" डा० हौजसन (Hodgso जो कि एक बड़े सूक्ष्मदर्शी और सन्देहशील विचारक थे, मिसेज पाइपर के मामले अध्ययन करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इसके अलावा मैं किसी बात के सन्देह नहीं कर सकता हूं कि मुख्य संदेश प्रेषक वही व्यक्ति थे, जिनके होने का वे दा

रते हैं, कि मृत्यु के बाद भी उनका अस्तित्व है और यह कि मिसेज पाइपर के समाधि-स्थ शरीर के द्वारा उन्होंने हम जीवित लोगों से सीधे वार्तालाप किया है। समाधि में पहुंचने वाले अन्य अच्छे माध्यम भी हुये हैं जिनमें मिसेज आसबोर्न लियोनार्ड (Osborne Leonard) मिसेज विलेट (Willet) मिस वीराल (Verall) तथा मिसेज हालैण्ड (Holland) के नाम उल्लेखनीय है। इन्होने समाधि में पहुँचने वाले व्यक्तित्वों (trance personalities) के सम्बन्ध में हमारे ज्ञान को काफी बढ़ाया है।

समाधि के तीन मुख्य प्रकार हैं :— (१) वह समाधि जिसमें माध्यम की साधारण चेतना लुप्त हो जाती है और एक गौण शक्ति उसका स्थान लेकर माध्यम के ज्ञान और गति सम्बन्धी व्यापारों पर अधिकार कर लेती है। वाणी और लेख द्वारा अधिकार करने वाली चेतना से आने वाले संदेश प्राय: किसी मृत व्यक्ति के समझे जाते हैं। जब समाधि के सब अवसरों पर गौण व्यक्तित्व एक ही रहता है, तो उसे माध्यम का नियामक (control) भारत में 'देवता' कहते हैं। बहुधा नियामक अन्य मृत व्यक्तियों से सम्पर्क करने के लिये मध्यस्थ बनने का दावा करता है, जो पृष्ठभूमि में रहते हैं और संदेश प्रेषक कहलाते हैं। (२) कभी कभी संदेश प्रेषक नियामक को हटा देता है और सीधे माध्यम के शरीर से काम लेता है। (३) एक तरह की दुर्लभ समाधि ऐसी होती है जिसमें माध्यम पूरी गोष्ठी (seance) में अपनी चेतना को कायम रखते हुये लिखकर या बोलकर संदेश देता है जो मृत व्यक्तियों से आये हुये समझे जाते हैं। मनोविद्या विदों ने इन सभी प्रकार की समाधियों का सतर्क होकर अध्ययन किया है, लेकिन इनके रहस्यों के बारे में उनका मतैक्य नहीं है। हम विविध मतों के पक्ष और विपक्ष की युक्तियों के विस्तार में नहीं जायेंगे, बल्कि केवल समाधि व्यक्तित्वों (trance personalities) के तथ्यों की व्याख्या करने के कुछ प्रमुख तरीकों तथा उनके दोषों का उल्लेख करेंगे।

जो परामनोविद्याविद् मनोविज्ञान के ज्ञाता हैं उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति समाधि व्यक्तित्वों (trance personality) को आरम्भ में असाधारण मनोविज्ञान में वर्णित विभक्त और विविध व्यक्तित्व के दृष्टान्त मान लेने की होती है। लेकिन उनको शीघ्र ही मालूम हो जाता है कि यह व्याख्या पूरी दूरी तक नहीं पहुँचती। मामूली छिछले दृष्टान्तों में यह चल सकती है। गौण व्यक्तित्व के नाटकीय स्वरूप की व्याख्या इससे हो सकती है लेकिन उससे प्राप्त सूचनाओं की अलौकिकता को समझाने में यह असफल रहती है। प्रो० सी० डी० ब्रॉड (C. D. Broad) ने एक सिद्धान्त प्रस्तुत किया है जो मिश्रण सिद्धान्त (Compound theory) के नाम से प्रसिद्ध है। तदनुसार मन आध्यात्मिक (psychic) और शारीरिक (bodily) इन दो तत्वों का मिश्रण है। मन की विशेषतायें सम्मिलित रूप से इन दो तत्वों पर निर्भर रहती हैं। आध्यात्मिक तत्व शरीर के नाश के बाद भी मौजूद रहता है। यह कभी-कभी अस्थायी रूप से समाधिस्थ माध्यम के शरीर से युक्त हो सकता है और इस प्रकार एक अस्थायी मन का निर्माण कर सकता है। लेकिन यह सिद्धान्त इस बात की व्याख्या करने में असमर्थ रहता है कि मिसेज विलेट के मामले में जिसका अपने बोलने और लिखने के अंगों के ऊपर नियन्त्रण कायम रहा, एक सजीव लगने वाले प्रेषक का उसके द्वारा संदेश देना कैसे सम्भव हो सका। यह उस तथ्य की व्याख्या करने में भी असफल रहता है कि प्रेषक कभी-कभी अपनी मृत्यु के बाद की घटनाओं का ज्ञान प्रदर्शित करते हैं ऐसा ज्ञान विच्छिन्न आध्यात्मिक तत्व को

प्राप्त होना सम्भव नहीं है। प्रत्येक केवल मृत व्यक्ति को ही नहीं बल्कि उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को जानता है और यह एक के आध्यात्मिक तत्व तथा दूसरे के शरीर के मिश्रण से सम्भव नहीं है। संदेशों के परस्पर विरुद्ध होने तथा प्रेषकों के परिवर्तन की भी, जैसा लम्बी गोष्ठियों में बहुधा होता है, इस सिद्धान्त से व्याख्या नहीं हो सकती।

विचार-संक्रमणसिद्धान्त, जिसका कि प्रेषकों की नाटकीयता की व्याख्या करने लिये कभी "मिश्रण" सिद्धान्त से और कभी असाधारण मनोविज्ञान के "गौण-व्यक्तित्व के सिद्धान्त से मेल कर दिया जाता है। आत्मा की अमरता के सिद्धांत का बहुत ब प्रतिद्वन्द्वी है और दूसरे को स्वीकार करने से पहले इसकी पूरी-पूरी जाँच होनी चाहिये लेकिन यह सिद्धांत स्वयं भौतिक स्तर से ऊँचे स्तर की चीज है और इस प्रकार हमा प्रयत्न रहस्यमय बातों को रहस्यमय सिद्धांतों से समझाने का प्रयत्न है। मनोविज्ञान हमें यहाँ कोई सहायता नहीं मिलती। कैरिंगटन के शब्दों में, "जहाँ तक तथ्यों का सम्ब है, सन्देह के लिए कोई गुँजाइश नहीं है, उनका अस्तित्व है और वे साधारणोत्तर है विचार-संक्रमण-सिद्धांत यह मान लेता है कि माध्यम का चेतन या अचेतन मन "संदेशों में प्रदर्शित सूचना को विचार-संक्रमण के जरिये उन लोगों से प्राप्त करता है जो वहाँ हुये हैं और उन लोगों से भी जो कहीं दूर हैं लेकिन उस सूचना की जानकारी रखते तत्पश्चात् वह एक सुसंगत तरीके से उस सूचना को जीवितावस्था में परिचित व्यक्ति के नाटक के रूप में प्रस्तुत करता है, ठीक ऐसे ही जैसे हम स्वप्न या सम्मोहन की अवस में करते हैं। यह सिद्धान्त आत्मा की अमरता के सिद्धांत का एक मात्र विकल्प और प्रतिद्वन्दी है।

समस्या यह है कि माध्यम को उन तथ्यों का ज्ञान कैसे होता है जो मृत व्यक्ति अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं जानता और यह भी कि मृत व्यक्ति और प्रेषक के एक ह का विश्वास कैसे हो। इन प्रमुख कठिनाइयों के बावजूद, दोनों सिद्धान्तों के पक्ष में बहु कुछ कहा गया है और कहा जा सकता है तथा आत्मा की अमरता के सिद्धांत, कि आधुनिक व्यक्तित्व-विषयक मनोदैहिक मत के बिल्कुल प्रतिकूल है, उसके पक्ष और विपक्ष में भी बहुत कुछ कहा जा सकता है। आत्मा की अमरता के सिद्धांत के विरुद्ध युक्तियाँ हैं : आधुनिक शरीर-विज्ञान और मनोविज्ञान के अनुसार मन मस्तिष्क का व्यापार है। विज्ञान भौतिक जगत् से परे किसी का अस्तित्व नहीं मानता और इस प्रका एक आध्यात्मिक जगत् को मानना विज्ञान की धारणा के प्रतिकूल है। कभी-कभी व्यक्तियों से मिलने वाले तथा कथित संदेश छलपूर्ण साधनों से प्राप्त हुये सिद्ध हुए हैं इससे यह संदेह होता है कि माध्यम सदैव ऐसे साधन इस्तेमाल करते हैं। मरने के ब जीवित रहना स्वतः असम्भव लगता है। जो सन्देश प्राप्त किये जाते हैं उनमें प्रायः व्यक्तियों की विशेषता नहीं दिखाई देती जिनसे उनकी प्राप्ति मानी जाती है, उनमें प्रा उन तथ्यों का अज्ञान झलकता है जो जीवितावस्था में उन व्यक्तियों को ज्ञात थे और कभी-कभी आडम्बरपूर्ण होते हैं तथा व्याकरण की दृष्टि से गलत भाषा में व्यक्त कि जाते हैं। उनमें प्रायः झूठ और गल्तियाँ बहुत होती हैं। उनका अधिकाँश माध्यम अचेतन मन की उपज होता है। जिस सूचना को मृत व्यक्ति से प्राप्त होने वाली म जाता है उसकी व्याख्या अधिकतर माध्यम की अतीन्द्रिय-प्रत्यक्ष, दूर-दर्शन दूर-श्र अथवा विचार-संक्रमण की शक्ति के द्वारा की जा सकती है। प्रेषकों का व्यक्तित्व स्वप्न अ

मोहन के और असाधारण व्यक्तियों से जो कि कृत्रिम और आसानी से समझ में आ
ने वाले होते हैं, बहुत कुछ सादृश्य रखता है। विचार-संक्रमण की परिकल्पना के
रुद्ध कुछ परामनोविद्याविदों ने निम्नलिखित हेतु दिये हैं: कुछ दृष्टान्तों की परीक्षा से
क्तिगत एकता का पर्याप्त प्रमाण मिला है। प्रेषक व्यक्ति की मृत व्यक्ति से एकता
श्चित करने के लिये उत्साही अन्वेषकों ने कई विशेष परीक्षायें बनाई हैं, जैसे post-
ortem letters, classical knowledge, cross-correspondence
r concordant automatisms, book tests, Proxy sittings,
थवा Exclusive Knowledge, Reaction tests और मनोविश्लेषण
Psychoanalysis)। इन परीक्षाओं से उनके प्रेषक को माध्यम के समग्र व्यक्तित्व
थवा उसके एक अंश से एक अलग करने तथा मृत व्यक्ति के व्यक्तित्व के कम से कम एक
श से एक दिखाने में बहुत सहायता मिली है। विचार-संक्रमण इसकी व्याख्या नहीं कर
कता है कि बैठे हुये तथा दुनिया में अन्यत्र रहने वाले लोगों के मन में मृतक के बारे में
अनेक सूचनायें भरी पड़ी हैं उनमें से कुछ विशेष सूचनाओं का ही क्यों चुनाव होता है,
किस प्रकार विभिन्न मनों से विभिन्न सूचनाओं का संग्रह किया जाता है और किस प्रकार
एक संगठित और सजीव लगने वाले व्यक्तित्व के रूप में संयुक्त हो जाती है। इस तरह
तो विचार-संक्रमण सर्वज्ञता के बहुत निकट आ जाता है। किन्तु फिर गल्तियाँ क्यों होती
? सन्देश प्रेषण और प्रेतबाधा के कुछ दृष्टान्तों में जो सचमुच होता हुआ प्रतीत होता
वह यह है कि सन्देश प्रेषक जो प्राय: एक से अधिक होते हैं या प्रतर (possession)
पने व्यक्तियों में भिन्नता के अलग-२ बैठनेवालों के साथ परिचय की अलग-२ मात्राओं के तथा
न्देश-प्रेषण की अथवा माध्यम के ज्ञान और गति के अंगों के नियन्त्रण की अपनी योग्यता
भिन्नता के चिन्ह प्रदर्शित करते हैं तथा गोष्ठी के समय या प्रेतबाधा की अवस्था में बदलते
हते और आते-जाते रहते हैं। उनमें से कुछ तो सीधे अपने सन्देश देते हैं। और कुछ ऐसा
रने में असमर्थ रहते हैं तथा परोक्षत: किसी नियामक के द्वारा सन्देश देते हैं। सन्देश देने
जो कठिनाइयाँ, गल्तियाँ और असफलतायें होती है उसके कारण ये हो सकते हैं मृत्यु
धक्के से या भौतिक साधन और परिवेश के बदल जाने से होने वाली विस्मृति,
ध्यम के ज्ञान और गति के अङ्गों पर पूरा नियन्त्रण प्राप्त करने में कठिनाइयाँ,
ा नियामक या सदेश प्रेपकों को इस भौतिक जगत् और माध्यम से सम्बन्ध जोड़ने में
नुभव होने वाली कठिनाइयाँ दूसरे लोक में रहने वालों को इस लोक से सम्बन्ध
ड़ना उतना ही अस्वाभाविक हो सकता है जितना हमको उनका सन्देश सुनना। इन
ब बातों को ध्यान में रखते हुये वैज्ञानिक दृष्टि से असम्भव होने के बावजूद आत्मा की
मरता का सिद्धांत अधिक अच्छी स्थिति में लगता है। अत: जैसा कि कैरिंगटन ने लिखा
"प्राय: सभी मनोविद्याविदों का इस बात पर मतैक्य है कि आत्मा की परिकल्पना के
ा में प्रमाण अब इतना प्रबल हो गया है कि इसे एक काम चलाऊ सिद्धान्त के रूप
स्वीकार कर लेना उचित है" (*The Story of Psychic Science* p. 323.)

इससे अधिक आश्चर्यजनक कोई दूसरी बात नहीं हो सकती कि हमारा विज्ञान
हलाने वाला मनो-विज्ञान मानव-प्रकृति-विषयक हमारे ज्ञान मे आशातीत वृद्धि करने
ाले इन तथ्यों और सिद्धान्तों से अनभिज्ञ है और उन पर ध्यान भी नहीं देना चाहता।
रामनोविद्या वही विज्ञान है जिसके बारे में महान् जीव–शास्त्री और दार्शनिक हन्स ड्रीश

(Hans Driesh) ने कुछ समय पूर्व लिखा था:– "परामनोविद्या सब विज्ञानों में कौ है, जिसकी मैं अत्यधिक प्रशंसा और आदर करता हूं, तथा जिसके बारे में विज्ञान यशस्वी लेखक बर्नहार्ड बाविन्क (Bernhard Bavink) "ने लिखा कि परामनो वह विषय है जिसका ज्ञान प्रकृति-दर्शन के अन्तिम प्रश्नों को अधिक से अधिक स्पष्ट पूर्वक समझने के इच्छुकों के लिये नितान्त आवश्यक है (*The Anatomy Modern Science* p. 520). फिर भी, मनोविज्ञान इसकी उपेक्षा करके न के दूसरे विज्ञान की उपेक्षा करता है, बल्कि उसका अनादर भी करता है और यदि हम जानना चाहें कि इस उपेक्षा के पीछे क्या प्रेरक है तो हमें दूर नहीं जाना पड़ेगा । वि पन्थ के नये-नये अनुयायी उसमें मूर्खों की तरह आस्था रखते हैं । मनोविज्ञान को वि के पद की प्राप्ति हाल ही में बड़ी मुश्किल से हुई है । इसलिए यह पुराने यांत्रिक भौतिक विज्ञानों की विधि और सिद्धान्तों का अन्धानुसरण कर रहा है और इस प्र में इसने अपनी आत्मा, मन और चेतना को खो दिया है । इसके कदम ऐसे नपे-तुले सतर्कता के साथ पड़ रहे हैं जैसे कि मानो इस विज्ञान-पद से च्युत होने का डर हुआ है । टिरेल Tyrrell ने लिखा है :— "मनोवैज्ञानिक शायद यह सोचते हुये उन्हें एक अपेक्षा कृत नये और विकासमान विज्ञान की प्रतिष्ठा रखनी है, भौतिक-शा यों की अपेक्षा अधिक सतर्क है क्यों कि भौतिक-विज्ञान तो इतने दृढ़ रूप से स्थापित कि उसकी प्रतिष्ठा के जाने का कोई खतरा नहीं है (*Science and Psychic Ph nomena* p. 347) मेरा विश्वास है कि इस समय सत्य की खोज और सत्य प्रेम की खातिर हमें इस मिथ्या प्रतिष्ठा की बलि भी देनी पड़े तो दे देनी चाहिए । म वैज्ञानिक का उद्देश्य मानव-प्रकृति को जहां तक हो सके पूरी तरह जानना होना चा और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए साधारण, असाधारण तथा ऊर्ध्वसाधारण सभी क्ष की छानबीन करनी चाहिऐ । जीवन की सभी बुराइयों और दुखों का मूल मानव-स्व का संकीर्ण और भ्रामक ज्ञान है । इस समय हमें मनुष्य के बारे में जितना ज्ञान है उ अधिक गहरे और विस्तृत ज्ञान की हमें जरूरत है । मनोविज्ञान को इस कार्य के लि समर्थ बनाना चाहिए और यथा शीघ्र अपनी एक नई शाखा ऊर्ध्वसाधारण (superno mal) मनोविज्ञान के नाम से खोलनी चाहिए जो न केवल पाश्चात्य साइकिकल रि के खोजे हुये तथ्यों का अध्ययन करेगी बल्कि उनका भी जो इन तथ्यों से भिन्न प्रकार हैं और भारत में योग-साधना से सम्बद्ध है । कानस्टैन्टीन आयस्टरीच (Constanti Oesterreich) ने ठीक ही कहा है कि योरुप में माध्यम-शक्ति एक आकस्मिक प्राप्ति कुछ लोग परामनोविद्या के अलौकिक तथ्य प्रदर्शित करते हैं लेकिन कैसे और कब यह नहीं जानते । भारत में ऐसी शक्तियों की विधिवत उत्पत्ति की समस्या को हल हुये श ब्दियाँ गुजर चुकी हैं । अत्यन्त आवश्यक होने के बावजूद भी अभी तक भारतीय सं सियों, फकीरों और अन्य असाधारण व्यक्तियों की कोई वैज्ञानिक छान-बीन नहीं हो है । यह बहुत अफसोस की बात है और समझ में नहीं आती कि साइकिकल रि सोसाइटी ने अब तक इसका कोई प्रयत्न नहीं किया । ...... यह भी कम आश्चर्य बात नहीं है कि भारतीय विद्वानों ने अभी तक इन समस्याओं को हल करने में स्वयं नहीं लगाया ।

अध्याय २

परामनोविद्या और दर्शन

कोई भी दार्शनिक आज विज्ञानों में सब से छोटे किन्तु सर्वाधिक महत्वपूर्ण विज्ञान रामनोविद्या की आश्चर्यजनक खोजों की उपेक्षा नहीं कर सकता। टिरेल (Tyrrell) अपने महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'सायंस एण्ड साइकिक फिनोमिना' (*Science and Psychic Phenomena*) में ठीक ही लिखा है कि 'कोई भी व्यक्ति जिसकी रुचि जीवन की यापक और महत्व पूर्ण बातों में है, जिसकी यह जानने की उत्कट इच्छा है कि उसका अस्तित्व किस तरह का है, वह किस प्रकार की दुनियां में रहता है, विज्ञान की खोजों ो कहां तक अन्तिम सत्य माना जाय, धर्म का विश्व में क्या स्थान है और (परामनोविद्या) तथ्यों की इस पर क्या प्रतिक्रिया होती है, वह परामनोविद्या की उपेक्षा नहीं कर कता।" (पृष्ठ १३) "केवल यही वह विज्ञान है जो मानव-व्यक्तित्व की गहराई में विश करके उन आवश्यक समस्याओं पर प्रकाश डालता है जिन्होंने अब तक हमें परेशान किया है और जो पकड़ में नहीं आई हैं।" (पृष्ठ १२) "परामनोविद्या विज्ञान, दर्शन और धर्म, मानव-विचार के इन तीन महान् क्षेत्रों के मिलन स्थल पर है, और जिन बातों र यह विचार करती है उनका इन तीनों के लिये अत्यधिक महत्व है (पृष्ठ १२) पश्चिम आधुनिक महान् विचारकों में से अधिकांश का इससे सम्पर्क है। यह सचमुच दुर्भाग्य ो बात है कि हम भारतीय इस महान् आन्दोलन के बारे में बहुत कम जानते हैं जिसने श्चिम के दार्शनिक दृष्टिकोण में क्रान्ति उत्पन्न कर दी है और जो उसे पूर्व के निकट ा रहा है।

परामनोविद्या क्या है और इसकी महत्वपूर्ण खोजें क्या हैं? पिछली शताब्दी के न्त में यह महसूस किया गया कि मानव-जीवन की कुछ विचित्र घटनाओं की, जिनका भी-कभी होना ज्ञात था लेकिन भौतिकी, रसायण, जीवविज्ञान और मनोविज्ञान से नकी वैज्ञानिक व्याख्या नहीं हो पाती थी, वैज्ञानिक ढंग से छानबीन होना आवश्यक है। तः इंगलैण्ड में सन् १८८२ में उन लोगों की एक संस्था का निर्माण हुआ जो वैज्ञानिक विधि से शिक्षाप्राप्त थे और इस तरह के तथ्यों में रुचि रखते थे। इस संस्था का नाम सोसाइटी फॉर साइकिकल रिसर्च (Society for Psychical Research) हुआ। स संस्था के कुछ उद्देश्य ये थे। "एक मन के दूसरे के ऊपर पड़ने वाले प्रत्येक्षेतर भाव के विस्तार की जांच, सम्मोहन और मोहनिद्रा में होने वाले दूरदर्शन इत्यादि बातों का अध्ययन; मृत्यु के या अन्य समय जो छायायें दिखाई देती हैं और भूत-प्रेत के कारण रों में जो उत्पात होते हैं उनके बारे में विश्वस्त सूत्रों से प्राप्त प्रामाणिक जानकारी की

सावधानी से जांच पड़ताल ; आत्मा और परलोक-सम्बन्धी तथ्यों की मीमाँसा और उन
कारण तथा सामान्य नियम निर्धारित करना ।"

अपने जन्म से ही इस संस्था ने यथासम्भव पूर्णतया वैज्ञानिक विधि से आश्च
जनक काम किया है और इसकी शाखायें भारत के अतिरिक्त सारी दुनिया में फैली
हैं । इसकी खोजों का वर्णन और विचार करने के लिये एक विशाल और महत्व
साहित्य का निर्माण हुआ है । ये खोजें अनेक और चौंका देने वाली हैं और इनका
के लिये महत्व किसी भी अन्य विज्ञान से अधिक है । यहां इतना स्थान नहीं है कि
साइकिकल रिसर्च के सभी अन्वेषणों का विस्तृत और सांगोपांग वर्णन करें । अतः
केवल उन्हीं का संक्षेप में उल्लेख करेंगे जो असन्दिग्ध रूप से सिद्ध हो चुके हैं और
विख्यात वैज्ञानिक तथ्य के रूप में स्वीकार कर चुके हैं । इस क्षेत्र में काम करने
कुछ प्रसिद्ध विद्वानों के उद्धरण देना अधिक अच्छा रहेगा । उत्साह पूर्वक तथा वज्ञा
सतकर्ता के साथ काम करने के बाद पेरिस विश्वविद्यालय के शरीरविज्ञान के प्राध्या
प्रो० रिचेट (Richet) इस निष्कर्ष पर पहुंचे: "प्रच्छन्न संवेदन (Cryptesthes
दूर क्रिया (Telekinesis) बहिप्ररस (ectoplasm) और पूर्वविज्ञान (Pre
onition) की चट्टान सैकड़ों निरीक्षणों और सैकड़ों कठोर प्रयोगों पर आधारित है
(प्रच्छन्नसंवेदन) दिन की भरपूर रोशनी में भी वस्तुओं में कुछ गतियां बिना छुये होती
(दूरक्रिया) समूचे हाथ, शरीर और वस्तुएँ एक बादल से आकृति ग्रहण करते प्र
होते हैं और उनमें जीवन के सभी लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं- (Ectoplasm) ।
ऐसे पूर्वज्ञान होते हैं जिनकी व्याख्या न तो दैवयोग से हो सकती है और न सूक्ष्म दृष्टि
तथा जिनकी सूक्ष्म बातें तक कभी-कभी सत्य सिद्ध हुई हैं । ये मेरे दृढ़ और वैज्ञा
निष्कर्ष है" (*Thirty Years of Psychical Research*, पृष्ठ ५६६) विख्
मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक प्रो० विलियम मैक्डूगल ने लिखा है :— "मेरा विचार
कि विचार-संक्रमण के पक्ष में अकाट्य प्रमाण हैं ।···मैं समझता हूं कि ऐसे जोरदा
प्रमाण काफी संख्या में इकट्ठे हो चुके हैं जो यह दिखाते हैं कि मृत्यु के पश्चात् मनु
बिल्कुल नष्ट नहीं हो जाता बल्कि उसके व्यक्तित्व का कुछ अंश तब भी जीवितों के ऊ
प्रभाव डालता रहता है । मेरी धारणा है कि दूरदर्शन के पक्ष में इतनी ज़ोरदार दल
है कि एतद्विषयक अनुसन्धान को आगे बढ़ाना नितान्त आवश्यक है, और यही मैं माध्
से सम्बन्धित असाधारण बातों के बारे में भी कहूंगा" (*Religion and Scienc
of Life* पृष्ठ ८०) प्रसिद्ध जीववैज्ञानिक प्रो० हन्स ड्रीश, जिन्होंने अपने कीमती स
को इस अन्वेषण में लगाया है । लिखते हैं : "परामनोविद्या का अध्ययन सही रास्ते
चल रहा है और इसमें अत्यन्त आलोचनात्मक विधि का प्रयोग हो रहा है" (*M
and the Universe* पृष्ठ ६८) "स्वाभाविक विचार-संक्रमण एक निश्चित
मौलिक तथ्य है······मनःपर्याय भी काफी निश्चित रूप से स्थापित हो चुका है ।
निष्पक्ष निरीक्षण से दूर दर्शन की सत्ता भी प्रतीत होती है । ···लेकिन यह शायद वि
संक्रमण के ही कारण होता है । मनोमिति (Psychometry) पहिली दृष्टि में
मालूम पड़ती है । भविष्यवाणी को मैं सत्य के करीब कहूंगा" (Psychical Researc
ऐक योग्य जीवशास्त्री डा० राइन के द्वारा ड्यूक विश्वविद्यालय में किये गये हाल के प्र
ने असन्दिग्ध रूप से अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष को सत्य सिद्ध कर दिया है डा० राइन ने लिखा

तीन्द्रिय प्रत्यक्ष एक ऐसा तथ्य है जिसका वस्तुत: प्रदर्शन किया जा सकता है" *xtra Sensory Perception* पृष्ठ २२२) "अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष इन्द्रियजन्य ज्ञान ीं है" वही, (पृष्ठ २२३)। यह "सवेदना से मूलत: भिन्न है" (*New Frontiers of ind* पृष्ठ १४४) "यह शक्ति उपर्युक्त परिस्थितियों के मौजूद रहने पर बराबर सक्रिय ती है और इसके ऊपर विश्वास किया जा सकता है" (*Extra Sensory Percep on*, पृष्ठ २२०) परामनोविद्या के एक दूसरे महान् विद्वान कैरिंगटन कहते हैं : त्यु के बाद आत्मा के अस्तित्व के पक्ष में प्रबल प्रमाण हैं" (*The Story of ychic Science* पृ० ३२४) इस तरह के असंख्य उद्धरण दिये जा सकते हैं। इन से हमें यह महसूस होता है कि जीवन और जगत् में उनसे भी अधिक बातें हैं न्हें हमारे सुस्थापित विज्ञान और दर्शन जानते हैं।

अत: जीवन और जगत् को पूरी तरह से समझने का प्रयत्न करने वाला परामनो- ा के खोजे हुए तथ्यों की उपेक्षा नहीं कर सकता। कोई भी दर्शन, जो इन तथ्यों को न देने और उनका स्पष्टीकरण करने में असफल रहता है, दर्शन कहलाने योग्य नहीं जीवन का पाश्चात्य दृष्टिकोण, जो भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीवशास्त्र और ोविज्ञान के निष्कर्षों पर आधारित है, इन तथ्यों से समझौता करने में कठिनाई अनु- करता है। टिरेल ने लिखा है : "परामनोविद्या के तथ्यों की वैज्ञानिक परीक्षा ने तक संग्रह किये हुये ज्ञान भण्डार से संगति न रख सकने वाले सुप्रमाणित तथ्यों के समूह को प्रस्तुत करके एक असाधारण परिस्थिति पैदा कर दी है" (*Science d Psychic Phenomena*, पृष्ठ १५२) कैरिंगटन, का जिसने इन तथ्यों की नबीन में अपना जीवन अर्पण कर दिया है, विचार है कि "यदि जीवन का भौतिक- सायनिक या तांत्रिक दृष्टिकोण सही है तो यह स्पष्ट है कि किसी भी तरह के आध्या- क तथ्यों का होना असम्भव है" (*The Story of Psychic Science*, पृष्ठ ३३२) फर भी उनका अस्तित्व है।" "ये तथ्य असन्दिग्ध रूप से सिद्ध हो चुके हैं" (वही ठ ३२४) लेकिन ये सब तथ्य जीवन के भारतीय दृष्टिकोण से सामंजस्य रखते हैं और तथ्यों से कम ही विचित्र और आश्चर्यजनक हैं जिनसे अपनी आध्यात्मिक साधना के र्वमुखी मार्ग में एक योगी का परिचय होता है। लेकिन दुर्भाग्य से इन दूसरे तथ्यों की य: प्रायोगिक छानबीन नहीं होती है और इस लिये उन लोगों को, जिन्हें इनका अनु- नहीं हुआ है, इन पर विश्वास करना कठिन प्रतीत होता है। दूसरी ओर परामनो- द्या के तथ्य वैज्ञानिक रीति से स्थापित हो चुके हैं और इसलिए दर्शन के लिये इनका धिक मूल्य और महत्व है। ये भारतीय दर्शन के अनेक सिद्धान्तों की न केवल पुष्टि रते हैं, बल्कि उसके सामने विचार के नये मार्ग भी प्रस्तुत करते हैं। अनुभव-निरपेक्ष *priori*) युक्ति मार्ग से अच्छे दर्शन का निर्माण नहीं हो सकता। यदि तथ्य प्रतिकूल तो सभी अनुभव-निरपेक्ष युक्तियों का खंडन हो जाता है। विज्ञान द्वारा स्थापित तथ्य र्शन की सबसे बड़ी पूंजी हैं तथा दार्शनिकों को चाहिये कि विज्ञान की आंख से देखना खें। दुर्भाग्य की बात है कि भारत में अभी तक 'सोसाइटी फ़ॉर साइकिकल रिसर्च' सी कोई संस्था नहीं है। इस प्रकार की एक भारतीय संस्था इस क्षेत्र के अनुसन्धानों कल्पनातीत रूप से सम्पन्न और समृद्ध बना सकती थी। एक जर्मन लेखक ने लिखा है : योरूप में माध्यम-शक्ति एक आकस्मिक प्राप्ति है-- कुछ लोग परामनोविद्या के आलौकिक थ्यों का प्रदर्शन करते हैं, लेकिन कैसे और कब, यह हम नहीं जानते। भारत में ऐसी क्तियों की विधिवत् उत्पत्ति की समस्या को हल हुये शताब्दियाँ गुजर चुकी हैं।" *Konstantin Oesterreich Occultism and Modern Science*, ष्ठ १४४)

अध्याय ३

मानव-व्यक्तित्व के ऊर्ध्व साधारण तत्व

मनुष्य जाति इस वक्त अपने इतिहास के ऐसे भयानक काल से गुजर र जैसे शायद पहिले कभी नहीं गुजरी। दुनिया के राष्ट्र, जातियाँ, समूह और लड़ाई की मुद्रा में हैं और दूसरों के अधिकारों, भावनाओं तथा जीवन के प्रति आद भाव छोड़े हुये हैं। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यह इस युग के जड़वादी, अनुभव वस्तुवादी और स्वार्थमूलक दृष्टिकोण का परिणाम है। हमारे पूर्वज मानव आत्म स्वरूप और भावी गति में रुचि रखते थे और हम दुनियाबी चीजों में रुचि रखते अपनी सम्पत्ति की चिन्ता करते हैं। जिन उपकरणों, मशीनों और लड़ने के साधनों हमने निर्माण किया हम उनके अधीन हो गये हैं। हमने प्रकृति पर शासन कर प्रयत्न किया और प्रतिहिंसा के वशीभूत हो रहे हैं। हमारे शरीर मोटे हो गये हैं आत्मा क्षीण हो गई है। शाश्वत युद्ध की देवी हमारे शरीरों की भूखी है। मनुष्य को विनाश से बचाने के लिये हमें चाहिये कि अब इसे जड़वाद के विशाक्त दूध से ब जाय, जो कि आधुनिक मानव की मन और आत्मा में रुचि न होने का फल है न विज्ञान का जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं। प्रख्यात वैज्ञानिक डा० अलेक्सिस (Dr. Alexis Carrel) के शब्दों में मनुष्य जाति का ध्यान मशीन और जड़ से हटकर मनुष्य के शरीर और आत्मा पर केन्द्रित होना चाहिये (*Man the Unkno* पृ. १४) हमारी जिज्ञासा को अपने वर्तमान पथ से हटाकर अन्य दिशा में लगाना चा उसे चाहिये कि मानसिक और आध्यात्मिक का अनुसरण करने के लिये भौतिक शारीरिक को छोड़ दे। तेज चलने वाले जहाज अधिक आराम देय गाड़ियाँ, सस्ते या दूरबीन बनाने के बजाय अपनी आत्मा के ऊपर ध्यान लगाना हमारे लिये अ श्रेयस्कर होगा। (वही पृ० ५) अतः एक बार फिर हमें "मनुष्य! अपने आप समझ" का नारा बुलन्द करना चाहिये, उपनिषदों की भाषा में, आत्मावा अरेद्रष्टव्

लेकिन अपनी आत्मा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये हम जायें कहाँ? निश्च विचार के वैज्ञानिक तरीके में प्रशिक्षित और उसके अभ्यस्तों के लिये धर्म की मान्य या दर्शन के अनुभव-निरपेक्ष निष्कर्षों पर विश्वास करना कठिन है। उन्हें आवश् है ऐसे आगमनात्मक निष्कर्षों की जो पूर्णतया वैज्ञानिक सतर्कता के साथ निरीक्षण प्रयोग करके प्राप्त तथ्यों से निकाले गये हों। अतः वे स्वभावतः आत्मा के स्वरूप गति को जानने के लिए मनोविज्ञान के पाठ्य ग्रन्थों की ओर आकर्षित होते हैं। यहाँ उन्हें असन्तुष्ट और निराश होना पड़ता है। मनोवैज्ञानिकों का इन प्रार बातों तक के बारे में मतभेद हैं कि उनके विज्ञान का विषय क्या है, किस विधी

उनका अन्वेषण करें, और सामग्री का संग्रह किस प्रकार करे। उनमें से अधिक संख्या उनकी है जिनका जड़वाद की ओर झुकाव है और जो यन्त्रवादी मान्यताओं को लेकर चलते हैं। अधिकतर ऐसे हैं जो मानसिक जीवन को मष्तिस्क और स्नायु मण्डल का व्यापार मानते हैं और आत्मा या मन जैसी अभौतिक और अयांत्रिक वस्तु का उल्लेख करने से बचते हैं। व्यवहारवादी (Behaviourist) तो यहाँ तक कहते हैं कि मनोविज्ञान को चेतना, विचार, अनुभूति इत्यादि का अध्ययन नहीं करना है बल्कि सम्पूर्ण शरीर के निरीक्षण योग्य आन्तरिक और बाह्य प्रति-क्रियाओं (व्यवहार) तथा सामाजिक और प्राकृतिक परिवेश के उत्तेजक तत्वों या परिस्थितियों तक ही सीमित रहना है। उनके लिये मानव व्यक्तित्व "व्यक्ति की कुल जमा पूँजी (वास्तविक और सम्भावित) तथा प्रतिक्रियापक्ष के ऋण (वास्तविक और सम्भावित)" के अतिरिक्त कुछ नहीं है। (*Watson: Psychology*, पृ. ४२७)। "वह समग्र प्रतिक्रिया कुंज है" (वही पृ० ४५०) लेकिन सवाल यह है कि प्रतिक्रिया करने वाला कौन है ? मनोविश्लेषण जिसे अभी तक वैज्ञानिक मनोविज्ञान का पद नहीं प्राप्त हुआ है, निश्चय ही अन्य सम्प्रदायों की अपेक्षा व्यक्तित्व की कुछ अधिक गहराई में उतरा है, किन्तु इसकी मानव मन की व्याख्या भी असन्तोषजनक है, क्योंकि इसके निष्कर्ष प्रधानत: मनोव्याधिग्रस्तों के निरीक्षण पर आधारित हैं और फलतः अन्य प्रकार के मनो पर प्रायः लागू नहीं होते। मनोविज्ञान का यह सम्प्रदाय जिसे कि अभी तक कुछ लोग सत्य नहीं मानते, मानव व्यक्तित्व के केवल उस स्तर तक पहुँचने में समर्थ हुआ है जिसे वह "अचेतन" कहता है। लेकिन इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये कि मानव जीवन में बहुत सी बातें ऐसी होती हैं। जिनकी व्याख्या मनोविश्लेषण अथवा मनोविज्ञान का कोई अन्य सम्प्रदाय नहीं कर सकता, यह प्रतीत होता है कि मानव व्यक्तित्व में बहुत कुछ ऐसा भाग है जो आधुनिक मनोविज्ञान से अभी तक छिपा हुआ है तथा जिसे अभी स्वीकृति मिलना बाकी है।

आधुनिक विज्ञान की सबसे बड़ी देन उसके सिद्धान्त नही हैं बल्कि सिद्धान्तों पर पहुंचने की उसकी विधि तथा वे तथ्य हैं जिनका इसने धैर्य के साथ जीवन और प्रकृति के सभी क्षेत्रों में संग्रह किया है। वैज्ञानिक सिद्धांतों की सत्यता और उनकी स्वीकृति और योग्यता इस बात पर निर्भर है कि वे कहाँ तक तथ्यों की सन्तोषजनक व्याख्या देते हैं। अपने आप में उनका कोई मूल्य नहीं है, वैज्ञानिक जब नवीन तथ्यों का पर्याप्त रूप से स्पष्टीकरण न कर सकने के बावजूद अपने सिद्धान्तों पर चिपका रहता है और नवीन तथ्यों को स्थान देने के लिए नए तरीके से विचार करने में असमर्थ रहता है, तब वह सही अर्थ में वैज्ञानिक नहीं रहता बल्कि धर्म के अंधानुयायियों के वर्ग में शामिल हो जाता है। उसके सिद्धान्त अंधविश्वास बन जाते हैं। विज्ञान के लिये सबसे ऊँचे वे तथ्य हैं जिनका निष्पक्ष भाव से सतर्कतापूर्वक निरीक्षण हुआ है, सिद्धान्तों का तो गौण मूल्य है। विज्ञान ने हमें तथ्यों का आदर करना और उन सिद्धांतों की उपेक्षा करना सिखाया है जो तथ्यों की व्याख्या करने में अपर्याप्त हैं, चाहे उनको प्रस्तुत करने वाले अतीत और वर्तमान के वैज्ञानिक कितने ही बड़े और विख्यात क्यों न हों। इस दृष्टिकोण से ही हम यह कहते हैं कि मानव व्यक्तित्व विषयक आधुनिक मनोविज्ञान के अधिकांश सिद्धान्तों को असन्तोषजनक मानकर छोड़ देना चाहिये, खास तौर से इसलिये कि मानव प्रकृति के बारे में अब जो नये तथ्य ज्ञात हुये हैं उन सब की व्याख्या करने के लिये वे

अपर्याप्त है। मनोवैज्ञानिकों के निरीक्षण अब तक सामान्य, औसत दर्जे के रूग्ण औ
अधोसाधारण व्यक्तियों की प्रतिक्रियाओं और कार्यों तक ही सीमित रहे हैं। उन्हों
साधारण जीवन और प्रयोगशालाओं में किये गये निरीक्षणों से निष्कर्ष निकाले हैं। उन
सामान्य प्रवृत्ति अपवाद स्वरूप, दुर्लभ और ऊर्ध्व साधारण तथ्यों की उपेक्षा करने की
क्योंकि ये साधारण और अधोसाधारण तथ्यों के निरीक्षण के आधार पर निर्मित मा
स्वभाव सम्बन्धी हमारे विचारों से मेल नहीं खाते। ऊर्ध्वसाधारण सामान्य नियम
अपवाद है और इसलिये प्राय: इसकी उपेक्षा कीजाती है। उदाहरणार्थ "प्रतिभ
(Genius) को सन्तोषजनक रूप से समझने का शायद ही कोई सफल प्रयत्न कि
गया हो, इसके विपरीत इसे मन के क्षेत्र में प्रकृति की उद्धत तरङ्ग (Freak of natur
कहकर आसानी से टाल दिया जाता है। जिन दुर्लभ, अपवादात्मक और ऊर्ध्व साधार
तथ्यों को मनोविज्ञान अपने सिद्धान्तों से समझा सकने में असमर्थ रहता है उनके लि
मनोवैज्ञानिक प्राय: 'आकस्मिक घटना' 'भ्रान्ति' 'विभ्रम' 'धोखा', 'छल' इत्यादि श
का प्रयोग करते हैं।

फिर भी वैज्ञानिक मनोविज्ञान के क्षेत्र के बाहर इन दुर्लभ, विषम दिखाई देने व
तथा गूढ़ मानव जीवन के तथ्यों का, जो मनोविज्ञान के जड़वादी और यंत्रवादी दृष्टिक
के कारण उपेक्षित रहे हैं कई वर्षों से व्यक्तिगत और संगठित तरीके से अत्यन्त सांगोप
वैज्ञानिक और निष्पक्ष अध्ययन होता आ रहा है। इस अध्ययन से कुछ अत्यन्त उ
कोटि के तथा अपने अपने क्षेत्रों में अधिकारी विद्वान माने जाने वाले वैज्ञानिक शा
रहे हैं। प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री (Sir William Barrett, Sir Willi
Crookes, Sir Oliver Lodge) जीव शास्त्री (Driesch) शरीर शा
(Prof. Richet) गणितज्ञ और खगोलशास्त्री (Zollner) प्रकृति विज्ञान
(Wallace) औषधि विज्ञानवेत्ता (Lombrose) स्नायु विज्ञानवेत्ता (Morse
अस्त्र चिकित्सक (Dr. E. le Bec, and Dr. George Lindsay Johns
इंजीनियर (Dr. Crawford) विद्युत्वद् (Marconi) मनोवैज्ञानिक (Bar
von Schrenck Notzing, Geley, and Dessoir) तथा बैरि
(Sir Edward Marshall Hall) मनोविज्ञान के लिये ऐसे अजीब तथ्यों
निरीक्षण और संग्रह कर चुके हैं जिनकी अब उपेक्षा नहीं की जा सकती। पि
शताब्दी के उत्तरार्ध में ऊर्ध्व साधारण तथ्यों के पक्ष में समाचार पत्रों में जो प्र
प्रमाण प्रकाशित हुए उन्होंने एक संगठित छानबीन की आवश्यकता उत्पन्न की। १
में समाचार पत्रों में छपने वाले और वैज्ञानिक व्याख्या के अन्तर्गत न आ सकने
इस प्रकार के कुछ तथ्यों के अध्ययन के लिए लन्दन की डायलेक्टिकल सोसा
(Dialectical Society) ने ३३ सदस्यों की एक कमेटी नियुक्त की और
कमेटी ने इनके पक्ष में अपना मत दिया। १८८२ में जो कि सचमुच एक स्मरणीय
हैं, इङ्गलैंड में "सोसाइटी औफ़ साइकिकल रिसर्च" बनाई गई और अपने युग के
उच्चकोटि की आलोचनात्मक बुद्धि सम्पन्न विद्वान हेनरी सिजविक इसके प्रथम सभा
बने। इसके उद्देश्य निम्नलिखित थे:—

१.—एक मन का दूसरे के ऊपर पड़ने वाले ऐसे प्रभाव के स्वरूप और वि
की परीक्षा जो सामान्यतया स्वीकृत प्रत्यक्ष के प्रकारों से भिन्न हो।

२-सन्मोहन, 'मेस्मरिक' सताधि (Mesmeric trance) तथा उससे सम्बन्धित पीड़ा की अनुभूति शून्यता, दूरदर्शन और उसके सदृश अन्य तथ्यों का अध्ययन।

३-'Sensitives' हूष कहलाने वाले कुछ Organizations (जीव) पर किये गए Reichenbach राइखेनबाख के अनुसन्धानों का आलोचनात्मक परिशोध तथा ये Organizations सर्वमान्य ज्ञानेन्द्रियों की उत्कृष्टतम संवेदनशीलता से बढ़कर प्रत्यक्षीकरण की शक्ति रखते हैं या नहीं इस विषय की छानबीन।

४-मृत्यु के या अन्य समय दिखाई देने वाली छायाओं के बारे में या भूत प्रेत के कारण घरों में होने वाले उपद्रवों के बारे में प्राप्त प्रमाणिक सूचनाओं की सतर्कतापूर्वक छानबीन।

५-सामान्यतया 'आध्यात्मिक'(Spiritualistic) कहलाने वाले विभिन्न भौतिक तथ्यों की छानबीन और उनके कारणों तथा सामान्य नियमों को खोजने का प्रयत्न।

६-इन विषयों से सम्बन्ध रखने वाली प्राप्त सामग्री का संग्रह और परीक्षण।

कालान्तर में इस संस्था ने एक विश्वव्यापी संगठन का रूप ले लिया और इसकी शाखायें सभी विज्ञान की दृष्टि से प्रगतिशील देशों में फैल गई। हाल ही में योरोप और अमेरिका के कई देशों में "नैशनल लैबौरेटरी फौर साइकिकल रिसर्च" नामक ब्रिटिश प्रयोग शाला के समान शालायें स्थापित की गई। कुछ बड़े-बड़े विख्यात वैज्ञानिक और दार्शनिको ने इस प्रकार के शोध कार्य में सहयोग दिया है और इस संस्था के सभापति रहे हैं। इस संस्था का आदर्श सिद्धान्तों की अपेक्षा तथ्यों का अधिक ख्याल रखना रहा है। अपने बयासी साल के जीवन से यह संस्था ऐसी मूल्यवान् सामग्री संग्रह करने में समर्थ रही है जो वस्तुत: विचित्र और रहस्यमय है, तथा साधारण जीवविज्ञान, मनोविज्ञान, और भौतिक या रसायन विज्ञान से जिसकी व्याख्या नहीं हो सकती। वैज्ञानिक मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण दोनों ही इसको समझाने में असमर्थ हैं। फिर भी इसके पक्ष में प्रमाण इतना प्रबल और आदरणीय है कि उसको अब अस्वीकृत या उपेक्षित नहीं किया जा सकता। मनोविज्ञान को उस पर ध्यान देना चाहिए और मानव प्रकृति के साधारण तथा असाधारण तथ्यों से उसे संयुक्त करना चाहिए। यह मानव प्रकृति के बारे में अनेक ऐसी बातों का उद्घाटन करती है जो वैज्ञानिक मनोविज्ञान को अभी तक अज्ञात है।

इस संस्था ने जो काम किया है उससे तथा अनेक प्रकार के उर्ध्व साधारण तथ्यों के पक्ष में सग्रह किए हुए मूल्यवान् साक्ष्य से जिन लोगों का परिचय है वे कहते हैं; "इस प्रश्न के ऊपर अब कोई विवाद नहीं है कि ये समस्यायें दृढ़ आधार पर खड़ी हैं तथा इनके पीछे कोई भ्रम, धोखा या छल नहीं है। प्रसिद्ध अन्वेषकों की जिनमें कुछ विश्वविख्यात वैज्ञानिक भी हैं, एतद्विषयक उक्तियाँ बहुत अधिक और निश्चित हैं। इन तथ्यों का जिन लोगों ने विधिवत् अध्ययन किया है वे सब थोड़ी बहुत मात्रा में एक ही स्वीकारात्मक निष्कर्ष पर पहुँचे हैं। उनके संयुक्त साक्ष्य की उपेक्षा करना नितान्त अवैज्ञानिक, दुराग्रह पूर्ण और पक्षपात पूर्ण है जैसा कि डा० कान्सटैन्टीन ओयस्टेरीच ने अपने ग्रन्थ *Occultion and Modern Science* (पृ० १५६) में लिखा है। सी० ए० मेस C.A.Mace ने ठीक ही कहा है कि "अब मनोवैज्ञानिक कार्यकर्त्ता के लिये किसी भी हालत में मनुष्य के व्यक्तित्व के ऊर्ध्वसाधारण पहलू के पक्ष में जो साक्ष्य है उस पर गम्भीर

ध्यान दिये बिना अपने कार्य में प्रगति करना सम्भव नहीं है ।"(*Proceedings, S. P.R.*, Vol 151)में" "Supernormal Faculty and the Structure of the mind" नामक लेख । अलेक्सिस करेल (Alexis Carrel) ने *Man the Unknown* नामक ग्रन्थ में लिखा है "मनुष्य के स्वभाव के बारे में साधारण मनोविज्ञान से हमे जो सूचना मिलती है उससे कहीं ज्यादे महत्वपूर्ण परामनोविद्या से मिल सकती है ।" टिरेल (Tyrrel) के अनुसार "केवल यही एक ऐसा विज्ञान है जो मानव व्यक्तित्व की गहराई में जाकर उन आवश्यक समस्याओं पर प्रकाश डालता है जो हमको परेशान करती रही हैं और जिनका समाधान नहीं हो पाया है(*Science and Psychic Phenomena*)। फिन्डले (Findlay) का विचार है कि "वह दिन अब दूर नहीं है जब उन लोगों को जो अध्यात्मिक तथ्यों का निषेध करते हैं मूर्ख और अज्ञ कहा जायगा । (*On the Edge of the Etheric, p. 27*)

यद्यपि पाश्चात्य देशों में जहाँ शायद भारत की तुलना में ऊर्ध्व साधारण तथ्य और घटनायें कम संख्या में दृष्टिगोचर होते है, एतद्विषयक अनुसन्धान बहुत जोरों से जारी है, तथापि भारत में इस तरह का अनुसन्धान शुरू करने का कोई प्रयत्न नहीं हुआ है और न किसी भारतीय विश्वविद्यालय में (आगरा विश्वविद्यालय को छोड़कर) इस विषय के अध्ययन की व्यवस्था ही है । हमारे मनोवैज्ञानिक इस अल्पवयस्क किन्तु होनहार विज्ञान के बारे में प्रायः पूर्णतया अनभिज्ञ हैं, यद्यपि यह विज्ञान, महान् जर्मन जीवशास्त्री और दार्शनि ड्रीश(Driesch) के शब्दों में "सही रास्ते पर चल रहा है और अधिकतम आलोचनात्मक रूप से इसका अध्ययन हो रहा है"(*Man and the Universe,p.98*) अतः हमने अपने भारतीय सहयोगियों का ध्यान कुछ विचित्र और अज्ञात किन्तु मानव जीवन में निस्सन्देह घटने वाले तथ्यों की ओर आकर्षित करने का प्रयत्न किया है । ये तथ्य परामनोविद्या के द्वारा निश्चित रूप से स्थापित किये जा चुके हैं तथा ये निर्भ्रान्त रूप से मानव व्यक्तित्व के किसी ऐसे तत्व या तत्वों की ओर इशारा करते हैं जो साधारणतया उसमें सक्रिय नही रहते,किन्तु जिनके अस्तित्व और कदाचित व्यापार को स्वीकार करना ही होगा ।

शरीर के ऊपर अलौकिक शक्तियों का नियंत्रण तथा चमत्कारिक रोग विमुक्ति

यदि विचार को मस्तिष्क का और मानसिक जीवन को सम्पूर्ण स्नायुतंत्र का व्यापार मात्र माना जाय, जैसा कि साधारण वैज्ञानिक मनोविज्ञान की मान्यता है, तो विचारों और संवेगों का शरीर और उसके अंगों पर कोई प्रभाव नहीं होना चाहिये । इसके विपरीत निरीक्षण और प्रयोग से ज्ञात होता है कि विचारों और संवेगों का शरीर और उसके अगों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है । डा० कैनन(Dr.Cannon)के बिल्ली के संवेगों और पेशियों और ग्रन्थियों में उनके कारण होने वाले परिवर्तनों के ऊपर किये गये प्रयोग मनोवैज्ञानिकों को भली भाँति ज्ञात हैं । अब यह बात अच्छी तरह से मालूम हो चुकी है प्रायः सभी संवेगों के साथ रक्त संचार में परिवर्तन होते हैं और ग्रन्थियों की क्रिया बढ़ती घटती है जिसके फलस्वरूप ग्रन्थि रसों में वृद्धि, क्षय तथा अन्य रसायनिक परिवर्तन होते हैं । वे बहुधा शरीर की ऊतियों (tissues) और द्रव्यों को प्रभावित

करते हैं। विचार न केवल शरीर में स्नायुविकृत(neurosis)के लक्षण तथा अन्य व्यापारिक विकृतियां (functional disorders)उत्पन्न करता है,बल्कि अंगों में घाव तक पैदा करता हैं। डा० फोर्वस विन्सलो (Dr. Forbes Winslow) ने बहुत पहिले लिखा था : "यह एक सुस्थापित तथ्य है कि विशेष अंगों के ऊपर ध्यान को अत्यधिक केन्द्रित करने के फलस्वरूप ऊतियों में परिवर्तन हुये हैं। आन्तरिक ऊतियों की रुग्णावस्था की लगातार मन में कल्पना करते रहने से निश्चय ही उनमें रक्त संचार असाधारण रूप से बढ़ जाता है,उनके विशेष व्यापारों में वृद्धि हो जाती है उनकी संवेदनशीलता बढ़ जाती है, और फलस्वरूप क्रमश: १-रक्तवाहिनियों की अनुचित क्रिया २-केशवाहिनियों में रक्त संचय (capillary congestion) ३-स्नायु शक्ति के विकास में आधिक्य तथा ४-स्थूल रचना सम्बन्धी परिवर्तन होते हैं। (Obscure Disease of the brain and mind)। इसके विपरीत, स्वस्थ होने की कल्पना और सुखद संवेग 'रक्त और ग्रन्थि न्यासर्गों (secretions) की स्वस्थ अवस्था को पैदा करते हैं और स्वास्थ्य में सुधार करते हैं। (Tuckey: *Treatment by Hypnotism and Suggestion p. 24*)। निर्देश (Suggestion) और आत्म निर्देश (auto-suggestion) दोनों का शरीर और उसके अवयवों में रोग उत्पन्न करने तथा उनके रोगों को शान्त करने का साधन होना ज्ञात हो चुका है। ये तथ्य चिकित्सकों द्वारा थोड़ी बहुत मात्रा में मान लिये गये हैं और इसलिए उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं है।

सम्मोहन की अवस्था में निर्देश सर्वाधिक प्रभावकारक होता है। उस अवस्था में इसका दवा से अधिक असर होता हैं और कुछ समय में,न आने वाले जीर्ण रोगों की इससे प्राय: स्थायी चिकित्सा हो जाती है। डा० कैनन के अनुसार'pleurisy sciatica,lumbago neuralgia, encephalalgia, cancer, tabes, dorsalis और gastric ulcers, duodenal ulcers, तथा appendicitis इत्यादि रोगों तक मे सम्मोहन से पीड़ाकी शान्ति हो सकती है। (Alexander Cannon;*Hypnotism.p,23*) डा० सिल्वियन ए. ली (Dr. Sylvian A. Lee) के अनुसार जिनका अहमद ने *Learn to Hypnotise and Cure'* पृ० २८५ में उद्धरण दिया है, "उन रोगों में जिनमें सम्मोहन चिकित्सा से आराम या शांन्ति मिली है rheumatism, muscular और articular sciatica, tic, pleurisy,अनिद्रा (insomnia) शिर:शूल,अजीर्ण, खाँसी,छींक,eczema,writer's cramp,hystero-epilepsy,gastralgia,stammering enuresis,neurasthenia.का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। डा० अलेक्जेन्डर कैनन के अनुसार,"सम्मोहन चिकित्सा tetanus और अन्य ऐंठन पैदा करने वाली बीमारियों में अत्यधिक उपयोगी है। सम्मोहन से Bright's disease, या मधुमेह में मूत्रत्याग में होने वाले कष्ट,stricture और कभी कभी prostatic gland की वृद्धि में भी आराम पहुँचता है। बच्चा जनने की कष्ट साध्य क्रिया को पीड़ा रहित बनाया जा सकता है। मासिक धर्म को न केवल नियमित बनाया जा सकता है, बल्कि रुकने पर जारी भी किया जा सकता है" (पृ० १८-२६)। एक १३ साल के लड़के के दोनों हाथों की पीठ पर इतने मस्से थे कि मुश्किल से कोई खाली जगह बाकी थी। एम० गिल्बर्ट (M. Gilbert) ने साधारण जाग्रत अवस्था में, सम्मोहन करके नहीं,

निर्देश देकर उनकी सफल चिकित्सा की। एफ० डब्ल्यू० एच० मायर्स और डा०ए० टी० मायर्स ने इसकी ओर संकेत करते हुये लिखा: "यह निर्भीक प्रयोग इस बात का उदाहरण कि यदि मन को उचित रूप से उत्तेजना दी जाय तो कभी-कभी शरीर की ऐसी रूग्णावस्था में भी प्रभाव होता है जिनको दूर करना दवा और शल्य चिकित्सा के लिये समस्याजनक है "माल्कम ग्रांट (Malcolm Grant) द्वारा *A New Argument of God and Survival*, p. 293में उद्धृत) न केवल दूसरों के द्वारा जाग्रत या सम्मोहित अवस्था में दिया हुआ निर्देश रोग चकित्सा में प्रभाव कारक होता है बल्कि स्वयं अपने आप को दिया हुआ निर्देश, आत्मनिर्देश भी तुल्य रूप से प्रभावकारक होता है। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ *Self-mastery Through Conscious Autosuggestion* में डा० इमाइल कू (Dr. Emile Coue) ने स्वय अपने अनुभव के आधार पर लिखा है "निर्देश के द्वारा कोई भी आदमी रक्त के बहने (haemorrhages) को रोक सकता है, कब्ज को ठींक कर सकता है, सूजन को हटा सकता है, स्तम्भ (paralysis),क्षय के घाव, शिराओं के फोड़ों (varicose ulcers) को दूर कर सकता है, इत्यादि।"

रोगी की प्रार्थनाओं, उसके लिये तथा उसकी ओर से की गई प्रार्थनाओं से होने वाली रोग विमुक्ति दूसरों के तथा स्वयं अपने निर्देशों से होने वाली रोग विमुक्ति की अपेक्षा अधिक क्षिप्र, आश्चर्यजनक और चमत्कारिक पाई गई है। डा० अलेक्सिस केरल ने अपन प्रसिद्ध ग्रन्थ *Man the unknown* में इस तरह की रोग विमुक्ति का इन शब्दों में उल्लेख किया है:" लार्डीज (Laurdes) के मेडिकल ब्यूरों में चमत्कारिक रोग विमुक्ति के अत्यन्त महत्वपूर्ण उदाहरणों का लेखा मौजूद है। रोग से उत्पन्न ब्रणों के ऊपर प्रार्थना का प्रभाव पड़ने के बारे में हमारी जो वर्तमान धारणा है वह ऐसे रोगियों के निरीक्षण पर आधारित है जो रोगों से लगभग तत्काल चंगे हो गये और इनमें से कुछ रोग ये है: Peritoneal tuberculosis, cold abscesses, osteitis, suppurating wounds, lupus, cancer, इत्यादि। इस चमत्कार की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें क्षतियों के पुनर्निर्माण की क्रिया त्वरित हो जाती है। इसके होने का एकमात्र अनिवार्य कारण है प्रार्थना। किन्तु रोगी के लिये स्वयं प्रार्थना करना आवश्यक नही है। उसके आसपास किसी का भी प्रार्थना करना पर्याप्त है"लार्डीज Laurdes या फ्रांस में ग्रोटो (Grotto) में होने वाली इस तरह की रोग विमुक्तियों का विस्तृत वर्णन *Medical Proofs of the Miraculous"* नामक एक बहुत ही अच्छी रोग विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक में दिया गया है। इसके लेखक सेंट जान्प हास्पिटल पेरिस के शल्य चिकित्सक डा० ई० लि० बेक (E. Le. Bec) हैं और इसका अंग्रेजी में अनुवाद करने वाले हैं H.E.Izard, M.R.C.P. तथा Ernest Ware M.R.C.S. जो सेंट जोन और इलिजाबेथ के अस्पताल, लन्दन के सीनियर सर्जन हैं। इस पुस्तक के विद्वान् लेखक ने ग्यारह प्रकार के गम्भीर रोगियों का उल्लेख किया है जिनमें से अधिकतर लार्डीज जाने से पूर्व कई वर्षो तक कई चिकित्सकों की चिकित्सा देख चुके थे और अस्पताल के सर्जनों से परामर्श ले चुके थे लेकिन जिन्हें कोई लाभ नहीं हुआ था। ये रोगी निम्नलिखित दुस्साध्य रोगों से पीड़ित थे Varicose veins, Suppurating fracture of the leg, Non-Suppurating fracture of the thigh,

Pott's disease, टाँग का कठिन फोड़ा, Lupus of the mouth, club feet, Peritoneal tuberculosis with fistulae, Intestinal perforations (सब एक साथ), epithelial cancer तथा pulmonary tuberculosis with cavitation ये सब रोग विमुक्तियां नगण्य समय में हो गइ और तत्पश्चात पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करने में कोई समय नहीं लगा। डा० जानसन के शब्दों में 'रोगी तत्काल चंगा हो जाता है और जैसा कि साधारण मामलों में अनिवार्यत: होता है, आराम के समय की आवश्यकता नहीं होती" (*The Great Problem*, p,211)।

शरीर के ऊपर व्यक्तित्व के किसी गहरे और अज्ञात तत्व के आलौकिक नियंत्रण के उदाहरण रूप इन सब मामलों में चेतन इच्छा का कोई महत्व नही है, महत्व है चेतन इच्छा के त्याग का तथा व्यक्तित्व के किसी अज्ञात किन्तु अधिक शक्तिशाली तत्व के हाथ में शरीर को छोड़ देने का। किन्तु ऐसे दृष्टांत भी हैं जो यह प्रदर्शित करते हैं कि समुचित आध्यात्मिक और साधना के द्वारा इस तत्व को ऐच्छिक नियंत्रण में लाया जा सकता है और इस प्रकार एक कुशल गुह्यविद्याविद् (occultist) उसी प्रकार मानव व्यक्तित्व की उच्च, अज्ञात और आलौकिक शक्तियों को अपने आदेश में रख सकता है जिस प्रकार हम अपनी ऐच्छिक पेशियों को। भारत में ऐसे लोगों के दृष्टाँत दुर्लभ नहीं हैं जिन्हें अपने अपने स्वतंत्र स्नायु मण्डल (autonomic nervous system) के ऊपर पर्याप्त अधिकार प्राप्त हो चुका है और अपने आन्तरिक अगों के पाचन, श्वसन, रक्त संचरण इत्यादि व्यापारों पर नियंत्रण कर सकते हैं। १९४१ में हमने एक योगी के एक आश्चर्य जनक चमत्कार को पत्रों में प्रकाशित करवाया था और लिखा था। "उस योगी ने आश्चर्यजनक रूप से अपनी नाड़ी की गति को अपनी इच्छा से रोक दिया तथा एक हाथ में घटा कर, दूसरे हाथ में बढ़ाकर और बीच बीच में रोक कर दोनों नाड़ियों में विषमता प्रदर्शित की। डाक्टर जिन्हें हमने परीक्षा करने के लिये आमंत्रित किया था इस चमत्कार को देखकर सन्तुष्ट हुये, और दर्शकों के तो आश्चर्य का ठिकाना ही न रहा। योगी ने कुछ सेकड के लिये अपने हृदय को बिलकुल निस्पन्द कर दिया और उपस्थित डाक्टरों ने इसे प्रमाणित किया। उसने अपने दाहिने कंधे तथा पहुँचे की हड्डियों को स्थान च्युत कर दिया, डाक्टरों को उन्हें यथा स्थान रखने को कहा और जब वे ऐसा न कर सके तो उन्हें यथास्थान रख दिया। इस प्रकार शरीर के ऊपर असाधारण नियंत्रण के सूचक चमत्कारपूर्ण कार्यों का प्रदर्शन १९०० की पेरिस की प्रदर्शनी में 'बे ब्रदर्स (Bey Brothers) नामक मिस्र के फ़कीरों ने भी किया था' जो शरीर के विभिन्न भागों की नाड़ी गति को बदल सकते थे और इस सब नाड़ियों की गति को हृदय स्पन्दन की गति से भिन्न कर सकते थे" (*Story of Psychic Science* पृ० १८५) रहमान बे (Rehman Bey) तो दीर्घकाल तक हृदय स्पन्द का निरोध करके जीवन के लक्षणों लुप्त कर सकता था और शरीर को पूर्ण निष्चेष्टता की अवस्था में रख सकता था। उस अवस्था में उसे जमीन के अन्दर दफनाया भी जा सकता था। १९३७ में हियरवार्ड कैरिगटन ने ऐंगलवुड (Englewood N. J.) में जनवरी १८ को हमीद बे को तीन घंटे तक दफनाया देखा गया। हमने स्वयं जो देखा उसकी तुलना में यह यह कुछ भी आश्चय-जनक नहीं लगता। १९४१ में एक योगी ने पूरे ६ महोने तक ऐच्छिक निर्जीवता धारण की तथा ठीक उसके इच्छित समय पर उसके शरीर में जीवन क्रियाओं का पुनरुदय हुआ।

हमने इस चमत्कार का विस्तृत वर्णन अखबारों में भेजा और वैज्ञानिकों को उस योगी के अध्ययन और परीक्षा के लिये आमंत्रित किया। योगी उनकी प्रार्थना पर पूर्णतया नियंत्रित परिस्थितियों में दूसरी समाधि लेने के लिये तैयार था। हमारे आमंत्रण का किसी वैज्ञानिक या मनोवैज्ञानिक ने उत्तर नहीं दिया। हमने एक अन्य योगी को भी देखा है जो आसानी से एक घंटे १५ मिनट तक अपनी श्वास प्रश्वास की क्रिया का निरोध कर सकता था, हमने एक भौतिक विज्ञान के प्रोफेसर की मदद से उसकी सभी सम्भव तरीकों से परीक्षा ली। सितम्बर ८, १६३८ के लीडर (*Leader*) दैनिक पत्र में एक ऐसे योगी का विवरण छपा था जो चौदह घंटों तक के लिये बिल्कुल निर्जीव हो जाता था। योगाभ्यास से लोग प्रायः विषैले द्रव्यों के रसायनिक प्रभाव से मुक्त हो जाते हैं। सितम्बर २०, १६३८ में लीडर में बंगलौर के योगिक आश्रम के संचालक श्री एस. एल. राव के बारे में यह प्रकाशित हुआ था कि अपनी शक्तियों का प्रदर्शन करते हुये उन्होंने तीव्र सल्फ्यूरिक एसिड और झागयुक्त तीव्र नाइट्रिक एसिड का लगभग एक आउंस पी लिया था। उन्होंने नाइट्रिक एसिड की कुछ मात्रा अपनी हथेली में रख ली थी जिसकी कोई भी प्रतिक्रिया नहीं देखी गई। लेकिन हथेली में मौजूद उस द्रव्य के अन्दर एक तांबे का सिक्का डालते ही सिक्के के ऊपर उसका प्रभाव देखा गया।

यह कहना व्यर्थ है कि इन चमत्कारों का वर्तमान-शरीर विज्ञान और मनोविज्ञान से स्पष्टीकरण नहीं हो सकता। इसीलिये इनको अलौकिक या उर्ध्वसाधारण कहा जाता है।

हवा में तैरने के चमत्कार से, जो कि गुरुत्वाकर्षण के नियम के विरुद्ध प्रतीत होता है, यह सिद्ध होता है कि न केवल शरीर के ऊपर बल्कि शरीर और उसके परिवेश तथा बाह्य जगत् के मध्यवर्ती सम्बन्धों के ऊपर भी ऊर्ध्वसाधारण शक्ति का नियन्त्रण हो सकता है। यह कहा जाता है कि योगी प्राणायाम का अभ्यास करते हुए आकाश में उड़ने की सिद्धि प्राप्त कर लेता है। हम एक ऐसे योगी को जानते हैं जिसकी अब मृत्यु हो चुकी है लेकिन जो इच्छानुसार हवा में उठ सकता था। प्रो० बैरन फ़ॉन श्रेंक नाटज़िग Baron von Schrench Notzing ने १६२७ की पेरिस की तीसरी अन्तर्राष्ट्रीय साइकिक कांग्रेस में अपना भाषण पढ़ा था जिससे एक ऐसे युवक का उल्लेख था जिसने प्राणायाम के अम्भास से प्राप्त स्वयं को उपर हवा में उठा देने की शक्ति का प्रदर्शन सत्ताइस बार किया था। कुछ प्रसिद्ध माध्यमों को, जिनमें डी० डी० होम (D. D. Home) यूसेपिया पल्लाडिनो (Eusapia Palladino) और स्टेन्टन मोजेज (Stainton Moses) शामिल हैं, यह शक्ति निसर्गतः प्राप्त थी। लौम्ब्रोसो (Lombroso) ने अपने ग्रन्थ—*After Death–What?*—से यूसेपिया पल्लाडिनो की इस शक्ति का तथा सर विलियम क्रुक्स (Sir William Crookes) ने अपने *Researches in Spiritualism* में डी० डी० होम की इस शक्ति का वर्णन किया है। डी० डी० होम की इस शक्ति का वर्णन डनरावेन (Dunraven) के अर्ल (Earl) ने भी अपने "*Experiences In Spiritualism with D. D. Home*" में किया है। हियरवार्ड कैरिंगटन ने यूसेपिया पल्लाडिनो की इस शक्ति का प्रयोगशाला में प्रायोगिक परिस्थितियों में निरीक्षण किया था और तौलने की मशीन के द्वारा उसके शरीर के वजन का लुप्त होना देखा था। उन्होंने लिखा है "मेरे विचार से हवा में उठने

(levitation) के इन दृष्टान्तों की सचाई के बारे में कोई आपत्ति नहीं हो सकती है, ये अच्छी तरह से प्रमाणित अलौकिक भौतिक तथ्य है। ये वस्तुतः होते हैं" (*The Psychic World, p.* 166) ये तथ्य चाहे कितने ही अविश्वसनीय प्रतीत हों, इसमें कोई सन्देह नहीं है कि हवा में तैरने की सच्ची घटनायें घट चुकी है "Carrington: *The Story of Psychic Science, p.* 159")।

गामक शक्ति का बहिकरण तथा दूर गतिक घटनायें
Exteriorization of Motivity and Telekinetic Phenomena

फ्रांस के अनुसन्धान कर्त्ताओं ने एक पदार्थ जिसको उनमें से कुछ ने "चुम्बकीय द्रव्य" (magnetic fluid) नाम दिया है, अस्तित्व स्वरूप और उपयोग पर तथा उसके द्वारा शरीर से कुछ फासले पर रखी हुई वस्तुओं में गति उत्पन्न करने के ऊपर एक बड़ी संख्या से प्रयोग किये हैं। यह "चुम्बकीय द्रव्य" जीवनी शक्ति (Vital energy) की तरह होता है और इन अनुसन्धानकर्त्ताओं के अनुसार यह मानव शरीर में मौजूद रहता तथा जानकर या अनजाने शरीर से बाहर भेजा जा सकता है। उनमें से कुछ ने इसका पता लगाने और शरीर से बाहर निकलते हुये तथा दूर की वस्तुओं पर क्रिया करते हुये इसे देखने के लिये सूक्ष्म यंत्रों का निर्माण किया है, यद्यपि शरीर विज्ञान और मनोविज्ञान की प्रचलित धारणाओं के अनुसार गति शक्ति (Motor energy) शरीर की सीमा के बाहर काम नहीं कर सकती तथा किसी वस्तु के अन्दर गति पैदा करने के लिये उसका शरीर से सम्पर्क आवश्यक है। इन यंत्रों में से कुछ के नाम ये हैं: Collongues द्वारा निर्मित डाइनेमोस्कोप। (Dynamoscope) और बायोस्कोप (Bioscope), Abbe Fortin का मैग्नेटोमीटर (Magnetometer), M. de Puyfontaine का गैल्वेनोमीटर (Galvanometer) Dr. Baraduc का बायोमीटर(Biometer),Dr. Paul Joire का स्थेनोमीटर(Sthenometer) "*L' Exteriorization de la Meotoricide*" के लेखक Col. Albert de Rochas ने गामक शक्ति के बहिकरण (exteriorization of motivity) को एक स्थापित तथ्य माना है और इसका आधार वे निरीक्षण और प्रयोग हैं जो अमेरिका और योरप के प्रसिद्ध परामनोविद्याविदों की एक बड़ी संख्या के द्वारा लगातार बीस साल तक परीक्षित युसेपिया पल्लाडिनो Eusapia Palladino) नामक प्रसिद्ध (फ्रांसीसी) माध्यम के द्वारा उत्पन्न तथ्यों पर किये गये थे। *Our Hidden Forces* नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ के लेखक इमाइल बायरेक (Emile Boïrac) के अनुसार "ऐसे बहुसंख्यक तथ्य हैं जिनमें एक मानव शरीर अन्य शरीरों पर प्रभाव डालता हुआ प्रतीत होता है जो निश्चय ही निर्देश (Suggestion) की सहायता के बगैर होता है और जिसका दूर विकिरण (radiation at a distance) से अत्यधिक साहश्य है (*The Psychology of the Future,* पृ० १७३) प्रसिद्ध परामनोविद्याविद् हियरवार्ड कैरिंगटन ने भी यह कहा है कि यह निश्चित है कि शरीर से कोई शक्ति ऐसी निकलती है जो जड़ पदार्थों में गति उत्पन्न करती है या उसका पता लगाने के लिये बनाये हुए यंत्रों को प्रभावित करती है।" (*The Story of Psychic Science* पृ० १३८) मानव शरीर से निकलने वाली यह गति शक्ति अनेक विचित्र घटनाओं के लिये उत्तरदायी है जिनकी दूसरी तरह से व्याख्या नहीं हो सकती। ये विचित्र घटनायें ज.

अत्र निरीक्षण की जा सकने वाले तथ्य मानी जा चुकी हैं:–दूर क्रिया (Telekinesis) वस्तुओं का हवा में उठना (Levitation) थपथप की आवाजें (raps), भूतबाधायें (Poltergeists) इत्यादि।

दूर क्रिया इस शब्द का अर्थ है किसी ज्ञात चालक शक्ति के अभाव में दूरस्थ वस्तुओं की अलौकिक गति। इसी तरह का एक दूसरा शब्द है Parakinesis (असाधारण गति)। इस शब्द का अर्थ हैं साधारण क्रिया से पैदा न होने वाली गतियाँ, इसमें माध्यम के शरीर का वस्तु से कुछ सम्पर्क रहता है, जैसे माध्यम की हथेलियों का मेज की सतह से स्पर्श रहते हुये मेज का हवा में उठने में, ये दोनों प्रकार की गतियाँ उन अलौकिक प्रतीत होने वाली गतियों से भिन्न हैं जिनको अचेतन पैशिक क्रिया का प्रभाव माना जा सकता है और इस प्रकार जो मनोविज्ञान को ज्ञात एक मात्र व्याख्या के अन्तर्गत आती हैं। स्वाभाविक और प्रायोगिक दोनों तरह के प्रमाण दूर क्रिया की सत्यता सिद्ध करते हैं। पल्लाडिनो ने जिन गोष्ठियों में अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया, पेरिस के साइकोलौजिकल इनस्टिट्यूट ने द्वारा नियुक्त एक कमीटी जिनकी साक्षी थी तथा जिनका विवरण उक्त संस्था ने प्रकाशित करवाया था, उनसे पर्याप्त प्रमाण प्राप्त हुआ है। विवरण के अनुसार, कमेटी ने मान लिया कि यूसेपिया पल्लाडिनो को दूरस्थ वस्तुओं में गति उत्पन्न करने की शक्ति प्राप्त थी। १८९४ में रूबाउड (Rouboud) नामक एकाकी द्वीप में अत्यन्त नियन्त्रित परिस्थितियों में प्रो० रिशे, एफ० डबल्यू० एच० मायर्स, सर ओलिवर लौज और डा० ओकोरो विक्ज (Ochorowicz)—इन चुने हुये अन्वेषकों की उपस्थिति में पल्लाडिनो ने दूर क्रिया का सफल प्रदर्शन किया। स्वय (ओकोरो विक्ज) Dr. Ochorowicz) ने अत्यन्त नियन्त्रित परिस्थितियों और अच्छे प्रकाश में वारसा की स्टेनिसलावा टोमजिक (Stainislaw Tomezyk) नामक युवती लड़की के द्वारा, जो पेशेवर माध्यम नहीं थी, प्रदर्शित दूर क्रिया के रोचक निरीक्षणों को लिपिबद्ध किया। सर विलियम क्रुक्स ने भी प्रसिद्ध माध्यम डी० डी० होम की उपस्थिति में होने वाली अनेक दूर क्रिया सम्बन्धी घटनाओं का निरीक्षण किया था। क्रुक्स ने लिखा है: "ऐसे दृष्टान्ट जिनमें माध्यम के स्पर्श के बिना मेज, कुर्सियाँ, सोफा इत्यादि भारी चीजें हिलने लगी थीं, बहुसंख्यक हैं। डाइलेक्टिकल सोसाइटी के द्वारा निर्णायक माने जाने वाले प्रयोग की जिसमें एक भारी मेज दिन की भरपूर रोशनी में चलने लगती है, मैंने कई पुनरावृत्तियाँ देखीं (*Researches* पृ० ८८),। हियरवार्ड कैरिंगटन पल्लाडिनो ने स्वयं अपने निरीक्षणों में से एक का वर्णन करते हुये निश्चय के साथ लिखता है: "मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यूसेपिया पल्लाडिनो नामक माध्यम की इच्छा मात्र से जड़ वस्तुओं में बार-बार जो गतियाँ उत्पन्न हुई उनके लिये असन्दिग्ध साक्ष्य है। कई मौकों पर मैंने इस विचित्र महिला को फर्श पर रखे हुये स्टूल के ऊपर हाथ करके 'अब मैं इसे चलाउंगी' कहते हुये स्वयं देखा है। विभिन्न दिशाओं में उसका हाथ हिलने पर उसकी इच्छित दिशा और तरीके के अनुसार स्टूल फर्श पर खिसकता जाता था जैसे कि मानो उस की आज्ञा का अक्षरश: पालन कर रहा हो। इस प्रयोग में ये बातें ध्यान देने योग्य हैं:—यूसेपिया का हाथ स्टूल से लगभग अट्ठारह इंच की दूरी पर रहा विभिन्न गतियों के दौरान में मैं बार-बार अपने हाथ और भुजा को उसके हाथ और स्टूल तथा उसके पाँव और स्टूल के बीच में कर लेता था, यह देखने के लिये कि स्टूल को

हिलाने के लिये कहीं तागों, बालों, तारों इत्यादि का उपयोग तो नहीं हो रहा है, स्टूल जितनी बार उसकी ओर गया उतनी बार उससे दूर भी गया और जितनी बार आगे पीछे हटा उतनी ही बार दायें बायें भी । मैंने स्वयं और दूसरों को यह विश्वास दिलाने के लिये कोई भी भौतिक संयोजक दोनों के बीच में नहीं है, सभी सावधानियाँ बरतीं और सभी सम्भव परीक्षाएँ कीं" (*Story of Psychic Science*) गार्लेंड (Garland) के "*Forty years of Psychical Research*" तथा रिशे के *Thirty Years of Psychical Research* में इस तरह के कई अन्य प्रयोगों का वर्णन मिलता है । परामनोविद्याविद् इस तरह की गतियों की व्याख्या के लिये साधारणतया यह मानते हैं कि "इनमें माध्यम के शरीर में उत्पन्न होने वाली तथा शरीर से बाहर फेंकी हुई भौतिक जैविक शक्ति का उपयोग होता है जो जड़ द्रव्य पर प्रकाश डालने में समर्थ होने के लिये किसी अज्ञात तरीके से घनीभूत (solidity) हो जाती है (*Story of Psychic Science* पृ० १३७) डा० डबल्यू० क्राफोर्ड (W. J. Crawford) ने जो कि बेलफास्ट के एक कालेज में मेकेनिकल इंजीनियरिंग के प्रध्यापक थे, कुमारी कैथलीन गोलीघर (Miss Cathleen Goligher) की उपस्थिति में होने वाली वस्तुओं के हवा में हटने की घटनाओं की छानबीन की । उन्हें वस्तुतः इस तरह की एक शक्ति का पता लगा जिसका व्यक्त रूप भौतिक था और जिसे उन्होंने टेलीप्लाज्म (teleplasm) नाम दिया । उन्होंने सचमुच देखा कि टेलीप्लाज्म माध्यम के शरीर से निकलता है, थोड़ा बहुत सयमित होता है और उनकी परिकल्पना के अनुरूप घोड़िया (Centilever) का आकार धारण करके वस्तुओं को हवा में उठाता है । डा० क्राफोर्ड टेलीप्लाज्म के कई फ्लैश-लाइट (क्षिप्र-प्रकाश) फोटोग्राफ लेने में भी सफल हुये ।

असाधारण ध्वनियाँ (Raps) वर्तमान काल में दीवारों, दरवाजों, फर्शों, मेजों और अन्य फर्नीचरों से आने वाली आघात की ध्वनियाँ सबसे पहले प्रसिद्ध फाक्स-बहिनों (Fox-Sisters) के द्वारा १८४७ में सुनी गईं । बाद में प्रसिद्ध माध्यम एच०डी० होम की उपस्थिति में सर विलियम क्रुक्स के द्वारा तथा यूसेपिया पल्लाडिनो की उपस्थिति में अन्य अन्वेषकों के द्वारा उनका याँत्रिक रिकार्ड लिया गया । पल्लाडिनो की छानबीन करने वालों ने उनकी व्याख्या यह दी कि माध्यम के शरीर में पैदा होने वाली स्नावयिक शक्ति एकाएक बाहर आकर कुछ-कुछ घनीभूत हो जाती है और माध्यम से कुछ दूरी पर रखी हुई वस्तु से टकरा कर आवाज पैदा करती है । इस तरह की असाधारण ध्वनियों का होना मात्र विचित्रता नहीं रखता । बहुधा ये असाधारण ध्वनियाँ माध्यम या श्रोता के अतिरिक्त किसी "बुद्धि" या "व्यक्तित्व" की सूचक होती हैं जो किसी को भेजे जाने वाले संदेशों या विचारों के प्रतीकों के रूप में उनका उपयोग करता प्रतीत होता है । डा० मैक्सवेल (Dr. Maxwell) ने असाधारण ध्वनियों के इस पहलू का विशेष अध्ययन किया है । अपने ग्रन्थ "*Metapsyhical Phenomena*" में उन्होंने निश्चित रूप से यर विचार प्रकट किया है "ये असाधारण ध्वनियां किसी बुद्धमत्ता पूर्ण क्रिया के प्रभाव मात्र नहीं है, बल्कि किसी विशेष लय अथवा किसी सुझाई हुई संकेत पद्धति (Code) के उत्तर में बुद्धि भी प्रकट करती है" (पृ० ८३)

Poltergeists—भूतबाधा—इस नाम से अभिहित तथ्य भारत में अत्यधिक प्रचुर है । कुछ सच्चे दृष्टान्तों को तो लेखक स्वयं जानता है और कुछ समाचार पत्रों में यदा कदा प्रकाशित हुये हैं, लेकिन किसी मनोवैज्ञानिक ने अभी तक उनके अनुसन्धान में दिलचस्पी

नहीं ली। ये दृष्टान्त हमेशा किसी एक विशेष व्यक्ति, प्रायः एक युवती कन्या की उपस्थिति में होते हैं और उस व्यक्ति को उस स्थान से हटा देने से इनका होना रुक जाता है। इनमें कोई अज्ञात शक्ति तरह तरह के उपद्रव करती है, जैसे कमरे की वस्तुओं को इधर उधर फेंकना, बर्तन तोड़ना, दीवारों पर रक्त पोत देना, खाने की चीजों में रक्त, माँस या हड्डियाँ मिला देना, रसोई में गदगी बिखेर देना, घर के आँगन में पत्थर फेंकना, घंटी इत्यादि बजाकर शोर करना और असाधारण आवाजें पैदा करना, संक्षेप में परिवार या किसी व्यक्ति विशेष को तरह तरह से परेशान करना। डा० हैरी प्राइस (Hary Price) जिन्होंने १९२६ में साइकिकल रिसर्च के लिये ब्रिटिश नैशनल लेबोरेटरी की स्थापना की थी, ने एक Poltergeist माध्यम Eleonore Zugum के एक बहुत रोचक और और सच्चे दृष्टान्त का अध्ययन किया था जिसका वर्णन प्रयोगशाला की कार्यवाही के प्रथम भाग में प्रकाशित हुआ था। इस वर्णन में यह उल्लेख है:—"यह एक ऐसा अच्छा दृष्टान्त है जिसमें एक बड़ी संख्या में असाधारण घटनाओं के होने की सूचना मिली है और जिसमें निरीक्षण और सत्यापन की स्थितियाँ बहुत ही अच्छी रही हैं। नेशनल लैबोरेटरी के रिसर्च पदाधिकारी प्राइस स्वयं उनकी सचाई को मान गये और यह भी कहा जा सकता है कि उनके पीछे किसी छल का पता नहीं चला (*Story of Psychic Science* पृ० १४४) में उद्धृत माध्यम के शरीर से किसी शक्ति के बाहर निकलने की जो परिकल्पना है और जो क्रुद्ध और शरारती प्रेत की परिकल्पना की एकमात्र प्रतियोगिनी तथा उसकी तुलना से कम सन्तोषजनक अथवा निकृष्ट है, उससे इन घटनाओं को समझना अत्यन्त कठिन है।

छायायें (Apparitions)

मनुष्य जाति को भूत प्रेत और छायाओं का पता बहुत पुराने जमाने से है। प्रत्येक युग में उनके ऊपर विश्वास किया गया है और लोगों को सभी कालों, वर्तमान काल में भी इनके दर्शन हुए हैं। फिर भी, इनके वैज्ञानिक अध्ययन का प्रारम्भ १८८२ में सोसाइटी फॉर साइकिकल रिसर्च के जन्म के साथ ही हुआ। यह संस्था अनेक सच्चे और प्रबल प्रमाणों का संग्रह करके यह दिखाने में सफल हुई कि छायायें देखने वाले की इन्द्रियों के भ्रम या विभ्रम मात्र नहीं हैं। इस संस्था की खोजों से एक विचित्र और रहस्यमय तथ्य का उद्घाटन हुआ, वह यह कि छायायें केवल मृत व्यक्तियों की ही नहीं होती बल्कि उनकी भी होती हैं जो अभी जीवित हैं। प्रारम्भिक परामनोविद्या के तीन महान स्तम्भ ई० गर्नी (E. Gurney) एफ० डब्ल्यू० एच० मायर्स (F. W. H. Myers) और एफ० पौडमोर (F. Podmore) के द्वारा लिखित "फैन्टाज्म्स आफ दि लिविंग" (*Phantasms of the living*) में इस तरह के ७०० दृष्टान्तों का उल्लेख है। छायायें तीन प्रकार की होती हैं। जीवितों की, म्रियमाणों की, और मृतकों की छायायें। चाहे इनकी व्याख्या कुछ भी हो, विस्तृत वैज्ञानिक छानबीन और प्रयोगों के फलस्वरूप ये तीनों प्रकार की छायायें अब वास्तविक, व्यक्तिनिरपेक्ष और दृश्य मानी जाने लगी हैं। ऐन्ड्र्यू लैंग (Andrew Lang) ने कहा है: "छायाओं के बारे में एक बात तो निश्चित है और वह यह है कि वे दिखाई देती हैं। उनका सचमुच प्रत्यक्षीकरण होता है" (कैरिंगटन द्वारा उद्धृत) कैरिंगटन इस निष्कर्ष पर पहुँचा है: इस तरह के हजारों दृष्टान्त लिखित रूप में मौजूद हैं। इनको लेखकों ने स्वयं देखा है और ये भलीभाँति प्रमाणित हैं। उनकी व्याख्या

जो भी हो, यह निश्चित है कि इस तरह की अभिव्यक्तियाँ अपेक्षाकृत सामान्य होती हैं। (*Story of Psychic Science* पृ० २६८)।

मृतकों की छायायें बहुत सामान्य हैं। कई लोग इन्हें देख चुके हैं। लेखक एक सच्चे दृष्टान्त को जानता है जिसमें एक बहुत विश्वसनीय व्यक्ति के सामने छाया प्रकट हुई, उससे उसने बातें की, किसी अन्य व्यक्ति के लिये संदेश दिया और अन्तर्धान हो गई। जो व्यक्ति छाया के रूप में प्रकट हुआ उससे उस व्यक्ति का व्यक्तिगत परिचय नहीं था और न उसका उसे मृत होना ही ज्ञात था। दूसरे दिन उसका मृत होना सिद्ध हो गया। स्थानाभाव के कारण विस्तार की बातें नहीं दी जा सकतीं। केवल इतना कहा जा सकता है कि देखने वाला एक अत्यन्त विश्वसनीय, ईमानदार और सच्चा हिन्दू तथा एक हाई स्कूल का हेडमास्टर था और छाया उस स्थान के एक मुसलमान तहसीलदार की थोड़े दिन पहले मरी हुई पत्नी की थी जो अपने पति को कुछ बताना चाहती थी किन्तु इस लिये नहीं बता सकती थी कि उसका पति आत्मा के अस्तित्व और छाया में विश्वास नहीं करता था।

प्रोसीडिंग्स आफ दि एस० पी० आर० (*Proceedings of the S. P. R.*) में इस तरह के अनेक रोचक दृष्टान्तों का वर्णन है जिनमें से कुछ ये हैं:–(१) १८६७ में एक सम्भ्रान्त व्यक्ति की १८ वर्षीया युवती बहिन हैजे से अचानक मर गई। १८७६ में उस व्यक्ति ने अपनी मृत बहिन की छाया को दोपहर की भरपूर रोशनी में अपने बराबर एक कुर्सी पर बैठे देखा। जब उसने उसका नाम लेकर पुकारा तो वह एकाएक गायब हो गई। उसकी आकृति और चेहरा साफ़ साफ़ दिखाई पड़ते थे और उसके चेहरे की दाहिनी ओर एक गहरी लाल रेखा दीख पड़ती थी। जब उसने अपने पिता को यह घटना बताई तो उसका पिता हंसने लगा। उसकी माता को जब यह ज्ञात हुआ तो उसने कहा कि छाया निश्चय ही उसकी कन्या की है क्योंकि उस व्यक्ति के शब्दों मे उसके अतिरिक्त किसी जीवित व्यक्ति को उस रेखा का ज्ञान नहीं था जिसका निशान बहिन की मृत्यु के उपरान्त अकस्मात् बन गया था। न तो पिता को और न परिवार के किसी अन्य व्यक्ति को ही इस निशान का ज्ञान था।" (२) एक सम्भ्रान्त व्यक्ति ने जाग्रत अवस्था में अपने बृद्ध भाई को जो कि एक अफ़सर था, खाकी वर्दी में देखा उसका चेहरा पीला था और वह बिदा ले रहा था। पूछने पर उसने कहा "मुझे गोली लगी है।" "कहाँ गोली लगी है,' पूछने पर उसने बताया "फेफड़े मे" और आगे पूछने पर छाया गायब हो गई। देखने वाला स्वप्न नहीं देख रहा था बल्कि पूरी तरह से जाग रहा था। उस समय घड़ी में शाम के ४ बजकर १० मिनट थे। दो दिन बाद समाचार मिला कि वह अफसर छाया की रात को ११ और १२ बजे के मध्य मारा गया था।

म्रियमाण की छायायें मृत की छायाओं की अपेक्षा अत्यधिक संख्या में देखी गई हैं। ऐसी छायाओं की एक बड़ी सख्या का वर्णन प्रोसीडिंग्स आफ. एस. पी. आर. में तथा एम. फ्लेमेरियन (M. Flammarion) के प्रसिद्ध ग्रन्थ "दि अननोन" *The Unknown* में मिलता है। इस ग्रन्थ के पृ० १०० में वर्णित एक दृष्टान्त की संक्षिप्त बातें ये हैं: अपने कमरे में बैठी हुई और बुनने के काम में लगी हुई एक महिला को सामने अपना भाई विदा लेते हुये साफ साफ दिखाई दिया। यह व्यक्ति २५ मील की दूरी पर एक गाँव में रहता था। शीघ्र ही उसकी छाया गायब हो गई। किन्तु एक या दो दिन बाद उस

महिला को यह खबर मिली कि जिस समय उसे छाया दिखाई दी थी ठीक उसी समय उसके भाई की मृत्यु हुई थी।

जीवित की छाया प्रायः उस समय दिखाई देती है जब वह सोया होता है बहुत बीमार होता है, किसी महान् आपत्ति में होता है, अथवा मूर्च्छा या मोह निद्रा में होता है। अर्थात् जब वह साधारण चेतन अवस्था में नहीं होता। इसके अंग्रेजी में कई नाम हैं, यथा psychic excursion, dream travelling, psychic invasion, selfprojection, Phantasm या psychorrhagic diathesis इस तरह के कई ग्रन्थों में वर्णित सैकड़ों दृष्टान्तों में से हम एक को लेंगे। यह दृष्टान्त स्पेक्टेटर (*Spectator*) में विस्तार से वर्णित है और आर० शिर्ली (R. Shirley) के महत्वपूर्ण ग्रन्थ *The Problem of Rebirth* के पृ० ७९ पर इसका उल्लेख इस प्रकार है:—एक महिला ने कई अवसरों पर एक मकान का स्वप्न देखा जिसे उसने कभी अपने जीवन में नहीं देखा था। वह अपने पति से इस मकान की सूक्ष्म बातों का साफ साफ वर्णन कर सकती थी। इन स्वप्नों के होने के कुछ समय पश्चात् उसके पति ने स्काटलैंड के पहाड़ों में मछली और अन्य शिकार के लिये जाने का निश्चय किया, और अपने लड़के से जो उस समय स्काटलैंड में था एक किराये के मकान का प्रबन्ध करने के लिये कहा। लड़के ने ऐसा किया। अपनी पत्नी को साथ ले जाने के पहिले वह आदमी स्वयं वहाँ गया और मकान की मालकिन से मिलकर उसने मकान देखने की उत्सुकता दिखाई। मालकिन ने सोने का कमरा दिखाते हुये उससे स्पष्ट शब्दों में कहा कि उस मकान में एक स्त्री का, जिसे उसने जीवन में कभी नहीं देखा, भूत रहता है। वह आदमी भूत प्रेत में विश्वास नहीं करता था, इसलिये उसपर कोई असर नहीं हुआ। जब वह आदमी अपनी पत्नी को लेकर उस स्थान पर लौटा तो मालकिन ने आश्चर्य से चिल्लाकर कहा "तुम्हीं वह औरत हो जिस का भूत मेरे सोने के कमरे में आता था," क्योंकि उसने हूबहू उसी शक्ल का भूत अपने कमरे में देखा था. दूसरी औरत को भी स्वप्न में दीखने वाले कमरे को सचमुच देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। एक दूसरा दृष्टान्त" *Phantasms of the Living* में जिल्द १ पृ० ४४३ में वर्णित है। यह एक ऐतिहासिक दृष्टान्त है। मेजर जनरल रिचार्डसन (Richardson) जो भारतीय सेना में एक अफसर था, मुल्तान के घेरे में बहुत जखमी हो गया था। अपने बचने की आशा त्याग कर उसने अपने पास बैठे किसी व्यक्ति से कहा, "इस अंगूठी को मेरी उँगली से उतारकर मेरी पत्नी के पास भेज दो।" ठीक उसी समय उसकी पत्नी ने जो कि १५० मील की दूरी पर फिरोजपुर में थी, जखमी हालत में अपने पति की छाया देखी और उपर्युक्त शब्द कहते सुना। अच्छा होने के बाद घर लौटने पर उसके पति ने इस घटना को प्रमाणित किया।

छायायें इच्छानुसार उत्पन्न की जा सकती हैं, यद्यपि उनको कौन पैदा करता है और किस तरह, यह अभी तक रहस्य बना हुआ है। एक प्रयोग से उत्पन्न की हुई छाया का यहाँ उल्लेख कर देना ठीक रहेगा। साइकिकल रिसर्च सोसाइटी के एक एजेण्ट ने 'आत्म प्रक्षेप' (Selfprojection) की शक्ति की परीक्षा करने की इच्छा की और यह संकल्प किया कि वह तीन मील की दूरी पर रहने वाली दो परिचित महिलाओं के सोने के कमरे में एक बजे प्रकट होगा। यह संकल्प करने के बाद वह चुपचाप सो गया। पाँच दिन बाद वह उन महिलाओं से मिलने गया। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ जब बगैर कुछ कहे

बड़ी महिला न यह कहा कि उसने ५ दिन पूर्व रात्रि के एक बजे उसे अपने बिस्तर के बगल में खड़ा देखा था और वह बेहद डर गई थी। उस महिला ने यह भी बताया कि उस समय वह पूरी तरह से जाग रही थी।

इन घटनाओं को समझने के लिये कई व्याख्यायें और सिद्धान्त पेश किये गये हैं। लेकिन उनमें से एक भी सन्तोषजनक नहीं है। एफ० डब्ल्यू० एच० मायर्स ने यह सुझाव पेश किया है कि अचेतन मन के अन्दर "आत्म प्रक्षेप" (self-projection) की शक्ति है जो (psychic excursion), स्वप्न विचरण (dream travelling) मोहनिद्रा में शरीर से बाहर निकलना (leaving the body in hypnotic trance), psychic invasion, psychorrhagic diathesis और प्रायोगिक ऐच्छिक प्रक्षेप (voluntary projection) में अभिव्यक्त होती है। उनके अपने शब्दों में, "आत्मा ने स्वय को शरीर से अंशत: विच्छिन्न अवस्था में प्रदर्शित किया है। उसने कुछ स्वतन्त्रता कुछ बुद्धि और कुछ स्थायित्व का प्रदर्शन किया है। जीवन के सभी तथ्यों में यह सर्वाधिक अर्थ रखता है, आत्म प्रक्षेप की क्रिया ऐसी प्रतीत होती है जिसे मनुष्य निश्चित रूप से मृत्यु के पहिले और बाद दोनों अवस्थाओं में समान रूप से कर सकता है' (*Human Personality* संक्षिप्त पृ० २११) आगे वे कहते हैं, "मुझे ऐसा मालूम पड़ता है कि आत्मा के किसी तत्व का अनैच्छिक विच्छेद हो जाता है और चेतना के केन्द्र में शायद इसका ज्ञान नहीं होता" (वही, पृ० २५१) यह आत्म प्रक्षेप विचार सक्रमण (telepathy) का एक रूप मालूम होता है जिसमें आत्म विषयक विचार का प्रक्षेप होता है। लेकिन क्या विचार मन के बाहर रह सकते हैं? क्या बाह्य जगत् की वस्तुओं की तरह उन्हें देखा जा सकता है? जैसा कि भूत लगे घरों में होता है, क्या वे बाहर काफी समय तक बने रह सकते हैं? इन सब प्रश्नों का उत्तर है 'हाँ', क्योंकि आध्यात्मिक अन्वेषकों को इस उत्तर के लिये तथ्यों का दृढ़ आधार प्राप्त हो चुका है। प्रो० डार्जेट (Darjet) डा० गेली (Geley) तथा डा० जायर (Joire) भी इन अन्वेषकों में हैं। डा० जौनसन के शब्दों में, "विचार बाह्य वस्तुओं के समान हैं जिन्हें देखा या सुना जा सकता है अथवा एक संवेदनशील प्लेट के ऊपर उतारा जा सकता है जैसे किसी भी बाह्य वस्तु को। उन्हें किसी भी दूरी पर भेजा जा सकता है। वे जीवित रहते हैं और अनिश्चित काल के बाद पुन: प्रकट होते हैं" (*The Great Problem,* पृ० ८८) डा० जायर ने कहा है: "अत: विचार की क्रिया के फलस्वरूप एक अभौतिक और स्थायी सत्ता का जन्म होता प्रतीत होता है जो न केवल इस क्रिया की समाप्ति पर भी बनी रहती है बल्कि क्रिया के कर्त्ता के बाद भी बनती रहती है तथा जो अनिश्चित परिणाम उत्पन्न कर सकती है और परिस्थिति विशेष में आँखों से देखी जा सकती है" (*Psychical and Supernormal Phenomena,* पृ० ६३०) विचार एक तस्वीर की सृष्टि करता है जो ज्ञानेन्द्रियों को न दिखाई पड़ने पर भी फोटोग्राफिक प्लेट को प्रभावित कर सकती है" (वही, पृ० २७७) अलौकिक फोटोग्राफी के बारे में अधिक विस्तृत सूचना जेम्स कोटस (James Coats) के ग्रन्थ" *Photography of the Invisible*" और हेन्स्लो (Henslow) के *Proofs of the Truths of Spiritualism* से प्राप्त की जा सकती है।

हाल के अनुसन्धानों से सूक्ष्म शरीर (astral body) के अस्तित्व का पता चला और छायाओं की समस्या पर प्रकाश पड़ा है। कॅरिंगटन ने लिखा है: "इस तरह के

अनेक दृष्टान्तों से यह प्रबल सुझाव मिला है कि उनके पीछे विचार सक्रमण मात्र काम नहीं करता। एक तरह के 'सूक्ष्म शरीर' ने अस्तित्व को प्रकट किया है और उस समय प्रत्यक्ष कर्त्ता ने अपनी आँखों से उसे देखा है" (*The Story of Psychic Science*, p. 282)

तेजस (Aura) और दिव्य शरीर (Astral Body)

प्राचीन हिन्दू मनोविज्ञान के अनुसार मानव शरीर में एक आत्मा होता है और यह विश्व में व्याप्त सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान ब्रह्म ही है जो आनन्दमय, विज्ञानमय, मनोमय, प्राणमय और अन्नमय, इन पाँच कोशों के आवरणों से अपने को अवच्छिन्न कर लेता है। उक्त कोश उत्तरोत्तर अधिक स्थूल द्रव्य के बने होते हैं और तदनुसार उनकी शक्तियाँ और व्यापार भी उत्तरोत्तर अधिक सीमित होते जाते हैं। अन्नमय कोश भौतिक शरीर है और आनन्दमय कोश कारण शरीर है। विज्ञानमय, मनोमय और प्राणमय कोशों से आत्मा का सूक्ष्म शरीर बनता है। आधुनिक मनोविज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन और जीव विज्ञान, इन विशुद्ध जड़ विज्ञानों पर आधारित है और इसलिये मानव व्यक्तित्व के एक तत्व, भौतिक देह से आगे इसकी गति नहीं है। लेकिन हिन्दू मनोविज्ञान के अनुसार भौतिक देह चेतना का सबसे बाहरी और स्थूल कोश है तथा उसकी सबसे कम अभिव्यक्ति करता है। मनोविज्ञान के क्षेत्र के बाहर वैज्ञानिक विधि से कुछ अनुसन्धान किये जा रहे हैं जिनसे इस तथ्य का पता चलता है कि मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के अन्दर भौतिक शरीर से सूक्ष्म और ऊँची कोई चीज भी है। दो ऐसी चीजों का थोड़ा सा आभास मिला है और ये हैं तेजस (aura) तथा दिव्य शरीर (astral body) जो हिन्दू मनोविज्ञान के प्राणमय और मनोमय कोशों के समकक्ष हैं। नीचे इन अनुसन्धानों का संक्षिप्त उल्लेख किया जाता है।

मानव तेजस

मानव तेजस के अस्तित्व और स्वरूप के बारे में वैज्ञानिक अनुसन्धान का प्रारम्भ Baron Charles von Reichenbach के द्वारा हुआ जिसने १८४८ से अपना प्रसिद्ध और खोज पूर्ण ग्रन्थ "*Physico Physiological Researches in the Dynamics of Magnetism etc., in the Reaction to Vital Force*" प्रकाशित किया। Reichenbach ने चुम्बकों का निरीक्षण शुरु किया और यह पता लगाया कि उनसे कोई वाष्प की तरह की अर्ध तेजोयुक्त (semi-luminous) चीज निकलती है जिसे अंधेरे में कुछ संवेदन शील व्यक्ति देख सकते हैं। उसने एक बड़ी संख्या में प्रयोग किये जिनसे उसे विश्वास हो गया कि मानव शरीर से इस तरह चुम्बकीय शक्ति निकलती है जो ज्वाला की तरह प्रतीत होती है और 'संवेदनशील' (sensitive) कहलाने वाले विशेष शक्ति सम्पन्न व्यक्तियों को दिखाई पड़ती है। साधारण व्यक्तियों को यह दिखाई नहीं देती। Reichenbach ने इसका नाम "aura" (तेजस) रखा। १८७४ में फ्रान्सिस गेरी फेयर-फील्ड Francis Gerry Fairfield ने एक ग्रन्थ *Ten Years with Spiritual Mediums* नाम से छपवाया जिसमें मानव तेजस के ऊपर उसके द्वारा सावधानी से किये हुए प्रायोगिक अनुसन्धानों का उल्लेख है। उसके अपने ही शब्दों में "इस सामग्री से इस परिकल्पना की पुष्टि होती है कि सभी स्नायुयुक्त

प्राणी एक वायव्य तेजस अपने शरीर से बाहर छोड़ते हैं जिसे इच्छानुसार एक निश्चित दिशा में भेजा जा सकता है और भौतिक वस्तुओं में बदला जा सकता है" (कैरिंगटन द्वारा *The Story of Psychic Science* पर उद्धृत)साइकिकल रिसर्च सोसाइटी ने अपने जन्म के उपरान्त शरीर से निकलने वाले इस चुम्बकीय पदार्थ की छानबीन के लिये एक कमेटी बनाई। इसके सदस्य अधिकतर भौतिक शास्त्री और चिकित्सक थे। वे इस निर्णय पर पहुँचे "एक अज्ञात कारणों से उत्पन्न होने वाली, विचित्र और अव्याख्येय चमकीली चीज के अस्तित्व के ऊपर पहिली दृष्टि में कोई शंका नहीं होती। यह चुम्बकीय ध्रुवों के पास चारों ओर के क्षेत्र में पाये जाने वाले भासमान द्रव्य (phosphorescence) से साहश्य रखती है और केवल कुछ व्यक्तियों को ही दिखाई देती है (*Proceedings, S. P. R.* Vol. I पृ. ६३६) इस क्षेत्र में और अधिक महत्वपूर्ण अनुसन्धान डा० वाकर जे० किल्नर (Walker J. Kilner) ने किया जो सेंट टामस हास्पिटल, लन्दन के इलेक्ट्रिशियन थे। इनके अनुसन्धान *The Human Atmosphere* नामक ग्रन्थ में सग्रहीत हैं। डा० किल्नर ने रासायनिक तरीके से कुछ परदे तैयार किये जिनसे एक साधारण आदमी भी मनुष्य शरीर के चारों ओर के तेजस को देख सकता था। उनका दावा है कि इस तरह तेजस का अस्तित्व उन्होंने सिद्ध कर दिया है। डा० किल्नर का सिद्धान्त यह है कि तेजस का प्रत्यक्षीकरण साधारण मनुष्य की आँख से इस कारण नहीं होता कि तेजस के प्रकाश का तरंगायाम (wavelength) दृश्य रंगावलि (Spectrum) के तरंगायामों से भिन्न है। उनके कथनानुसार "मनुष्य शरीर को चारों ओर से आवृत्त करने वाले तेजस के अस्तित्व में जरा भी सन्देह नहीं हो सकता और अब थोड़े ही दिनों में सब लोग यह मानने लगेंगे कि साधारण दृष्टि का प्रत्येक व्यक्ति इसे अपनी आँख से देख सकता है," डा० किल्नर ने यह खोज की है। भौतिक शरीर के चारों ओर तेजस की एक के ऊपर एक तीन भिन्न परतें होती हैं। पहिली जो कि शरीर के बिल्कुल समीप होती है, करीब एक चौथाई इन्च के बराबर मोटी होती है और काले रंग की होती है। दूसरी जो मुख्य चीज है और जिसको डा० किल्नर मध्यवर्ती तेजस कहते हैं, कई इंच मोटी होती है। डा० किल्नर ने देखा है कि "मृत्यु के समय तेजस धीरे धीरे संकुचित हो जाता है और शव के चारों ओर बिल्कुल नहीं रहता)" हियर वार्ड कैरिंगटन ने इस प्रसंग में कुछ हब्शियों के ऊपर प्रयोग किये और इनके आधार पर यह लिखा, "इस बात का प्रचुर प्रमाण है कि इस तरह के तेजस का अस्तित्व है और यह नेत्र दोष से उत्पन्न होने वाला कोई भ्रम नहीं है" (*The Story of Psychic Science* पृ० १२८) मास्को में सेन्ट्रल लैबोरेटरी फौर इलेक्ट्रो बायोलौजिक रिसर्च में किये जाने वाले Prof. Tchijewsky के अनुसन्धानों तथा फ्रांस और जर्मनी में Prof. d' Arsonval तथा Prof. Lapioque के अनुसन्धानों से यह साबित हो चुका है कि मनुष्य शरीर को चारों ओर से घेरने वाला शक्ति का यह आवरण जिसे कुछ लोग तेजस (aura) और कुछ वायव्य प्रतिरूप (etheric double) कहते हैं, विद्युत का बना हुआ है। यह आत्मा और स्थूल भौतिक देह का मध्यवर्ती एक उत्कृष्ट रूप से संगठित ढाँचा है।

इससे भी अधिक सूक्ष्म और आध्यात्मिक शक्ति संपन्न दिव्य शरीर (astral body) है जिसके ऊपर पेरिस के Col. de Rochas, M. Hector Durville, Dr. Baraduc M. Charles Lancelin और हालैंड के Dr. Matla तथा

Zaalberg van Zelst प्रभृति ने काफी अनुसन्धान किये हैं। Lancelin द्वारा *Mathode Dedoublement Personnel* और Durville द्वारा *Le Phantome des Vivants* में दिये हुये दिव्य शरीर के वर्णनों से प्रकट होता है कि दिव्य शरीर संवेदनाओं, अनुभूतियों और संवेगों का शरीर है जो कि हिन्दू मनोविज्ञान के मनोमय कोश के समकक्ष है जबकि तेजस जो कि विद्युन्मय है प्राणमय कोश के समकक्ष है। दिव्य शरीर का आकार और रूप स्थूल शरीर के तुल्य पाया गया है, यद्यपि यह सूक्ष्म और हल्का होता है। जाग्रत अस्वथा में यह स्थूल शरीर से चिपका होता है। किन्तु रात्रि में, जब आदमी सोया होता है, दोनों के बीच कुछ अलगाव हो जाता है ऐसा ही बेहोश करने वाली दवा या अन्य कारणों से होने वाली मूर्च्छा की अवस्था में भी होता है। आदमी को प्रयोग से 'चुम्बकीय निद्रा' (magnetic sleep) में डालकर भी दिव्य शरीर को स्थूल शरीर से अलग किया जा सकता है। इच्छापूर्वक ऐसा करना भी सम्भव है, लेकिन तभी जब कुछ विशेष अभ्यासों से इस पर चेतना का अधिकार हो जाता है। मृत्यु के अतिरिक्त दिव्य शरीर के स्थूल शरीर से अलग होने की सभी दशाओं में दोनों के मध्य कोई न कोई सम्बन्ध कायम रहता है जिससे दिव्य शरीर पूरी तरह है अलग नहीं हो पाता। जब कभी जरूरत पड़ती है दिव्य शरीर क्षण में स्थूल शरीर के पास लौट आता है। हाल ही में सिल्वन जे० मल्डून (Sylvan J. Muldoon) और हियरवार्ड कैरिंगटन ने एक बहुत ही रोचक और मूल्यवान ग्रन्थ *"The Projection of Astral body"* प्रकाशित किया जिसमें इच्छापूर्वक दिव्य शरीर को बाहर भेजने की कला की रूप रेखा दी गई है। वास्तविक प्रयोग के आधार पर वे दावा करते हैं कि कोई संदेश या सूचना देने या छाया के रूप में दीख पड़ने के उद्देश्य से दिव्य शरीर को कितनी ही दूरी पर स्थित किसी स्थान या व्यक्ति के पास इच्छानुसार भेजा जा सकता है। इस अवस्था को कुछ लोगों ने आध्यात्मिक विचरण (Psychic excursion) नाम दिया है। मोह निद्रा में यह अवस्था प्रयोगिक तौर पर सफलता के साथ पैदा की जा चुकी है। स्वप्न और आपत्तिकाल में यह अवस्था स्वाभाविक रूप में पैदा होती है। जिन लोगों के पास दिव्य शरीर स्थूल शरीर से अलग होकर पहुँचता है उन्होंने कभी-२ इसे साफ साफ एक छाया के रूप में देखा है। विच्छिन्न अवस्था में दिव्य शरीर के अन्दर व्यक्तित्व का ज्ञान रहता है और उसके ज्ञान क्रिया सम्बन्धी व्यापार कभी कभी तो जाग्रत अवस्था से भी अधिक प्रभावपूर्ण होते हैं। व्यक्ति का यह आत्मज्ञानयुक्त सूक्ष्म प्रतिरूप स्थूल शरीर को जो कि दूर चारपाई पर अचेतन अवस्था में पड़ा रहता है या मूर्च्छित होता है, अपने से भिन्न रूप में देख सकता है। *Proceedings, S. P. R. vol. VII* में डा० विल्टजे (Dr. Wiltze) का रोचक दृष्टान्त लिखा हुआ है जिसने स्वय को स्थूल शरीर को छोड़ते हुये उससे एक 'रजत तन्तु' के द्वारा बंधे हुये तथा कुछ समय बाद वापस आते हुये देखा था। लेखक स्वयं एक ऊँचे सम्भ्रान्त अफसर को जानता है जो अपनी नैसर्गिक शक्ति से दैनिक संध्या के समय अपने दिव्य शरीर को बाहर भेज सकता था। वह गम्भीर बीमारी की अवस्था में भी ऐसा कर सकता था और बाहर से अपने स्थूल शरीर को देख सकता था। कभी कभी मित्रों और सम्बन्धियों ने भी मरते हुये आदमी के दिव्य शरीर को उसके स्थूल शरीर को छोड़ते हुये देखा है। ऐसे दृष्टान्त *Journal of S. P. R. Vol XI* में विस्तार से वर्णित हैं।

दिव्य शरीर से सम्बन्धित इस तरह की घटनाओं की व्यक्ति निरपेक्षता (objectivity) और वास्तविकता सिद्ध करने के लिए फ्रांसीसी अनुसंधानकर्ताओं ने बहुत वैज्ञानिक कार्य किया है। एम० डरविले ने जिसके नाम का उल्लेख पहिले किया जा चुका है, मूर्च्छित व्यक्ति से कुछ दूरी पर कैल्शियम सल्फाइड (Calcium sulphide) के परदे खड़े किये और दिव्य शरीर से उनके पास आने की प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना स्वीकार हुई और उक्त परदे अतिरिक्त प्रकाश से चमकने लगे। डा० माटला और डा० ज़ालबर्ग वान जेल्स्ट ने जो हालैण्ड के चिकित्सा शास्त्री थे, दिव्य शरीर की, भार, घनत्व, आकर्षण इत्यादि भौतिक विशेषताओं को निर्धारित करने के उद्देश्य से प्रयोग और यांत्रिक साधनों के द्वारा बहुत प्रयत्न किये और वे कुछ निश्चित निष्कर्षों पर पहुंचे। उन्होंने एक अत्याधिक जटिल मशीन का निर्माण किया जिसे 'Dynamistograph' नाम दिया गया। इन लोगों का दावा है कि उन्होंने बिना किसी माध्यम की सहायता के इस मशीन के द्वारा न केवल जीवितों के दिव्य शरीरों से बल्कि मृतकों के दिव्य शरीरों से भी सीधा सम्पर्क स्थापित किया। दिव्य शरीर के भार के बारे में इनके जो निष्कर्ष हैं वे बाद से Haverhill, Mass. के Dr. Duncan Mc Dougall के प्रयोगों से बहुत कुछ प्रमाणित हो चुके हैं। Dr. D. Mc Dougall ने दिव्य शरीर का वजन लेने के लिये मृत्यु के समय बहुत चतुराई के साथ बहुत बड़ी संख्या में बीमारों का वज़न लिया। मृत्यु के बाद उनके शरीरों के वजन में २ से २.१/२ औंस तक की कमी देखी गई। यह कहना आवश्यक है कि दिव्य शरीर के बारे में और वैज्ञानिक खोजों से इन तथ्यों के सिद्ध हो जाने के बाद आदमी और ज्यादा शक्तिशाली हो जायेगा और छाया भूत इत्यादि अनेक समस्यायें हल हो जायेंगी।

अलौकिक (Supernormal) ज्ञान

आधुनिक मनोविज्ञान, जो कि साधारण और रूग्ण मानसिक क्रियाओं तथा यंत्र वादी मान्यताओं पर आधारित है, यह मानता है कि बाह्य जगत् और दूसरे व्यक्तियों के विचारों और अनुभूतियों का हमारा ज्ञान स्थूल ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त होता है जो परिवेश में कुछ दूरी पर स्थित उत्तेजनाओं से उत्तेजित होने का फल है। जितने भी विचार, प्रतिमायें और प्रत्यय हमारे मन में हैं वे जीवन में किसी न किसी समय में प्राप्त ऐन्द्रिय संस्कारों की ही उपज हैं। मन में ऐसा कोई भी ज्ञानात्मक तत्व वर्तमान नहीं है जिसका प्रवेश इन्द्रियों के द्वार से न हुआ हो। यदि मन मस्तिष्क के व्यापार के अतिरिक्त कुछ हैं, तो उसे किसी वस्तु या दूसरे मन और उसकी अन्तर्वस्तुओं का सीधा ज्ञान नहीं हो सकता। चेतना के सभी प्रकार शरीर के स्नायु और इन्द्रियों पर अवलम्बित हैं। प्रत्येक मन अन्य मनों से पूर्णतया पृथक है। मस्तिष्क, स्नायु मण्डल और ज्ञान और गति के अवयव ही पृथक मनो के मध्य पुल का काम करते हैं। हमारा ज्ञान देश और काल में सीमित ऐन्द्रिय अनुभव से थोड़ा थोड़ा करके बनता है। अतीत और भविष्य का ऐन्द्रिय प्रत्यक्ष नहीं हो सकता। अतीत की केवल स्मृति हो सकती है और अनागत का केवल अनुमान। वर्तमान वस्तुओं के प्रत्यक्ष की तरह इनका सीधा ज्ञान नहीं हो सकता। वर्तमान का प्रत्यक्ष भी एक सीमित देश के क्षेत्र में ही हो सकता है। ज्ञानेन्द्रियों की साधारण या असाधारण सीमा के बाहर की वस्तुओं का ज्ञान, मनोविज्ञान को अज्ञात विधियों से साधारण साधनों के बिना एक मन को दूसरे मन का ज्ञान, अतीत में घटी हुई या भविष्य में घटने वाली

घटनाओं की अपेरोक्षानुभूति, अपरिचित व्यक्तियों के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का ज्ञान असम्भव है और मानव व्यक्तित्व की प्रचलित मनोवैज्ञानिक धारणाओं के विरुद्ध है। ये भ्रम, धोखा और पाखण्ड मात्र हैं। यदि इनमें कोई सत्य है तो यह है दैवयोग मात्र हैं। इसके बावजूद मनुष्य जाति का एक बहुत बड़ा समुदाय, यांत्रिक और भौतिक विज्ञानों के अध्ययन से जिनका दिमाग बिगड़ा नहीं, ज्ञानेन्द्रियों, देश और काल के प्रतिबन्धों से मुक्त ज्ञान की सम्भावना में हमेशा विश्वास करता आया है। प्रत्येक युग—देश या नगर में कुछ लोग ऐसे हैं या हुये हैं जिसके अन्दर अलौकिक ज्ञान की शक्ति का होना प्रसिद्ध है और प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम एक बार अपने जीवन में एक घटना ऐसी मिली होगी जो वैज्ञानिक मनोविज्ञान की धारणाओं से नहीं समझ में आती। साइकिकल रिसर्च सोसाइटी की स्थापना के बाद अलौकिक ज्ञान के सभी रूपों के बारे में एक क्रम बद्ध वैज्ञानिक और विशाल अध्ययन हुआ है। इस संस्था ने स्वयं होने वाली और विश्वसनीय व्यक्तियों के द्वारा प्रमाणित घटनाओं से तथा पूर्णतया नियंत्रित परिस्थितियों में किये गए निरीक्षणों से विशाल सामग्री का संग्रह किया है। चूँकि यह वैज्ञानिक अनुसन्धान का एक नया क्षेत्र है और नए प्रकार के तथ्यों से इसका सम्बन्ध है, इसलिये एक ऐसी नवीन शब्दावली का निर्माण हुआ है जो वैज्ञानिक मनोविज्ञान को अज्ञात है। अलौकिक ज्ञान सम्बन्धी कुछ नये शब्दों का उल्लेख यहाँ किया जायेगा। प्रो० रिशे ने सभी प्रकार के अलौकिक ज्ञान के लिये 'Cryptesthesia' (प्रच्छन्न संवेदना) शब्द का प्रयोग किया है। एफ० डब्ल्यू० एच० मायर्स ने "किसी प्रकार के संकेतों का ज्ञान इन्द्रियों की सहायता के बिना एक मन से दूसरे मन में पहुँचने" के लिये "telepathy" (दूरानुभूति) शब्द का प्रयोग किया है। डा० जे० बी० राइन ने, पहिले जिसे 'Lucidity', 'Second sight' या 'Clairvoyance' कहा जाता था और जिसमें ज्ञानेन्द्रियों के इस्तेमाल के बिना वर्तमान, समीपस्थ और दूरस्थ वस्तुओं का ज्ञान या प्रत्यक्ष होता है, उसे 'Extra Sensory Perception' नाम दिया। ज्ञाता के मस्तिष्क में पहिले से वर्तमान किसी संस्कार के बिना जब अतीत घटनाओं का ज्ञान पैदा होता है तब इसे "Retrocognition" कहते हैं। इसका दूसरा नाम "Premonition" है और इसका प्रयोग तब होता है जब भावी घटना अपने होने की पूर्व सूचना देती है। जब किसी वस्तु के स्पर्श मात्र से किसी व्यक्ति को उसके अतीत इतिहास का या उससे सम्बन्ध तथ्यों और घटनाओं का ज्ञान हो जाता है तब इसे 'Psychometry' कहते हैं। "Mind Reading" या "Thought Readi g" शब्द का प्रयोग तब होता है जब कोई व्यक्ति अन्य व्यक्ति के मन की बातों का अपरोक्ष ज्ञान रखता तथा उसका वर्णन कर सकता है। "Thought Transference" शब्द का इस्तेमाल तब होता है जब कोई व्यक्ति अपने विचारों को किसी भौतिक या मनोवैज्ञानिक साधन के बिना किसी अन्य व्यक्ति के पास भेज सकता है। Thought Transference में दूरी की कोई गिनती नहीं है।

परामनोविद्या के सभी विद्यार्थी जिन्होंने अपना समय और ध्यान इस पर लगाया है, यह विश्वास रखते हैं कि इस प्रकार के सभी अलौकिक ज्ञान होते हैं और उनमें से बहुसंख्यक तो यह मानते हैं कि जितना हम जानते या कल्पना करते हैं उससे भी अधिक मात्रा में ये होते हैं। नीचे कुछ प्रसिद्ध परामनोविद्या विदों के विचार उद्धृत किये जाते हैं।

प्रायः सभी परामनोविद्याविद् अलौकिक ज्ञान की सत्ता को सिद्ध मान चुके हैं। महान् मनोवैज्ञानिक मैकडूगल (Mc Dougall) का कथन है, "मेरे विचार से विचार संक्रमण (telepathy) के पक्ष में दृढ़ प्रमाण हैं, और मैं आश्वस्त होकर यह भविष्यवाणी करता हूं कि जितना ज्यादा हम इन प्रमाणों की छानबीन और परीक्षा करेंगे उतना ही ये दृढ़तर होते जायेंगे" (*Religion and Science of Life*, पृ० ८०) महान् जर्मन जीवशास्त्री हैन्स ड्रीश (Hans Driesch) का कथन है, "स्वाभाविक विचार संक्रमण एक मौलिक और निश्चित तथ्य है। मनः पर्याय (thought reading) इससे भी अधिक निश्चित है दूरदर्शन (Clairvoyance) निष्पक्ष होकर देखने पर पहिली दृष्टि में मौजूद प्रतीत होता है, लेकिन शायद यह विचार संक्रमण के कारण होता है Psychometry स्पष्टतया एक तथ्य है। भविष्यवाणी (Prophecy) बहुत कुछ सम्भव है (*Psychical Research*) डा० सिग्मंड फ्रायड Sigmund Freud जिसने मनोविश्लेषण सम्प्रदाय की स्थापना की थी और मन के अचेतन स्तर की खोज की थी, लिखता है, "सारे प्रमाणों को तौलने के बाद विचार संक्रमण के अस्तित्व के पक्ष में जबरदस्त दलील मालूम पड़ती है (*New Introductory Lectures*, पृ० ६०)। मैं ही एक मात्र व्यक्ति नहीं हूं जिसका मनोविश्लेषण करते हुये इन गूढ़ तथ्यों से परिचय हुआ है। १९२६ में Helen Deutsch ने भी इस प्रकार के तथ्यों को देखने का उल्लेख किया है। (वही, पृ० ७५) प्रो० रिशे जो कि एक महान् फ्रांसीसी शरीर शास्त्री थे और जिन्होंने अपने जीवन के ३० से अधिक वर्ष परामनोविद्या सम्बन्धी अनुसन्धानों में लगाये, लिखते हैं, "विचार संक्रमण का अस्तित्व है यह अनेक प्रयोगों से सिद्ध हो चुका है (*Thirty Years of Psychical Research*, पृ० ९६)। मनुष्यों के अन्दर जानने की एक महान् शक्ति है जिससे ऐसी सूचनायें उपलब्ध होती हैं, साधारण ज्ञानेन्द्रियों से जिनकी उपलब्धि असम्भव है" (वही, पृ० २०३) "Cryptesthesia अलौकिक ज्ञान की यह शक्ति देश काल के प्रतिबन्धों से मुक्त है" (वही, पृ० २०४) पूर्वज्ञान (premonition) एक सिद्ध तथ्य है (वही, पृ० ३९५) हियरवार्ड कैरिंगटन जो ५० से अधिक वर्षों तक परामनोविद्या की छानबीन में लगे रहे और जो अपना निर्णय देने में बहुत संयम से काम लेते हैं, लिखते हैं, "मैं ज़ोर देकर कहता हूं कि विचार संक्रमण के तथ्यों को मानना ही पड़ेगा, यद्यपि इसकी समुचित व्याख्या अभी तक अज्ञात है : अब यह इतने दृढ़ रूप से स्थापित हो चुका है कि इसके अस्तित्व के बारे में प्रश्न उठाना व्यर्थ है। शायद जितना हम जानते हैं उससे भी अधिक यह होता है। परामनोविद्या के सभी विद्यार्थी इसे तथ्य रूप में स्वीकार कर चुके हैं और इससे भी जटिल तथ्यों की इसके द्वारा करने लगे हैं"। *The Story of Psychic Science*, पृ० २५३) एक अन्य महान् परामनोविद्याविद् टिरेल (Tyrrell) के अनुसार अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष (extra sensory perception) के अस्तित्व के पक्ष में हमारे पास अनुभव से प्राप्त ठोस प्रमाण है" (*Science and Psychic Phenomena* पृ० ११७) एक महान् विज्ञानवेत्ता और नोबेल प्राइज प्राप्त करने वाले डा० अलेक्सिस कैरल (Allexis Carrel) अपने निरीक्षणों और प्रयोगों के आधार पर कहते हैं, "दूरदर्शन और विचार संक्रमण वैज्ञानिक निरीक्षण के मौलिक तथ्य हैं, जिन लोगों को यह शक्ति प्राप्त है वे अपनी ज्ञानेन्द्रियों के उपयोग के बिना दूसरों के गुप्त विचारों को पकड़ लेते हैं। वे देश और काल में दूरस्थ घटनाओं को

भी देख लेते हैं। यह दुर्लभ शक्ति है। थोड़े ही मनुष्यों में इसका विकास होता है। लेकिन अविकसित रूप में यह बहुतों में पाई जाती है। वे अनायास और स्वाभाविक रूप में इसका उपयोग करते हैं इससे उनको ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान की अपेक्षा अधिक निश्चित ज्ञान प्राप्त होता है"(*Man the Unknown*, पृ० १२४) यह निश्चित है कि चाहे दो व्यक्तियों के बीच की दूरी कितनी ही अधिक हो, उनमें विचारों का आदान प्रदान हो सकता है। परामनोविद्या के नवीन विज्ञान के इन तथ्यों को अपने मूल रूप में स्वीकार करना होगा। ये वास्तविक जगत के अंग हैं (वही, पृ० १२४) प्रो० रिशे लिखते हैं, Cryptestheisa प्रच्छन्न संवेदन जो एक रहस्यात्मक शक्ति है और जिसका स्वरूप और कार्य प्रणाली अज्ञात है, भूत और वर्तमान के तथ्यों की भी (*Thirty Years of Psychical Research*, पृ० ३६५) प्रो० मैकडूगल लिखते हैं, "दूरदर्शन अर्थात ज्ञानेन्द्रियों से नितान्त भिन्न साधनों से वास्तविक जगत् के ऐसे तथ्यों की जानकारी जिन को कोई भी जीवित प्राणी नहीं जानता, जो अभी तक एक रहस्य बनी हुई हैं, में प्राचीन काल से जो विश्वास होता आया है वह उचित रूप से स्थापित हो चुका है। इसके अतिरिक्त भविष्य में होने वाली घटनाओं का जो पूर्वज्ञान होता है उसकी प्रायोगिक छानबीन हो रही है और इससे उसके पक्ष में निष्कर्ष निकलने की बहुत आशा है। (*The Riddle of Life*, पृ० २३१) बाविन्क (Bavink) लिखता है, "इस बात पर सब एकमत हैं कि दूसरे व्यक्ति के मानसिक जीवन की बातों का सही ज्ञान होता है और यह ज्ञान ज्ञानेन्द्रियों की साधारण प्रक्रियाओं के द्वारा नहीं होता। Lehmann, Dessoir और Baerwald जैसे सूक्ष्म अनुसन्धानकर्त्ता भी आज विचार संक्रमण के सच्चे अस्तित्व को मानते हैं" (*Anatomy of Modern Science*, पृ० ५२३) Saltmrash लिखता है, "प्रमाणों का एक लम्बे अर्से तक सतर्कता से अध्ययन करने के बाद मेरा व्यक्तिगत विचार यह हुआ है, बल्कि मैं इस निष्कर्ष को अब बाध्य होकर मानता हूं कि पूर्वज्ञान होता है और यह अनुमान जन्य नहीं है अर्थात पूर्वज्ञान के जिन दृष्टान्तों की छानबीन हुई है और जो प्रकाशित हुये हैं उनकी व्याख्या दैवयोग स्मृति का भ्रम या अन्य किसी साधारण कारण से नहीं हो सकती" (*Fore-knowledge*, पृ० ११४) दीर्घ काल तक अध्ययन करने के बाद मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि पूर्वज्ञान अवश्य होता है (वही) Dr. T. W. Mitchell के बारे में *London Times*, ६ सि० १९२७ में यह खबर छपी थी कि उन्होंने ब्रिटिश असोसियेशन के मनो विज्ञान विभाग के १९२७ के सम्मेलन में जो लेख पढ़ा था उसमें कहा था कि विचार संक्रमण अथवा ज्ञान प्राप्ति का अलौकिक तरीका मानना पड़ता है, क्योंकि जो प्रामाणिक तथ्य हमारे सामने हैं, जिनकी न तो व्याख्या हो सकती है और न जिनसे इन्कार किया जा सकता है, उनको देखते हुये विचार-संक्रमण को सत्य मानने के अतिरिक्त दूसरा उपाय नहीं है। टिरेल के द्वारा *Science and Psychic Phenomena* पृ० १५९ में उद्धृत आक्सफोर्ड के प्रो० एच० एच० प्राइस ने *Philosophy* के अक्टूबर १९४ के अङ्क में प्रकाशित Questions About Telepathy and Clairvoyance नामक लेख में लिखा है विचार-संक्रमण और दूरदर्शन के पक्ष में अच्छा प्रचुर प्रमाण है तथा पूर्वज्ञान के बारे में, जो कि अलौकिक तथ्यों में सर्वाधिक विरोधाभासपूर्ण है, प्रचुर साक्ष्य है। "Flammarion कहता है" आत्मा अपनी आन्तरिक दृष्टि से

केवल उन बातों को देख सकता है जो बहुत दूरी पर हो रही हैं, बल्कि भविष्य में जो होने वाली है उसे भी देख सकता है (*The Unknown*. पृ० ४८१) इस तरह के अनेक उद्धरण दिये जा सकते हैं। लेकिन अलौकिक ज्ञान की सत्ता प्रमाणित करने के लिये इतना ही पर्याप्त होगा, जो अनेक परामनोविद्याविदों के मतानुसार यदि सब में नहीं तो कुछ लोगों में तो अवश्य ही होता है।

अतीत प्रत्यक्ष के ऊपर प्रयोग

१८८१-८२ में अनुसन्धानकर्त्ताओं के एक समुदाय ने जिसमें प्रो० विलियम बैरेट, प्रो० सिजविक और उनकी पत्नी, प्रो० बालफ़र स्टुअर्ट तथा प्रो० अल्फ्रेड हौपिन्सन शामिल थे, बक्सटन (Buxton) के पादरी Rev. A. M. Creery के बच्चों के ऊपर विचार संक्रमण की छानबीन के लिये कई सफल प्रयोग किये जिनमें संख्याओं. शब्दों और ताश के पत्तों का इस्तेमाल किया गया। १८८३-८५ में लिवरपूल के Malcolm Cuthrie और लिवरपूल की लिटररी और फिलासफिकल सोसाइटी के मन्त्री Mr. Birchal ने एक बड़ी संख्या में प्रयोग किये जिनमें रेखाचित्र, काल्पनिक दृश्य और स्वाद तथा पीड़ा की संवेदनाओं को सफलता के साथ प्रेषित किया गया। इनमें से कई प्रयोग सर ओलिवर लौज के सामने हुये। १८८५-८६ में फ्राँस के प्रो० पियरे जैने (Pierre Janet) ने प्रयोग किये जिनमें एक दूरस्थ प्रयोज्य (Subject) Leonie को विचार प्रेषण द्वारा सम्मोहित (hypontise) किया गया। १८८९-९० में प्रो० सिजविक, उनकी पत्नी और मि० जी० ए० स्मिथ ने ब्राइटन (Brighton) में रहने वाले एक व्यक्ति को विचार प्रेषण द्वारा सम्मोहित करके कई सफल प्रयोग किये। उसी साल स्वीडन में Kalmar के डा० अल्फ्रेड बैकमैन (Alfred Backman) ने सम्मोहित व्यक्तियों के ऊपर प्रयोग किये जिनको मन ही मन में किसी स्थान विशेष में जाकर वहाँ उस समय होने वाली घटना का विवरण लाने का आदेश दिया गया। Anna Samuelszun जो इन सम्मोहित व्यक्तियों में से एक चौदह वर्ष की लड़की थी, इस तरह के आदेश का पालन करने में उल्लेखनीय रूप में सफल रही। उसने दूरस्थ स्थानों में घटने वाली साधारण दशा में अज्ञात घटनाओं का सही विवरण दिया जो बाद में सत्य सिद्ध हुई। १८९२ में न्यूयार्क के डा० ए० ब्लेयर थॉ A. Blair Thaw ने मिसेज डा (Dow) की उपस्थिति में अपनी पत्नी के ऊपर कई सफल प्रयोग किये। १८९० से १८९५ तक मिसेज वीराल (Verall) ने ताश के पत्तों को लेकर कुछ समय तक अपनी लड़की के ऊपर विचार संक्रमण सम्बन्धी प्रयोग किये। १८९२ में मिस कैम्प-बेल (Campbell) और मिस डेस्पर्ड (Despard) ने काफी दूर तक विचार प्रेषित करने के सफल प्रयोग किये। १९०५ में मिस क्लेरिसा (Clarissa) और मिस हर्मियोन राम्स्डेन Hermione Ramsden ने ४०० मील की दूरी तक विचार प्रेषित करने में सफलता पाई। इस सम्बन्ध में रोचक बात यह पाई गई कि सर्वोत्तम परिणाम तब प्राप्त हुये जब प्रेषक ने अपने विचार प्रेषित करने के लिये कोई विशेष प्रयत्न नहीं किया। १९१० और १९१५ के मध्य डा० गिल्बर्ट मरे ने अत्यधिक सफल प्रयोग किये जिनमें प्रायः उनकी लड़की मिसेज़ आर्नल्ड टायनबी ने प्रेषक (agent) का कार्य किया। इन प्रयोगों को सावधानी से उन्होंने लेखबद्ध किया। १९१२ से १९२१ तक जर्मनी के Dr. Rudolf Tischner ने अत्यधिक सतर्कता के साथ विचार प्रेषण और दूरदर्शन पर बड़ी संख्या में सफल प्रयोग किये जिनका वर्णन उनके उत्कृष्ट ग्रन्थ *Telepathy and Clairvoyance* में हुआ है। १९२८-२९ में प्रसिद्ध अमेरिकन लेखक उपटन सिन्क्लेयर (Upton Sinclair) ने रेखाचित्रों के द्वारा विचार प्रेषणों पर प्रयोग किये जिनमें स्वय उनकी पत्नी ने एक सफल उपलब्धिकर्त्ता (percipient) का कार्य किया। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ *Mental Radio, How to use it*? "में उन्होंने इन प्रयोगों का

विवरण प्रकाशित किया। १६२१ से १६३४ तक एक फ्राँसीसी केमिकल इन्जीनियर Rane Warcollier ने विचार प्रेषण पर प्रयोग किये (देखिये उनका ग्रन्थ *Experiments in Telepathy*) इनका खास उद्देश्य यह समझना था कि इच्छानुसार इस प्रकार के तथ्य कैसे पैदा किये जा सकते हैं। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि विचार प्रेषण "सभी जीवित प्राणियों में चाहे वे सोये हुये हों चाहे जाग्रत अवस्था में, हमेशा लगातार होता रहता है (वही, पृ० २४०) उनका विचार है कि जैसे रेडियम की खोज ने हमारे पुदगल सम्बन्धी विचारों ने क्रान्ति उत्पन्न की है, वैसे ही विचार प्रेषण के ऊपर किये जाने वाले अनुसन्धान हमारी मन सम्बन्धी धारणाओं में क्रान्ति ला सकते हैं" (वही, पृ० २३६)।

अब तक के ये सभी प्रयोग विशेष व्यक्तियों पर किये गये थे जिनके अन्दर अलौकिक ज्ञान की शक्तियाँ थीं अथवा इनके होने की कल्पना थी। हाल में कुछ प्रयत्न सामूहिक तौर पर किये गये, यह जानने के लिये कि जन साधारण में अलौकिक ज्ञान-शक्ति होती है या नहीं। इन प्रयत्नों में पहिले से अधिक नियंत्रण और सावधानी वर्ती गई और निष्कर्षों की गणना शास्त्रीय विधि से (statistically) संग्रह करके गणित से उनको जाँचा गया। कुछ ही दिन पहिले जटिल उपकरणों की सहायता से प्रयोग-शालाओं में अनुसन्धान किया गया। इन विधियों में याँत्रिक और गणित की प्रतिभा के लिये बहुत गुन्जाइश थी जिसने एक बड़ी सीमा तक प्रयोगों से प्राप्त निष्कर्षों को प्रभावित किया, ये निष्कर्ष अलौकिक ज्ञान के पक्ष को मजबूत करते हैं। यहाँ हम इन नवीन प्रकार के प्रयोगों का उल्लेख करेंगे। १६२४ में मिस आइना जेफसन (Ina Jephson) ने जो कि साइकिकल रिसर्च सोसाइटी की काउन्सिल की एक सदस्या थीं, ताश के पत्तों को लेकर शुद्ध दूरदर्शन पर (जिसमें विचार प्रेषण को अलग रखने का प्रयत्न किया गया) कई सफल प्रयोग किये(देखिये *Proc. S. P. R.* Vol. XXXVIII, पृ० २२३-२६८) प्रो० आर० ए० फिशर ने गणित की विधि से निष्कर्षों का मूल्यांकन करने में उसकी सहायता की। थोड़े से प्रयत्न के बाद पत्तों को बिना देखे यह जान जाती थीं कि पत्ता क्या है। तत्पश्चात् उसने ताश पत्तों पर एक सामूहिक प्रयोग करने की सोची और ३०० व्यक्तियों को इस प्रयोग में भाग लेने के लिए निमन्त्रित किया, साथ ही उसने उन लोगों को आवश्यक निर्देश भी भेजे। विधि इस प्रकार थी; एक फेंटी हुई गड्डी से एक पत्ता निकालना, और बगैर देखे उसका अन्दाज करना, एक कागज के ऊपर अपने अन्दाज को दर्ज करना, फिर पत्ते उलटकर देखना और वास्तव में पत्ता क्या है, इसे कागज के ऊपर दर्ज करना इस तरह के पांच प्रयत्न करने थे। उसे २४० व्यक्तियों से ६००० अनुमान प्राप्त हुये। गणना करने पर यह देखा गया कि सफल निष्कर्षों का प्रतिशत उससे कहीं अधिक था जितना दैवयोग मात्र से प्राप्त होता। इस प्रयोग में और ज्यादा सुधार और परिवर्धन करके इसका अनुसरण किया और इस प्रकार जो निष्कर्ष प्राप्त हुये वे कभी अनुकूल थे और कभी प्रतिकूल, उदाहरणार्थ, उक्त मिस जेफसन ने Mr. S. M. Soal और Mr. Theodore Besterman के सहयोग से दूरदर्शन पर एक प्रयोग किया जिसमें ५७६ व्यक्तियों से ६४६६ अनुमान प्राप्त हुये इसमें दूरदर्शन प्रदर्शक अनुमानों का प्रतिशत बहुत कम था। फरवरी १६ सन १६२७ में साइकिकल रिसर्च सोसाइटी ने एक अन्य प्रयोग किया जिसकी घोषणा सर ओलिवर लौज ने बी० बी० सी० माइक्रोफोन पर की। इस प्रयोग के लिये वस्तुओं का चुनाव डा० वूली (Wooley) ने किया। प्रेषकों को एक दूसरे से बिल्कुल अलग करके पृथक-पृथक कमरों में रखा गया और उपलब्धिकर्त्ताओं से भी जो पृथ्वी के विभिन्न भागों में थे, अलग रखा गया। उपलब्धिकर्त्ताओं को ११, १५ और ११, ३५ बजे के बीच प्रेषकों के द्वारा भेजी गई चीजों का अनुमान करना था और तुरन्त अपने अनुमानों को डाक से भेजना था। २४६५६ अनुमान प्राप्त हुये जिनमें से बहुत कम विचार संक्रमण के सूचक थे।

१६३० और १६३४ के बीच ड्यूक विश्वविद्यालय, डरहम, नौर्थ कैरोलाइना में मनोविज्ञान के सहायक प्रोफेसर डा० जे० बी० राइन ने उसी विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान के प्रोफेसर मैकडूगल से प्रेरणा और प्रोत्साहन पाकर अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष के ऊपर अनेक प्रयोग किये। इन प्रयोगों और उनसे प्राप्त निष्कर्षों का वर्णन उन्होंने १६३४ में अपने महत्वपूर्ण ग्रन्थ *Extra Sensory Perception* में प्रकाशित किया। डा० राइन के प्रयोग विभिन्न व्यक्तियों पर पूर्णतया नियंत्रित परिस्थितयों में हुये। उन्होंने इस बात के लिये पूरी सावधानी रखी कि अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष की शक्ति, जिसको उन्होंने विभिन्न मात्राओं में अपने प्रयोज्यों (Subjects) में पाया, के उचित रूप से और आसानी के साथ सक्रिय होने के लिये अनुकूल मनोवैज्ञानिक अवस्था प्रयोज्य के अन्दर पैदा हो। इन प्रयोगों में ताश के पत्तों की सामग्री का भी इस्तेमाल हुआ। डा० राइन का कार्य पूर्णतया वैज्ञानिक माना जाता है और उसका बहुत आदर है। डा० राइन के कार्य के पीछे दो उद्देश्य थे, पहिला "अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष के अस्तित्व और विस्तार के प्रश्न का यदि सम्भव हो तो गणित के निर्विवाद साक्ष्य से, उत्तर देना" और दूसरा अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष का अन्य मानसिक प्रक्रियाओं से तथा मनोवैज्ञानिक और भौतिक परिस्थितियों से सम्बन्ध ढूँढकर उसे अधिक अच्छी तरह से समझने का प्रयास करना (*Extra Sensory Perception*, पृ० ४६) पहिले प्रश्न का जिससे कि इस समय हमारा मुख्य सम्बन्ध है, उत्तर डा० राइन ने विश्वास के साथ बल देकर यह दिया है "कि अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष वास्तविक है और इसको प्रदर्शित किया जा सकता है" (वही पृ० २२३) "दूरी की सामग्री और सामान्य तथ्यों से यह सुझाव मिलता है कि अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष में मन विस्तार और दूरी के साधारण-भौतिक सम्बन्धों से मुक्त है" (वही, पृ० २२५) प्रत्येक मनोवैज्ञानिक को डा० राइन के ग्रन्थ का सावधानी के साथ अध्ययन करना चाहिये तथा प्रत्येक मनोवैज्ञानिक को प्रयोग-शाला में इस अनुसन्धान को आगे बढ़ाना चाहिये। लेकिन खेद है कि बहुत कम मनो-वैज्ञानिकों ने इस किस्म के अनुसन्धान पर ध्यान दिया है। राइन के कार्य में और सुधार करने वाले वैज्ञानिकों में जी० एम० एन० टिरेल (Tyrrell) एक थे। टिरेल ने मिस जौनसन और अन्य प्रयोज्यों पर पूर्णतया प्रयोगिक परिस्थितियों में अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष विषयक प्रयोग किये हैं। साइकिकल रिसर्च सोसाइटी की काउन्सिल का आदेश पाकर उन्होंने ३ अप्रैल और ४ नवम्बर १६३५, के बीच नव निर्मित Pointer Apparatus की मदद से Miss Gertrude Johnson और ३० अन्य प्रयोज्यों की परीक्षा की। इनमें से कुछ प्रयोज्यों को 'Electric Apparatus' से और अधिक परीक्षा के लिए चुना गया। टिरेल के कुछ प्रयोगों को डा. ब्रोड (Dr. Broad) मिसेज़ अल्फ्रेड लिटिलटन (Alfred Lyttelton) मि. गेराल्ड हर्ड (Gerald Heard) मि. केनेथ रिचमौंड (Kenneth Richmond) और कई अन्य प्रसिद्ध व्यक्तियों ने देखा और इनमें से कुछ ने प्रयोज्य का काम भी किया। कुछ निष्कर्ष जो टिरेल को अत्यधिक जटिल और सतर्क प्रयोगों से प्राप्त हुये (*Proc. S. P. R.* भाग १४७, पृ० ६६ से आगे विस्तार से वर्णित) ये हैं: (१) अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष एक निर्विवाद तथ्य है। प्राप्त दृष्टान्तों की इससे अतीरिक्त कोई युक्ति-पूर्ण व्याख्या नहीं हो सकती। (२) विचार संक्रमण जैसा कि सामान्यतया इसे समझा जाता है, की सम्भावना के न रहने पर भी अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष होता है। (३) पूर्वज्ञान का प्रबल समर्थन करने वाला साक्ष्य उपलब्ध है। (वही, पृष्ट १६४)।

दूरदर्शन का अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष पर किये जाने वाले प्रयोगों में सर्वाधिक उल्लेखनीय और आश्वस्त करने वाले वे हैं जो पोलैण्ड के शौकीन दूरदृष्टा M. Stefan Ossowieckie पर किये गये। इन प्रयोगों में से दो का उल्लेख अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष को सिद्ध करने के लिये पर्याप्त होगा। इनमें से एक १६२३ में वारसा में होने वाली द्वितीय इन्टरनेशनल साइकिकल कांग्रेस के अवसर पर किया गया। इरिक जे० डिन्गवाल (Eric J. Dingwall) जो ब्रिटिश सोसाइटी फॉर साइकिकल रिसर्च के तत्कालीन भौतिक

तथ्यों के लिये नियुक्त अनुसंधान पदाधिकारी थे, ने एक कागज पर लैटिन में एक वाक्य लिखा, उस पर कोई तिथि डाली और लिखी हुई पंक्तियों के नीचे एक तस्वीर बनाई। इस कागज को मोड़कर लाल रंग के एक अपारदर्शी लिफ़ाफे के अन्दर रख दिया गया। इस लिफाफे को एक भूरे कागज के तंग लिफाफे के अन्दर रखकर मोहरबन्द कर दिया गया। Ossowieckie ने दूरदर्शन के द्वारा अंदर रखे कागज पर लिखी हुई बातों को सही-२ बता दिया जिससे कांग्रेस के सदस्यों को बड़ा आश्चर्य हुआ (पूरे विवरण के लिये *Journal, S. P. R. May* 1924 देखिए) थियोडोर बेस्टरमैन (Theodore Besterman) ने,१९३३ में, जो साइकिकल रिसर्च सोसाइटी के अनुसन्धान पदाधिकारी थे उसी माध्यम की पुनः परीक्षा की। एक गुप्त और अदृश्य निशानों से युक्त कागज को विशेष तरीके से कई लिफाफों के अंदर रख दिया गया और Ossowieckie ने उन निशानों को सही सही बता दिया है। लिफाफों की यह गड्डी साइकिकल रिसर्च सोसाइटी, लण्डन में तैयार की गई और लार्ड चार्ल्स होप (Lord Charles Hope) के संरक्षण में रही। सारी कार्रवाई पर लार्ड होप, मि० जोन ऐवलीन (John Evelyn) प्रिंस जे० वोरोनिकी (Woroniecki) और सात अन्यों के दस्तखत हैं जो लिफाफों के अंदर के निशानों के सही सही उद्‌घाटन के समय मौजूद थे। थियोडोर बेस्टरमैन ने अपनी रिपोर्ट में लिखा : "यह दिखाई पड़ता है कि ओसोविकी ने जो बताया वह बिलकुल ठीक है।" अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष के ऊपर किये हुये ये दो प्रयोग सर्वाधिक निर्णायक हैं।

पूर्व-ज्ञान (Precognition)

पूर्वज्ञान के अच्छी तरह से प्रमाणित और सत्यापित दृष्टांत निम्नलिखित लेखों और ग्रन्थों में वर्णित हैं। *Proc. S. P. R.* Vol., V पृ० २८८-९४ पर प्रकाशित मिसेज हेनरी सिजविक का "On the Evidence of Pr emonitions शीर्षक लेख, साल्टमार्श का *Fore-knowledge,* डेम ईडिथ लिटिलटन (Dame Edith Lyttelton) द्वारा संकलित *Some Cases of Prediction,* प्रो० रिशे का *L' Avenir etla Premonition,* दिसम्बर १३,१९३५ के *Spectator* में प्रकाशित साल्टमर्श का लेख, टिरेल का *Science and Psychic Phenomena* (पृ० ३९-४९), अर्नेस्ट बोजानो (Ernest Bozzano) का *Des phenomenes Premonitoire, Proc. S. P. R.* Vol XI पृ० ३३४-३९३ पर प्रकाशित, एफ. डबल्यू. एच. मायर्स का "*Retrocognition and Precognition*" "शीर्षक लेख, मोरिस मीटरलिंक (Maurice Maeterlinck) का "*The Unknown Guest* तथा यजीन ओस्टी (Eugen Osty) का *'La Connaissance Super normale'* साल्टमार्श के अनुसार पूर्वज्ञान पर "इतना अधिक साक्ष्य है कि उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है।" कैरिंगटन के अनुसार "हमारे पास असन्दिग्ध और ठोस तथ्य है और समय समय पर ये अच्छी तरह से प्रमाणित हुए हैं" (*The Story of Psychic Science* पृ० २९९)।

अतीत का प्रत्यक्ष (Retrocognition)

इसका सबसे रोचक दृष्टांत दो महिलाओं, मिस अन्नो मोबरली (Anne Moberely) और मिस ई० एफ० जोरडेन (Jourdain) ने अपने ग्रंथ *'An Adventure'* में दिया है। उनका कथन है कि १९०१,१९०२,१९०४ और १९०८ में कई अवसरों पर उन्हें ऐसा अनुभव हुआ है कि वे १७८९ में मेरी ऐन्टायनेट (Marie Antoinette) के काल में वर्साईलीज(Versailes)के बागों में घूम रही हैं। मिस(X)ने भी अपने *Essays in Psychical Research* में एक रोचक दृष्टान्त दिया है। जैसा कि एच. वुड(H. Wood) कृत *After Thirty Centuries* से ज्ञात होता है एक अंग्रेज लड़की रोजमैरी (Rosemerry) ने प्राचीन मिस्र की घटनाओं का बहुत सही वर्णन किया है।

PSYCHOMETRY

प्रसिद्ध अमेरिकन माध्यम मिसेज पाइपर (Piper) अपनी समाधि-अवस्था में (psychometry) की शक्ति रखती थी, जैसा कि मिसेज हेनरी सिजविक द्वारा *Proc.* vol. XXVIII पृ० ३०६ पर प्रकाशित उसके वर्णन स ज्ञात होता है। डा० यूजीन ओस्टी जिसने मनुष्य की अलौकिक शक्तियों के अध्ययन के लिए चिकित्सा का अपना बढ़ा-चढ़ा पेशा छोड़ दिया था और पेरिस में Institute Metaphysique का संगठन किया था, अपने प्रसिद्ध ग्रंथ Super-normal faculties of Man, पृ० १६० पर अनेक दृष्टान्तों को उल्लेख करता है। इनमें से एक दृष्टान्त मैडेम मोरेल (Morel) का है जो अत्यधिक संवेदनशील थी और चीजों से उन व्यक्तियों की विशेषतायें जानने की शक्ति रखती थी जिनके सम्पर्क में वे चीजें आ चुकी थीं। किसी वस्तु का स्पर्श करके वह उस वस्तु का स्पर्श कर चुकने वाले व्यक्तियों का वर्णन कर सकती थी, वस्तु का एक स्पर्श-मात्र उसकी विचारधारा को प्रारम्भ करने के लिये पर्याप्त होता था। वह ऐसी घटनाओं तक का वर्णन सही-सही कर लेती थी जो कि वस्तु के स्वामी के साथ वस्तु के अलग हो जाने के बाद घटी थीं। डा० ओस्टी का कथन है कि कुछ संवेदनशील व्यक्तियों को तो वस्तु की भी आवश्यकता न थी। वे भूत, वर्तमान और भविष्य सभी कालों से सम्बन्धित सूचनायें दे देते थे। ओस्टी के अनुसार वस्तु संवेदनशील व्यक्ति का अन्य व्यक्ति से सम्बन्ध (rapport) जोड़ने का काम करती है। प्रो० विलियम डेन्टन (William Denton) कृत "*The Soul of Things*" नामक पुस्तक Psychometry से सम्बन्धित ऐसे प्रयोगों से भरी पड़ी है जो उन्होंने अपनी पत्नी और बहिन को माध्यम बनाकर किये थे। उनकी पत्नी, बहिन और लोगों के भेजे हुये पत्रों को देखकर आसानी से उनकी विशेषतायें बता सकती थीं। डेन्टन की पुस्तक १८६३ में प्रकाशित हुई थी। *Proc. A. S. P. R.* Vol XV पृ० १८६-३१४ मे प्रकाशित डा० वाल्टर प्रिंस (Walter Prince) का "Psychometric Experiments with Maria Reyes de Z" शीर्षक लेख भी पढ़ने योग्य है। *Proc. A. S. P. R.* Vol XVI पृ० १-१३६ में प्रकाशित Dr. Pagenstecher के "Past Events in Seer ship" शीर्षक लेख में भी Psychometry का रोचक वर्णन है।

स्फटिक दर्शन (Crystal gazing) स्वयं लेखन (Automatic writing) तथा स्वयं भाषण (Automatic Speech) के द्वारा होने वाला अलौकिक ज्ञान।

भारत में भी स्फटिक दर्शन स्वयंलेखन और स्वयंभाषण बहुत सामान्य है। देवज्ञ, भविष्यवक्ता और वे जो जिज्ञासुओं का उनके मृत रिश्तेदारों और मित्रों से वार्तालाप कराने का दावा करते हैं, ये सभी इनका उपयोग करते हैं। अचेतन ग्रन्थियों को खोजने के लिये मनस्चिकित्सक और मनोविश्लेपक भी इनका इस्तेमाल करते हैं।

स्फटिक-दर्शन—

स्फटिक-दर्शन में निम्नलिखित बातें होती है: स्फटिक द्रष्टा एक स्फटिक, शीशे का गोला, पानी का तालाब, स्याही की तश्तरी अथवा काली पृष्ठभूमि वाली किसी भी वस्तु की चमकीली सतह पर अपनी दृष्टि केन्द्रित करता है। आँखों की पलकों को बन्द

किये बगैर ध्यान से देखते रहने से साधारण चेतना कुछ मन्द पड़ जाती है; इसके पश्चात् द्रष्टा "Scryer" स्फटिक अथवा कोई भी वस्तु जिसका इस्तेमाल हो रहा है, की चमकीली सतह (Speculum) पर प्रतिमायें, आकृतियों, व्यक्ति, घटनायें या दृश्य देखने लगता है। स्फटिक में जो कुछ दिखाई देता है। वह सामान्यतया द्रष्टा के मन से बाहर प्रक्षिप्त विभ्रममूलक आकृति होती है और असाधारण मनोविज्ञान तथा मनोविश्लेषण से उसकी व्याख्या हो सकती है। वह अतीत की स्मृति, भविष्य की सम्भावना तथा गुप्त ग्रन्थियों का नाटकीय प्रकाशन मात्र होता है। लेकिन उसके बारे में इतना कह देना पर्याप्त नहीं है। स्फटिक दर्शन के तथ्यों की पूरी तरह से छानबीन करने के बाद यह ज्ञात होता है कि द्रष्टा को दिखाई देने वाली चीजों में अतीत की स्मृतियों के अतिरिक्त ये चीजें भी शामिल रहती है : (१) उन वस्तुओं की प्रतिमायें जिनका द्रष्टा ने अभी अपने जीवन में बिल्कुल अचेतन अवस्था में निरीक्षण किया था; (२) अन्य मनों से अचेचन रूप से प्राप्त विचारों की प्रतिमायें अथवा दूरदर्शन से प्राप्त वस्तुविषयक विचारों की प्रतिमायें तथा (३) भावी घटनाओं की प्रतिमायें। इनमें से प्रत्येक के दृष्टान्त मिस एक्स कृत *"Essays in Psychical Research"* में बड़ी संख्या में दिये गए हैं। यद्यपि यह सामान्यतया ठीक है कि द्रष्टा को स्फटिक में जो चीजें दिखाई देती है द्रष्टा के मन की ही प्रतिमाएँ होती हैं, चाहे उनका उद्गम कुछ भी हो; तथापि कुछ अच्छी तरह से परीक्षित दृष्टान्तों में इन चीजों में भौतिक जगत् की वस्तुओं की सी सत्यता और व्यक्ति-निरपेक्षता पाई गई है, क्योंकि दर्पण में उनकी छाया देखी गई, आतशी शीशे में देखने से उनका आकार बड़ा पाया गया, और कई लोगों ने एक साथ उनको देखा। जैसे देखने के लिए स्फटिक का इस्तेमाल होता है, वैसे ही सुनने के लिये शंख का इस्तेमाल होता है। शंख के अन्दर सुनी जाने वाली ध्वनियाँ भी स्फटिक दृश्यों की भांति कई तरह की होती हैं।

स्वयं लेखन—

अलौकिक सूचनायें प्राप्त करने का स्वयं लेखन भी एक साधन है। इसमें लेखक की चेतना से भिन्न किसी उद्गम से उत्तर या संदेश प्राप्त करने के लिये एक प्लेन्चेट (Planchette) Ouija board, या केवल एक पेन्सिल का इस्तेमाल होता है। स्वयं लेखन में लेखक अपनी चेतना को लिखने के कार्य से हटाकर अपने हाथ और उसमें थमे हुये उपकरण को बिल्कुल स्वतन्त्र छोड़ देता है। कभी-कभी बहुत से विचित्र और अप्रत्याशित उत्तर या संदेश मिलते हैं जिनको मृत आत्माओं से प्राप्त माना जाता है। लेकिन ये सब समान मूल्य नहीं रखते। स्वयं लेखन में तस्वीरें, रेखाकृतियाँ और रंगीन चित्र इत्यादि शामिल हैं। मनोविश्लेषण विज्ञान से अचेतन मन के बारे में हमें जो नई जानकारी हुई है उसके प्रकाश में देखने पर स्वयं लेखन के तथ्यों में कोई विचित्रता नहीं प्रतीत होती। फिर भी स्वयं लेखन से कभी-कभी ऐसी बातें मालूम हुई हैं जिनका लेखक को अपने जीवन में कभी अनुभव नहीं हुआ और जो सत्य प्रमाणित हुई हैं, तथा कभी-२ ऐसी बातें भी मालूम हुई हैं जो संदेश भेजने वाली मृत आत्मा के अस्तित्व को सिद्ध करती हैं। इन बातों से यह दृढ़ सुझाव मिलता है कि स्वयंलेखन में विचार संक्रमण और दूर दर्शन काम करता है अथवा कोई मृत आत्मा उपस्थित रहती है। कैरिंगटन ने लिखा

है:-"तख्ते का घूमना रहस्यात्मक नहीं है, बल्कि उससे जो सूचना प्राप्त होती है वह रहस्यात्मक है और इसमें शंका करना तर्क संगत नहीं मालूम पड़ता कि इस तरीके से बैठने वालों को अज्ञात असाधारण सूचनायें प्राप्त हुई हैं (*Physical Phenomena and the War*. पृ० १२१) स्वयंलेखन का एक अत्यंत उल्लेखनीय दृष्टान्त "थौम्पसन गिफर्ड केस" (Thompson Gifford Case) के नाम से प्रसिद्ध है जिसकी छानबीन डा० हिस्लप (Dr. Hyslop) ने की थी। यह *Proc.* A. S. P. R. में प्रकाशित हुआ था और डा० हिस्लप ने अपने ग्रन्थ *Contact with the other World* पृ० २०३-२३० में इसका संक्षेप किया। यह संक्षेप में इस प्रकार है थौम्पसन अपने जीवन में कभी चित्रकार नहीं रहा। लेकिन १६०५ में उसने स्वयं लेखन द्वारा रंगीन चित्र बनाना शुरु किया तथा जिन दृश्यों को चित्रित करने की उसे प्रेरणा मिलने लगी उनके विभ्रम उसे दीखने लगे। ये दृश्य ऐसे थे जिनका अनुभव उसे अपने जीवन में पहले कभी नहीं हुआ। बाद के अन्वेषणों से ज्ञात हुआ कि उसके चित्र एक मृत चित्रकार गिफर्ड के चित्रों से बहुत कुछ सादृश्य रखते थे। ये गिफर्ड के जीवन में अनुभूत दृश्यों के चित्र थे जिनको चित्रित करने की गिफर्ड ने कोशिश की थी लेकिन यह कार्य अधूरा छूट गया था। थौम्पसन को गिफर्ड के जीवन का कोई परिचय न था। इन बातों को न जानने वाले माध्यमों के साथ जब डा० हिस्लप ने कई Cross Correspondence गोष्ठियां कीं तब यह प्रकट हुआ कि अपना कार्य अधूरा छोड़ जाने वाली गिफर्ड की आत्मा थौम्पसन के हाथों को चला रही थीं।

कुछ आवश्यक परिवर्तन करके यही स्वयं भाषण के बारे में भी कहा जा सकता है। असाधारण मनोविज्ञान तथा मनोविश्लेषण के अनुसार स्वयं भाषण भी हमारे मन के अचेतन स्तर में रहने वाली दबी हुई विछिन्न ग्रन्थियों का वाणी में प्रकाशन है। लेकिन स्वयं भाषण के कुछ ऐसे रोचक और रहस्यमय दृष्टान्त हैं जिनमें भाषण कर्त्ता ने अज्ञात विदेशी भाषाओं का सही और धारा प्रवाह उच्चारण किया है। कैरिंगटन ने लिखा है, इस तरह की गोष्ठियों में बहुधा अलौकिक सूचनायें मिलती हैं, माध्यमों से सीधे प्राप्त प्रमाणों का इतना बड़ा संग्रह मौजूद है जो यह सिद्ध करता है कि माध्यम कभी-कभी बिल्कुल अज्ञात भाषायें बोलते हैं (*Story* पृ० २४१) मिसेज करेन (Curren) और मिस रोजमैरी इस बात के सर्वोत्कृष्ट और सुपरिक्षित दृष्टान्त हैं। मिसेज करेन का दृष्टान्त डा० वाल्टर फ्रैन्कलिन प्राइस (Walter Franklin Price) कृत *The case of Patience Worth* तथा कैस्पर एस योस्ट (Casper S. Yost) कृत Patience Worth: A Psychic Mystery में वर्णित है। मिस रोजमैरी का दृष्टान्ट फ्रेडरिक हौवर्ड वुड (Frederic Howard Wood) कृत "After Thirty Centuries" में तथा A. J. Howard Hulme और फ्रेडरिक एच० वुड कृत "Ancient Egypt Speaks" में वर्णित है। मिसेज जोन एम० करेन एक अमेरिकन महिला थी। उसे साधारण शिक्षा प्राप्त हुई थी और यात्राओं से उसके अनुभव में कोई वृद्धि नहीं हुई थी। वह कई शताब्दी पूर्व जीवित Patience Worth की आत्मा के प्रभाव में आकर एक तरह की उत्तर मध्ययुगीन अँग्रेजी में उत्कृष्ट साहित्यिक रचनाओं को बोलकर लिखा सकती थी, जिनमें से कुछ प्रकाशित हो चुकी है। मिस रोजमैरी नोना (Nona) नामक एक प्राचीन मिस्री महिला के प्रभाव में आकर प्राचीन मिस्र की

मृत और अज्ञात भाषा को आधुनिक काल में पहिली मर्तबे बोल सकती थी जिसे प्रसिद्ध इजिप्ट विद्या विशारद (Egyptologist) Hulme ने प्रमाणित किया।

DOWSING

अलौकिक ज्ञान का एक विशेष रूप dowsing कहलाता है जिसका अर्थ है भूमि में दबे हुये जल के स्त्रोत का ज्ञान। इस तरह का ज्ञान अलौकिक होता है और शायद अचेतन रूप से प्राप्त होता है। व्यक्ति एक V की शक्ल की टहनी हाथ में पकड़े रहता है और जब वह भूमि में छिपे जल स्त्रोत के ऊपर खड़ा होता है तब उसके हाथों में अनैच्छिक गति पैदा होती है जिससे टहनी ज़ोर से हिलने लगती है। इस तरह से कभी कभी तेल और धातुओं का भी पता लगा है V की शक्ल की टहनी के अलावा अन्य साधनों का भी इस्तेमाल किया जाता है। Dowsing के बारे में बहुत अनुसन्धान हुआ है और इस बात का निर्णय करने के लिये भी बड़ी खोज हुई है कि dowsing एक तथ्य है या अन्धविश्वास मात्र। सर विलियम बरेट ने इस विषय की बहुत छानबीन की जिसके दो लम्बे विवरण *Proceedings, S. P. R.* Vol XIII, पृ० २--२८२ तथा Vol. XV पृ० १३०—३८२ में प्रकाशित हुये हैं। इसकी सत्यता की परीक्षा के लिये कई वैज्ञानिक कमीटियाँ नियुक्त की गईं और सभी को इसकी सत्यता का विश्वास हो गया। हियरवार्ड कैरिंगटन ने लिखा है. Dowsing न तो भ्रम है और न अन्धविश्वास, बल्कि एक सचाई है। द्रष्टा को न तो भ्रान्ति होती है और न वह धोखा देने की कोशिश करता है। इस तथ्य की जो भी व्याख्या हो, यह निश्चित है कि यह सत्य है। भूमि में छिपे पानी का पता लगाने वाला अपने पहिले भूगर्भ विषयक ज्ञान को इस्तेमाल नहीं करता। भूमि की सतह पर पाये जाने वाले लक्षणों से उसे कोई मदद नहीं मिलती। तथ्यों की जानकारी रखनेवाला कोई भी व्यक्ति dowsing की सच्चाई और वास्तविकता में सन्देह नहीं कर सकता" (*Story,*) P. 164)

Dowsing के अनेक प्रमाणिक दृष्टान्तों को उद्धृत किया जा सकता है। यहाँ केवल एक का उल्लेख किया जायेगा। अगस्त १९१६ के *Occult Review* मे उसके सम्पादक रेल्फ शिर्ली (Ralph Sirley) ने स्पष्ट शैली में बताया है कि कैसे पिछले महायुद्ध में गैली पोली (gallipoli) में ब्रिटिश सेना पानी के अभाव में मरने से बची और कैसे सल्वा बे के अभियान (Sulva Bay Expedition) को सैपर केली (Sapper Kelley) ने पानी खोजकर सफल बनाया। लिखा है कि एक सप्ताह के अन्दर केली ने बत्तीस कुओं का पता लगाया।·· इन प्रयोगों के पूर्व इंजीनियरों ने पानी का पता लगाने की कोशिश करते हुये केली के द्वारा बताये हुये स्थान से ५० गज की दूरी के अन्दर की जमीन में मशीन के धुरे प्रविष्ट किये और इतनी गहराई में जितनी केली के अनुसार आवश्यक नहीं थी, इतने पर भी कोई सफलता नहीं मिली थी। सफल dowsing के अन्य दृष्टान्त कैरिंगटन कृत *Story* पृ० १६०—६२ पर हैं।

Dowser की टहनी या कोई भी अन्य साधन जिसका वह इस्तेमाल करता हो, भूमि मे छिपे पानी से कैसे प्रभावित होती है यह अभी तक रहस्य बना हुआ है। योरप के अनुसन्धान कर्ताओं ने रेडियो ऐक्टिविटी (Radio Activity) इलेक्ट्रो करेन्टस (Electro Currents), बायोलौजिकल रेडियेशन (biological radiation)

इत्यादि भौतिक शारीरिक धारणाओं के द्वारा इन तथ्यों की व्याख्या करने का प्रयत्न किया है जिनका आलोचनात्मक वर्णन संक्षेप में म्यूनिक के Count Carl V. Klinckowstroem ने अप्रेल, १६२५ के Journal of S. P. R. में प्रकाशित किया है। इसमें तो कोई सन्देह नहीं है कि dowser जिस उपकरण का इस्तेमाल करता है वह उसकी पेशियों की अचेतन गति से हिलता है। लेकिन यह अज्ञात है कि क्यों उस स्थान पर खड़े होने से ही पेशियों की यह अचेतन गति होती है जिसके नीचे पानी छिपा है। मैं समझता हूं सर विलियम बैरेट की यह परिकल्पना सही है कि dowser को पानी का ज्ञान एक प्रकार के अचेतन दूर दर्शन से होता है जो अचेतन पैशिक गति उत्पन्न करता है।

प्रतिभा (Genius)

कभी कभी ऐसा देखा जाता है कि किसी अत्यन्त जटिल समस्या का बना बनाया हल, नवीन और बिल्कुल मौलिक विचार और योजनायें, अत्यन्त उच्च कोटि की बौद्धिक प्रक्रियाओं के उत्कृष्ट फल, अत्यधिक जटिल कलाकृतियां अथवा पहिले से अज्ञात और बिना सीखी हुई प्रतिक्रियायें किसी व्यक्ति की चेतना में विद्युत् गति से और असाधारण स्पष्टता के साथ आ जाती है जबकि व्यक्ति अन्य बातों में औसत या औसत से कम योग्यता वाला होता है। प्रतिभा की यह चमक या "प्रेरणा" स्पष्टतया यह प्रदर्शित करती है कि उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का कोई गहरा और अज्ञात स्तर कम से कम अपनी प्रतिभा के क्षेत्र में अलौकिक ज्ञान की योग्यता रखता है। साधारण और असाधारण मनोविज्ञान ने इसकी व्याख्या "वंशानुक्रम" "Constructiveness" "एकाग्रता" "धैर्य" (patience) "सामान्यबुद्धि" (Common sense) "anticipation," breadth of mind "परिश्रम" (merely hard work)। उदात्त चरित्र "अर्जित कुशलता" (talent) "जातीय स्मृति" (racial memory) तथा विच्छेद" (dissociation) इत्यादि के द्वारा करने का प्रयत्न किया है जो कि असफल सिद्ध हुआ है। अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियों के व्यक्तिगत अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि अनेक दृष्टान्तों यथा, जड़ बुद्धि व्यक्तियों का कठिन से कठिन संगीत को आसानी और सुन्दरता के साथ बाजे पर बजाना छोटे बच्चों का संख्याओं का घनमूल निकालना या तुरन्त अपनी आयु को सेकिंडों में बता देना, शिशुओं का स्तर लय और संगीत रचना कला का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त किये बिना स्वर्गीय संगीत की रचना करना, इत्यादि उनका चेतन मन कार्योत्पत्ति में बिल्कुल भाग नहीं लेता और उनको इसका कोई ज्ञान नहीं होता कि उनके मन में जो "चमक" पैदा होती है वह कहां से आती है। अतः एफ० डबल्यू० एच० मायर्स का यह कथन ठीक मालूम होता है कि "प्रतिभा की प्रेरणा" वास्तव में जिन विचारो में व्यक्ति जान बूझकर लगा है उनके मध्यम ऐसे विचारों का अचानक प्रस्फुटित होना है जो चेतना से उत्पन्न नहीं है, बल्कि जो उसके अज्ञान में ही और उसके संकल्प के बगैर उसके व्यक्तित्व की गहराई में विकसित होते रहे। "*Human Personality* Abridged पृष्ठ ५६। देखिये, (see Hereward *Carrington : The Psychic world, "Psychology of Genius"*)

Materialization (भौतिकीकरण) और Ectoplasm

एक अत्यन्त विचित्र अव्यारव्येय और विरोधाभास युक्त प्रतीत होने वाला तथ्य

जिसकी सचाई को परामनोविद्या के क्षेत्र में किये जाने वाले अनुसन्धानों ने असन्दिग्ध प्रमाणित कर दिया है, materialization (भौतिकीकरण) के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें सच्ची किन्तु अस्थायी, पूर्ण या आँशिक मानवकृतियां अथवा शिर, हाथ, पाँव इत्यादि अंग बनते हैं और यह गोष्ठी के कमरे में माध्यम की उपस्थिति में होता है जिसके ऊपर पूरी निगरानी और नियंत्रण रखा जाता है। ये आकृतियाँ बैठने वालों में से किसी एक के मृत रिश्तेदार या मित्र की मानी जाती हैं। इन आकृतियों की स्पष्टता विविध मात्राओं की होती है तथा इनके सत्ता काल की दीर्घता भी अलग अलग होती है। इनके आकार भी भिन्न भिन्न होते हैं। पूर्ण भौतिकीकरण होने पर वे साधारण मनुष्यों की तरह या बिल्कुल मनुष्य ही लगती है।

भौतिकीकरण का सर्व प्रथम वैज्ञानिक अनुसंधान प्रसिद्ध भौतिक और रसायन विज्ञान के ज्ञाता सर विलियम कुक्स ने किया था। इन्होंने मिस कुक की उपस्थिति में होने वाले इस प्रकार के तथ्यों के आलोचनात्मक अध्ययन में पूरे तीन साल लगाये। पेरिस के शरीर विज्ञान के प्रोफेसर रिचेट ने भौतिकीकरण तथा अन्य अलौकिक भौतिक और आध्यात्मिक तथ्यों के अध्ययन में ३० से अधिक वर्ष लगाये। डा० क्राउफर्ड (Crawford) जो कि बेलफास्ट विश्वविद्यालय में मेकेनिकल इंजीनियरिंग के प्रोफेसर थे, पाँच वर्ष तक Miss Kathlic Goligher की उपस्थिति में होने वाले भौतिकीकरण का अध्ययन करते रहे। म्यूनिक विश्वविद्यालय मे मनोविज्ञान के प्रोफेसर Baron von-Schrenck Notzing ने Eva Carriere, Marthe Beraud और Mlle Stainslawa P की उपस्थिति में होने वाले भौतिकिकरण अध्ययन में पन्द्रह वर्ष व्यतीत किये। पेरिस के Institute Psychologique के प्रो० Gustave Geley ने प्रसिद्ध फ्रान्सीसी माध्यम Eva C की उपस्थिति में होने वाले भौतिकीकरण का सूक्ष्म अध्ययन किया। मिशिगन विश्वविद्यालय के एरौनोटिकल इजीनिरिंग के प्रोफेसर F W Powlowski ने एक पोलैण्ड की माध्यम Franek Kluski की उपस्थिति मे होने वाले भौतिकीकरण का अध्ययन किया। हियरवार्ड कैरिंगटन ने यूसेपिया पल्लाडीनो की उपस्थिति में होने वाले भौतिकीकरण का निरीक्षण किया। इस माध्यम ने योरप के विभिन्न शहरों में बीस से अधिक वर्ष तक गोष्ठियों में भाग लिया। जितने भी अनुसन्धानकर्ताओं ने इस विषय की सतर्कता के साथ पूरी पूरी छानबीन की वे सब यह एकमत होकर मानते हैं कि चाहें इनकी व्याख्या कोई हो, ये तथ्य सच्चे हैं और कि भौतिकीकरण प्रकृति का एक तथ्य है। हियरवार्ड कैरिंगटन ने लिखा है : "मेरे विचार से इसमें कोई सन्देह नहीं है कि भौतिकिकरण प्रकृति में होने वाला एक तथ्य है, यद्यपि यह अविश्वसनीय लगता है। इसमें संदेह करना तर्कसंगत नहीं है कि शरीर के जीवित अवयव आंखों के सामने बन सकते हैं और समूचे शरीर भी बन सकते हैं जिन्हें उस समय छुआ भी जा सकता है" (*The Story of Psychic Science*, पृ० १७४) वे आगे कहते : "मैं ने स्वयं पूर्णतया नियंत्रित परिस्थितियों में भौतिकीकरण होते हुये देखा है" (वही, पृ० १७८) डा० गेली ने लिखा है : "मैने चेहरे, हाथ या उंगली का पूरा भौतिकीकरण बहुत काफी देखा है। चरम दृष्टान्तों में जो अवयव निर्मित हुये हैं वे बिल्कुल जीवित अवयवों की तरह दिखाई दिये और उनके जैविक गुण भी वही पाये गये। मैने अच्छी तरह से बने हुये मानव चेहरों को स्वयं देखा है। (*Clairvoy*

ance and Moterializatiou पृ० १८६) "अमेरिकन साइकिक सोसाइटी की भौतिक तथ्यों की छानबीन के लिये नियुक्त विशेष कमेटी के सदस्य गार्लैंड (Garland) ने अपने महत्वपूर्ण ग्रन्थ (*Forty Years of Psychical Research* पृ० ३८४) पर लिखा है : "यद्यपि इनमे जादू मालूम होता है और ये अविश्वसनीय है, तथापि ये ठीक उसी तरह हुये हैं जिस तरह मैने उनका वर्णन किया है।

भौतिकीकरण के लिखित दृष्टान्तों में सबसे अधिक प्रसिद्धि उसको प्राप्त हुई है जिसकी छानबीन सर विलियम क्रुक्स ने की थी क्रुक्स ने पर्याप्त रूप से नियंत्रित परिस्थितियों में मिस कुक नामक माध्यम तथा केटी किंग (Katie King) नामक भौतिकीकृत (materialized) आकृति को एक साथ देखा था और इससे दोनों की परीक्षा करने का उनको पर्याप्त अवसर मिला था। वे समाधिस्थ माध्यम मिस कुक और अपना नाम केटी किंग बताने वाली भौतिकीकृत महिला आकृति के नाड़ी की गति, श्वास प्रश्वास की गति और अन्य व्यापारों के पारस्परिक भेद को मालूम कर सकते थे। उन्होंने देखा कि मिस कुक के कानों में बालियाँ पहिनने के लिये छेद बने हुये थे जबकि केटी किंग के नहीं। अधिक आश्चर्य की बात यह है कि जिस केटी किंग की आकृति की छानबीन सर विलियम क्रुक्स ने १८७०, और १८७३ के मध्य की, उसकी भौतिकीकृत आकृति फिर साठ वर्ष के बाद १९३१ और १९३३ में दिखाई दी। इस भौतिकीकरण का विवरण विन्नीपेग, कनाडा के डा० ग्लेन हैमिल्टन (Glen Hamilton) ने जनवरी १९३४ के *Psychic Science* से प्रकाशित किया। इस मामले में अपने को सर विलियम क्रुक्स के जमाने की केटी किंग बताने वाली आकृति के विभिन्न अङ्गों का फोटो लेने के लिये विभिन्न स्थानों में रख हुये छः और कभी-कभी आठ कैमरों का इस्तेमाल हुआ। भौतिकीकरण के अन्य दृष्टान्तों के लिये अब गुंजाइश नहीं हैं। यहाँ "*Talks with the Dead*" नामक ग्रंथ से जान लाब (John Lobb, F. R. G. S., F. R. Hist. S.) की ऐक उक्ति उद्धृत की जाती है पिछले पाँच वर्षो में मैंने जिन गोष्ठियों में भाग लिया है उनमें एक हजार से अधिक मृत आत्माओं ने भौतिक आकृति ग्रहण की। मैंने उनके चेहरों को देखा हैं, उनकी आवाज को संदेश देते सुना है, मेरे प्रारम्भिक जीवन का जो सूक्ष्म ज्ञान उन्होंने प्रदर्शित किया उससे मैं आश्चर्यान्वित हुआ हूं तथा मैंने उनके स्वर्गीय हाथों को स्पर्श का अनुभव किया है।" जानसन कृत *The Great Problem*, पृ० १६० पर उद्धृत।

उन भौतिकीकरणों के बारे में जो अब वैज्ञानिक साक्ष्य के आधार पर सच्चे मान लिये गये हैं, कम से कम दो बहुत बड़े रहस्य हैं : पहिला यह कि जिस पदार्थ से वे निर्मित होते हैं वह कहां से आया, और दूसरा यह कि वे किसी के मृत रिश्तेदार या दोस्त की आकृति कैसे ग्रहण करते हैं और जो ज्ञान वे प्रदर्शित करते हैं वह उन्हें कैसे प्राप्त होता है इन रहस्यों को समझने के लिये अनेक अनुसन्धान और कल्पनायें की गई हैं जिनको पूरे या संक्षिप्त रूप से यहाँ देना सम्भव नहीं है। केवल इतना उल्लेख कर देना पर्याप्त होगा कि इस विषय में दो प्रतियोगी विचारधारायें हैं। एक के अनुसार भौतिकीकृत आकृतियाँ मृतकों की आत्मायें हैं जो पुद्गल के स्तर पर थोड़ी देर के लिये अपने को अभिव्यक्त करती है। दूसरी के अनुसार ये आकृतियाँ biodynamic है; मानव शरीर की किसी अज्ञात शक्ति से माध्यम के चेतन या अचेतन विचार के अनुसार

इनका निर्माण होता है, ये सब गोष्ठी के कमरे में ही बनती और लुप्त होती है। दूसरी विचारधारा के सबसे बड़े नेता प्रो० रिचेट हुये हैं और इसके पक्ष में अनुभव और प्रयोग से प्राप्त बहुत साक्ष्य है। इसका कारण यह है कि भौतिकीकरण तथा जिन माध्यमों की उपस्थिति में यह होता है उनके सूक्ष्म अध्ययन से एक विचित्र लेकिन वास्तविक शक्ति प्रकाश में आई है जो कम से कम कुछ व्यक्तियों में तो अवश्य ही होती हैं। इस शक्ति ने एक बड़ी सीमा तक भौतिकीकरण की पहेली को तो हलकर दिया है, लेकिन जीव विज्ञान के क्षेत्र में एक नई समस्या को उत्पन्न कर दिया जो मनोविज्ञान के लिये भी अत्यधिक महत्व रखती है।

इस तरह यह मालूम हो चुका है कि कम से कम कुछ व्यक्तियों में अपने शरीर से एक विचित्र पदार्थ निकालने की आश्चर्यजनक शक्ति होती है और उस पदार्थ को पुनः अपने शरीर में वापस खींच लेने की भी। यह पदार्थ एक तरह का सजीव पदार्थ है। माध्यम के विचारों, इन विचारों का मूल जो कुछ भी हो। इसके प्रभाव, नियंत्रण और नेतृत्व में इसी विचित्र पदार्थ से आकृतियों का निर्माण होता है। अब वैज्ञानिक भाषा में शरीर के अंशभूत इस रहस्यात्मक सजीव पदार्थ को ectoplasm कहते हैं। प्रसिद्ध माध्यम इवा सी० जो कि मैडेम बिसन (Mme Bisson) के मकान में रहती थी, का निरीक्षण और उस पर प्रयोग करते करते प्रो० बैरन वान श्रैंक नाटजिंग तथा मैडेम बिसन ने ectoplasm की खोज की और तब से इसकी सचाई और स्वरूप पर बहुत छानबीन हुई। प्रो० बैरन वान श्रैंक नाटजिंग म्यूनिक विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान के प्रोफेसर थे और उन्होंने भौतिकीकरण तथा ectoplasm के अध्ययन में पन्द्रह वर्ष से कम समय नहीं लगाया। अब ectoplasm की वास्तविकता में कोई सन्देह नहीं रहा। हियरवार्ड कैरिंगटन का कथन है, "ऐसा प्रतीत होता है कि अब ectoplasm एक असन्दिग्ध तथ्य साबित हो गया है।"

परामनोविद्या के सम्पूर्ण इतिहास में यह एक सबसे बड़ा रहस्य है (*The Story of Psychical Science* पृ० १८१) डॉ डेस्मन्डस (Desmonds) का कथन है, "मैंने स्वयं देखा है कि दो फिट की दूरी पर बैठी हुई एक महिला माध्यम के शरीर से यह धीरे धीरे निकला और उसकी गोद में भर गया तथा एक बच्चे के चेहरे की आकृति में परिवर्तित हो गया। यह सब विशेषज्ञों के सामने अच्छे प्रकाश में एक कमरे में हुआ जो माध्यम का नहीं था और जिसमें धोखे के लिये कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी गई थी।" (*You can speak with your dead* पृ० ३८) पेरिस के मनोविज्ञान के प्रोफेसर डा० गुस्टेव गेली ने इवा सी० के शरीर से निकलने वाले ectoplasm से आकृतियों के बनने प्रक्रिया के कई फोटो लिये और देखा कि इन आकृतियों के लुप्त होते ही ectoplasm उसके शरीर में अदृश्य हो गया। ये फोटो उनके ऊँचे सुझावों से परिपूर्ण ग्रन्थ "*From the Unconscious to the Conscious*" के साथ जुड़े हैं और शुरु से आखिर तक ectoplasm से आकृतियाँ बनने की प्रक्रिया का चित्रण करते हैं। उनका कथन है, ये चित्र जिन तथ्यों को चित्रित करते हैं वे शुरु से ही मेरी आंख के सामने हुये (*Clairvoyance and Materialization* पृ. १८७) Ectoplasm का स्वरूप अभी तक रहस्यमय बना हुआ है, यद्यपि रसायन की प्रयोगशालाओं में तब इसके ऊपर बहुत काम हो चुका है। हल्की वाष्पीय धुन्ध से लेकर ठोस बनाये जा सकने

वाले घनीभूत द्रव्य तक कई रूपों में इसका निरीक्षण किया गया है। इसकी आन्तरिक रचना दोनों जैसी, तन्तुओं जैसी, कुछ कुछ तरल या पलीते जैसी हो सकती है। Ectoplasm की सबसे सामान्य और मौलिक विशेषता यह है कि यह सचमुच सजीव होता है। इसकी रचनात्मक सम्भावनायें उत्कृष्ट होती हैं और न केवल माध्यम के बल्कि गोष्ठी के कमरे में उपस्थित अन्य लोगों के आध्यात्मिक प्रभावों को भी यह ग्रहण कर सकता है। यह देखा गया कि जब ectoplasm माध्यम के शरीर से निकलता है तब माध्यम का वजन घट जाता है और जब ectoplasm वापस शरीर में ले लिया जाता है तब वजन पहिले जैसा हो जाता है। Ectoplasm जो आकृतियाँ धारण करता है वे यद्यपि माध्यम के शरीर से पृथक् दिखाई देती है तथापि द्रव्य की दृष्टि से माध्यम के ही अंश होती है।

जीव विज्ञान और मनोविज्ञान को इसका कोई ज्ञान नहीं है। अत: ectoplasm और शरीर के अंगों का उससे निर्माण विज्ञान के लिये एक महान् समस्या प्रस्तुत करते हैं जिसका हल निश्चय ही शरीरों की उत्पत्ति और विकास की प्रक्रियाओं के ऊपर बहुत प्रकाश डालेगा क्योंकि जो क्रिया साधारणतया महीनों और वर्षों में पूरी होती है वह मानव शरीर के अन्दर रहने वाली किसी आश्चर्यजनक और अज्ञान शक्ति के कारण ectoplasm के भौतिकी करण के रूप में कुछ ही क्षणों में पूरी हो जाती है। जब इन तथ्यों की सचाई असन्दिग्ध साबित हो चुकी है तब इनकी ओर से आँखे बन्द कर लेना और इनको वाहियात कहकर टाल देना व्यर्थ है। जैसी कि कहावत है, सचाई प्राय: कल्पना से भी विचित्र होती है। एक वैज्ञानिक जो अपने पेशे के प्रति वफादार है, को ऐसे तथ्यों के सामने नतमस्तक होना चाहिए जिनका पूरी तरह से नियंत्रित परिस्थितियों में निरीक्षण किया जा चुका है। इस प्रसंग में हमारा दृष्टिकोण ऐसा ही होना चाहिये जैसा प्रो० रिचेट का, जिन्होंने कई वर्षो के सतर्क अनुसन्धान के बाद इन तथ्यों की सचाई से आश्वस्त होकर यह मान लिया था कि इन तथ्यों की वास्तविकता को स्वीकार करके मुझे वस्तुत: दु:ख हुआ एक शरीर शास्त्री भौतिक शास्त्री या रसायन शास्त्री से यह मानने के लिये कहना कि मानव शरीर से एक ऐसी आकृति निकल सकती है जिसके अन्दर एक संचार होता है ताप होता है पेशियाँ होतीं हैं, जो कार्बोनिकएसिड को अपने प्रश्वास में बाहर फेंकता है, वजन रखता है, बोलता और सोचता है, उसे एक वस्तुत: पीड़ाजनक बौद्धिक प्रयास करने के लिये कहने के तुल्य है। हम स्वीकार करते हैं कि यह वाहियात है फिर भी कोई बात नहीं है क्योंकि यह सत्य है (*Thirty years of Psychical Research* पृ० ५४४)

पैराफिन (Paraffin) के सांचे और उँगलियों की छाप

यह निश्चय करने के लिए कि भौतिकी कृत आकृतियाँ वास्तविक और माध्यम से भिन्न हैं अनुसन्धानकर्त्ताओं ने कई परीक्षायें तैयार की है। इनमें से दो विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं : पैराफिन के साँचे और उँगलियों की छाप। हाथ, पैर की उँगलियाँ, चेहरे इत्यादि विभिन्न अवयवों के पैराफिन के साँचे लेने के लिये दो बाल्टियाँ जिनमें से एक में गरम पानी और पानी की सतह पर तैरता हुआ पैराफिन होता है तथा दूसरी में ठंडा पानी, गोष्ठी के कमरे में रख दी जाती है। भौतिकी कृत आकृति से यह प्रार्थना की

जाती है कि जिस अवयव का साँचा लेना है उसको पहले गर्म पानी की और फिर ठंडे पानी की बाल्टी में डाले और इस क्रिया को तब तक करे जब तक ठोस पैराफिन का एक काफी मोटा आवरण न बन जाय। फिर यह प्रार्थना की जाती है कि वह अवयव का अभौतिकीकरण करके साँचे को मेज पर छोड़ दे। इस रीति से माध्यम और गोष्ठी के कमरे की परिस्थितियों पर पूरा नियंत्रण करके अनेक साँचे, आवरण इत्यादि प्राप्त हुये हैं डा० गेली ने इस प्रसंग में इस्तेमाल की जाने वाली परीक्षाओं का विस्तार के साथ अपने ग्रन्थ "*Clairvoyance and Materialization*" में पृ० २२१-२५२ पर वर्णन किया है। भौतिकीकृत आकृतियों और हाथों की उँगलियों और अंगूठों की छाप जो कि व्यक्तियों को पहिचानने का सर्वोत्तम तरीका है, भी मोम के ऊपर ली गई है और यह पूर्णतया नियंत्रित परिस्थितियों में किया गया है। इन छापों की परीक्षा और तुलना विशेषज्ञों द्वारा की गई है। इस तरह से प्रसिद्ध माध्यम मार्गरी (Margery) के मृत भाई वाल्टर (Walter) के अँगूठों के कई निशान लिये गये जो बिल्कुल उन निशानों तुल्य निकले जो वाल्टर की जीवित अवस्था में लिये गये थे। १९२८, २९ और ३० के *Journal A. S. P. R.* के अंकों में इन निशानों के बारे में कई लेख निकले।

स्वतन्त्र आवाज़ और लेख (Independent Voice & Writing)

स्वतन्त्र आवाज और स्वतन्त्र लेख की घटनाओं के पीछे भी एक तरह का भौतिकीकरण प्रतीत होता है। स्वतन्त्र आवाज में गोष्ठी के कमरे में कुछ सार्थक ध्वनियाँ सुनाई देती हैं जिन्हें न तो माध्यम पैदा करता है, न कोई बैठने वाला और न कोइ इनको अपने अन्दर से इस प्रकार निकालता है कि सुनने वालों को ये बाहर से आती हुई प्रतीत हो। स्वतन्त्र लेख में स्वच्छ स्लेट या कागज के ऊपर बिल्कुल रहस्यमय ढंग से कुछ ऐसे अक्षर अङ्कित होते हैं जिनका कारण न तो माध्यम होता है और न कोई बैठने वाला। पहिले को आसान बनाने के लिये गोष्ठी के कमरे में एक तुरही रख दी जाती है और दूसरे को आसान बनाने के लिये मेज पर एक पेन्सिल रख दी जाती है। जिन लोगों ने स्वतन्त्र आवाजों पर अत्यधिक छानबीन की है उनका मत है कि एक गले और मुँह का अस्थायी भौतिकीकरण हो जाता है और यही तुरही का इस्तेमाल करते हैं अथवा तुरही के इस्तेमाल के बगैर ध्वनि पैदा करते हैं। इसी तरह स्वतन्त्र लेख के बारे में भी यह माना जाता है कि गोष्ठी के कमरे में एक भौतिकीकृत हाथ मौजूद रहता है। कभी-कभी तो अनुसन्धानकर्त्ताओं ने ऐसा हाथ देखा भी है। देखिए, गार्लैंड–कृत (*Forty Years of Psychical Research*। स्वतन्त्र आवाज के सर्वोत्तम प्रामाणिक दृष्टान्त वे हैं जो मार्गरी की उपस्थिति में देखे गये हैं और जिनका वर्णन बर्ड (Bird) कृत "*Margery the Medium* में हैं। डा० जानसन ने स्वयं अपने अनुभवों के आधार पर लिखा है : जो माध्यम केवल अँग्रेजी जानते थे उनकी उपस्थिति में प्राचीन और आधुनिक यूनानी, लैटिन, फ्रैन्च, डच, इटालियन, एशियन, सर्बियन, गेलिक, ईर्स, हिन्दुस्तानी और मिश्री भाषाओं में आवाजें सुनी गईं। इन आवाजों से ऐसी सूचनायें प्राप्त हुई हैं जो बैठने वालों को मालूम नहीं थीं और बाद में सही साबित हुईं। प्रायः ये आवाजें बैठने वालों के प्रश्नों का उत्तर भी देती हैं जिनको सुना जा सकता है।

(*The Great Problem* पृ० १३४) इसी प्रकार स्लोन (Sloan) नामक माध्यम के साथ दीर्घ काल तक अनुसन्धान करने के बाद अपने अनुभव के आधार पर फिन्डले (Findlay) ने भी लिखा है कि "मुझे विश्वास हो गया कि स्वतन्त्र आवाज़ की बात ही सच्ची नहीं थी बल्कि जिनकी यह आवाज थी वे भी सच्चे थे। ......जब माध्यम कहे जाने वाले मनुष्य-शरीर से वे काफी मात्रा में ectoplasm संग्रहीत कर लेते हैं तब वे अपने कम्पनों की गति को कम करके हमारे वातावरण को प्रकम्पित कर सकते हैं, हमसे बोल सकते हैं और हमारे उत्तरों को सुन सकते हैं" (*On the Edge of the Etheric* पृ० ५६)। सर विलियम क्रुक्स ने होम की उपस्थिति में सच्चे स्वतन्त्र लेख का निरीक्षण किया। वे लिखते हैं, कमरे की ऊपरी हिस्से से एक चमकदार हाथ नीचे उतरा, मेरे आस पास कुछ देर तक मंडरा कर मेरे हाथ से उसने पेन्सिल ले ली, एक कागज के ऊपर जल्दी जल्दी कुछ लिखा, पेन्सिल को नीचे रखा, फिर धीरे-धीरे हमारे सिर से ऊपर उठा और अंधकार में विलीन हो गया "*Researches in Spiritualism* पृ० ९३-४)।" गार्लेंड ने लिखा है "एक माध्यम की उपस्थिति में जिसकी कलाइयाँ एक फीते के द्वारा कुर्सी के हत्थों से बंधी थी, मैंने मेज के केन्द्र में जो कि माध्यम की पहुंच के बाहर था, स्वतन्त्र लेख प्राप्त किया और जब वह इस प्रकार कुर्सी के हत्थों से बंधा था और उसका दाहिना हाथ बैठने वाले के नियंत्रण में था ...... तब मैंने देखा कि यह हाथ माध्यम के सीने के सामने की नीली भाप के बादल से निकला और उसके ओठों के पास एक पानी का गिलास उठाकर ले गया।" (*Forty Years of Psychical Research* पृ० ३८३)।

TRANCE—MEDIUMSHIP

समाधि की बात भारत में सभी लोग अच्छी तरह जानते हैं। इसे आध्यात्मिक विकास का एक साधन माना जाता है। समाधि की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें आत्म चेतना कुछ देर के लिये लुप्त हो जाती है और उसके स्थान पर एक उत्कृष्ट प्रकार की चेतना आ जाती है जो ज्ञान की तथा सीमित व्यक्तिगत चेतना के नियंत्रण से कुछ देर के लिये मुक्त भौतिक शरीर से काम करने की उत्कृष्ट शक्तियाँ रखती है। इससे कुछ कम वाँछनीय और अधिक सामान्य भारत में भूत लगने (possession) की बात है जिसमें व्यक्ति की व्यक्तिगत चेतना कुछ देर के लिये लुप्त हो जाती है और उसके स्थान पर एक दूसरी चेतना आ जाती है जो कि उसी शरीर के द्वारा दूसरे लोगों से वार्तालाप करती है। इस तरह की समाधि का कभी-कभी पैसा कमाने के उद्देश्य से विधिवत अभ्यास कर लिया जाता है। बहुधा कोई व्यक्ति अनचाहे इसमें आ जाता है और किसी अन्य चेतना के द्वारा वार्तालाप का साधन बना लिया जाता है। यह दूसरी चेतना किसी मृत व्यक्ति की आत्मा मानी जाती है जो कुछ काम कराना चाहती है या अपने किसी दोस्त या रिश्तेदार को कुछ संदेश देना चाहती है। ऐसे मामलों में व्यक्ति की व्यक्तिगत चेतना को अस्थायी मेहमान बलपूर्वक बाहर कर देता है। मैं भूत लगने के कई सच्चे दृष्टान्तों को स्वयं जानता हूं और एक का बिल्कुल सही विवरण मेरे पास लिखित रूप में सुरक्षित है। भारतीय मनोवैज्ञानिकों ने इस तरह की बातों पर बहुत थोड़ा या बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया है। वे इनको यह कहकर टाल देते हैं कि ये हिस्टीरिया

के रोगियों में पाये जाने वाले चेतना-विच्छेद (dissociation) के कारण होने वाले गौण व्यक्तित्व (secondary personality) के उदाहरण हैं। वे समाधि या भूतबाधा की सचाई में विश्वास करने को पुराने अन्ध विश्वास का अवशेष मानते हैं, केवल इसलिये कि यह मानव-स्वभाव की भौतिक और यांत्रिक धारणाओं से मेल नहीं खाता।

इसके विपरीत पाश्चात्य वैज्ञानिक तथ्यों को इतनी आसानी से नहीं टालते जितनी आसानी से हम लोग। उनको विचित्र तथ्यों का मुकाबला करने से डर नहीं लगता। बल्कि, वे तो ऐसे तथ्यों की खोज में रहते हैं और ऐसे विचित्र और रहस्यात्मक तथ्यों को पाकर खुश होते हैं। पश्चिम में समाधि के तथ्यों की वैज्ञानिक विधि से छानबीन प्रारम्भ करने का श्रेय विलियम जेम्स को है जो अमेरिका का सबसे बड़ा मनोवैज्ञानिक था। विलियम जेम्स ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में १८८५ में मिसेज पाइपर नामक एक विचित्र महिला को ढूँढ निकाला था जो अमेरिका और योरप के अनेक अनुसन्धानकर्त्ताओं की रुचि की केन्द्र बन गई और चौथाई शताब्दी तक बनी रही। मिसेस लियोनोर ई० पाइपर (Mrs. Leonore E. Piper) समाधि में पहुँच जाया करती थी जिसमें उसकी अपनी चेतना लुप्त हो जाती थी और उसका भौतिक शरीर, उसका गला, हाथ इत्यादि ऐसी अवस्था में उससे भिन्न प्रतीत होने वाले व्यक्तित्वों के वार्तालाप के साधन बन जाते थे। ये व्यक्तित्व एक दूसरी दुनिया के निवासी होने का दावा करते थे जिसमें मृतकों की आत्माओं का निवास माना जाता है और ये पाइपर के शरीर द्वारा जीवित दोस्तों और रिश्तेदारों को कुछ समाचार या संदेश देते थे। जब विलियम जेम्स का मिसेज पाइपर से परिचय हुआ तब उन्होंने उसको हिस्टीरिया में होने वाले व्यक्तित्व विच्छेद की रोगिणी कहकर नहीं टाला। इसके विपरीत वे उसमें अत्यधिक रुचि लेने लगे और उसे वैज्ञानिक महत्व की बड़ी खोज मानकर उन्होंने अमेरिकन साइकिकल रिसर्च सोसाइटी के मन्त्री डा० रिचर्ड हौजसन (Richard Hodgson) से उसका परिचय कराया जो अलौकिक और जादुई बातों के प्रति अत्यधिक आलोचनात्मक और और सन्देहवादी दृष्टिकोण रखने के लिये बहुत प्रसिद्ध थे, लेकिन सत्य के प्रेमी थे। सात वर्ष (१८८६-९२) तक पूरी तरह से नियंत्रित परिस्थितियों में विलियम जेम्स और रिचर्ड हौजसन ने मिसेज पाइपर का सूक्ष्म अध्ययन किया। १८८९ में मिसेज पाइपर इङ्गलैंड ले जाई गई जहाँ सर ओलिवर लॉज, प्रो० वाल्टर लीफ, प्रो० हेनरी सिजविक, एफ० डबल्यू० एच० मायर्स और अन्यों ने उसका सूक्ष्म निरीक्षण और अध्ययन किया। १८९२ से १८९७ तक प्रो० न्यूबोल्ड (Newbold) ने और १८९७ से १९०५ तक प्रो० हिसलप ने उसका सूक्ष्म अध्ययन किया। १९०५ से अन्य अनुसन्धानकर्ताओं ने जिनमें एक मिसेज हेनरी सिजविक थीं, उस पर ध्यान दिया। इस प्रकार १८८६ से १९११ तक २५ वर्षों से अधिक मिसेज पाइपर योरप और अमेरिका के अनेक वैज्ञानिक अनुसन्धानकर्ताओं की पूरी निगरानी और निरीक्षण में रही। इन लोगों ने उसकी समाधियों, समाधि में अपने को प्रकट करने वाले और वार्तालाप करने वाले व्यक्तित्वों तथा इनके द्वारा दिये गये संदेशों का सांगोपांग तथा आलोचनात्मक अध्ययन किया। यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि इन तथ्यों के बारे में जिनसे कोई इन्कार नहीं कर सकता इन लोगों में मतभेद हो। लेकिन मतभेद के बावजूद इस बात में सामान्यतया मतैक्य है कि मिसेज पाइपर की समाधियों में इतनी अलौकिक सामग्री है कि उसके वर्णन और व्याख्या के लिये मनो-

विज्ञान को अज्ञात नई धारणाओं की आवश्यकता है। आध्यात्मिक तथ्यों के एक महान् वैज्ञानिक विद्यार्थी टिरेल के शब्दों में "जितने भी अनुसंधानकर्ताओं ने इस मामले का अध्ययन किया वे सब इस बात में एक मत हैं कि अलौकिक बातों के पक्ष में निर्विवाद साक्ष्य है। (*Science and Psychic Phenomena*, पृ० १६८) मिसेज पाइपर के बारे में सर अलिवर लोज द्वारा १८६० में प्रकाशित प्रथम विवरण के साथ लगे हुये एक पत्र में विलियम जेम्स ने लिखा था, "मिसेज पाइपर के बारे में मैं जो कुछ जानता हूं उसे ध्यान में रखते हुये मै कह सकता हूं कि जितना मैं दुनिया में अपनी व्यक्तिगत बातों में विश्वास रखता हूं उतना ही इस बात में भी रखता हूं कि समाधि में वह ऐसी बातों की जानकारी रखती है जिनको जाग्रत अवस्था में जानना उसके लिये असम्भव था और कि उसकी समाधि की निश्चित व्याख्या अभी तक अप्राप्त है।" अपने को मृतकों की आत्मायें घोषित करने वाले तथाकथित अन्य व्यक्तित्वों के द्वारा मिसेज पाइपर की समाधि अवस्था में जो अलौकिक ज्ञान प्रदर्शित किया गया वह वस्तुत: मृत आत्माओं का है या मिसेज पाइपर के ही अचेतन मन की अलौकिक ज्ञान शक्ति का परिणाम है। समाधि में मिसेज पाइपर के शरीर पर नियंत्रण करने वाले वही बाह्य व्यक्तित्व हैं जो होने का वे दावा करते हैं अथवा जैसा कि आधुनिक असाधारण मनोविज्ञान मानता है, मिसेज पाइपर के ही व्यक्तित्व के विच्छिन्न तत्वों से बने हुये मिथ्या व्यक्तित्व है इन प्रश्नों के बारे में बहुत विवाद है और हाल में इनका अन्तिम उत्तर देने के लिये बहुत अनुसन्धान किया गया है। १८६८ में डा० रिचर्ड हौजसन ने अन्तिम शब्दों में अपना मत इस प्रकार व्यक्ति किया : "मैं इसमें कोई सन्देह नहीं करता हूं कि मुख्य संदेश देने वाले वही व्यक्ति हैं जो होने का दावा करते हैं; जिसे हम मृत्यु कहते हैं उसके बाद भी उनका अस्तित्व है, और हम जीवितों के साथ वे मिसेज पाइपर के समाधिस्थ शरीर के द्वारा सीधे वार्तालाप करते हैं (*Proc.* Vol. XIII, पृ० ४०५)। १६०१ में प्रो० हिसलप ने लिखा है "जब मैं इन तथ्यों के समग्र क्षेत्र पर दृष्टिपात करता हूं और आत्मवाद से बचने के लिये जितनी भी कल्पनायें की जा सकती हैं उन पर विचार करता हूं तो मुझे अपने पड़ोसियों के संदेशों के अतिरिक्त आत्मवाद के विरुद्ध कोई तर्क नहीं दिखाई देता—आत्मवाद इस दृष्टान्त का केवल एक पहल मात्र नहीं है बल्कि इसकी प्रत्येक बात, जैसे विभिन्न व्यक्तित्वों की परस्पर क्रिया कि नाटकीयता, प्रेषक की व्यक्तिगत विशेषतायें, उसकी स्वाभाविक संवेगशीलता, किसी परिस्थिति या प्रश्न को उचित रूप से समझना तथा सम्पूर्ण काल में स्वयं को प्रकट करने वाली चेतना की एकता, आत्मवाद को परिपुष्ट करते हैं" (*Proc.* XVI पृ० २६३)। १६०६, में सर ओलिवर लॉज ने लिखा, "सब मिलाकर ये किसी इतर बुद्धि या नियन्ता के अस्तित्व को दृढ़ करते हैं जो मिसेज पाइपर या अन्य माध्यम की चेतना से भिन्न है और मेरे विचार स उसके अचेतन मन से भी भिन्न है। (*Proc. S. P. R.* पृ० १७० पर Tyrrell द्वारा उद्धृत)। हौजसन के मरने पर उसकी आत्मा जब मिसेज पाइपर की समाधि में प्रकट होती थी तब की अपनी रिपोर्ट में विलियम जेम्स ने लिखा था, "वार्तालाप करने का बाह्य संकल्प और स्वयं को अभिव्यक्त करने का बाह्य संकल्प, दोनों के ही परिणाम में योगदान हो सकता है और ये दोनों ही प्रकार के संकल्प भिन्न अस्तित्व रख सकते हैं, यद्यपि ये परस्पर सहायक हो सकते हैं। वर्तमान दृष्टान्त में वार्तालाप करने का संकल्प स्पष्टतया हौजसन की जीवित आत्मा का संकल्प

है (पृ० ११७)। "मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे वार्तालाप करने का कोई बाह्य संकल्प यहाँ मौजूद हो: अर्थात् इस तरह के तथ्यों से परिचय के परिणामस्वरूप मुझे इसमें संदेह है कि मिसेज पाइपर का स्वप्न-जीवन विचार संक्रमण की शक्ति से सम्पन्न होने पर भी सभी उपलब्ध परिणामों की व्याख्या कर सकता है (*Proc.* XXVIII, पृ० ११७ तथा १२१) इसके विपरीत मिसेज हेनरी सिजविक के अनुसार मिसेज पाइपर की समाधि में संदेश प्रेषित करने वाले "सम्मोहन द्वारा निर्मित झूठे व्यक्तित्व मात्र थे।" (*The Psychology of Mrs. Piper's Trance*" (*Proc. S.P.R.* Vol. XXVIII पृ० ३१५ और आगे) में उन्होंने लिखा है, "बैठने वाले से जो बुद्धि सीधे वार्तालाप करती थी वह अपने दावे के बावजूद मिसेज पाइपर के शरीर का उपयोग करने वाली एक स्वतन्त्र आत्मा नहीं थी, बल्कि स्वयं मिसेज पाइपर की चेतना की एक अवस्था या अंश थी"। इस मत का सम्मोहित अवस्था में सक्रिय होने वाले कृत्रिम व्यक्तित्व और माध्यम की समाधि में सक्रिय होने वाले व्यक्तित्व के सादृश्य से तथा संदेशों के मिथ्यात्व या या तुच्छता से पुष्टिकरण होता है।

प्रो० रिचेट और उनके यूरोपियन मतावलम्बी यह मानते हैं कि समाधि में मिथ्या व्यक्तित्वों द्वारा जो अलौकिक ज्ञान प्रदर्शित होता है उसकी प्राप्ति माध्यम के अचेतन मन को अपनी विचार संक्रमण और दूरदर्शन की उत्कृष्ट शक्तियों से होती है। इस मत को इस तथ्य से बल मिलता है कि जब समाधि अवस्था मे मिसेज पाइपर के हाथ में कोई वस्तु रखी जाती थी तब वह psychometry की अपनी उत्कृष्ट शक्ति का उपयोग करती थी।

यहाँ आत्मवाद और विचार संक्रमण का झगड़ा निपटाना एक असाध्य समस्या प्रतीत होती है। विचार संक्रमण का सिद्धान्त समाधि के इन तथ्यों की व्याख्या करने में असफल रहता है। (१) प्रेषक स्वयं को एक विशेष व्यक्ति बतलाता है और इसके समर्थन में कोई प्रमाण देने की कोशिश करता है जो कभी-कभी सन्तोषजनक सिद्ध हुआ है, (२) यदि प्रेषक एक से अधिक हैं तो वे पृथक पृथक व्यक्तित्व मालूम पड़ते हैं और समाधिस्थ शरीर के ऊपर उनके नियंत्रण में तथा शक्ति में भेद स्पष्ट मालूम होता है। समाधिस्थ शरीर का विचार प्रेषण के लिये उपयोग करने में उनकी शक्ति भिन्न होती है; (३) जब एक प्रेषक चला जाता है और उसका स्थान दूसरा ले लेता है तब बैठने वालों को इस परिवर्तन की स्पष्ट अनुभूति होती है; (४) सभी प्रेषक बैठने वालों के साथ समान रूप से परिचित होने का प्रदर्शन नहीं करते और यह उसी प्रकार जीवितावस्था में बैठने वालों से उनका परिचय विभिन्न मात्राओं में रहा; (५) उनमें से कुछ मृतक से सम्बन्धित तथ्यों की अत्यधिक जानकारी रखते हैं जबकि (अ) अपने जीवन में माध्यम को उन तथ्यों का कभी नहीं हुआ, (ब) बैठने वालों में से किसी को भी चेतन या अचेतन रूप से उनका ज्ञान नहीं है, (स) किसी भी जीवित मनुष्य को उनका ज्ञान नहीं था, और (द) केवल मृतक को ही उनका ज्ञान था। इन तथ्यों के स्पष्टीकरण के लिये साधारण मनोविज्ञान के पास कोई साधन नहीं है। समाधि की इन चुनी हुई विशेषताओं की व्याख्या करने की कोशिश में विचार-संक्रमण का सिद्धान्त बहुत ही अस्वाभाविक और खींचतान करता हुआ लगता है। टिरेल के अनुसार "हम यह कल्पना कर सकते हैं कि माध्यम के मन को मृतक-विषयक सूचना विचार-संक्रमण की रीति से बैठने वालों या

अन्य जीवित व्यक्तियों में से जिसको भी उसकी जानकारी हो उससे प्राप्त होती है। लेकिन इससे प्रेषक की व्यक्तिगत विशेषताओं के प्रकट होने का स्पष्टीकरण नहीं होता। इस कल्पना के अनुसार तो मृतक के व्यक्तित्व का उसके तमाम मानसिक और शारीरिक लक्षणों के सहित, नमूना माध्यम को विचार-संक्रमण की क्रिया से ज्ञात होना चाहिए तथा माध्यम के अचेतन मन के किसी हिस्से को उस नमूने के अनुसार वेश धारण करना चाहिये। अधिक आश्चर्यजनक तो यह है कि एक अच्छा माध्यम जो नकल करता है उसमें चरम मात्रा की आत्मसंगति होती है। माध्यम को इन कृत्रिम व्यक्तित्वों को अनन्त परिमाण में और क्षण भर में बनाने में समर्थ होना चाहिए जैसे कि मानो उसके पास आत्माओं का निर्माण करने की कोई मिट्टी हो, साथ ही उसके पास आवश्यकता न रहने पर इन कृत्रिम व्यक्तित्वों को किसी को किसी गुप्त भण्डार में संचित रखने की भी शक्ति होनी चाहिये। और इतने पर भी जिस समय उनकी आवश्यकता पड़ती है उस समय सभी व्यावहारिक दृष्टियों से वे मूल की पुनर्सृष्टि मालूम पड़ते हैं" (*Science and Psychic Phenomena* पृ० ३१४)। यह सब टिरेल के अनुसार "आत्मवाद का ही एक विलक्षण रूप प्रतीत होता है" तथा "एक ऐसी अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष शक्ति की माँग करता है जो कि साधारण न होकर सर्वज्ञत्व की तरह की है" (वही, पृ० ३१४)।

ये सब प्रश्न जिनमें से कुछ मिसेज पाइपर की समाधि के प्रसंग में पैदा हुये, अब कुछ अधिक स्पष्ट हो गये हैं और कुछ निश्चित विवादग्रस्त प्रश्नों का निर्णय करने के लिए आध्यात्मिक अनुसन्धानकर्त्ताओं ने मिसेज वीरॉल (Verall), मिसेज हॉलैण्ड, मिसेज विलेट, मिसेज थॉमसन तथा मिस रोजमैरी इत्यादि समाधि में पहुँचने वाली माध्यमों के दृष्टान्तों में देखे जाने वाले तथ्यों से कुछ अधिक निर्णायक प्रमाण इकट्ठे किये हैं। मुख्य समस्या जिसका निर्णय करना है, प्रेषक का उस मृतक व्यक्ति से तादात्म्य के बारे में है जो होने का वह दावा करता है और एक गौण समस्या यह कि कोई ऐसा तथ्य ढूंढा जाय जिसकी विचार-संक्रमण से व्याख्या न हो सके। मुख्य समस्या के साथ यह विचार भी जुड़ा हुआ है कि प्रेषक के व्यक्तित्व को माध्यम के व्यक्तित्व से भिन्न सिद्ध किया जाय। इन समस्याओं को हल करने के लिये अनुसन्धानकर्त्ताओं ने निम्नलिखित परीक्षाओं का निर्माण किया है। (१) Post mortem letter test: इस प्रकार के अनुसन्धान में रुचि रखने वाले मोहरबन्द पत्र छोड़ जाते हैं और यह प्रतिज्ञा कर जाते हैं कि उसके अन्दर की वस्तु को वे मृत्यु के बाद किसी माध्यम के द्वारा प्रकट करेंगे। यह परीक्षा दुर्भाग्य से इतनी निर्णायक नहीं है क्योंकि कुछ माध्यम लेखक के जीवन काल में ही इन पत्रों के अन्दर की बातें प्रकट कर चुके हैं और इस परीक्षा के निषेधात्मक परिणाम बजाय व्यक्तित्व-भेद के स्मृति भ्रंश के कारण हो सकते हैं। मुझे स्वयं एक सपना हुआ था जिसमें मैं एक किताब के स्थान को भूल गया था जबकि जाग्रत अवस्था में मुझे वह ठीक याद था। जाग्रत और स्वप्न की अवस्थाओं में स्मृति का अविच्छिन्न रहना आवश्यक नहीं है। यह देखते हुये, यदि हमारे व्यक्तित्व का मृत्यु के बाद भी अस्तित्व बना रहे तो उस अवस्था में हम इस जीवन की स्मृति के अविच्छिन्न बने रहने की कितनी आशा कर सकते हैं। जब हम स्वप्नों को भी याद नहीं रख सकते, तो संदेष प्रेषक आत्माओं का इस दुनिया के अनुभवों, घटनाओं और नामों को भूल जाना आश्चर्यजनक नहीं है। आश्चर्य इसमें है कि जितना समाधि में प्रकट होता है उतना कैसे उनको याद रहता है।

पार्थिव जीवन की यथार्थ व्यक्तिगत स्मृति के आधार पर उक्त समस्या का निर्णय करने के लिये जो परीक्षायें ली जाती हैं उनमें इन बातों का हमें ध्यान रखना चाहिये। (२) Scholarship and Classical Knowledge Test–यह परीक्षा काफी सफल रही है। माध्यम प्राय: विद्वान नहीं होते और उच्च कोटि की विद्वत्ता तो उनमें लगभग दुर्लभ होती है। किन्तु जब डा० ए० डबल्यू० वीरॉल, एफ० डबल्यू० मायर्स या एँड्रयू लैंग जैसा व्यक्तित्व मृत्यु के पश्चात माध्यम के द्वारा बातचीत करता है, तब स्वभाव तया यह आशा की जाती है कि वह बैठने वालों को अपने उच्च कोटि के ज्ञान का प्रदर्शन करके अथवा अपनी रुचि के क्षेत्र की बातों का उल्लेख करके, जो कि माध्यम की पहुँच के बाहर है, आश्वस्त कर देगा। ऐसा ही देखा भी गया है। इस तरह के कई दृष्टान्त लिखित रूप में मौजूद हैं जिनमें से एक का उल्लेख यहाँ किया जाता है। इस दृष्टान्त में माध्यम निरक्षर न होने पर भी विदुषी बिल्कुल नहीं थी, इसके अतिरिक्त वह व्यक्तिगत जीवन में एक सम्भ्रान्त महिला थी, पेशेवर माध्यम नहीं और अत: बैठने वालों को धोखा देना सम्भव होने पर भी ऐसा उसका इरादा नहीं हो सकता था। संदेश प्रेषक डा० वीरॉल और प्रो० बुचर (Butcher) थे और जिस उच्च कोटि की विद्वत्ता का प्रदर्शन किया गया तथा जिन बातों की ओर उसमें संकेत था उनकी सचाई जांचने में उच्च कोटि के विद्वानों को भी बड़ी कठिनाई हुई–ये बातें प्रेषकों के व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित थीं। (कैरिंगटन *Psychic Phenomena and the war* पृ० १२३) हाल ही में एक असाधारण और उल्लेखनीय दृष्टान्त मिस रोजमैरी नामक माध्यम के द्वारा संदेश प्रेषण का हुआ है। इसमें प्रेषक अपना नाम नोना बताने वाली एक मिश्री महिला थी। यह महिला अपने को तीन हजार वर्ष पहले की बताती थी और अपने ज़माने की मिश्री भाषा में धाराप्रवाह बोलती थी जिसे रोजमैरी की तो बात ही क्या, किसी भी जीवित मनुष्य ने, यहाँ तक कि किसी प्राचीन मिश्र की संस्कृति के ज्ञाता ने भी बोले जाते हुये नहीं सुना और न जिसे कोई जीवित मनुष्य बोल ही सकता है। इस अत्यधिक रोचक मामले का वर्णन दो प्रसिद्ध पुस्तकों, फ्रेडरिक वुड कृत *"After Thirty Centuries"* और ए० जे० हावर्ड हल्मे तथा वुड कृत *"Ancient Egypt Speaks"* में छपा है। (३) Book tests इन परीक्षाओं में प्रेषकों से उन पुस्तकों के पृष्ठों या लिखी हुई बातों का उल्लेख करने को कहा जाता है जो उन्होंने जीवित रहते हुये पढ़ी थीं और जो माध्यम की पहुंच के बाहर बैठने वालों के घर में रखी हैं। इन प्रयोगों की एक बड़ी संख्या का वर्णन लेडी ग्लेनकोन्नर (Glenconner) के *The Earthen Vessel*, रेवरेंड ड्रेटन टॉमस (Rev. Drayton Thomas) के *Some New Evidence of Human Survival* ....तथा *Proc.* XXXI पृ० २४२ में मिसेज़ हेनरी सिजविक के लेख "An Examination of the Book Tests" में मिलता है। १९१७ में मिसेज लियोनर्ड के नियामक (Control) फेडा (Feda) ने इस परीक्षा को सुझाया था। इसके पीछे बैठने वालों से विचार-संक्रमण होने की परिकल्पना के निराकरण का उद्देश्य था। दैवयोग का भी इससे निराकरण हो जाता है। फिर भी दूर दर्शन का निराकरण इससे नहीं हो पाता। (४) Cross Correspondence या Concordant Automatisms–इस परीक्षा में परस्पर पृथक माध्यमों की एक बड़ी संख्या से संदेशों के समझ में न आने वाले अंश प्राप्त किये जाते हैं जो इकट्ठे

रखे जाने पर ही सार्थक हो पाते हैं; माध्यमों का परस्पर कोई सम्पर्क नहीं रहता और न वे यह जानते हैं कि उनके ऊपर प्रयोग किया जा रहा है । इस विधि का सुझाव भी स्वयं किसी प्रेषक ने दिया था और इसका उद्देश्य भी विचार-संक्रमण का निराकरण करना था । बहुत बड़ी संख्या में ये प्रयोग किये गये जिनमें कुछ अत्यन्त जटिल और सफल रहे । एच० एफ० सॉल्टमार्श ने अपने ग्रंथ *Evidence of Personal Survival from Cross Correspondence* में बड़ी योग्यता के साथ इस तरह के साक्ष्य का संक्षेप और मूल्यांकन किया है । इस ग्रंथ का इस विषय में रुचि रखने वालों को अवश्य अध्ययन करना चाहिए । साल्टमार्श के मत से इस परीक्षा से भी प्रतिद्वन्दी परिकल्पनाओं में से एक के पक्ष में अन्तिम निर्णय नहीं हो पाता । ये परिकल्नायें हैं "माध्यमों और या अनुसन्धानकर्ताओं के मध्य विचार संक्रमण तथा आत्माओं से किसी तरह की प्रेरणा की प्राप्ति ।" पहिली परिकल्पना की अस्पष्टता को देखते हुये सॉल्टमार्श की प्रवृत्ति कुछ दूसरी की ओर है । (५) Proxy Sitting गोष्ठियों में ऐसे व्यक्तियों को शामिल किया जा सकता है जो मृत व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन से बिल्कुल अनभिज्ञ होते हैं–यह मृत व्यक्ति वह होता है जो माध्यम के द्वारा वार्तालाप करता है या जिससे ऐसा करने की प्रार्थना की जाती है । इसके पीछे उद्देश्य यह होता है कि माध्यम के अचेतन मन को दूरदर्शन के लिये सुझावपूर्ण प्रश्नों से कोई इशारा न मिले: दूसरा उद्देश्य विचार-संक्रमण का निराकरण होता है । इस प्रकार साधारण उपायों से माध्यम को अनजाने कोई सूचना न मिल जाय, इसके लिये सतर्कता रखते हुये, अच्छे माध्यमों से बैठने वालों को अज्ञात मृत व्यक्ति के बारे में सच्ची सूचना प्राप्त हुई है । यदि माध्यम के अन्दर सब कुछ जानने की शक्ति की कल्पना न की जाय तो इससे जो प्रमाण मिले हैं वे स्पष्टतया इस बात के सूचक हैं कि सूचना मृत व्यक्ति से प्राप्त होती है । आध्यात्मिक अनुसन्धान कर्त्ताओं ने इस परीक्षा का विस्तार से प्रयोग किया है और इस के ऊपर बहुत साहित्य है। Proxy के दृष्टान्तों का मिस नी वाकर (Miss Nea Walker) कृत *"The Bridge"* तथा *Through a Stranger's Hands* में और जॉन एफ० टॉमस (John F. Thomas) कृत *"Beyond Normal Cognition."* में एक अच्छा संग्रह पाया जाता है । इनका विस्तृत विर्णन ड्रेटन टॉमस द्वारा लिखित "Proxy Sittings with Mrs. Leonard" (*Proc.* XLII) और "A Consideration of a Series of Proxy Sittings" (*Proc.* XLI) में तथा Bobby Newlove case (*Proc.* XLIII) में पाया जाता है । (६) Reaction and Psychogalvanic Reflex Tests यथा Psychoanalytic Tests–हाल में माध्यम तथा प्रेषक को युग (Jung) कृत शब्द प्रतिक्रिया परीक्षा तथा फ्रॉयड (Freud) कृत मनोविश्लेषण परीक्षा देकर माध्यम तथा प्रेषक के व्यक्तित्व में भेद दिखाने का प्रयत्न किया गया है । मिसेज गैरेट (Mrs. Garrett) नामक लन्दन का एक माध्यम का तथा अपने को एक अरब की आत्मा बताने वाले उसके नियामक (Control) यूवानी (Uvani) के मनोविश्लेषण का लेखा अमेरिकन साइकिकल इन्स्टिट्यूट की बुलेटिन नं० (१९३२) के रूप में *"An Instrumental Test of the Independence of a Spirit Control"* नामक पुस्तिका में छपा है । इस बुलेटिन में शब्द-प्रतिक्रिया तथा अन्य परीक्षाओं का पूरा विवरण है जिनसे यह सिद्ध होता है कि अपना नाम

यूनानी बताने वाला समाधि-व्यक्तित्व (trance personality) मिसेज गैरेट के साधारण मानसिक जीवन से स्वतन्त्र अस्तित्व रखता है। सारे साक्ष्य का संक्षेप करते हुये कैरिंगटन ने लिखा है, "मैं इतना मात्र कह सकता हूं कि प्रयोगशाला की विधियों और यन्त्र परीक्षाओं से किये गये हमारे प्रयोग पहिली बात यह दिखाते हैं कि तथाकथित नियामक माध्यम के चेतन या अचेतन मन से स्वतन्त्र अस्तित्व रखता है।" केन्नेथ रिचमौंड (Kenneth Richmond) ने "साइकिकल ऐक्सपीरियन्सेज सिरीज में प्रकाशित अपने लघु ग्रंथ "*Evidence of Identity*" में 'तादात्म्य' के सब प्रमाणों का संक्षेप दिया है और उनका निष्पक्ष मूल्यांकन किया है। इस ग्रन्थ को प्रत्येक मनोवैज्ञानिक को पढ़ना चाहिए। एक सच्चे वैज्ञानिक की तरह निष्पक्ष विचार करने के बाद वे अन्त में लिखते हैं, "यह (प्रमाण) मानव-अनुभव-विषयक हमारे ज्ञान को विस्तृत करता है और मानव व्यक्तित्व के एक व्यापक दृष्टिकोण की ओर इशारा करता है। आज के विचारकों में वस्तुत: यह सोचने की प्रवृत्ति पाई जाती है कि विचार-संक्रमण और मरणोत्तर जीवन परस्पर विरुद्ध नहीं हैं। वास्तव में विचार-संक्रमण मरणोत्तर जीवन को समर्पित करता है क्योंकि यदि मन या चेतना शरीर से स्वतन्त्र होकर रह सकती और कार्य कर सकती है तो इसकी बहुत कुछ सम्भावना है कि शरीर की मृत्यु के बाद भी वह रह सकती और काम कर सकती है। इस प्रकार हम आध्यात्मिक अनुसन्धान के क्षेत्र में ऐसी स्थिति में पहुँच गये हैं जहाँ "प्रत्येक अनुसन्धानकर्त्ता यह मानने लगा है कि आत्मा की परिकल्पना के पक्ष में अत्यधिक प्रबल साक्ष्य है—इतना कि इसे अब एक कामचलाऊ सिद्धान्त के रूप में इस्तेमाल करना उचित है और ऐसा तब तक, जब तक कि किसी नई खोज से इसमें परिवर्तन करने की आवश्यकता प्रतीत न हो" (*Carrington : Story* पृ० ३२३)। प्रबल साक्ष्य से प्रभावित होकर ब्रॉड (Broad) जैसे कठोर वैज्ञानिक विचारक को भी यह मानना पड़ा कि शरीर की मृत्यु के बाद मृतक का कोई "आध्यात्मिक अंश" बच रहता है और यही अंश समाविस्थ माध्यम के शरीर से थोड़े समय के लिये युक्त होकर एक अस्थायी मन-सदृश वस्तु (mindkin) को जन्म देता है जो मृतक की कुछ विशेषताओं को प्रदर्शित करती है (*Mind and its Place in Nature* पृ० ५३८)।

हमारा मुख्य सम्बन्ध यहाँ इस समस्या से नहीं है कि माध्यम की समाधियों में प्रकट होने वाले सभी तथ्यों का स्पष्टीकरण विचार संक्रमण तथा नाटकीकरण के सिद्धान्त से हो जाता है जिसमे पूरी व्याख्या के लिये सर्वज्ञत्व शक्ति के आस पास की अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष की शक्ति की भी कल्पना करनी पड़ेगी, अथवा इस सिद्धान्त से कि शरीर के नष्ट हो जाने के बाद समग्र व्यक्तित्व या उसका कोई अंश जीवित रहता है तथा वार्तालाप करने का इरादा और शक्ति रखता है। हमारा उद्देश्य यह दिखाने का है कि इन दोनों में से एक को या दोनों को मानना पड़ता है ताकि उन सभी तथ्यों की व्याख्या हो सके जिनके होने में उनका अनुसन्धान करने वालों को कोई सन्देह नहीं है। इससे मनोविज्ञान को यह मालूम हो जाना चाहिये कि जितना उसे ज्ञात है उससे कहीं अधिक विस्तृत मानव व्यक्तित्व है और मानव व्यक्तित्व की ज्ञान और कर्म की शक्तियाँ संख्या और विचित्रता में उससे कहीं अधिक हैं। केन्नेथ रिचमौंड के शब्दों में "मनुष्य नामक रहस्यमय प्राणी के अन्दर बहुत कुछ ऐसा है जिसको मान्यता के क्षेत्र मे लाना अभी शेष है। (*Evidence of Identity* पृ० १०६)

पूर्वजन्म की स्मृति

समय समय पर अनेक ऐसी घटनाओं की सूचना मिली है जिनमें कुछ बच्चों को कुछ ऐसी घटनाओं, वस्तुओं, व्यक्तियों, रिश्तेदारों तथा स्थानों की स्मृति हुई है जिनका उन्हें अपने जीवन में पहिले कभी अनुभव नहीं हुआ और अनुसन्धान करने पर इन स्मृतियों को यथार्थ पाया गया है। कई दृष्टान्तों में इन स्मृतियों के साथ प्रत्यभिज्ञा की प्रबल अनुभूति भी पाई गई है। इनका सबसे सरल और सीधा स्पष्टीकरण यह है कि स्मरण करने वाला अपने व्यक्तित्व के किसी स्तर में सुरक्षित अपने अतीत जीवन के अनुभवों के भण्डार से इनको प्राप्त करता है। ऐसे दृष्टान्त केवल भारत में ही नहीं पाये जाते जहां पुनर्जन्म में विश्वास किया जाता है और इसलिये मनोवैज्ञानिको को उक्त घटनाओं को अन्धविश्वासजनित "भ्रान्ति" या "विभ्रम" कहकर टाल देने का अवसर मिल जाता है। ये ऐसे देशों और परिवारों में भी पाये जाते हैं जहां पुर्नजन्म और आत्मा के अस्तित्व पर विश्वास नहीं किया जाता।

एक अत्यन्त उल्लेखनीय और विश्वासोत्पादक दृष्टान्त १९११ जनवरी के इटालियन पत्र "*Filosofa della Scienza*" में छपा था। यह १९१० में सिसली के Palermo के Dr. Carmelo Samona के घर में घटा था। १५ मार्च १९१० को Dr. Samona की पंचवर्षीय कन्या अलेक्जैन्ड्रीना का देहान्त हो गया था। देहान्त हो गया था। देहान्त के तीन दिन बाद उसकी माँ ने उसे स्वप्न में देखा और यह कहते हुये सुना "मां, रोओ मत···मै वापस आऊँगी।" अगली सुबह जब माता-पिता कमरे में बैठे स्वप्न की चर्चा कर रहे थे, उन्होंने दरवाजे पर तीन थपकियाँ सुनी। उनकी समझ में यह बात नहीं आई। इससे उनकी जिज्ञासा बढ़ी और उन्होंने गोष्ठियाँ (seances) कीं। पहली ही गोष्ठी में उन्होंने अपनी मृत पुत्री का यह सदेश सुना, "प्यारी माँ, अब मत रोओ, मैं एक बार फिर तुम्हारी कोख से जन्म लूँगी।" ४ मई की गोष्ठी में उसने एक विचित्र अप्रत्याशित बात कही : "मां तेरे पेट में एक दूसरा भी है" जिसका मतलब यह था कि उसकी मां के दो जुड़वा बच्चे पैदा होंगे जैसा कि पहिले कभी नहीं हुआ था। २२ नवम्बर को वास्तव में उसकी दो जुड़वा लड़कियाँ पैदा हुई जिनमें से छोटी की सूरत मृत अलेक्जैंड्रिया से बहुत मिलती जुलती थी और उसकी तरह कुछ बेहत्था भी थी। बाद के लेख से मालूम होता है कि आठ वर्ष की अवस्था में उनकी माँ ने मौनरील (Monreale) जाने के सिलसिले मे अपनी लड़कियों से कहा "जब तुम मौनरील चलोगी तो ऐसी चीजें देखोगी जो तुमने पहले कभी नहीं देखी।" इस पर उक्त लड़की ने जिसको मां बाप पुराने नाम अलेक्जैंड्रीया से ही पुकारते थे कहा "लेकिन मां, मैं तो मौनरील को पहले से जानती हूं।" इसके बाद उसने मौनरील का वैसा ही वर्णन किया जैसा तब वह था जब मृत अलेक्जैंड्रीना के साथ वे लोग वहां रहते थे। इससे ज्ञात होता है कि इस लड़की के अन्दर पूर्व जन्म के कुछ संस्कार अब तक सुरक्षित थे। एक दूसरा रोचक दृष्टान्त मिसेज Campbell Praed ने अपनी पुस्तक *Soul of Nyria* मे दिया है। लेखिका की एक महिला मित्र जिसको बहुत थोड़ी शिक्षा प्राप्त थी, कभी कभी एक स्वप्न की सी स्थिति मे पहुँच जाया करती थी। इस स्थिति मे उसकी आवाज, तरीके और सारा व्यक्तित्व बहुत बदल जाया करते थे और उसे महसूस होता था कि वह नीरिया नामक दासी है जो रोमन बादशाह टीटस (Titus) की लड़की जूलिया (Julia) की

सेविका थी। उसे प्राचीन रोम के अपने जीवन की सारी घटनायें याद थीं और वह अपने समय की विस्मृत घटनाओं का विस्तार से वर्णन करती थी। उसने अपने समय की बहुत सी ऐसी घटनाओं और व्यक्तियों का उल्लेख किया जो साधारण इतिहास में नहीं थे और बहुत ऐतिहासिक अनुसन्धान के पश्चात् सत्य सिद्ध हुये। इनका ज्ञान उस महिला को तथा पुस्तक की लेखिका को तो हो ही नहीं सकता था। उसने जिन विस्मृत रोम रीति-रिवाजों का उल्लेख किया वे साधारण कागजों में नहीं मिलते थे लेकिन लैटिन लेखकों के उस जमाने के लेखों से उनका समर्थन हुआ। इस विचित्र तथ्य से दो मे से एक बात मालूम होती है: या तो प्राचीन रोम की नीरिया का उक्त महिला के रूप में पुनर्जन्म हुआ या नीरिया की आत्मा जो कि अब भी वर्तमान थी, ने उसे महिला के द्वारा अपने को अभिव्यक्त किया। हमने इसी अध्याय में दूसरी परिकल्पना पर विचार किया है। लेकिन आधुनिक मनोविज्ञान दोनों ही परिकल्पनाओं को अस्वीकृत करता है। फिर भी तथ्यों की बगैर छानबीन के अवहेलना नहीं की जा सकती। उपर्युक्त दृष्टान्त की तरह रोचक एक अन्य दृष्टान्त फ्रैडरिक एच० वुड कृत *After Thirty Centuries* में और ए० जे० होवर्ड हल्मे (इंगलैंड का एक मिश्री संस्कृति का विद्वान तथा वुड कृत *Ancient-Egypt speaks*) मे आया है। इन ग्रन्थों के आधार उन गोष्ठियों से प्राप्त तथ्य हैं जो एक विचित्र अँग्रेज लड़की रोजमैरी के साथ की गई थीं। रोजमैरी के द्वारा तीन हजार साल पूर्व जीवित नोना नामक मिश्री महिला वार्तालाप करती थी और स्वयं रोजमैरी भी यह दावा करती थी कि वह इतने साल पहले मिश्र में थी। आज के युग में पहली बार जबकि मिश्र की बोलचाल की भाषा दुनिया भूल गई है, इस लड़की ने पुरानी मिश्री भाषा में बातचीत की और इसको सुनकर महान् मिश्री-विद्या-विशारद हल्मे ने इस मृत भाषा की पुनर्रचना की जबकि उसका उच्चारण किसी को ज्ञात न था ये लेखक जिस निष्कर्ण पर पहुँचे वह यह था : "अतः संक्षेप में हम यह लिख सकते हैं कि रोजमैरी का दृष्टान्त पुनर्जन्मवाद के पक्ष में निश्चित साक्ष्य प्रस्तुत करता हुआ प्रतीत होता है। (*Ancient Egypt Speaks*, पृ० १०६) योरपीय देशों में पुनर्जन्म के अन्य दृष्टान्तों के लिये राल्फ सिर्ली (Ralph Sirley) के महत्व पूर्ण ग्रन्थ *The Problem of Rebirth* को पढ़ना चाहिये। भारत मे ऐसे अनेक दृष्टान्त है और जो हमारे ध्यान में आये हैं उनमें से केवल दो का यहां उल्लेख किया जायगा। इनमें से एक बरेलो के केकयी नन्दन सहाय के पुत्र का है जिसे लगभग तीस वर्ष पहिले छोटी अवस्था में बनारस के अपने पूर्व जन्म की अनेक बातों की स्मृति हुई थी। जो अनुसन्धान के बाद सत्य पाई गईं। इसका और इसी तरह के कुछ अन्य दृष्टान्तों का वर्णन स्वयं सहाय ने एक लघु पुस्तिका *Reincarnation* में विस्तार के साथ करके प्रकाशित किया है। दूसरा दृष्टान्त दिल्ली की शान्ति देवी को है जिसने मथुरा के अपने पूर्वजन्म के परिवार का विस्तृत बातें बताई जो बाद में सत्य प्रमाणित हुई। इसका वर्णन इन्टरनेशनल आर्यन लीग आॅफ दिल्ली ने एक पुस्तिका *A case of Reincarnation* में प्रकाशित किया। इसका वर्णन १६३५, १५ दिसम्बर के *Illustrated Weekly* में भी छपा था। इन दृष्टान्तों को टाला नहीं जा सकता है। इनको समझना और इनकी व्याख्या करना आवश्यक है। साधारण मनोविज्ञान भी गौण, विच्छिन्न और नाटकीय व्यक्तित्व की अपनी धारणाओं से इनको नही समझा सकता।

अलौकिक तथ्यों का मानव व्यक्तित्व के सिद्धान्त पर प्रभाव ।

हम अलौकिक तथ्यों और घटनाओं पर एक विहंगम दृष्टि डाल चुके हैं ; जिनकी हाल ही में अनेक योग्य अनुसन्धान कर्त्ताओं ने वैज्ञानिक विधि से छानबीन की है । इसमें सन्देह नहीं है कि जो लोग इनके अभ्यस्त नहीं हैं उन्हें ये विचित्र रहस्यमय और वाहियात लगते हैं लेकिन सभी इस तरह की चीजें मिथ्या नहीं होती । परमार्थतः दुनिया की प्रत्येक चीज रहस्यमय है । जड़ और चैतन्य के क्षेत्र में किसी भी चीज का तात्विक स्वरूप हमें अभी तक ज्ञात नहीं है । केवल किसी अनुभव निरपेक्ष आधार पर या रहस्यमय होने के आधार पर किसी चीज के अस्तित्व से इन्कार नहीं किया जा सकता । जिन लोगों ने ऊपर वर्णित तथ्यों के निष्पक्ष अध्ययन में सत्यासत्य के निर्णय के लिये वर्षों लगाये हैं । वे इनकी वास्तविकता को स्वीकार करते हैं । व्यक्तित्व के सिद्धान्त पर इनका प्रभाव बताने के पूर्व इस प्रसंग में कुछ प्रसिद्ध और पूर्णतया विश्वसनीय पुरुषों के मतों को उद्धृत करना ठीक रहेगा ।

पूरे तीस वर्ष के अनुसन्धान के बाद प्रो० रिचेट ने यह निष्कर्ष निकाला : प्रच्छन्न-संवेदन (Cryptesthesia) दूर क्रिया (Telekinesis) ectoplasm और पूर्वबोध (Premonition) कड़ी चट्टान अर्थात सैकड़ों निरीक्षणों और प्रयोगों पर आधारित है। ···ज्ञान की एक ऐसी शक्ति है जो साधारण ज्ञानेन्द्रियो की शक्ति से मूलतः भिन्न है । (Cryptesthesia) दिन की भरपूर रोशनी मे भी वस्तुओं में कुछ गतियां बिना छुये होती है (telekinesis) । समूचे हाथ, शरीर वस्तुयें एक बादल से आकृति ग्रहण करते हुये प्रतीत होते हैं और उनमें जीवन के सभी लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं (ectoplasm) । पूर्वज्ञान होते हैं जिनकी व्याख्या न तो दैवयोग से हो सकती है और न सूक्ष्म दृष्टि से तथा जिनकी सूक्ष्म बातें तक कभी कभी सत्य सिद्ध हुई हैं । ये मेरे दृढ़ और वैज्ञानिक निष्कर्ष है (*Thirty Years of Psychical Research* पृ० ५९९) हैमलिन गार्लैंड (Hamlin Garland) जिन्होंने बोस्टन की अमेरिकन साइकिकल सोसाइटी की भौतिक तथ्य विषयक एक विशेष कमीटी के सदस्य की हैसियत से चालीस साल भौतिक तथ्यों के वैज्ञानिक अनुसन्धान मे लगाये, अपने महत्व पूर्व ग्रन्थ *Forty years of Psychical Research* के प्राक्कथन में लिखते हैं : "इन पृष्ठों में जितने भी तथ्यों का वर्णन किया गया है, उन सबको मैने स्वयं देखा, सुना, महसूस किया और तोला है तथा इन्हें बिलकुल निरपेक्ष रूप में प्रस्तुत किया गया है । यदि ये अलौकिक तथ्य भ्रमपूर्ण है तो मेरे जीवन के सभी तथ्य भ्रमपूर्ण हैं । ये घटित हुये और मैने इनको लेखबद्ध किया । इनके अर्थ के सम्बन्ध में निष्कर्ष निकालने के लिये मैं पाठकों को स्वतंत्र छोड़ता हूं । "यह ग्रन्थ दूरक्रिया भौतिकीकरण, वस्तुओं और व्यक्तियों का हवा में उठना (Levitation) स्वतंत्र लेख (*direct writing*) और स्वतंत्र भाषण (direct speech) के प्रमाणों से परिपूर्ण है । "ये प्रमाण स्वयं मेरी बनाई हुई परीक्षात्मक परिस्थितियों से प्राप्त हुये । "ग्रन्थ के अन्तिम पृष्ठों में गार्लैंड ने लिखा है, "यद्यपि ये जादू भरे और अविश्वसनीय लगते हैं तथापि ये ठीक उसी तरह हुये जिस तरह मैने लिखा है । धार्मिक विश्वासों से अप्रभावित रहकस मैंने उनको तत्काल लेखबद्ध किया था । " (पृ० ३८४) आगे लिखते हैं : "मैं अब भी पूर्ववत् प्रयोगवादी और सत्यान्वेषी हूं और यह कहने वालों से स्वयं को अधिकाँश में सहमत पाता हूँ कि "ये सब गतियाँ, आवाजें, आकृतियाँ

biodynamic स्वरूप की हैं : ये मानव शरीर की किसी अज्ञात शक्ति से पैदा होते हैं; और ये चैतन्य का जड़ के ऊपर नियंत्रण करने से पैदा होने वाले विचार रूप हैं'' (पृ० ३९३)। एक अन्य महान् अनुसन्धान कर्त्ता, टिरेल जिसने अपना समय और ध्यान मुख्यतया मानसिक तथ्यों की छानबीन में लगाया, निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुँचा ''मै इन बातों को प्रमाणित समझता हूं [१] अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष की एक शक्ति होती है जो विचार संक्रमण, दूरदर्शन और पूर्वज्ञान इन तीन प्रकारो में तथा शायद एक चौथे प्रकार अतीत-प्रत्यक्ष में भी प्रकट होती है, और दूरस्पर्श (*telesthesia*) की शक्ति के पक्ष में भी बहुत प्रमाण है। अतीन्द्रिय ज्ञात शक्ति के अस्तित्व का साक्ष्य सहज, प्रायोगिक और समाविगत तथ्यों के ऊपर आधारित है। [२] इस साक्ष्य की तार्किक व्याख्या किसी भी लौकिक परिकल्पना या परिकल्पनाओं के मेल से नहीं हो सकती। [३] मृत्यु के बाद आत्मा का अस्तित्व और उसका जीवितों के साथ वार्तालाप प्रबल साक्ष्य पर आधारित है। इस साक्ष्य की प्रकारान्तर से व्याख्या भी सम्भव है, किन्तु फिर भी यदि अधिक नहीं तो तुल्य रूप से आश्चर्य जनक बातों की कल्पना करनी ही पड़ेगी और इस प्रकार लोक सम्मत नियमों से दूर जाना ही पड़ेगा।'' इसी तरह महान् मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक विलियम मैकडूगल जिसने आध्यात्मिक अन्वेषण पर काफी ध्यान लगाया है, को भी यह मानना पड़ा : ''मेरा विचार है कि विचार-संक्रमण के पक्ष में अकाट्य प्रमाण है : '' मै समझता हूं कि ऐसे जोरदार प्रमाण काफी संख्या में इकट्ठे हो चुके हैं जो यह दिखाते हैं कि मृत्यु के पश्चात् मनुष्य बिलकुल नष्ट नहीं हो जाता बल्कि उसके व्यक्तित्व का कुछ अश तब भी जीवितों के ऊपर प्रभाव डालता रहता है। मै छाया इत्यादि को इन प्रमाणों में से एक मानता हूं, क्योंकि मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि एतद्विषयक अनुभवो में कोई ऐसा तत्व है जो हमारी समझ के बाहर है और यह प्रभावशाली तत्व अनुभवकर्ता की मानसिक विकृति से भिन्न है। मेरी धारणा है कि दूरदर्शन के पक्ष में इतनी जोरदार दलील है कि एतद्विषयक अनुसन्धान को आगे बढ़ाना नितान्त आवश्यक है, और यही मैं माध्यम से सम्बन्धित अनेक अलौकिक बातों के बारे में भी कहूंगा (*Religion and Science of Life* पृ० ८०--८१)

इन तथा इन्हीं की तरह के उच्च कोटि के वैज्ञानिक अनुसन्धानकर्त्ताओं के मतों को देखते हुये यह कहने में कोई संकोच नहीं होता कि अपरिचित, अबोधगम्य, रहस्यमय और वाहियात लगने के बावजूद उक्त तथ्य वास्तविक हैं, काल्पनिक नहीं। मानव व्यक्तित्व के बारे में एक सिद्धान्त को कायम करने में इनका अवहेलना करना तब तक अवैज्ञानिक होगा जब तक कि वर्षों तक अनुसन्धान करने के पश्चात् हम यह सिद्ध न कर दें कि ये विभ्रम या भ्रान्ति हैं। हमें इन तथ्यों को मनोवैज्ञानिक सामग्री का एक अंग मान कर अन्य सामग्रियों से उसी प्रकार संयुक्त करना होगा जिस प्रकार हाल में मनोविश्लेषण से प्राप्त सामग्री को साधारण मनोविज्ञान के तथ्यों से संयुक्त किया गया है। इस शताब्दी के प्रारम्भ मे असाधारण मनोविज्ञान जो कि अस्तव्यस्त और रूग्ण मन के तथ्यों के ऊपर आधारित मानव-स्वभाव का मनोविज्ञान है, साधारण मनोविज्ञान के ऊपर प्रभाव डालता रहा है, और इसके प्रभाव से हमने मानव स्वभाव के बारे में एक बहुत ही हीन और निराशाजनक धारणा बनाई है तथा धर्म, नीति और कला इत्यादि मानव स्वभाव की उत्कृष्टतम प्रतिक्रियाओं को निम्नतम, भद्दे और निकृष्ट मानव-प्रेरकों के प्रकाश में

समझने का काफी प्रयत्न किया है। पहिले जीवविज्ञान से प्रभावित मनोवैज्ञानिकों ने और बाद में मनोविश्लेषण से प्रभावित मनोविज्ञानों ने मानव-स्वभाव के उच्चतम स्तर को पाशविक सहज प्रवृत्तियों और प्रतिक्षेप-क्रियाओं के निम्नतम स्तर में परिणत करने का प्रयास किया। जैसा हम सोचते हैं वैसा ही बन जाते हैं। हमारे मनोविज्ञान ने हमारे दिमाग में यह भर दिया है कि हम उसी चीज से बने हैं, जिससे जानवर बने हैं, और व्यावहारिक जीवन में हम यह सिद्ध कर रहे हैं कि हम जानवरों से कोई अच्छे नहीं हैं, बल्कि बदतर ही हैं। हम अपनी वैज्ञानिक प्रगति का उपयोग अपनी पाशविक आवश्यकताओं की पूर्ति में कर रहे हैं और यह भूल रहे हैं कि हमारे अन्दर कोई ऊँची, गहरी और श्रेष्ठ चीज भी है जो आधुनिक मनोविज्ञान को ज्ञात नहीं है। अतः आधुनिक मनोविज्ञान को पढ़ने से मनुष्य ने अपने बारे में जो भ्रान्त धारणा बना ली है उसको सुधारने के लिये यह आवश्यक है कि मनोविज्ञान परामनोविद्या से प्रकाश ले जो कि अब इतनी पुरानी और सम्मान प्राप्त हो गई है कि उसे परामर्श दे सकती है। कम से कम मनोविज्ञान पर प्रभाव डालने का इतना अधिकार तो परामनोविद्या को है ही जितना असाधारण मनोविज्ञान को। दृढ़ आधार प्राप्त करने के लिये, दीर्घ जीवन के लिये, मनोविज्ञान को पूर्ण और निर्भ्रान्त बनाने के लिये विशेषतः मानव-व्यक्तित्व के मनोविज्ञान को, हमें अलौकिक तथ्यों के प्रकाश में पुनः मनोविज्ञान को लिखना चाहिये, वैसे ही जैसे हाल में असाधारण तथ्यों के प्रकाश में इसे लिखा गया। यह वस्तुतः एक दुर्भाग्य की बात है कि मनोविश्लेषण के जनक सिग्मड फ्रॉयड का अलौकिक तथ्यों से बहुत देर से परिचय हुआ। यदि ऐसा पहिले हो गया होता तो मनोविज्ञान का रूप ही कुछ दूसरा होता, क्योंकि अत्यधिक वृद्धावस्था में भी जब वह कुछ रहस्यमय तथ्यों के सम्पर्क में आया और उनकी सत्यता के बारे में आश्वस्त हो गया तो उसने अपनी विशिष्ट निर्भीकता के साथ कहा, "मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यदि कोई विज्ञान से रहस्यमय परिकल्पना की छानबीन करने और सही होने पर उसे स्वीकार करने की आशा नहीं करता तो वह विज्ञान पर अपनी अनास्था प्रदर्शित करता है" (*New Introductory Lectures on Psychoanalysis* पृ० ७५)। मैं सब मनोवैज्ञानिकों से, खास तौर से भारतीय मनोवैज्ञानिकों से, यह अनुरोध करता हूं कि वे अलौकिक तथ्यों पर ध्यान दें, उनकी जाँच करें, छानबीन करें और इतना विचार करें जितने के वे योग्य हैं और तत्पश्चात् मानव-व्यक्तित्व के बारे में कोई धारणा या सिद्धान्त स्थिर करें, क्योंकि मुझे यकीन है कि जब परामनोविद्या के तथ्यों से उनकी जानकारी होगी तब उन्हें मालूम होगा कि मानव-मनोविज्ञान पर किया हुआ उनका सारा काम अपूर्ण है और आँशिक मूल्य रखता है।

ऊपर दी हुई सामग्री को प्रामाणिक मानते हुये अब हमें देखना चाहिये कि वह हमारे मानव-व्यक्तित्व-विषयक मत पर क्या प्रभाव डालती है। अपने शैशव-काल में आध्यात्मिक अनुसन्धान ने जो अलौकिक तथ्य खोजे उनका मानव-व्यक्तित्व पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका एफ० डवल्यू० एच० मायर्स ने जो स्वयं एक महान अनुसन्धानकर्त्ता थे, बहुत योग्यता और अधिकार के साथ विचार किया। उस समय तक ज्ञात सभी तथ्यों का विचार करके मायर्स ने व्यक्तित्व का एक नया सिद्धान्त निकाला जो इस प्रकार है, "हममें से प्रत्येक के अन्दर जो 'चेतन-आत्मा' नामक वस्तु है—जिसे मैं अनुभव मूलक (empirical) ऊर्ध्वद्वारवर्ती (supraliminal) आत्मा कहना

पसन्द करूँगा, उसमें हमारी सम्पूर्ण चेतना या शक्ति का समावेश नहीं हो जाता। हमारे अन्दर एक अधिक व्यापक चेतना, एक अधिक गम्भीर शक्ति का निवास है जो हमारे पार्थिव जीवन में अधिकाँश में अव्यक्त रहती है, किन्तु पार्थिव जीवन की शक्ति या चेतना जिसका एक चुना हुआ अंग मात्र है, और जो मृत्यु के बाद उन्मुक्त होकर पूरी तरह अपने को व्यक्त करती है" (*Human Personality, Abridged* पृ० १३)। बहुत बुद्धिमानी से तथ्यों का अध्ययन करने के बाद मायर्स इस निष्कर्ष पर पहुँचा और इस तथ्य से निषेध नहीं किया जा सकता कि चेतन मानव-व्यक्तित्व समग्र व्यक्तित्व का जिसका कि हमें कम ही या बिल्कुल भी ज्ञान नहीं है, एक अंश मात्र है। इस तथ्य को मनोविश्लेषण के अनुसन्धानों से समर्थन प्राप्त हुआ है जिसे मायर्स का अपना काम कर चुकने के बहुत देर बाद प्रकाश दिखाई दिया। जैसा कि सबको मालूम है, मनोविश्लेषण के अनुसार मनुष्य का व्यक्तित्व एक बृहत् हिमशिला की तरह है जिसका अधिकाँश पानी में छिपे रहने के कारण दिखाई नहीं देता और पानी के ऊपर दीखने वाला अंश बहुत छोटा होता है। मानव-व्यक्तित्व में कुछ ऐसा है जो बाह्य निरीक्षक की और स्वयं व्यक्ति की चेतना को ज्ञात नहीं होता। इस प्रकार अलौकिक तथ्यों और असाधारण तथ्यों के अनुसन्धान इस बात पर सहमत है कि हमारी व्यक्तिगत चेतना से हमारा सम्पूर्ण अस्तित्व निरवशेष नहीं हो जाता; व्यक्तिगत चेतना के ऊपर और नीचे मन का वह प्रदेश है जो चेतना-प्रवाह को प्रभावित करता रहता है। मायर्स इसे (subliminal) अधोद्वारवर्ती कहता है, इसलिये कि यह प्रायः व्यक्तिगत चेतना के द्वार (limen) के नीचे रहता है। फ्रॉयड इसे अचेतन कहता है, इसलिये कि यह प्रायः चेतना के क्षेत्र के बाहर रहता है दोनों ही इस बात पर एकमत हैं कि व्यक्तित्व का वह भाग जो चेतना के बाहर हैं; (१) न केवल भौतिक या शारीरिक है, जैसा कि कुछ शरीरशास्त्री, यथा विलियम बी० कारपेन्टर (*Principles of Mental Physiology*) और मुन्स्टरबर्ग (Munsterberg) 'Psychotheraphy' कहते हैं, बल्कि आध्यात्मिक या मानसिक है, (२) कि व्यक्तिगत चेतना के व्यापार और शक्तियां इसके द्वारा प्रभावित और इस पर निर्भर होते हैं तथा इसके सीमित प्रकाशन मात्र हैं, (३) कि व्यक्तिगत चेतना को इसके व्यापारों और अस्तित्व का ज्ञान नहीं होता। साधारण मनोविज्ञान भी, जिसका कि शरीरविज्ञान से जुड़ा रहना आवश्यक नहीं है, एक तरह के अचेतन मन को मानने के लिये बाध्य है और यह इसलिये कि इसके बिना कुछ साधारण तथ्यों की व्याख्या मुश्किल है, उदाहरणार्थ, व्यक्तिगत अविच्छिन्नता (Personal continuity) की अनुभूति, नष्ट स्मृति, अव्याख्येय विचार, भाव और संवेगों का अचानक चेतना में आना, अव्याख्येय कार्य, समस्याओं का अचेतन समाधान, सम्मोहनोत्तर घटनायें, प्रश्नों के जवाब में स्वयंलेखन और स्वयंभाषण इत्यादि का। अतः जब तक हम इन चमत्कारिक बातों के लिये भौतिक मस्तिष्क, स्नायुमण्डल तथा उसके "unconscious cerebration, physiological disposition", "traces or residua", 'neurograms' 'brain patterns' इत्यादि नाम वाले व्यापारों को जो कि "subliminal", "unconscious", या "subconscious mentation" कहे जाने वाले व्यापारों से कम रहस्यमय नहीं हैं, उत्तरदायी ठहराने के लिये तैयार नहीं होते, तब तक हमें यह मानना पड़ेगा कि आदमी का व्यक्तित्व उसके शरीर और जाग्रत जीवन की चेतन मस्तिष्क-क्रिया मात्र में

समाप्त नहीं हो जाता। सामान्य मनोविज्ञान में प्रयुक्त होने वाला 'अचेतन' (subconscious) शब्द एक खोखला प्रत्यय है, साधारण जीवन के उक्त तथ्यों की व्याख्या के लिये एक परिकल्पना मात्र है, और सामान्य मनोविज्ञान को इसके बारे में इससे अधिक कोई ज्ञान नहीं है कि यह उक्त तथ्यों की व्याख्या करने में समर्थ है। वास्तव में मनोविज्ञान ने कभी भी अचेतन की, हमारे व्यक्तित्व के उस अङ्ग या तत्व की जिसे चेतन व्यक्तित्व के द्वारा न किये जा सकने वाले चमत्कारों का करने वाला माना जाता है, गम्भीरतापूर्वक छानबीन नहीं की है। इस दिशा में मनोविश्लेषण काफी आगे गया है। इसने हमारे व्यक्तित्व के अचेतन अंश, अचेतन की अन्तर्वस्तुओं तथा उसकी कार्यविधियों पर सामान्य मनोविज्ञान की अपेक्षा बहुत ज्यादा प्रकाश डाला है। उदाहरणार्थ, मनोविश्लेषण से हम यह सीखे हैं कि अचेतन एक भावात्मक मानसिक शक्ति है, यह सक्रिय है, स्मृति-प्रतिमाओं का एक निष्क्रिय भन्डार नहीं; हममें मूर्त विचार और मूलप्रवृत्तियाँ रहती हैं; यह स्वप्न मनोविकृत्ति के लक्षण अथवा उन सभी मानसिक व्यापारों में सक्रिय रहता है जो सीधे चेतन कारणों से उत्पन्न नहीं होते, इसके कार्य स्थानान्तरण (displacement) संघनन (condensation) तदात्मीकरण (identification) प्रक्षेपण (projection) नाटकीकरण (dramatization) प्रतीकीकरण (symbolic presentation) इत्यादि के नियमों के अनुसार होते हैं; इसे घटनाओं के तार्किक अनुक्रम और व्याघात के नियम (Law of contradiction) का ज्ञान नहीं होता; यह काल के बन्धन में नहीं है; इसकी अन्तर्वस्तुयें आदिकालीन, शैशवोचित, और जातिगत (racial) हैं; यह सुखान्वेषी है और वास्तविकता का ध्यान नहीं रखता; यह नैतिकता का अनुसरण नहीं करता। ये सब निष्कर्ष डा० फ्रॉयड और अन्य मनोविश्लेषकों के पास चिकित्सा के लिये आने वाले हजारों रोगियों के विश्लेषण से प्राप्त तथ्यों के ऊपर आधारित हैं; यदि साधारण व्यक्तित्व और उसके व्यवहार को मानदण्ड माना जाय तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि असाधारण व्यक्तित्व उसके नीचे पड़ता है, और निकृष्ट कोटि का प्रतीत होता है। उसके व्यवहार की व्याख्या करने के लिये निम्न कोटि के सिद्धान्त पर्याप्त हैं। इसके विपरीत, यदि फ्रॉयड और अन्य मनोविश्लेषकों को उच्च कोटि के माध्यमों, गुह्यविद्याविदों, महात्माओं और योगियों को देखने, विश्लेषण करने और उनके साथ रहने का अवसर मिलता तो उनको निश्चय ही मालूम पड़ जाता कि व्यक्तित्व के जिस अङ्ग का हमको ज्ञान नहीं है उसमें एक ऐसे स्तर का भी समावेश है जो 'अचेतन' कहे जाने वाले स्तर से भिन्न है। जहाँ तक वे पहुचे हैं वहाँ तक तो ठीक प्रतीत होता है; लेकिन उनका व्यक्तित्व के एक भिन्न प्रकार के अचेतन स्तर का निषेध और मानसिक जीवन के सब तथ्यों की स्वसम्मत अचेतन से व्याख्या करने का प्रयत्न उचित नहीं है। उदाहरणार्थ युंग ने एक जगह लिखा है : "जैसे आत्मायें (souls) व्यक्तिगत साइकी (psyche) के अंश हैं, वैसे ही प्रेत (spirits) सामूहिक साइकी के अंश हैं। आत्मायें चेतना से विच्छिन्न अचेतन ग्रन्थियाँ हैं, प्रेत सामूहिक अचेतन से विच्छिन्न ग्रंथियाँ (complexes) है जो वास्तविक जगत् से समायोजन के अभाव को दूर करती हैं अथवा मनुष्यों के बड़े-बड़े समूहों की कमियों की क्षति पूर्ति करती है। (Contributions to Analytic Psychology" में "*Beliefs in Spirits* पृ० २६७"। ऐसा प्रतीत होता है कि जब एक वैज्ञानिक अपने सिद्धान्त को एक बार सूत्रबद्ध कर चुकता

है तब उसके अन्दर उन तथ्यों से डरने की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है जिनसे उसके सिद्धान्त के टूटने का खतरा रहता है और फिर वह उनका मुकाबला करने से इन्कार कर देता है जिसका परिणाम यह होता हैं कि वह अपने ही सिद्धान्त के जाल में सीमित रहता है। डा० सिग्मंड फ्रॉयड ने ऐसा स्वीकार भी किया है, यद्यपि उस समय अपने सिद्धान्त को नये सिरे से सूत्रबद्ध कर सकने की आयु उनकी नहीं रह गई थी। फ्रॉयड ने लिखा है: "जब दस से अधिक वर्ष पूर्व मैंने अपना ध्यान इस दिशा (विचार-संक्रमण) में लगाया, तब मुझे भी भय हुआ था कि यदि अलौकिक तथ्य सत्यसिद्ध हुये तो कहीं हमारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण खतरे में न पड़ जाये और उसका स्थान अध्यात्मवाद और रहस्यवाद न ले ले। अब मेरा विचार दूसरा हो गया है। (*New Introductory Lectures* पृ० ७५) हमें नये तथ्यों का निर्भीकता के साथ मुकाबला करना होगा—उन तथ्यों का जिनकी मस्तिष्क और स्नायुमण्डल के व्यापारों से, चेतन व्यक्तित्व से और मनोविश्लेषण के अचेतन से व्याख्या नहीं हो सकती, तथा हमें उन तथ्यों को ठीक-ठीक समझने के लिये व्यक्तित्व की पर्याप्त धारणाओं को सूत्रबद्ध करने का साहस करना होगा। अत: मनोविश्लेषकों के अचेतन से भिन्न धारणाओं का औचित्य है, यथा मायर्स के (subliminal) (अधोद्वार-वर्ती मन) का। फिर भी पहले बताये हुये कारणों से अपने व्यक्तित्व के इस स्तर को हम 'ऊर्ध्वचेतन' (superconscious) नाम देना पसन्द करते हैं। अब हम उन तथ्यों से जिनको हम विश्वसनीय वैज्ञानिक अनुसन्धानकर्त्ताओं के साक्ष्य के आधार पर स्वीकार कर चुके हैं, ऊर्ध्वचेतन मन को अधिक से अधिक समझने की चेष्टा करेंगे।

जितने भी अलौकिक तथ्य हैं उनमें से वे सबसे अधिक निर्विवाद हैं जो विचार-संक्रमण, मन: पर्याय और दूर दर्शन के शीर्षकों के अन्तर्गत आते हैं और अब अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष में शामिल किये जाते हैं, वैज्ञानिक भाषा में 'विचार-सक्रमण' शब्द एक सम्माननीय स्थान प्राप्त कर चुका है, यद्यपि psychometry और आत्माओं से वार्तालाप इत्यादि अधिक रहस्यमय तथ्यों की व्याख्या अब भी विवादग्रस्त है। यदि अन्य तथ्यों को छोड़कर केवल विचार-संक्रमण का सक्रिय होना मान लिया जाय, तो भी हमें मानव-व्यक्तित्व की और व्यक्तियों के परस्पर सम्बन्ध की अपनी धारणाओं को बहुत कुछ बदलना होगा। मनोविज्ञान के लिये इसका क्या महत्व है, इसे बढ़ाचढ़ाकर कहना व्यर्थ है। मैकडूगल ने साइकिकल रिसर्च सोसाइटी के सभापति-पद से दिए गए भाषण में ठीक ही कहा था कि "विज्ञान और दर्शन के लिये इसका महत्व दोनों महाद्वीपों के विश्वविद्यालयों की मनोवैज्ञानिक प्रयोगशालाओं की सब उपलब्धियों से कहीं ज्यादा है।" विचार-संक्रमण को मानने से मानसिक क्रिया का मस्तिष्क और स्नायु-मण्डल पर निर्भर न रहना मानना पड़ता है, क्योंकि विचार-संक्रमण की भौतिक विकिरण (physical radiation) या मस्तिष्क की तरङ्गों से व्याख्या करने के सभी प्रयास असन्तोषजनक सिद्ध हो चुके हैं। यह भी ज्ञात हो चुका है कि अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष में भौतिक ज्ञानेन्द्रियाँ काम नहीं करतीं। जैसे कि डा० राइन ने कहा है, "अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष इन्द्रियों से पैदा नहीं होता।" इसमें सन्देह नहीं कि विचारकों का एक समूह ऐसा है जो यह मानता है कि रेडियो की तरह विचार-संक्रमण में प्रेषक का मस्तिष्क एक तरह की शक्ति उत्पन्न करता है और उसको किसी भौतिक माध्यम के द्वारा उपलब्धिकर्त्ता के मस्तिष्क तक तरङ्गों की शक्ल में भेजता है। सर विलियम क्रुक्स ने ऐसा माना था और १८९८ में ब्रिटिश एसोसियेशन फ़ॉर एडवान्समेंट आफ़ साइंस

के सभापति-पद से दिए गये भाषण में विकसित रूप में इस विचार को सामने रखा था। उनका विश्वास था कि विचार-संक्रमण में जो तरङ्गें प्रेषित की जाती हैं एक्स-रे तरङ्गों की तुलना में उनका विस्तार छोटा और उनकी प्रति सेकिंड संख्या अधिक होती है, यद्यपि ये सभी ईथर की तरङ्गें होती हैं। यह सिद्धान्त यह मान लेता है कि प्रेषक के मस्तिष्क से कोई शक्ति निकलती है। इसमें कई गम्भीर बाधायें हैं जिनमें से कुछ ये हैं: जितने प्रकार की भौतिक शक्तियों का विज्ञान को अभी तक ज्ञान हुआ है वे "विलोम वर्ग" (inverse square) के नियम का पालन करती देखी गई हैं अर्थात् सभी भौतिक शक्तियाँ जो किसी उद्गम से विकीर्ण होती हैं और उसके चारों ओर तरङ्गों की शक्ल में फैलती हैं, उद्गम में अपनी दूरी के वर्ग के अनुपात में क्षीण होती हैं। अतः बहुत दूरी पर अपना प्रभाव बनाये रखने के लिये उद्गम-स्थल पर उसे अत्यधिक बलवान् होना चाहिए। किन्तु, विचार-संक्रमण के सभी दृष्टान्तों में, दूरी चाहे जो भी हो, किंचित् बल प्रयोग भी नहीं होता और प्रेषक को कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता। वास्तव में देखा यह गया है कि विचार-संक्रमण या अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष में दूरी का कोई महत्व नहीं होता। "दूरी के तथ्य और सामान्य तथ्य यह सुझाव देते हैं कि अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष में मन विस्तार और दूरी के सामान्य भौतिक बन्धनों से मुक्त होता है" (Rhine : *Extra Sensory Perception* पृ० २२५)। मरते हुये व्यक्ति भी जिनके अन्दर थोड़ी ही शारीरिक शक्ति शेष रहती है, काफी दूरी तक अपने विचारों और अनुभूतियों को भेजने में सफल देखे गये हैं। पुनः भौतिक शक्तियाँ जिन माध्यमों में से होकर गुजरती हैं उनमें कुछ प्रभाव छोड़ जाती हैं; किन्तु मस्तिष्क-शक्ति का भौतिक माध्यम पर अत्यधिक शक्तिशाली यन्त्रों से भी किसी प्रभाव का पता नहीं चला है। मस्तिष्क के किसी ऐसे अङ्ग का अभी तक पता नहीं चला है जिसका विचार तरङ्ग भेजने या ग्रहण करने में उपयोग होता हो। विचार-संक्रमण पर किये गए प्रयोगों में किसी भी ऐसी संकेत-पद्धति का पता नहीं चला जिसके अनुसार संदेशों को भौतिक तरङ्गों में और तरङ्गों को मानसिक संदेशों में परिवर्तित किया जाता हो और जो प्रेषक और उपलब्धिकर्त्ता के मन को ज्ञात हो। फिर तरङ्ग सिद्धान्त से यह समझ में नहीं आता कि जब तरङ्गें सब दिशाओं में फैलती हैं तो प्रेषित संदेशों को एक विशेष व्यक्ति ही क्यों पकड़ता है? इन बाधाओं के कारण आध्यात्मिक अनुसन्धानकर्त्ताओं ने भौतिक और यांत्रिक मस्तिष्क-तरङ्ग के सिद्धान्त को छोड़ दिया है। वे सब अब विचार-संक्रमण को एक विशुद्ध मानसिक या आध्यात्मिक तथ्य मानने लगे हैं, जिसके अपने अलग ही नियम हैं। यद्यपि इनका हमें ज्ञान नहीं है तथापि अन्य अलौकिक तथ्यों के अध्ययन से इनका कुछ संकेत मिल सकता है। इन नियमों की जानकारी के लिये हमें विचार-संक्रमण और अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष के तथ्यों को अन्य अलौकिक तथ्यों से संयुक्त करना चाहिये। सम्भव है कि राइन का यह कथन सही हो कि "उपलब्धिकर्त्ता का मन ज्ञातव्य वस्तु या मानसिक कार्य तक पहुँचता है और मन का यह प्रक्षेप (projection) एक विशिष्ट अयांत्रिक ढङ्ग से होता है" (*Extra Sensory Perception* पृ० २२६)। इस सिद्धान्त को निद्रा, सम्मोहन-जनित, समाधि, छाया, सूक्ष्म-शरीर का प्रक्षेप (astral projection) इत्यादि में होने वाले 'आध्यात्मिक अभियान' (Psychic excursion) से समर्थन प्राप्त होता है। ये सब यह सूचित करते हैं कि मनुष्य के अन्दर एक ऐसा आध्यात्मिक तत्व है जो

भौतिक शरीर से भिन्न है और कभी-कभी उससे वियुक्त भी हो सकता है तथा जो अत्यधिक दूरस्थ वस्तुओं को और दूसरे व्यक्तियों के विचारोंको अपरोक्षतः जानने की क्षमता रखता है। प्रत्येक मानव-व्यक्तित्व की पृष्ठभूमि में एक ऐसा आध्यात्मिक तत्व अवश्य वर्तमान रहता है, क्योंकि तथ्यों से यह पता चलता है कि प्रत्येक व्यक्ति कभी-कभी अलौकिक ज्ञान प्राप्त करता है तथा विचारों को भेज और पकड़ सकता है तथा प्रशिक्षा और अभ्यास से इस आध्यात्मिक तत्व से लाभ उठा सकता है। इस तथ्य से कि यह तत्व भौतिक शरीर, स्नायुमण्डल और ज्ञानेन्द्रियों से स्वतन्त्र होकर कार्य कर सकता या करता है, यह प्रमाणित होता है कि भौतिक देह की मृत्यु हो जाने पर इसकी सत्ता रह सकती है। exteriorization of motivity, दूरक्रिया (telekinesis) वस्तुओं का हवा में उठना (levitation) अलौकिक ध्वनियों raps और poltergeists के तथ्यों से यह समर्थित होता है कि मानव-व्यक्तित्व का यह अतिभौतिक तत्व न केवल अलौकिक ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ है बल्कि शरीर के अङ्गों को इस्तेमाल न करते हुए अलौकिक कार्य करने में भी समर्थ है। मानव-व्यक्तित्व का यह तत्व जो भौतिक-और यंत्र विज्ञान को ज्ञात जड़ द्रव्य के नियमों के शासन न होने के कारण भौतिक तत्व से भिन्न है और इसलिए जिसे आध्यात्मिक कहना ही ठीक है, केवल वस्तुओं के जगत् में अलौकिक ज्ञान प्राप्त करने और अलौकिक कार्य करने में समर्थ है बल्कि भौतिक शरीर और उसके अवयवों को नियंत्रित करने, रोगमुक्त करने और उनकी सृष्टि करने की भी उच्च क्षमता रखता है। शरीर और उसके व्यापारों पर असामान्य नियन्त्रण करने की इसकी शक्ति का परिचय इस तथ्य से मिलता है कि मेरे सुपरिचित हठयोगी जिनका चिकित्साशास्त्रियों ने नियन्त्रित परिस्थितियों में निरीक्षण किया था और मिश्र के सुपरीक्षित बे-ब्रादर्स (Bey Brothers) हृदय और नाड़ी की गति को निरुद्ध करने और इच्छानुसार परिवर्तित करने में समर्थ हो चुके हैं। इनका पता सम्मोहन-जनित समाधि, प्रेतबाधा और न सीखी हुई भाषा में स्वयंलेखन और स्वयंभाषण में शरीर के ऊपर जो असामान्य नियन्त्रण प्राप्त हो जाता है उससे भी चलता है। अलौकिक रोगमुक्ति, निर्देश और आत्म-निर्देश से रोगमुक्ति आध्यात्मिक तत्व की सब तरह के रोगों को ठीक करने की शक्ति के परिचायक हैं। समग्र शरीर या उसके अवयवों के भौतिकीकरण में जो कि क्षण भर में हो जाता है। इसकी रचना-शक्ति प्रकट होती है।

इन अलौकिक तथ्यों और घटनाओं में ऊर्ध्व चेतन आध्यात्मिक तत्व के बारे में जो कुछ भी व्यक्त हुआ है उसे देखते हुये हम इसकी ज्ञान, अनुभूति, कार्य, रोगमुक्ति तथा सृष्टि करने की शक्तियों को किसी सीमा के अन्दर नहीं बाँध सकते, क्योंकि जो कुछ थोड़ा सा हम जान चुके हैं वह यह दिखाने के लिये पर्याप्त है कि इसके व्यापार देश और काल के बन्धन से मुक्त हैं। विचार संक्रमण और अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष दोनों देश काल से स्वतंत्र पाये गये हैं। जैसा कि Ossowiekie के अद्भुत चमत्कारों से स्पष्ट है, दूरदर्शन में अवरोध या छिपाने से कोई रुकावट नहीं पड़ती। Psychometry में माध्यम एक प्रकार के सर्वज्ञत्व का प्रदर्शन करता है जो देश, काल या वस्तु से सीमित नहीं होता। पूर्वज्ञान और अतीतज्ञान इसका और समर्थन करते हैं। रोजमैरी ने जिस प्रकार के Xenoglossy को प्रदर्शित किया था उसमें जीवन में कभी न सीखी हुई भाषाओं को भी माध्यम सरलता और प्रवाह के साथ बोल सकते हैं। लौर्डीज और अन्य स्थानों में

आध्यात्मिक रोगमुक्ति के जो दृष्टान्त देखे गये हैं वे इतने अद्‌भुत है कि आध्यात्मिक तत्व की इस शक्ति की किसी सीमा की कल्पना नहीं की जा सकती।

यह तत्व जड़ द्रव्य, शरीर और चेतना से परे होते हुये भी मानव व्यक्तित्व का वास्तविक अंग है और मृत्यु से परे है जिसका अभावात्मक साक्ष्य यह तथ्य है कि इसकी सत्ता और व्यापार भौतिक शरीर पर निर्भर नहीं है। जो चीज़े अपनी सत्ता या व्यापार के लिये किसी अन्य चीज़ पर निर्भर नहीं रहती वह उस अन्य चीज के नष्ट हो जाने पर भी सत्तावान् और सक्रिय रह सकती है, यद्यपि जब तक दोनों का परस्पर सहयोग है तब तक ऐसा लग सकता है कि वे अवियोज्य है। स्वयलेखन, स्वयंभाषण, स्वतंत्रलेखन, स्वतंत्रभाषण, प्रेतबाधा, समाधि–नियामक तथा आत्माओं से वार्तालाप इत्यादि तथ्यों में मानव व्यक्तित्व का आध्यात्मिक तत्व जो काम करता है उनसे उसके अमरत्व का परिकल्पना की पुष्टि के लिये भावात्मक साक्ष्य प्राप्त होता है। इस साक्ष्य को मरणासन्न व्यक्ति और उसकी सुश्रूषा करने वालों को दिखाई देने वाली छायाओं, मृतक के प्रेत, भूतग्रस्त मकानों से भी बहुत बल मिलता है। bilocation स्वप्न और सम्मोहित दशा में 'आध्यात्मिक अभियान' जीवितों की छाया, उचित अभ्यास और प्रशिक्षा के बाद इच्छानुसार शरीर से बाहर निकलना इत्यादि तथ्य इस विश्वास को और अधिक परिपुष्ट करते हैं, क्योंकि इनसे यह सूचित होता है कि मनुष्य का भौतिक शरीर के अतिरिक्त एक अन्य शरीर भी होता है। जिसे वायव्य शरीर, सूक्ष्म शरीर या दिव्य शरीर कहा जा सकता है। जो भौतिक शरीर का प्रतिरूप होता है, बल्कि यह कहना उचित होगा कि भौतिक शरीर जिसका हीन प्रतिरूप है, जो वस्तुत: मूल शरीर प्रतीत होता है और भौतिक शरीर जिसकी नकल है। दिव्य शरीर भौतिक शरीर से पृथक किया जा सकता है और भौतिक शरीर उसका वाह्य आवरण मात्र है। यह तथ्य डा० विल्टज के दृष्टान्त से (*Proc. S. P. R.* Vol. VII में वर्णित)। पर्याप्त रूप से स्थापित हो चुका है जिसे दिव्य शरीर के भौतिक शरीर से पृथक होने का अनुभव हुआ था और जो दोनों को देख सकता था। ऐसे दृष्टान्त अनेक हैं।

वास्तव में, जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, मानव व्यक्तित्व के आध्यात्मिक तत्व की अमरता और जीवितों के मन और शरीर पर प्रभाव डालने की उसकी शक्ति के लिये साक्ष्य इतना अधिक है कि आसानी से उसको नहीं टाला जा सकता। इस परिकल्पना से बचने के लिये हमें ऐसी परिकल्पनाओं को अपनाना होगा जो मनोविज्ञान के लिये इतनी ही अस्वीकार्य और अरूचिकारक हैं, फिर भी जिनसे नहीं बचा जा सकता और जो आत्मा की अमरता की परिकल्पना को हटाने की अपेक्षा उसके लिये पिछला दरवाजा खोल देती हैं। यहाँ हमारा मुख्य सम्बन्ध मरणोतर अस्तित्व की समस्या से है। हम यहाँ इसकी वकालत नहीं करेंगे। हम केवल यह दिखाना चाहते हैं कि यदि आत्मा की परिकल्पना से बचने की कोशिश की जाय तो हमें यह मानना पड़ेगा कि माध्यम विचार संक्रमण और अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष का सर्वज्ञता की सीमा तक उपयोग करके मृतक के जीवन के तथ्यों की जानकारी एकत्रित करता है और फिर उनको परस्पर संयुक्त करके एक नकली व्यक्तित्व का निर्माण करता है। यदि आध्यात्मिक तथ्य (spiritual

enomena) सत्य है तो हमें दो में से एक परिकल्पना को मानना ही पड़ेगा : या तो माध्यम सर्वज्ञ के समकक्ष अलौकिक ज्ञान-शक्ति-संपन्न होता है या मृतक का मृत्यु के बाद भी अस्तित्व रहता है और वह संदेश प्रेषित करने की शक्ति रखता है। ये दोनों ही परिकल्पनायें आधुनिक मनोविज्ञान के लिये अमान्य और अरूचिकारक हैं। विचार संक्रमण और दूरदर्शन की असाधारण मात्रा को मानकर भी आध्यात्मिक तथ्यों की चुनाव पूर्णता और वैयक्तिकता को नहीं समझा जा सकता। फिर भी दोनों परिकल्पनायें परस्पर विरुद्ध नहीं प्रतीत होतीं, बल्कि एक में दूसरी गर्भित है और दोनों एक साथ सही हो सकती हैं। तथ्यों से यह प्रकट होता है कि दोनों को ही मानना पड़ेगा। Psychometry अतीतबोध और भविष्य बोध के तथ्यों की बगैर एक अत्युच्च कोटि के अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष को माने, व्याख्या नहीं की जा सकती। और यदि हमारे व्यक्तित्व का कोई ऐसा स्तर है जो ज्ञान की इन शक्तियों और कार्य की समान रूप से अद्भुत शक्तियों का उपयोग करता है तथा भौतिक शरीर से पृथक हो सकता है, तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि वह भौतिक शरीर के नष्ट होने पर भी बना रहता है, किसी अतीन्द्रिय जगत् में निवास करता है, उन मनों के सम्पर्क में आने की सामर्थ्य रखता है जो अभी भौतिक शरीरों से संयुक्त हैं और अपने भौतिक शरीर के समान दूसरों के भौतिक शरीरों पर भी नियंत्रण कर सकता है। आध्यात्मिक तथ्यों की व्याख्या करने में मरणोत्तर अस्तित्व की परिकल्पना अकेली विचार संक्रमण की परिकल्पना की अपेक्षा अधिक सरल और सीधी मालूम पड़ती है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि हमारा अचेतन और निम्न कोटि का मन नकली व्यक्तित्व का रूप धारण करता है, जैसा कि हिस्टीरिया और गौण व्यक्तित्व इत्यादि में होता है। किन्तु जो बात निम्न कोटि के असंस्कृत मन के बारे में सही है उसका सर्वज्ञता को समकक्ष उदार शक्तियों से सम्पन्न उच्च मन के बारे मे सही होना आवश्यक नहीं है। अत: मेरी सम्मति यह है संदेश प्रेषण के ऐसे दृष्टान्तों की व्याख्या के लिये जिनमें प्राप्त सूचना [१] किसी भी जीवित व्यक्ति को ज्ञात नहीं थी लेकिन मृत व्यक्ति को ज्ञात थी (Chaffin Will का दृष्टान्त) और बाद में सही सिद्ध हुई, [२] बैठनेवालों और माध्यम को ज्ञात नहीं थी लेकिन आत्मा से प्राप्त मानी गई और बाद में प्रमाणित हुई [३] जिनमें संदेश-प्रेषक अपने विशिष्ट हाव भावों, अभिवृत्तियों, प्रतिक्रियाओं, और महत्व-पूर्ण घटनाओं की स्मृति से अपनी पहिचान करवाता है, [४] जिनमें कोई ऐसी मृतात्मा संदेश देती है जिसे बैठने वाले नहीं जानते लेकिन जो बाद की छानबीन से मृत सिद्ध हुई और जिससे प्राप्त सूचना महत्वपूर्ण और सही सिद्ध हुई [५] जिसमें संदेश प्रेषक माध्यम के लिये बिल्कुल नई और अज्ञात भाषा में बात करता है, [६] जिसमें संदेश प्रेषक माध्यम की लिपि से भिन्न और मृतक की लिपि से साहृश्य रखने वाली लिपि में लिखता है, [७] जिसमें तथा कथित संदेश प्रेषक का प्रथम कोटि के ग्रन्थों का ज्ञान और उच्च स्तर की विद्वत्ता माध्यम के ज्ञान और विद्वत्ता से बहुत ज्यादा है, [८] जिनमें Cross Correspondence से संदेश प्राप्त होते हैं, [९] जो उसी मृतात्मा से सम्बन्धित अलौकिक स्वप्न, छाया, प्रेत बाधा इत्यादि के साथ होते हैं, और [१०] जिनमें मनोविश्लेषण प्रतिक्रिया, alvanic इत्यादि परीक्षायें तथाकथित नियामक (control) और

माध्यम के व्यक्तित्वों के मध्य भिन्नता स्थापित कर चुकी है, हमें आत्मा की परिकल्पना को सर्वाधिक सरल और सीधी मानकर अपनाना चाहिये, क्योंकि जब हम आधुनिक शरीर विज्ञान के द्वारा प्रस्तुत इस मुख्य बाधा को पहिले ही दूर कर चुके हैं कि मन शरीर से पृथक और स्वतंत्र होकर कार्य नहीं कर सकता, तब इसको व्यर्थ नहीं माना जा सकता।

मरणोत्तर अस्तित्व को एक सम्भावित तथ्य मानने के बाद और मृतक के अन्दर संदेश प्रेषण तथा भौतिकीकरण की इच्छा को जो कि इस लोक में उसकी रुचि, पार्थिव प्राणियों से उसका प्रेम और सहानुभूति की सूचक है, मानने के बाद यह समझना मुश्किल नहीं है कि पुनर्जन्म एक प्राकृतिक तथ्य है, जैसे कि पाश्चात्य देशों में अब अधिकाधिक माना जाने लगा है।

इस प्रकार मनुष्यों द्वारा स्वभावतया अथवा विशेष दिशाओं में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद जो अलौकिक तथ्य प्रदर्शित किये जाते हैं उनके अध्ययन से हम इस निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मानव व्यक्तित्व में कुछ ऐसे तत्व हैं जिनका हमारे आधुनिक मनोविज्ञान को ज्ञान नहीं है और जिनका मनोविज्ञान को मानव–व्यक्तित्व को अधिकाधिक समझने के लिये (जो कि इसका मुख्य उद्देश्य है) वैज्ञानिक विधि के अनुसार अध्ययन, छानबीन और निर्धारण करना चाहिये।

अध्याय ४

आत्माओं का संवाद[1]

(विचार-संक्रमण)

दूसरों तक अपने विचार, अनुभूतियाँ और इच्छायें पहुँचाने में हम प्राय: अपने अभिव्यंजक और संवेदना-ग्राही अङ्गों पर निर्भर रहते हैं। ये अङ्ग भौतिक हैं और देश-गत सीमाओं के अन्दर कार्य करते हैं। जब तक हम इन भौतिक अङ्गों का ठीक-ठीक उपयोग नहीं करते तब तक हमारे विचार, अनुभूतियाँ और इच्छायें हमीं तक सीमित रहती हैं। ऐसा इसलिये होता है कि हम शरीरधारी प्राणी हैं। हमारा दूसरों से कोई सीधा मानसिक या आध्यात्मिक सम्बन्ध नहीं होता। दूसरों के साथ हमारे संपर्क भौतिक शरीर और उसके अङ्गों के माध्यम से ही होते हुये प्रतीत होते हैं। फिर भी मनुष्य अपने अन्दर की एक ऐसी सत्ता में निसर्गत: विश्वास करता है जो उसके स्थूल शरीर से भिन्न है और जिसे वह आत्मा कहता है। यदि किसी प्रेमी, भक्त या साधु को यह कहा जाय कि उसकी अनुभूति, प्रार्थना या सदिच्छा प्रमिका, ईश्वर या प्राणियों तक सीधी नहीं पहुंचती, तो उसे अत्यधिक निराशा होगी। अधिकतर लोगों की यह इच्छा होती है कि काश वे दूसरों से सीधा सम्पर्क कर सकते। हमें यह इच्छा होती है कि हमारे विचार, अनुभूतियाँ और इच्छायें दूसरों तक पहुँचने के लिये भौतिक साधनों पर निर्भर न होतीं। इस इच्छा से यह विश्वास होता है ऐसा होना सम्भव है। क्या यह वास्तव में सम्भव है? यहाँ हम आज तक के वैज्ञानिक अनुसन्धान को दृष्टि में रखकर इस प्रश्न का उत्तर देंगे।

आत्मा के संदेश की सम्भावना में विश्वास उतना ही पुराना है जितनी मानव-जाति। आधुनिक भौतिक-विज्ञान का प्रभुत्व स्थापित हो जाने पर इस विश्वास को संदेह से देखा जाने लगा। जड़वादी दृष्टिकोण वाले वैज्ञानिकों ने न केवल विचारों के सीधे एक मन से दूसरे में संक्रमण की सम्भावना का निषेध किया, बल्कि भौतिक शरीर से भिन्न किसी आत्मा या मन के अस्तित्व का भी निषेध किया। फिर भी पिछली शताब्दी के अन्तिम वर्षों में विज्ञान और जड़वाद परस्पर भिन्न माने जाने लगे और विज्ञान को जीवन और जगत् की समस्याओं को सुलझने की एक विशेष विधि मात्र समझा जाने लगा जिसका स्वरूप है निष्पक्ष अनुभवमूलक अनुसन्धान। मानव-जीवन की समस्याओं की वैज्ञानिक गवेषणा के लिये आवाज उठी। १८८२ में अपने समय के कुछ विख्यात वैज्ञानिकों ने तथाकथित

[1] ऑल इन्डिया रेडियो, लखनऊ से प्रेषित एक वार्त्ता।

'अलौकिक' तथ्यों का वैज्ञानिक अध्ययन करने के उद्देश्य से अपना एक संगठन बनाया जिसको उन्होंने 'सोसाइटी फॉर साइकिकल रिसर्च' नाम दिया। विचार-संक्रमण इन तथ्यों में से एक था। इन अनुसन्धानकर्त्ताओं ने एक बड़ी संख्या में तथ्यों की खोज की जो तथ्य होने के कारण असन्दिग्ध थे किन्तु जिनकी व्याख्या के लिये एक ऐसी शक्ति का अस्तित्व मानना पड़ता था जिसके कारण विचार सीधे एक मन से दूसरे में चले जाते हैं। एफ॰ डब्ल्यू॰ एच॰ मायर्स ने इस शक्ति का नाम रखा 'telepathy' जिसका शाब्दिक अर्थ है 'दूरस्थ व्यक्ति के भाव का ज्ञान'। इस शब्द की परिभाषा देते हुये उन्होंने कहा कि यह (विचार-संक्रमण) "ज्ञात इन्द्रियों के माध्यम के बिना किसी भी प्रकार के संस्कारों का एक मन से दूसरे मे पहुँच जाता है।" वारेन (Warren) ने *Dictionary of Psychology* में एक विस्तृत परिभाषा यह दी है कि विचार-संक्रमण "अनुभूतियां, आवेगों, विचारों अथवा इनसे भी जटिल अनुभवों का एक मन से दूसरे मन में पहुँचना है और यह ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा नहीं होता।"

साइकिकल रिसर्च सोसाइटी की स्थापना के बाद विचार-संक्रमण के पक्ष में विस्तृत और निर्णयात्मक साक्ष्य का संग्रह हुआ। इसको दो प्रमुख शीर्षकों के अन्तर्गत रखा जा सकता है: स्वाभाविक और प्रायोगिक। पहिले में किसी उपलब्धिकर्त्ता को असाधारण विचारों, प्रतिमाओं, इच्छाओं या संदेशों की यदाकदा होने वाली स्वाभाविक और अप्रत्याशित प्राप्ति के वे दृष्टान्त शामिल हैं जिनके बारे में बाद में ज्ञात हुआ कि वे किसी प्रेषक के द्वारा जीवन की किसी विपत्ति के समय या किसी गम्भीर संवेग के प्रभाव से चेतन या अर्द्ध चेतन अवस्था में भेजे गये थे। ऐसे दृष्टान्त सभी कालों और देशों में पाये गये हैं, लेकिन उनका संग्रह और सूक्ष्म अध्ययन पहिली बार साइकिकल रिसर्च सोसाइयटी ने किया। स्वाभाविक विचार-संक्रमण के बहुत ही रोचक दृष्टान्त वे हैं जिनमें उपलब्धि-कर्त्ता को दिखाई देने वाले विभ्रम प्रेषक की किसी आपत्ति, यथा, गम्भीर रोग, दुर्घटना या मृत्यु, से सम्बन्ध रखते हैं। ऐसे दृष्टान्तों मे प्रायः उपलब्धिकर्त्ता को प्रेषक की छाया दिखाई दी जिसने बोलकर या संकेत से संदेश दिया। इस तरह की छायाओं का वर्णन गर्नी, मायर्स और पॉडमोर—कृत प्रसिद्ध ग्रन्थ *"Phantasms of the Living"* में मिलता है। इस पर और अधिक विचार *Proc. S. P. R.* Vol X में प्रकाशित "Report of the Census of Hallucinations" शीर्षक लेख में किया गया है।

विचार-संक्रमण में विश्वास को प्रायोगिक साक्ष्य से जिसमें पिछले पचास सालों में अत्यधिक वृद्धि हुई है, और अधिक बल और दृढ़ आधार प्राप्त हुआ है। विभिन्न देशों में प्रायोगिक अनुसन्धान करने वाले वे लोग थे जो वैज्ञानिक विधि में प्रशिक्षा प्राप्त थे, सत्य का अन्वेषण मात्र जिनका उद्देश्य था और जिनकी सचाई के प्रति कोई शंका नहीं की जा सकती थी। इसमें सब तरह की सावधानी बरती गई, इन तथ्यों के खिलाफ़ जितनी भी शङ्कायें की जा सकती थीं उनको उठाया गया तथा विचार-सक्रमण के अति-रिक्त जितनी भी परिकल्पनायें हो सकती थीं उनको परीक्षा करके असन्तोषजनक पाया गया। पूर्णतया नियंत्रित परिस्थितियों में प्रेषकों और उपलब्धिकर्त्ताओं के ऊपर जागृत

दशा में, सम्मोहितावस्था में, एक ही कमरे में, एक ही मकान के भिन्न-भिन्न कमरों में, एक ही शहर के विभिन्न मकानों में, विभिन्न देशों में, कुछ फुट की दूरी पर और हजारों मीलों की दूरी पर हजारों की संख्या में प्रयोग किये गये। भेजे हुए और सही-सही प्राप्त किए हुए संदेशों की संख्या इतनी अधिक है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। संख्यायें, आकृतियाँ, ताश के पत्ते, तस्वीरें, वास्तविक और काल्पनिक दृश्य, घटनायें, संवेग, अनुभूतियाँ, पीड़ा इत्यादि की संवेदनायें, कुछ करने के आवेग, इच्छायें इत्यादि सफलतापूर्वक भेजे और ग्रहण किये जा चुके हैं। सफलतायें इतनी अधिक हुई हैं कि उन को दैवयोग मात्र समझना ग़लत है। प्रयोगकर्त्ताओं ने इस बात के लिये कि उनके प्रयोज्य धोखा, छल, कपट, झूठ और गुप्त समझौते का व्यवहार न कर सकें, काफी सतर्कता रखी हैं। अचेतन गतियाँ और फुसफुसाना, 'number-habits' पेशी-सामुद्रिक (muscle-reading) इत्यादि जितने भी भौतिक और शारीरिक तरीके दूसरों के मन की बात जानने के हो सकते हैं उनके लिये तथा आकस्मिकता के लिये उचित गुंजाइश रखी गई हैं। अनेक अवसरों पर स्वयं प्रयोगकर्त्ता प्रेषक और उपलब्धिकर्त्ता बने हैं। सफल प्रयोगों के एक बड़े प्रतिशत से जो कि इतना ऊँचा है कि आकस्मिक नहीं माना जा सकता और इतनी सतर्कता से प्राप्त हुआ है कि छल-कपट का फल नहीं माना जा सकता, यह असन्दिग्ध रूप से सिद्ध हो चुका है कि दो मनो के मध्य भौतिक साधनों की सहायता के बिना विचारों का आदान-प्रदान हो सकता है चाहे उनके बीच की दूरी कितनी ही बड़ी क्यों न हो।

अब प्रश्न यह है कि यदि विचार-संक्रमण एक सिद्ध तथ्य है तो इसकी व्याख्या क्या हो सकती है? यह किस विधि से होता है? इस प्रसंग में जो पहिली बात मन में उठती है वह यह है कि जैसे रेडियो में होता है वैसे ही प्रेषक का मस्तिष्क एक प्रकार की ऊर्जा (energy) उत्पन्न करता है जो तरङ्गों की शक्ल में किसी भौतिक माध्यम में से होते हुये उपलब्धिकर्त्ता के मस्तिष्क तक पहुँचती है। जो लोग विचार-सक्रमण को एक तथ्य स्वीकार करते हैं उनमें से अधिक इस परिकल्पना को मानकर विचार-संक्रमण को एक साधारण बात मानते हैं। १८६८ में ब्रिटिश ऐसोसियेशन फॉर एडवान्समेंट ऑफ़ साइंस के सामने अपने सभापति-पद से दिए गए भाषण में सर्वप्रथम सर विलियम क्रुक्स ने यह सुझाव रखा था। उनका कथन यह था कि प्रेषक के मस्तिष्क से उत्पन्न ईथर-तरङ्गें एक्स-रे की तरङ्गों से भी सूक्ष्म और अधिक प्रति सेकिंड-संख्या वाली होती है। इस सिद्धान्त में प्रेषक के मस्तिष्क से किसी ऊर्जा का निकलना और उसका आकाश में से होकर उपलब्धिकर्त्ता के मस्तिष्क तक पहुँचना माना गया है। इसके विरुद्ध कई आपत्तियाँ हो सकती हैं जिनमें से कुछ ये हैं: अब तक विज्ञान को ज्ञात सभी ऊर्जायें 'विलोम वर्ग' के नियम का पालन करती हुई पाई गई हैं अर्थात् अपने उद्गम के चारों ओर तरङ्गों की शक्ल में फैलने में उनकी शक्ति उद्गम से दूरी के वर्ग के अनुपात में क्षीण होती है। इस प्रकार काफी दूरी पर उनका प्रभाव बना रहे, इसके लिये यह आवश्यक है कि उद्गम पर उनकी शक्ति बहुत अधिक होनी चाहिए। लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं है कि दूरस्थ विचार-संक्रमण के प्रयोगों में प्रेषक को अधिक प्रयत्न करना पड़ता

है। सफल विचार-संक्रमण में थोड़ी या बहुत दूरी से कोई अन्तर पड़ता नहीं दिखाई देता। विचार-संक्रमण जितना प्रभावशाली छोटी दूरी पर होता है उतना ही बड़ी दूरी पर भी। बहुत से दृष्टान्तों मे मरणासन्न व्यक्तियों ने जिनके अन्दर की शक्ति समाप्त प्राय थी, सफलतापूर्वक अपने विचारों और अनुभूतियों को काफी दूरी तक प्रेषित किया है। फ़िर, जब ऊर्जा आकाश में से गुजरती है तो माध्यम के ऊपर कुछ प्रभाव छोड़ जाती है। लेकिन सूक्ष्म यन्त्रों की मदद से भी मस्तिष्क-ऊर्जा के किसी ऐसे प्रभाव का पता नहीं चला है। किसी भी शरीरशास्त्री या अवयवरचनाविद् को अभी तक मस्तिष्क के किसी प्रसारक या ग्राहक अङ्ग का पता नहीं चला। विचार, अनुभूतियों और इच्छाओं को तरङ्गों के रूप में किसी भौतिक माध्यम से भेजने के लिये यह आवश्यक है कि किसी निश्चित संकेत-पद्धति के अनुसार उनको तरङ्गों में परिवर्तित किया जाय। लेकिन विचार-संक्रमण के प्रयोगों में प्रेषक या उपलब्धिकर्त्ता किसी संकेत-पद्धति का इस्तेमाल नहीं करता। विचार-संक्रमण के भौतिक सिद्धान्त से यह समझ में नहीं आता कि किसी मस्तिष्क के द्वारा भेजे हुये विचारों को असंख्य मस्तिष्कों में से कोई एक विशेष मस्तिष्क ही क्यों पकड़ पाता है। इन कठिनाइयों के कारण इस क्षेत्र के अनुसन्धानकर्त्ताओं को यह भौतिक सिद्धान्त छोड़ देना पड़ा। अब उन सभी का विचार यह है कि विचार-संक्रमण एक विशुद्ध मानसिक या आध्यात्मिक तथ्य है जो अब तक मनुष्य को अज्ञात अति-भौतिक नियमों का अनुसरण करता है। कुछ लोग इसकी व्याख्या के लिये एक प्रकार के मानसिक सादृश्य की कल्पना करते हैं, कुछ आध्यात्मिक गुरुत्वाकर्षण की और कुछ सब व्यक्तिगत मनों में व्याप्त एक विराट् मन की।

व्याख्या चाहे जो हो, इसमें कोई सन्देह नहीं है कि आत्माओं के मध्य संवाद होता है। हम इच्छानुसार सफलतापूर्वक इसका इस्तेमाल नहीं कर सकते, क्योंकि अभी तक इसकी कार्य-प्रणाली से हम अनभिज्ञ हैं। एतद्विषयक ज्ञान की अभिवृद्धि होने के बाद यह आशा की जा सकती है कि हम इस कभी-कभी सक्रिय होने वाली शक्ति का उपयोग उसी प्रकार कर सकेंगे जिस प्रकार आज रेडियो का किया जा रहा है। कब वह दिन आवेगा, यह नहीं कहा जा सकता है।

अध्याय ५

मन के अधोचेतन स्तर

बहुत पहिले से मानव-स्वभाव के जिज्ञासु यह अनुभव करते आये हैं कि आदमी जितना अपने बारे में जानता है उससे भी अधिक वह है। चेतना या ज्ञान मनुष्य के समग्र अस्तित्व के बहुत छोटे से अंश तक ही सीमित है। जिस प्रकार एक प्रकाश की किरण किसी बड़े मकान के छोटे से हिस्से को ही प्रकाशित करती हैं, उसी प्रकार चेतना का प्रकाश हमारे व्यक्तित्व के एक छोटे से अंश मात्र को प्रकाशित करता है। हमारे अन्दर बहुत सी ऐसी घटनायें होती हैं जिनकी हमें चेतना नहीं होती। अतः आधुनिक मनोविज्ञान मन, आत्मा या व्यक्तित्व का चेतना से तादात्म्य नहीं करता। वास्तव में चेतना हमारे मन के चेतन पहलू अनेक मानसिक घटनाओं का स्पष्टीकरण नहीं कर पाते। हाल में मनोविज्ञान की प्रवृत्ति चेतना के नीचे एक ऐसे अचेतन मन के अस्तित्व को मानने की हो रही हैं जो ऐसे कार्य उत्पन्न करता हैं जिनके ऊपरी प्रभावों का ही हमें अपने व्यक्तित्व के चेतन अंश में अनुभव होता है। चेतन मन नाटक के रङ्गमंच की तरह है और अचेतन मन उस कक्ष की तरह है जिसमें से पात्र रङ्गमंच पर आते हैं और जिसमें वापस चले जाते हैं। रङ्गमंच के पीछे विविध प्रकार की क्रियायें चलती रहती हैं जिनका नाटक के दर्शकों को कोई ज्ञान नहीं होता।

अचेतन मन का अस्तित्व मानने के कुछ आधार निम्नलिखित हैं:—

हमारे सभी अतीत अनुभव चेतन मन में सदैव वर्तमान नहीं रहते। उनका अधिकाँश एक ऐसे प्रदेश में चला जाता है जिसका हमें ज्ञान नहीं होता। लेकिन उसका कुछ अंश हमारी आवश्यकता पड़ने पर या कभी कभी आवश्यकता न पड़ने पर भी वापस आ जाता है। यदि अतीत अनुभव बिल्कुल नष्ट हो गया होता तो उसकी चेतन स्मृति कैसे सम्भव हो पाती? निद्रा में हमें आत्मचेतन बहुत ही कम होती है, फिर भी हमारे व्यक्तित्व के अन्दर अनेक प्रकार के व्यापार चलते रहते हैं। इनमें से कुछ व्यापार चेतन स्वप्नों में आकर समाप्त होते हैं, कुछ हर्ष या शोक की अनुभूतियों में। कुछ ऐसे व्यापार होते हैं जो हमें एकाएक सोने से पूर्व चाहे हुये समय पर जगा देते हैं लेकिन जिनका हमें निद्रित अवस्था में ज्ञान नहीं था। कभी कभी हम सोने से पहिले किसी समस्या को अधूरा छोड़ देते हैं और जागने पर उसका बना-बनाया हल हमारे सामने होता है। सम्मोहनोत्तर निर्देश, पर-निर्देश और आत्म-निर्देश कुछ अचेतन मानसिक क्रियाओं को जन्म देते प्रतीत होते हैं जिनके अन्तिम परिणाम ही हमारी चेतना को ज्ञात होते हैं।

मनोविश्लेषण के जनक सिग्मंड फ्रायड ने साधारण और असाधारण व्यक्तियों की बहुत सी ऐसी मानसिक घटनाओं की व्याख्या में, जिनको उसके आगमन के पहिले मनोवैज्ञानिक अच्छी तरह से नहीं समझ पाये थे, अचेतन मन या "अचेतन" की परिकल्पना का उपयोग किया है। मनोविश्लेषण के अनुसार मानव-व्यक्तित्व एक हिम शिला की तरह है जिसका चेतन अंश हिम-शिला के पानी के ऊपर दिखाई देने वाले अंश की तरह है और अचेतन अंश पानी के नीचे दबे हुए बड़े अंश की तरह। फ्रॉयड और उसके अनुयायियों के अनुसार अचेतन में उन सक्रिय तत्वों का अस्तित्व रहता है जिनके केवल कार्य ही चेतन मन को ज्ञात होते हैं। वे कहते है कि मनोविज्ञान का वास्तविक काम अचेतन का ज्ञान और अनुसन्धान करना है। फ्रॉयड और उसके साथियों का यह मत दैनिक जीवन की भूलें और गलतियाँ, स्वप्न, अनेक प्रकार के मानसिक रोग, हँसी-मजाक, धार्मिक और सामाजिक व्यवहार तथा चेतन जीवन की समझ में न आने वाली घटनाओं के विस्तृत अध्ययन के बाद हुआ।

हाल में एक ऐसे अन्य द्वार का पता चला है जो हमें मन के एक विशाल और अज्ञात प्रदेश में ले जाता है। कभी-कभी हममें से कुछ लोगों को कुछ विचित्र प्रभावों से परोक्षत: इस प्रदेश के अद्भुत व्यापारों का ज्ञान हो जाता है। फिर भी, बड़े-बड़े मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक और विचारक इस बात की कम चिन्ता करते हैं कि इन विचित्र, दुर्बोध और वाहियात लगने वाली अलौकिक सी घटनाओं पर ध्यान दिया जाय। ये लोग इनकी सचाई से विश्वास करने से इन्कार करते हैं, केवल इसलिये कि विज्ञान के ज्ञात नियमों से इनको व्याख्या नहीं हो पातीं और इसलिये भी कि दुनिया के बारे में जो हमारी धारणायें बन चुकी हैं उनसे इनका विरोध है। विचित्र घटनाओं के इस क्षेत्र में काम करने वाले कुछ वैज्ञानिक विचारकों ने अपनी ख्याति की परवाह न करते हुये इन घटनाओं की छानबीन को वैज्ञानिक रूप देकर आधुनिक विज्ञान का ध्यान इनकी ओर आकर्षित करने का साहस किया है। विज्ञान की इस शाखा को प्रारम्भ में साइकिकल रिसर्च (आध्यात्मिक अन्वेषण) कहा जाता था। अब इसको एक अधिक सम्मानसूचक नाम पैरासाइकोलौजी या मेटासाइकोलौजी (परामनोविद्या) दिया गया है। मनोविज्ञान की अन्य शाखाओं की तरह अब परामनोविद्या भी प्रयोगमूलक है इङ्गलैंड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय और संयुक्तराष्ट्र के ड्यूक विश्वविद्यालय में इसे विज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा मान लिया गया है।

हमारे पास इतना समय नहीं है कि हम परामनोविद्या की उन सभी महान् खोजों का उल्लेख कर सकें जिनके कारण हमें मानव व्यक्तित्व की पुरानी धारणा बदल देनी पड़ी और मन के एक ऐसे स्तर की सत्ता माननी पड़ी जिसके ज्ञान और कार्य की शक्तियाँ बहुत बड़ी और अनेक हैं। यहाँ केवल थोड़ा सा उल्लेख पर्याप्त होगा।

ड्यूक विश्वविद्यालय में परामनोविद्या-विभाग के अध्यक्ष डा० राइन ने अपनी हाल में प्रकाशित लोकप्रिय पुस्तक *The Reach of Mind* (मन की पहुंच) में Five Great steps 'पाँच महान् चरण' शीर्षक के अन्तर्गत अपने अनेक वर्षों के अनुसन्धान के संक्षेप में इस प्रकार लिखा है : "इनमें से प्रथम चरण में यह निष्कर्ष था कि किस

ज्ञात भौतिक माध्यम के बगैर दो मनों में परस्पर क्रिया होती है। दूसरे ने जो कि वस्तुओं के अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष के बारे में है, यह प्रदर्शित किया कि किसी ज्ञात ऐन्द्रिय साधन के बगैर मन का जड़ द्रव्य के साथ ज्ञानात्मक सम्बन्ध हो सकता है। तीसरे चरण में यह मालूम हुआ कि यह योग्यता देशातीत है और चौथे में यह कि यह कालातीत भी है। दूसरे शब्दों में डा० राइन ने प्रयोगात्मक छानबीन से यह स्थापित कर दिया है कि मन में विचार-सक्रमण, दूरदर्शन, पूर्वबोध और दूरक्रिया की वास्तविक शक्तियाँ हैं। कुछ समय पूर्व प्रो० एच० एच० प्राइस ने अक्टूबर १६४० में 'फिलासफी' में "Questions about Telepathy and Clairvoyance" शीर्षक एक लेख लिखा था जिसमें उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि "विचार-संक्रमण और दूरदर्शन के पक्ष में बहुत अधिक और अच्छा साक्ष्य है; और पूर्वबोध के पक्ष में भी जो कि अलौकिक तथ्यों में सबसे ज्यादे विरोधाभासपूर्ण है, काफी साक्ष्य है। मनुष्य की अलौकिक शक्तियों के एक महान अनुसन्धानकर्त्ता टिरॅल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *Personality of Man* में लिखा है "परामनोविद्या का प्रायोगिक अङ्ग अब ऐसी स्थिति में पहुँच गया है जिससे यह कहा जा सकता है कि विज्ञान की कठोरतम परिस्थितियों में भी विचारसंक्रमण और पूर्वबोध ने स्वयं को प्रकट किया है।"

वैज्ञानिक साक्ष्य के आधार पर जिन अलौकिक शक्तियों का अस्तित्व मनुष्य में पाया गया है, हमारा चेतन मन उनका उपयोग करने में असमर्थ है। अतः हमें मन का एक ऐसा स्तर मानना पड़ता है जो उसके चेतन अंश के नीचे है और इन शक्तियों का उपयोग करने में समर्थ है। कोई भी इस स्तर की गहराई को नहीं नाप पाया है। जो इस स्तर का ज्ञान रखता है उसके पास एक और भी बड़ी शक्ति होनी चाहिये जिसके द्वारा अतीत में धर्म के बड़े-बड़े चमत्कार हुये हैं। यही स्तर अतीत के प्रतिभाशाली व्यक्तियों की महान् शक्तियों का और संसार में पूजित धर्मोपदेशकों की महान् शक्तियों का उद्गम है।

परामनोविद्या के द्वारा खोजे हुये विभिन्न तथ्यों का सर्वप्रथम समन्वयकर्त्ता मायर्स हुआ जिसने '*Human Personality and its Survival After Bodily Death* नामक ग्रन्थ लिखा। उसने मानव-मन के इस स्तर का अस्तित्व माना और उसे 'Subliminal mind'(अधोद्वारवर्ती मन) नाम दिया जो कि अब मनोविज्ञान में एक साधारण नाम हो गया है। उसके पूर्व हार्वड विश्वविद्यालय के प्रो० ए० एच० पीयर्स 'Subliminal' शब्द का इस्तेमाल चेतना-द्वार के नीचे की संवेदनाओं के लिये किया था जो इतनी निर्बल होती है कि अलग-अलग नहीं पहिचानी जा सकती। मायर्स ने इस शब्द अर्थ का व्यापक बनाते हुये संवेदना, विचार इत्यादि उन सभी बातों का उसमें समावेश कर दिया जो चेतना-द्वार के नीचे होती है और कभी ऊपर नहीं आतीं तथा मन के एक ऐसे स्तर का निर्माण करती है जो ऊर्ध्वद्वारवर्ती स्तर की तरह ही जटिल और सामंजस्यपूर्ण होता है। उसने अलौकिक तथ्यों में से अधिकाँश के लिये अधोद्वारवर्ती मन को ही उत्तरदायी ठहराया। मायर्स के मत से अधोद्वारवर्ती के मत से ऊर्ध्वद्वारवर्ती मन के ऊपर तीन प्रकार के प्रभाव डालता है: (१) अधोद्वारवर्ती मन बाहर दिखाई देने वाले व्यक्तित्व में कोई परिवर्तन किये बिना ऊर्ध्वद्वारवर्ती मन से सहयोग करता और उसकी

पूर्ति करता है। ऐसा प्रतिभासंपन्न व्यक्तियों (genius) में होता है। (२) अधोद्वारवर्ती क्रिया व्यक्तित्व की बाह्य अवस्था में परिवर्तन करके उसे जाग्रत से समाधि की दिशा में ले जाता है, जैसा कि सम्मोहन में होता है। (३) अधोद्वारवर्ती मानसिक क्रिया ऊपरी ऊर्ध्वद्वारवर्ती स्तर में उसके साथ संयुक्त हुये बिना बलात् प्रकट होती है जैसा कि स्फटिक-दर्शन, स्वयंलेखन (crystal-gazing, (automatic-writing) इत्यादि में होता है। यह ज्ञान (sensory) और गति (motor) की स्वयंचालित (automatic) क्रियाओं में होता है।

ऐसा मालूम होता है कि प्राचीन भारतीय मनोविद्याविद् मानव-मन के अचेतन या अधोद्वारवर्ती स्तर की जानकारी रखते थे। उनका ज्ञान मन की अलौकिक शक्तियों के कभी-कभी होने वाले दृष्टान्तों या हज़ारों प्रयोगों मात्र पर निर्भर नहीं था। उनको इन शक्तियों को अभिव्यक्त और प्राप्त करने तथा उन को इच्छा के वश करने की कला ज्ञात थी जिसको उन्होंने योग कहा। 'योग' का शब्दार्थ है मेल अर्थात् उच्च मन से मेल जो कि अपनी शक्तियों के कारण स्वयं ईश्वर है या ईश्वर-तुल्य है। जिस प्रकार आधुनिक मनोविश्लेषण का लक्ष्य अचेतन मन के अन्धेरे प्रदेश में चेतना का प्रकाश पहुँचाना और इस प्रकार चेतन मन की अनेक गुत्थियों को सुलझाना, मानव-व्यक्तित्व के संघर्षों को शान्त करना तथा सभी मानसिक और स्नावयिक रोगों को ठीक करना है, उसी प्रकार योग का लक्ष्य आत्मा के उस असीम, शक्तिसंपन्न और दैवी अंश का ज्ञान, नियंत्रण और शासन था, जिसे हम नहीं जानते। जो इसमें सफल हो जाते थे वे जीवन के सभी दुःखों से मुक्त तो हो ही जाते थे, साथ ही उनको सभी अलौकिक शक्तियों (सिद्धियों) की प्राप्ति भी हो जाती थी। पतञ्जलि के योगसूत्र के विभूति-पाद में इन सिद्धियों का वर्णन है: जिनमें से कुछ यह हैं "अतीत और अनागत का ज्ञान," 'सर्वभूतरुतज्ञान' (सब प्राणियों की भाषा का ज्ञान), 'पर चित्तज्ञान', पूर्वजातिज्ञान', 'सूक्ष्म-व्यवहित-विप्रकृष्ट-ज्ञान,' 'भुवनज्ञान' (सब लोकों का ज्ञान), "ताराव्यूहज्ञान" (ताराओं की स्थिति का ज्ञान) "ताराग‌तिज्ञान", "कायव्यूहज्ञान" (शरीर की आन्तरिक स्थिति का ज्ञान) "दूरश्रवण" सर्वज्ञत्व" इत्यादि।

मन के अधोद्वारवर्ती स्तरों का ज्ञान होने पर आज के मनुष्य की रुचि में परिवर्तन हो जायेगा। आधुनिक सभ्यता का आधार चेतन मन की क्रियायें हैं जो हमेशा बाह्य वस्तुओं और विषय-सुखों में संलग्न रहता है। यदि यह समझ में आ जाय कि हमारे अन्दर एक उच्च मन भी है जो एक विशाल गुप्त खजाना है, तो निश्चय ही हम उसकी प्राप्ति के लिये सचेष्ट हो जाँयगे। कुछ पाश्चात्य विचारक यह समझने लगे हैं। टिर्रेलने एक व्यक्तिगत पत्र में मुझे लिखा था : अब मैं समझता हूं कि जैसे मनुष्य का शरीर वैसे ही उसका व्यावहारिक स्तर का मन भी जीवन की विशेष भौतिक परिस्थितियों से पूर्णतया समायोजित है। लेकिन हमारा मन साधारण चेतना से भी बहुत गहरा है और इस गहराई में वह जगत् से समायोजित नहीं है बल्कि बन्धनमुक्त है। मनुष्य की बुद्धि इन दोनों के बीच में है और कुछ अंश तक स्वतंत्र होते हुये भी निम्न कोटि के व्यावहारिक मन के समायोजित स्वरूप के बन्धन में है। यह बन्धन ही बुद्धि को सीमित करता है।

सच्चे ज्ञान के लिये हमें बाह्य जगत से हटकर अपने अन्दर झांकना होगा, यद्यपि साधारण भ्रान्त धारणा यह है कि ज्ञान इंद्रियों के द्वारा बाहर की ओर देखने से ही हो सकता है। विज्ञान ने हमको भ्रम में डाल दिया है।"

प्राचीन भारत के योगवासिष्ठ नामक आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक महान् संस्कृत ग्रन्थ में मन के स्वरूप और अनन्त विस्तार और आकार का जो सुन्दर वर्णन पाया जात हैं आधुनिक मनोविश्लेषण और परामनोविद्या उसी की ओर संकेत कर रहे हैं। योगवासिष्ठ में मन के विस्तार और रूप के सम्बन्ध में कही हुई अनेक बातों में से कुछ का यहां पर उद्धरण करना अनुपयुक्त न होगा :—

जड़ाजड़ मनोविद्धि संकल्पात्म वृहद्वपु: ।
अजडं ब्रह्मरूपाच्चजडं दृश्यात्मता वशात् ॥ ३।६१।३१
न बाह्ये नापि हृदये सद्रूपं विद्यते मन: ।
सर्वत्रैव स्थित चैतद्विद्धि राम यथानभ: ॥ ३।४।३६

अर्थात्—संकलपात्मक और वृहद आकार वाले मन को जड़ और चेतन दोनों ही समझो ब्रह्म रूप होने से वह चेतन है और दृश्यरूप होने से जड़ है। सत् रूप मन न बाहर है और न हृदय के भीतर है। वह तो आकाश के समान सर्वत्र स्थित है हे राम ऐसा जानो।

अध्याय ६

क्या मृत्यु के बाद व्यक्तित्व नष्ट हो जाता है?

मृत्यु के बारे में पहली परिकल्पना यह है कि मृतक का पूर्णतया विनाश हो जाता है। इस परिकल्पना का आधार क्या है ? क्या यह मृत्यु और उससे सम्बन्धित तथ्यों तथा जीवन की माँगों का सन्तोषजनक तरीके से स्पष्टीकरण कर देती है ? इसके पक्ष में एक-मात्र प्रमाण यह है कि हम अपनी भौतिक इन्द्रियों से मृतक के अस्तित्व को नहीं देख पाते। मृत्यु के बाद शरीर निष्प्राण और निष्चेष्ट हो जाता है;वह सड़ने लगता है और यदि उसे दफनाया या जलाया न जाय तो प्राकृतिक शक्तियां उसे उसके मूल तत्वों में परिणित करके अदृश्य कर देती है, क्योंकि उसमें संश्लेषणकारी और प्रतिरोधात्मक शक्ति का अभाव हो जाता है जो उसे जीवित रखे हुये थी। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि शरीर के तत्वों में मिल जाने पर मृत व्यक्ति का कोई भी अंश दृष्टिगोचर नही होता। लेकिन इस तथ्य से यह निष्कर्ष नहीं निकल सकता कि मृत्यु के बाद व्यक्तित्व का अस्तित्व समाप्त हो जाता है इस निष्कर्ष को निकालने के लिये पहले यह सिद्ध करना होगा कि व्यक्तित्व शरीर तक ही सीमित है उसके बाहर नहीं और साथ ही यह भी कि जो हमें दृष्टिगोचर नहीं है उसका अस्तित्व नहीं है। अतः जो आदमी यह सोचता है कि मृतक बिलकुल नष्ट हो जाता है वह यह मान लेता है कि व्यक्ति भौतिक शरीर के अतिरिक्त कुछ नहीं है और कि केवल दृश्य वस्तु का ही अस्तित्व है। इनमें से पहली धारणा दूसरी के ऊपर आधारित हो सकती है,क्योंकि हमारा यह विश्वास कि शरीर से अति-रिक्त व्यक्तित्व कुछ नहीं है, इस कारण से है कि हमारी इन्द्रियों से शरीर के अतिरिक्त कोई वस्तु नहीं दिखाई देती तथा हम यह मान लेते हैं कि जो नहीं दिखाई देता उसका अस्तित्व नहीं हो सकता। अथवा इस तरह से सोचने वाले के मन में यह विवेक नहीं है कि दिखाई देने के हेतु और उत्पत्ति के हेतु अलग-अलग होते हैं, क्योंकि इस परिकल्पना के पक्ष में यह दलील भी दी गई है कि भौतिक शरीर के अतिरिक्त जिन तत्वों को व्य-क्तित्व का निर्माण करने वाला माना गया है वे शरीर और मस्तिष्क से उत्पन्न होते हैं तथा इस सम्भावना को विस्मृत कर दिया गया है कि शरीर या मस्तिष्क इन तत्वों की अभिव्यक्ति का हेतु मात्र है।

हम कह सकते हैं कि यह दलील बिल्कुल ऐसी ही है जैसी यह कि रेडियो से सुनाई देने वाले संगीत का कारण ग्राहक उपकरण मात्र है। यह कहना कि जब तक शरीर था तभी तक व्यक्तित्व भी था और चूंकि अब शरीर नहीं है, इसलिये व्यक्तित्व भी नहीं रहा" यह कहने के तुल्य है कि जब तक मेरा बल्ब ठीक था तभी तक दुनिया में बिजली थी, लेकिन अब मेरा बल्ब टूट गया है, इसलिये दुनिया में बिजली भी नहीं रही और उस बल्ब के स्थान में कोई अन्य बल्ब नहीं जल सकता। यह स्पष्ट है कि ऐसी दलील व्यर्थ है और ऐसा इस धारणा के कारण कि जो दृश्य है बल्कि जिसका भौतिक इन्द्रियों से सचमुच प्रत्यक्ष होता है, उसी का अस्तित्व है, अन्य वस्तुओं का नहीं। इस धारणा की अमान्यता के विस्तार में जाना अनावश्यक है। हम अस्तित्व को इन्द्रिय-प्रत्यक्ष-गम्य तक ही सीमित नहीं कर सकते। आधुनिक विज्ञान हमारे अन्दर यह विश्वास पैदा करता है कि जो भौतिक इन्द्रियों से साधारणतया नहीं दिखाई देता उसकी तुलना में दृश्य जगत् बहुत छोटा है। और यदि हम अपने अन्दर देखें तो हम पायेंगे कि समग्र अनुभव का न देखा हुआ भाग देखे हुए भाग से कहीं बड़ा है। जब हम अपनी भौतिक इन्द्रियों से बाह्य जगत् को देखना बन्द कर देते हैं तो एक आन्तरिक जगत् हमारे सामने आ जाता है जिसे हम स्वप्न कहते हैं। व्यक्तित्व और मानव-जीवन की पहेली को ठीक समझने के लिये यह आवश्यक है कि हम स्वप्नों का सावधानी से अध्ययन करें। स्वप्न में प्रत्यक्ष होता है लेकिन भौतिक इन्द्रियाँ उस समय बन्द और निष्क्रिय रहती हैं। स्वप्न में कोई शरीर सचेष्ट रहता है लेकिन भौतिक शरीर निष्क्रिय रहता है। जिस काम में वह संलग्न रहता है उससे यह मुक्त रहता है। स्वप्न द्रष्टा का जगत् वस्तुओं और व्यक्तियों से भरपूर रहता है लेकिन वे जाग्रत अवस्था के जगत् से भिन्न होते हैं। क्या इससे यह ज्ञात नहीं होता कि अस्तित्वान् और अनुभूत वस्तुओं का जगत् भौतिक इन्द्रियों से प्रतीत होने वाले जगत् की अपेक्षा कहीं विशाल है? अतः भौतिक शरीर के नष्ट होने पर मृतक के व्यक्तित्व का कही अस्तित्व नहीं रहता, यह परिकल्पना ठीक नहीं है। मृत्यु के बारे में जिस चीज का हमें निश्चय है वह यह है कि उसके बाद बल्ब के टूट जाने से जैसे विद्युत की अभिव्यक्ति नही होती वैसे ही भौतिक शरीर के नष्ट हो जाने पर मानव-व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं होती, यह नहीं कि व्यक्तित्व का अस्तित्व ही कहीं नहीं रहता यह तथ्य इतना स्पष्ट है कि प्रमाण अनावश्यक है।

फिर भी, किसी बात की विरोधी बात का खण्डन कर देने का अर्थ उसकी स्थापना नहीं है। तो क्या कोई ऐसे भावात्मक प्रमाण हैं जिनसे यह सिद्ध हो सके कि भौतिक शरीर के विनाश के बाद मृतक का व्यक्तित्व अविच्छिन्न बना रहता है? व्यक्तित्व की अविच्छिन्नता दो तरह से सिद्ध हो सकती है: या तो वह व्यक्ति जो भौतिक दृष्टि से मर चुका है लेकिन कहीं अन्यत्र वर्तमान है, यह दिखाने के लिये कि पूर्व भौतिक शरीर के नाश होने के बाद भी वह मौजूद है, ऐसे आश्वस्त करने वाले प्रमाण प्रस्तुत करे जिनकी परीक्षा की जा सके; या किसी को स्वयं स्मरण रहे कि पूर्व भौतिक शरीर के नष्ट होने पर भी उसका अस्तित्व है। ऊपर से यह दिखाई देता है कि ये दोनों प्रमाण कठिनाई से ही प्राप्त हो सकते हैं और इनका ठीक-ठीक मूल्यांकन भी कठिन है, यद्यपि

लोग इन्हें पाने की काफी कोशिश कर रहे हैं। यहां हम इस तरह के प्रमाणों की सचाई का निर्णय करने की कठिनाई के चक्कर में नहीं पड़ेंगे। ऐसे अनेक महान् वैज्ञानिक हैं जिन्होंने इन कठिनाइयों पर सच्चे वैज्ञानिक तरीके से विचार किया है और यह घोषणा की है कि "यह परिकल्पना सबसे सरल, सबसे सीधी और सभी तथ्यों का परस्पर सामञ्जस्य करने वाली एकमात्र परिकल्पना है कि व्यक्तित्व का न केवल मरणोत्तर अस्तित्व रहता है बल्कि वह अपनी अभिव्यक्ति करने का भी इच्छुक रहता है और कठिनाई से इसमें सफल भी हो जाता है" (Lodge : *The Survival of Man*,: "पृ० २२१)।" मृत्यु मानव अनुभव का अन्त नहीं है, इसका समर्थन अनेक तथ्यों से होता है जो इतने बहुसंख्यक और इतने प्रामाणिक हैं कि बड़े से बड़े दुराग्रही विरोधियों को भी उन पर ध्यान देने के लिये बाध्य होना पड रहा है" (Osborn : *The Super-Physical* 1938, पृ० २५०)।" मैं संक्षेप में यह कह सकता हूं कि कोई भौतिक इन्द्रिय ऐसी नहीं हैं जिसे आश्वस्त न होना पड़ा हो और कोई ऐसी विधि नहीं है जिससे मृतक की आत्मा ने अपना अस्तित्व प्रदर्शित किया हो और मैंने उसका अनुभव न किया हो(Sir A.Cannon Doyle : *Survival*, पृ० १०४) "प्रायः प्रत्येक आध्यात्मिक अनुसन्धानकर्त्ता इस विचार से सहमत है कि आत्मा के अस्तित्व की परिकल्पना के पक्ष में इतना प्रबल साक्ष्य है कि इसे एक कामचलाऊ सिद्धान्त मान लेना उचित है । ......मरणोत्तर अस्तित्व को सिद्ध करने के लिये प्रबल प्रमाण है "(Carrington : *The Story of Psychic Science*, पृ० ३२३)। भारत में कुछ समय पूर्व बरेली के केकई नन्दन सहाय ने बहुत से ऐसे दृष्टान्तों का संग्रह किया (देखिये, उनकी पुस्तिका *Reincarnation*) जिनमें पूर्वजन्म की स्मृति बहुत-कुछ सुरक्षित रही है और उसका सत्यापन भी हुआ है । दिल्ली की शांतिदेवी का दृष्टान्त (देखिये,प्रो० सुधाकर-कृत "*A case of Reincarnation*,१९३६",) पूर्व जन्म की स्मृति का अद्भुत दृष्टान्त है जिसे प्रकारान्तर से समझाना आसान नहीं है। शिर्ली (Shirley) कृत *The Problem of Rebirth* एतद्विषयक ग्रन्थ और ग्रन्थों में इस तरह के अनेक दृष्टांतों का उल्लेख है। इन तथ्यों को देखते हुये तथा हमारे इस निष्कर्ष को देखते हुये कि शरीर की मृत्यु के बाद व्यक्तित्व का विनाश मान लेना दुराग्रह मात्र है, हमें यह मानना पड़ता है कि हमारा अस्तित्व भौतिक शरीर की समाप्ति पर समाप्त नहीं हो जाता।

जब हम अपने अनुभव के अन्य पहलुओं, स्वप्न तथा निद्रा की अवस्थाओं, का अध्ययन करते हैं, तब यह परिकल्पना और भी दृढ़ हो जाती है । डा० प्रेल(Dr.Prel) का यह कथन ठीक है कि "जाग्रत जीवन के मानसिक व्यापारों की छानबीन की अपेक्षा स्वप्नों का अध्ययन शरीर के प्रति पक्षपात से हमें बहुत-कुछ मुक्त कर देता है" (*The Philosophy of Mysticism*, Vol. I, पृ० ५४)। जब आदमी सोता रहता है तब उसकी शारीरिक क्रिया कुछ समय के लिये चेतना के द्वार से नीचे चली जाती है लेकिन जैसा कि हमारे स्वप्न के अनुभवों से, निद्रा में विचरण करने वाले रोगी (Somnambulist) की चेष्टा से और सम्मोहित या मूर्छित व्यक्ति की चेष्टा से स्पष्ट

होता है,उस समय आन्तरिक व्यक्तित्व की बौद्धिक, सांवेगिक और ऐच्छिक,सभी क्रियाओं अत्यधिक वृद्धि हो जाती है। निद्रा के अध्ययन से डा० प्रेल को यह निश्चय हो गया कि "संवेदनशीलता (sensibility) के द्वार को जितना अधिक हटाया जाय उतना ही अधिक निद्रा का नई मानसिक प्रतिक्रियाओं को पैदा करने वाला पहलू प्रकट होता है' (वही, पृ० १४७)। दूसरे शब्दों में इसका अर्थ यह हुआ कि जितना अधिक हम शारीरिक चेतना से मुक्त रहेंगे उतना ही स्पष्ट दूसरे अस्तित्व की अवस्था का हमारा अनुभव होगा। अतः यह भी सम्भव है कि जब हम भौतिक शरीर और उसकी इन्द्रियों से पूर्णतया मुक्त हो जायेंगे तब हम ऐसी दुनिया में अपना अस्तित्व और अनुभव जारी रखेंगे जिसका दर्शन हमें अस्पष्टतः स्वप्न में प्रतिदिन होता रहता है—अस्पष्टतः शायद इसलिये कि स्वप्न में बहुत-कुछ मुक्त हो जाने पर भी भौतिक शरीर से कोई बन्धन हमको बाँधे रहता है।

इस प्रकार मृत्यु के बाद अस्तित्व का निषेध करना दुराग्रह है। मरणोत्तर अस्तित्व के पक्ष में वास्तविक प्रमाण है और इसकी बहुत सम्भावना है। बल्कि,यदि विश्व की व्यवस्था विवेकहीन नहीं है तो यह मानना आवश्यक है, क्योंकि यह मानना विवेकहीन है कि हमारे प्रयत्न और इच्छाओं का कोई फल नहीं होता, उनका उद्देश्य पूरा नहीं होता और वे शून्य में विलीन हो जाते हैं। यह मानना अबौद्धिक और वाहियात है कि बहुत संघर्ष और कठिनाई से एक नैतिक और उच्च व्यक्तित्व का विकास केवल इसलिये होता है कि वह मृत्यु की चट्टान से टकराकर एकाएक चूर-चूर हो जाय! क्या पूर्णता, सर्वशक्तिमत्ता, सर्वज्ञता और पूर्ण आनन्द की हमारी सब आकांक्षायें भ्रम मात्र हैं? क्या क्राइस्ट, नीरो और वाशिंगटन सब मृत्यु के द्वारा समान रूप से नष्ट होने के लिये हैं? क्या आत्म-बलिदान करने वाले और हत्या का पाप करने वाले एक ही स्थिति में हैं,दोनों को ही शून्य में विलीन हो जाना है? यदि कान्ट, गेटे, बुद्ध और क्राइस्ट ने केवल प्रयत्न किया है और कष्ट झेले हैं और उससे अपने आत्मा का विकास नहीं किया है, तो प्रकृति को परले सिरे की अपव्ययी होना चाहिये। (Prel: *The Philosophy of Mysticism*, Vol. II पृ० २२३-२४) यदि दुनिया विवेकहीन नहीं है तो ऐसा नहीं हो सकता। यदि दुनिया में बुद्धि का शासन नहीं है तो विज्ञान, दर्शन, नैतिकता और धर्म सभी वाहियात हैं। ऐसी स्थिति में कष्ट झेलने वाले का सर्वोत्तम कार्य आत्महत्या होगा। लेकिन हम दुनिया को बुद्धिमूलक केवल इसलिये मानते हैं कि बुद्धि मनुष्य के अन्दर अभिव्यक्त पारमार्थिक सत्ता का एक रूप है। पारमर्थिक सत्ता बौद्धिक से भी ऊपर हो सकती है लेकिन उससे कम किसी भी दशा में नहीं हो सकती।

अध्याय ७

परामनोविद्या और थियोसोफी[1]

थियोसोफ़ी के अनुसार मनुष्य भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान और मनोविज्ञान इत्यादि भौतिक विज्ञानों की धारणा से बिल्कुल भिन्न है। भौतिक शरीर तो मनुष्य का सबसे बाहरी आवरण मात्र है। मनुष्य तत्वत: आध्यात्मिक है और उसके अन्दर अनेक अतिभौतिक शक्तियाँ बीज-रूप में निवास करती हैं जिनको उचित अभ्यास से विकसित किया जा सकता है। उसके अन्दर भौतिक और जीव-विज्ञान को ज्ञात स्थूल देह के अतिरिक्त एक सूक्ष्म देह है जिसके व्यापार भौतिक सीमाओं के ऊपर हैं, जो स्थूल देह से स्वतत्र अस्तित्व रख सकती और कार्य कर सकती है, और जो स्थूल देह की मृत्यु के के बाद भी कायम रहती है। ससार के अधिकाँश धर्मों की तरह थियोसोफ़ी का भी मनुष्य के बारे में यह मत रहा है, यद्यपि आधुनिक विज्ञान इसके विरुद्ध है। परामनोविद्या ही एकमात्र विज्ञान की वह शाखा है जिससे आधुनिक मनुष्य को भौतिक शक्तियों, साधनों और परिस्थितियों से अपने श्रेष्ठ होने में खोये हुये विश्वास को समर्थन प्राप्त होने की आशा है। केवल यही वह विज्ञान है जिससे थियोसोफ़ी की तरह प्राचीन धर्म-ग्रन्थों को तथा दुनिया भर के योगियों और सन्तों की अलौकिक सिद्धियों को समझने का सूत्र मिलता है। अन्त में एक मात्र यही विज्ञान ऐसा है जो थियोसोफी की तरह मनुष्य के सामने अनन्त प्रगति और पूर्णता का क्षेत्र खोल देता है। सभी देशों और कालों में सन्तों और ऋषियों के द्वारा किये हुये जितने चमत्कारों का उल्लेख है, जिनको थियोसोफ़ी ने विज्ञान के अब तक अज्ञात उच्च और सूक्ष्म नियमों के अन्तर्गत होने वाली घटनायें माना है, वे भी परामनोविद्या के क्षेत्र में आते हैं।

परमनोविद्या जिसे साईकिकल रिसर्च, मेटासाइकिक्स, साइकिक्स, मेटासाइकोलोजी पैरासाइकोलोजी इत्यादि नाम दिये गये हैं, ऐसे असंख्य तथ्यों को सामने ला चुकी है जिनमें से यदि थोड़े से भी सत्य मान लिये जांय—और उनको सत्य मानने के अतिरिक्त कोई दूसरा मार्ग है भी नहीं—तो इससे मानव-ज्ञान का उससे भी ज्यादा उपकार होगा जितना विज्ञान ने किया है और थियोसोफ़ी के लिये इसका महत्व अपरिमित होगा। दूरक्रिया, विचार-संक्रमण, अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष, भौतिकीकरण, छाया और spiritoid

---

1 "*Where Science and Theosophy Meet*" पुस्तक के एक अध्याय का अंश।

नाम से अभिहित सभी तथ्य जो इस क्षेत्र में काम करने वाले अधिकतर वैज्ञानिक अनुसन्धान-कर्त्ताओं के द्वारा असन्दिग्ध तथ्य मान लिये गये हैं :जबइन का मनुष्य और विश्व की अपनी धारणाओं के साथ हम विचार करेंगे तब हमारी धारणाओं एक में अत्यधिक मौलिक परिवर्तन हो जायेगा। वारकोलियर (Warcollier) का यह कथन अत्युक्ति नहीं है कि "विचार-संक्रमण का अनुसन्धान करने से मन-विषयक हमारी धारणा में उतनी ही क्राँति हो जायेगी जितनी रेडियम की खोज ने पुद्गल-विषयक धारणा में की। महान् मनोवैज्ञानिक मैकडूगल ने भी गम्भीरतापूर्वक यह कहा था कि "विचार-संक्रमण का विज्ञान और दर्शन के लिये जितना महत्व होगा वह दोनों महाद्वीपों के विश्वविद्यालयों की मनोवैज्ञानिक प्रयोगशालाओं की सब सफलताओं के महत्त्व से कहीं बड़ा होगा।" टिरेल ने लिखा है, "विचार-संक्रमण ने वस्तुओं पर प्रकाश डालकर उनका जो स्वरूप प्रकट किया है वह बाह्य जगत् के अधिक से अधिक अध्ययन से भी प्रकट न हो पाता (*Human Personality*, पृ० ७२)। फ्लूरेन्सी (Flourancy) ने बहुत पहिले लिखा था, "यदि यह तथ्य (भौतिकीकरण) सच्चा है तो हमारे जीवविज्ञान-सम्बन्धी विचारों में जो क्राँति होगी वह बहुत ही दिलचस्प होगी" *Spiritism and Psychology*)। ऐसा ही मरणोत्तर अस्तित्व के सिद्धान्त के बारे में भी कहा जा सकता है। आध्यात्मिक अन्वेषण से प्राप्त अनेक सुपरीक्षित तथ्य इस सिद्धान्त का समर्थन करते हैं और यदि यह सिद्धान्त पूरी तरह से स्थापित हो गया तो निश्चय ही हमारे जीवन-मूल्यों हमारे सामाजिक सम्बन्धों और हमारे राजनैतिक उद्देश्यों में भी आमूल परिवर्तन हो जायेगा। भौतिक विज्ञान की अपूर्व उन्नति के अपेक्षा मनुष्य का नैतिक पतन और परिणामतः उसके दुःखों की वृद्धि क्यों हुई ?मुख्यतया इस कारण कि सभी महान् धर्मों और थियोसोफ़ी की शिक्षाओं की उपेक्षा करते हुये मनुष्य का मरणोत्तर अस्तित्व में विश्वास नहीं रहा। यदि अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष और भविष्यबोध तथ्य सिद्ध हो जाय—और इनके पक्ष में अनेक प्रयोगिक प्रमाण हैं—तो ध्यान और अन्तःप्रेरणा जो कि पाश्चात्य देशों में उपेक्षित हो गये हैं, पुनः मनुष्य के जीवन में ज्ञान के उद्गम रूप में आद्दत होने लगेंगे।

वस्तुतः यह कहने से कोई अत्युक्ति नहीं होगी कि आधुनिक विज्ञानों में केवल परमानोविद्या ही एकमात्र विज्ञान है जिसकी खोजों के ऊपर थियोसोफ़ी, धर्म और नीति का भविष्य निर्भर करता है, जिन पर कि १६ वीं शताब्दी के भौतिक विज्ञानों के निष्कर्षों से प्रभावित आधुनिक मनुष्य कम ध्यान देता है। 'लोहा ही लोहे को काटता है', इस कहावत के अनुसार, यदि मनुष्य-जाति की वर्तमान दयनीय दशा के लिये उत्तरदायी विज्ञान से उत्पन्न अवाञ्छित दृष्टिकोण का प्रतिकार कर सकने वाली कोई चीज है तो वह परामनोविद्या के रूप में विज्ञान ही है। मनुष्य-जाति का उज्जवल भविष्य इस विज्ञान की प्रगति और मनुष्य के दृष्टिकोण में उससे होने वाले परिवर्तन पर निर्भर है।

इस सीमित स्थान में हम उन सारे महत्वपूर्ण कामों का उल्लेख नहीं कर सकते जो पिछले कुछ दिनों में विज्ञान की इस शाखा में रुचि रखने वाले कुछ लोगों ने किये हैं। हम केवल थोड़े से लब्धप्रतिष्ठित विद्वानों की उक्तियों को उद्धृत करके उसका उल्लेख

करेंगे जो ईमानदारी से इस क्षेत्र में काम करने वालों ने असन्दिग्ध प्रमाणित कर दिया है और यह निर्णय पाठकों के ऊपर छोड़ देंगे कि इससे थियोसोफ़ी के सिद्धान्त कहां तक स्थापित होते हैं।

आध्यात्मिक अनुसन्धान में अपने जीवन के तीस मूल्यवान वर्ष लगाने के बाद पेरिस के चिकित्सा-विज्ञान विभाग में शरीर विज्ञान के प्रोफेसर चार्ल्स रिशे इन निष्कर्षों पर पहुँचे जिनकी बाद के अनुसन्धानकर्त्ताओं ने पुष्टि की : प्रच्छन्नसंवेदन दूरक्रिया ecto-plasm और पूर्वज्ञान कड़ी चट्टान अर्थात् सैकड़ों निरीक्षणों और सैकड़ों कट्टर प्रयोगों पर आधारित हैं।...ज्ञान की एक ऐसी शक्ति है जो साधारण ज्ञानेन्द्रियों की शक्ति से मूलतः भिन्न है। दिन की भरपूर रोशनी में भी वस्तुओं में कुछ गतियाँ बिना छुये होती हैं। समूचे हाथ, शरीर और वस्तुयें एक बादल से आकृतियां ग्रहण करते हुये प्रतीत होते हैं और उनमें जीवन के सभी लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं। पूर्वज्ञान होते हैं जिनकी व्याख्या न तो दैवयोग से हो सकती है और न सूक्ष्म दृष्टि से तथा जिनकी बातें तक कभी-कभी सत्य सिद्ध हुई हैं। ये मेरे दृढ़ और वैज्ञानिक निष्कर्ष हैं" (*Thirty years of Psychical Research*, पृ० ५९९)। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक और विचारक प्रो० मैकडूगल ने लिखा, "मेरा विचार है कि विचार-संक्रमण के पक्ष में अकाट्य प्रमाण हैं। ...मैं समझता हूं कि ऐसे जोरदार प्रमाण काफी संख्या में इकट्ठे हो चुके हैं जो यह दिखाते हैं कि मृत्यु के पश्चात मनुष्य बिल्कुल नष्ट नहीं हो जाता बल्कि उसके व्यक्तित्व का कुछ अंश तब भी जीवितों के ऊपर प्रभाव डालता रहता है। मेरी धारणा है कि दूरदर्शन के पक्ष में इतनी जोरदार दलील है कि एतद्विषयक अनुसन्धान को आगे बढ़ाना नितान्त आवश्यक है, और यही मैं माध्यम से सम्बन्धित अधिकांश अलौकिक बातों के बारे में भी कहूंगा" (*Religion and Science of Life*, पृ० ८०)। ड्यूक विश्वविद्यालय के प्रो० राइन को अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष को सच्चा साबित करने का श्रेय प्राप्त है। वे लिखते हैं :"अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष एक ऐसा तथ्य है जिसका वस्तुतः प्रदर्शन किया जा सकता है" (*Extra-Sensory Perception*, पृ० २२२)। उनके अनुसार "अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष इन्द्रियजन्य ज्ञान नहीं है" (वही, पृ० २२३)। यह "संवेदना से मूलतः भिन्न है" (*New Frontiers of Mind*, पृ० १४४)। "यह शक्ति उपयुक्त परिस्थितियों के मौजूद रहने पर बराबर सक्रिय रहती है और इसके ऊपर निर्भर रहा जा सकता है" (*Extra-Sensory Perception*, पृ० २२०)। प्रो० एच० एच० प्राइस का विचार है कि "विचार संक्रमण और दूरदर्शन के पक्ष में अच्छे और प्रचुर प्रमाण हैं; तथा पूर्वज्ञान जो कि आलौकिक तथ्यों में शायद सर्वाधिक विरोधाभासपूर्ण है, के पक्ष में भी काफी प्रमाण हैं" (*Philosophy*, oct; 1940 में Questions about Telepathy and Clairvoyance शीर्षक लेख)। आध्यात्मिक अनुसन्धान के क्षेत्र में काफ़ी समय तक प्रयोग करने वाले हियरवार्ड कैरिंगटन ने लिखा है : "प्रायः प्रत्येक परामनोविद्या-विद् इस बात से सहमत है कि आत्मा के पक्ष में अब इतना प्रमाण इकट्ठा हो चुका है कि इसे एक कामचलाऊ सिद्धान्त के रूप में अपना लेना उचित है" (*The Story of Psychical Research*, पृ० ३३३)। "मृत्यु के बाद आत्मा के

अस्तित्व के पक्ष में प्रबल प्रमाण है" (वही, पृ० २०५)। एक हाल में प्रकाशित ग्रन्थ में भौतिकीकरण के बारे में कैरिगटन ने लिखा है, "व्यक्तिगत रूप से मरा भौतिकीकरण में विश्वास है। मैंने स्वयं भौतिकीकरण के ऐसे दृष्टान्त देखे हैं जिनकी सचाई में किसी प्रकार की शंका नहीं हो सकती। मैंने हाथ और जीवित शरीर के अन्य अंगों को अपनी आंखों से देखा और अपने हाथ से स्पर्श किया है और ये कभी-कभी मेरी मुट्ठी के अन्दर लुप्त हो गये। ...इस प्रकार के सच्चे तथ्य दुर्लभ अवश्य हैं लेकिन मेरे विचार से ये असन्दिग्ध हैं" *Laboratory Investigations into Psychic Phenomena*, पृ० ७८)। एक विख्यात अनुसन्धानकर्त्ता टिरेल ने लिखा है, "आध्यात्मिक अनुसन्धान का प्रायोगिक पक्ष अब ऐसी स्थितिमें पहुँच चुका है जिसमें यह कहा जा सकता है कि विचार-सक्रमण और पूर्वज्ञान विज्ञान की कठोर से कठोर परिस्थिति में प्रदर्शित हुये हैं" (*The Personality of Man*, पृ० १३०)। वे आगे कहते हैं, "आध्यात्मिक अनुसन्धान के तथ्यों से इस बात का दृढ़ संकेत मिलता है कि मृतक वार्त्तालाप करते हैं" (वही, पृ० २०५)। डा० ओस्टी का कथन हैं, "बारह वर्ष तक दूर की बात जानने वाले व्यक्तियों और अन्य लोगों की एक बड़ी संख्या पर प्रयोग करने क बाद मैं विषय में पूर्णतया आश्वस्त हूं कि ऐसे मनुष्य हैं जो दूसरों का भविष्य बता सकते हैं। ... इसका मुझे इतना ही विश्वास है जितना पृथ्वी, सूर्य, तारों, धातु, वनस्पति और पशुओं के अस्तित्व का" (*Personality of Man*, पृ० १७८ पर टिरेल द्वारा उद्धृत)। केमिल्ले फ्लेमेरियन Camille Flammarion) लिखता है: "हमें इस बात को छिपाने की कोशिश नहीं करनी चाहिये कि ये तथ्य हमको एक नई दुनिया में जो कि अज्ञात है और अभी जिसका पूरा-पूरा अनुसन्धान बाकी है, ले जाते हैं"। (*Mysterious Psychic Forces*, पृ० ४३६)। जिन निष्कर्षों पर फ्लेमेरियन पहुंचा वे ये हैं (१) आत्मा का शरीर से भिन्न अस्तित्व है, (२) इसकी शक्तियों का विज्ञान को अब तक ज्ञान नहीं है, (३) यह ज्ञानेन्द्रियों की सहायता के बिना दूरी पर कार्य करने में समर्थ है।" (वही, पृ० ४५२-५३)

आध्यात्मिक अनुसन्धानकर्त्ताओं के इस प्रकार के कथन हज़ारों की संख्या में उद्धृत किये जा सकते हैं। इस पुस्तक के तीसरे अध्याय में मानव-व्यक्तित्व के बारे में परामनोविद्या के तथ्यों पर विस्तार स विचार किया गया है। '*Encyclopedia of Psychology Parapsychology*' शीर्षक के अन्तर्गत प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक गार्डनर मर्फ़ी (Gardner Murphy) ने लिखा है: "योग्य अनुसन्धानकर्त्ताओं की एक बड़ी संख्या का मरणोत्तर वार्त्तालाप की सचाई में पूरा विश्वास है, अन्यों का इसमें पूर्ण विश्वास है कि जीवितों में भी इस तरह का कार्य करने की अलौकिक शक्तियां है; एक बड़ा समूह ऐसा भी है जो अभी ऐसे जटिल प्रश्न पर अन्तिम निर्णय नहीं देता। किन्तु जहां तक लेखक को ज्ञात है, अभी तक ऐसा कोई विधिवत् प्रयत्न नहीं किया गया है जिसमें इन तथ्यों की व्याख्या के लिये 'अलौकिक शक्तियों के बारे में कामचलाऊ परिकल्पना का विस्तृत उपयोग किया गया हो" (पृ० ४३४)। वास्तव में अलौकिक शक्तियों का मानना मनुष्य के बारे में संकीर्ण भौतिक धारणा का त्याग करना है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि परामनोविद्या, जो कि मानव-अनुभव की उन अद्भुत, दुर्लभ और अलौकिक घटनाओं का वैज्ञानिक अनुसन्धान है जिनकी भौतिक, जैविक और मानसिक विज्ञानों की साधारण धारणाओं से व्याख्या नहीं हो सकती, मानव-व्यक्तित्व के विषय में हमारे अन्दर ऐसी धारणा उत्पन्न करती है जो थियोसोफ़ी की धारणा से मिलती-जुलती है। इस प्रकार विज्ञान और थियोसोफ़ी परामनोविद्या में परस्पर मिलते हैं। विज्ञान और थियोसोफ़ी दोनों का हित अनुसन्धान की इस शाखा की प्रगति में है।

अध्याय ८

आधुनिक पाश्चात्य परामनोविद्या और प्राचीन भारतीय आध्यात्मविद्या

आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता की सबसे बड़ी देन वैज्ञानिक विधि और उससे प्राप्त ज्ञान है। यह योग की प्राचीन भारतीय विधि, संयम से, ध्यान, धारणा और समाधि जिसके अंग हैं, बहुत भिन्न है। प्राचीन योगी पदार्थों पर चित्त को एकाग्र करके और समाधि में पहुंच कर, जिसमें वह पदार्थों के अन्तर में प्रवेश करके तदाकार हो जाया करता था, पदार्थों के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता था और उनके रहस्यों को जान जाता था। इसके विपरीत आधुनिक वैज्ञानिक पदार्थों का ज्ञान अपनी प्रशिक्षित इन्द्रियों से सूक्ष्म निरीक्षण करके, प्रयोग से और आगमनात्मक तर्क से करता है। इस विधि से धीरे-धीरे ज्ञान के एक विशाल भण्डार का संग्रह हुआ है जो कि विश्व की सभी प्रकार की वस्तुओं के स्वरूप, व्यवहार और पारस्परिक सम्बन्धों के बारे में यथार्थ और निश्चित है। इसका परिणाम यह हुआ कि आज का साधारण मनुष्य भी दुनिया के बारे में इतनी जानकारी रखता है जितनी कि कोई भी प्राचीन विद्वान नहीं रखता था।

अपनी प्रारम्भिक अवस्था में विज्ञान बाह्य पदार्थों तथा उनके भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों की जानकारी तक ही सीमित था। लेकिन हाल में वैज्ञानिक विधि को मनुष्य तथा उसकी सामाजिक और आध्यात्मिक प्रकृति के अध्ययन से भी लागू किया गया है और इस प्रकार मनोविज्ञान, समाज विज्ञान और परामनोविद्या नामक अल्पवयस्क विज्ञानों की उत्पत्ति हुई। परामनोविद्या इनमें सबसे छोटा विज्ञान है जिसका विषय मनुष्य की आन्तरिक और अलौकिक प्रकृति है। इसका प्रारम्भ एक महान् आन्दोलन के रूप में हुआ जिसे साइकिकल रिसर्च कहते हैं।

२६वीं आल इन्डिया फ़िलासफ़िकल कांग्रेस, पूना, दिसम्बर १९५१ के मनोविज्ञान के सभापति पद से दिया गया भाषण।

साइकिकल रिसर्च (आध्यात्मिक शोध) जीवन की उन दुर्घट और विचित्र घटनाओं के वैज्ञानिक अनुसन्धान का नाम है जिनकी साधारणतया भौतिक-रसायन-जीव-और मनो विज्ञान के द्वारा ज्ञात और अज्ञात नियमों से पूरी-पूरी व्याख्या नहीं हो पाती, जो मानव-बुद्धि के लिये अगम्य हैं और इसलिये जिनकी गहरी छानबीन आवश्यक है १८८२ में इंगलैंड में इस तरह के तथ्यों का स्वरूप विशुद्ध वैज्ञानिक विधि से समझने के लिये ही साइकिकल रिसर्च सोसाइटी की स्थापना की गई। इंगलैंड, योरप और अमेरिका के कुछ बड़े-बड़े वैज्ञानिकों और विचारकों ने इस दिशा में काम किय किया और उनके परिश्रम के फलस्वरूप आज हमारे पास ऐसे विज्ञानसम्मत ज्ञान का विशाल भण्डार मौजूद है जो मनुष्य और विश्व के आन्तरिक स्वरूप पर बहुत प्रकाश डालता है और जिससे हम सबको परिचित होना चाहिये।

अब साइकिकल रिसर्च एक निरीक्षणमूलक और प्रयोगमूलक विज्ञान है। दुनिया के कुछ विश्वविद्यालयों में, जैसे इंङ्गलैन्ड में कैम्ब्रिज और संयुक्त राष्ट्र में ड्यूक विश्वविद्यालय में, इसका स्वतंत्र विभाग है। इसका साहित्य विशाल है और इसके निष्कर्ष चौंका देने वाले लेकिन आकर्षक हैं। वे इतने महत्वपूर्ण हैं कि यदि उनकी सत्यता असन्दिग्ध सिद्ध हो जाय तो मनोविज्ञान, समाजविज्ञान, धर्मविज्ञान, नीतिविज्ञान और दर्शन उनकी उपेक्षा नहीं कर सकते। कोई भी आदमी उनका परिचय प्राप्त किये बिना पूर्णतया शिक्षित और संस्कृत कहलाने का अधिकारी नहीं है। टिरेल ने '*Science and Psychic Phenomena*'नामक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ में ठीक ही कहा है कि "कोई भी जो जीवन की बड़ी और महत्वपूर्ण बातों में दिलचस्पी रखता है, जो यह जानने के लिये उत्सुक है कि उसका अपना अस्तित्व क्या है, किस तरह की दुनिया में वह रहता है, विज्ञान की खोजों को कहाँ तक अन्तिम सत्य मान लेना चाहिये, विश्व में धर्म का क्या स्थान है तथा उन तथ्यों(परा.मनोविद्या के)की इस पर क्या प्रतिक्रिया होती है,परामनोविद्या की उपेक्षा नहीं कर सकता" (पृ० XIII)। "परामनोविद्या ही केवल वह विज्ञान है जो मानव-व्यक्तित्व की गहराई में उतरता है और उन आवश्यक समस्याओं पर प्रकाश डालता है जिन्होंने अब तक हमें परेशान कर रखा है तथा जो पकड़ में नहीं आती" (पृ० XII)। "परामनोविद्या विज्ञान, दर्शन और धर्म, मानव-विचार की इन तीनों महान् शाखाओं के सन्धि-स्थल पर है और जिन बातों का अध्ययन यह करती है उनका इन तीनों के लिये अत्यधिक महत्व है" (पृ० XII)।

यह कहना सचाई से ज्यादा दूर न होगा कि मनुष्य की शाश्वत रुचि की दृष्टि न विज्ञानों की परम्परा में परामनोविद्या का स्थान सर्वोच्च है। इसने वैज्ञानिक विधि का अनुसरण करने वाले अन्य विज्ञानों की तुलना में मानव-प्रकृति की अधिक गहराई में प्रवेश किया है, यद्यपि मानव-प्रकृति की छानबीन अभी बहुत बाकी है।

दूसरी ओर यह विश्वास किया जाता है कि सयम की योग-विधि पर आधारित प्राचीन भारतीय आध्यात्मविद्या को मानव प्रकृति का इतना पूर्ण और गहरा ज्ञान हो गया था जितना आधुनिक वैज्ञानिक विधि से नहीं हो सकता। लोकोक्ति है कि योगी विश्व को "हस्ता-मलकवत्" देखता है। यह प्रसिद्ध है कि योगी सर्वज्ञ हो जाता है और इसके

साथ ही अनेक अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त कर लेता है। कहा जाता है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पर जितने भी प्राचीन शास्त्र हैं जो कि अपने-अपने विषयों का इतना विस्तृत और सूक्ष्म ज्ञान देते हैं कि उन विषयों के आधुनिक पण्डितों की बुद्धि भी चकरा जाती है— वे सब ऋषि कहलाने वाले योगियों के द्वारा लिखे गये हैं।

आज भी इन शास्त्रों की अनेक बातें हमारे लिये बड़ा महत्व रखती हैं और आधुनिक वैज्ञानिक अनुसन्धानों से उनकी उल्लेखनीय रूप से पुष्टि हुई है। अनेक अनुसन्धानकर्त्ता अपने-अपने अध्ययन के क्षेत्रों में नई बातों का पुरानी बातों से मेल दिखाने में लगे हैं। भारतीय मनोविज्ञान और पाश्चात्य परामनोविद्या का तुलनात्मक अध्ययन बहुत पहिले हो जाना चाहिये था। अतः यदि मैं यहां पर इस विषय पर कुछ लिखूं तो यह अनुचित न होगा।

साइकिकल रिसर्च सोसाइटी की स्थापना निम्नलिखित अलौकिक तथ्यों का वैज्ञानिक और निष्पक्ष अध्ययन करने के उद्देश्य से हुई थी : (१) सामान्यतया स्वीकृत प्रत्यक्ष के प्रकारों के अतिरिक्त एक मन का दूसरे पर पड़ने वाला प्रभाव, (१) सम्मोहन, समाधि, दूरदर्शन इत्यादि, (३) तथाकथित "संवेदनशीलों" (sensitives) की अतीन्द्रिय-प्रत्यक्ष की शक्तियाँ; (४) छायायें और प्रेतग्रस्त मकानों में होने वाले उपद्रव, (५) आध्यात्मिक घटनायें,और (६) अलौकिक घटनाओं से सम्बन्धित ऐतिहासिक वर्णन यहाँ न तो इतना स्थान है और न मेरे पास इतना समय कि मै साइकिकल रिसर्च सोाइसटी, किसी अनुसन्धानकर्त्ता या पिछले अस्सी सालों में इस उद्देश्य के लिये बनी हुई ब्रिटिश साइकिकल रिसर्च सोसाइटी जैसी किसी अन्य संस्था के कार्य का विस्तार से वर्णन करूं, यद्यपि यह रोचक और शिक्षाप्रद होता है। मै इस दशा में काम करने वाले कुछ प्रसिद्ध और अनुभवी व्यक्तियों के उद्धरण देकर यह दिखाने का प्रयत्न करूंगा कि हमारा एतद्विषयक ज्ञान किस स्थिति में है।

तीस वर्ष तक उत्साहपूर्वक और पूर्ण वैज्ञानिक सतर्कता से काम करने के बाद पेरिस के दर्शन के प्रोफेसर रिशे ने निम्नलिखित चौंका देने वाले निष्कर्ष प्राप्त किये— प्रच्छन्नसंवेदन, दूरक्रिया, एक दिव्य शारीरिक तत्व (ectoplasm) और पूर्वबोध कड़ी चट्टान अर्थात् सैकड़ों निरीक्षणों और सैकड़ों कठोर प्रयोगों पर आधारित है। ... ज्ञान की एक ऐसी शक्ति है जो साधारण ज्ञानेन्द्रियों की शक्ति से मौलिक रूप से भिन्न है (प्रच्छन्नसंवेदन)। दिन की भरपूर रोशनी में भी दूरस्थ वस्तुओं में मनद्वारा कुछ गतियाँ बिना छुये होते हैं (दूरक्रिया)। समूचे हाथ शरीर और वस्तुयें एक बादल से आकार से आकृति ग्रहण करते हुये प्रतीत होते हैं और उनमें जीवन के सभी लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं (ectoplasm materialization)। पूर्वबोध होते हैं जिनकी व्याख्या न तो दैवयोग से हो सकती है और न सूक्ष्मदृष्टि से तथा जिनकी सूक्ष्म बातें तक कभी-कभी सत्य सिद्ध हुई हैं। ये मेरे दृढ़ और वैज्ञानिक निष्कर्ष हैं" *Thirty years of Psychical Research*, पृ० ५६६) प्रो० विलियम मैकडूगल ने अपना मत इस प्रकार दिया : "मेरा विचार है कि विचार-संक्रमण (Telepathy) के पक्ष में अकाट्य प्रमाण हैं।... मै समझता हूं कि ऐसे जोरदार प्रमाण काफी संख्या में इकट्ठे हो चुके हैं जो यह दिखाते

हैं कि मृत्यु के पश्चात मनुष्य बिल्कुल नष्ट नहीं हो जाता बल्कि उसके व्यक्तित्व का कुछ अंश तब भी जीवितों के ऊपर प्रभाव डालता रहता है। मेरी धारणा है कि दूर-दर्शन के पक्ष में इतनी ज़ोरदार दलील है कि एतद्विषयक अनुसन्धान को आगे बढ़ाना नितान्त आवश्यक है, और यही मैं माध्यम से सम्बन्धित अधिकांश अलौकिक बातों के बारे में भी कहूंगा" (*Religion and Science of Life*, पृ० ८०)। प्रसिद्ध जर्मन जीवशास्त्री और दार्शनिक हैन्स ड्रीश लिखते हैं: विचार-संक्रमण एक निश्चित और मौलिक तथ्य है। मन: पर्याय भी काफी निश्चित रूप से स्थापित हो चुका है। निष्पक्ष निरीक्षण से दूरदर्शन की सत्ता भी प्रतीत होती है लेकिन शायद यह विचार-संक्रमण के कारण होता है। प्रयुक्त वस्तु द्वारा प्रयोक्ता के व्यक्तित्व का ज्ञान (Psychometry) पहली दृष्टि में ही सत्य मालूम पड़ता है। भविष्यवाणी को मै सत्य के करीब कहूंगा" (*Psychical Research*)।

ड्यूक विश्वविद्यालय में हाल में डा० राइन के सुयोग्य नेतृत्व में जो प्रयोग हुये हैं उन्होंने मनुष्य के अन्दर अतीन्द्रिय-प्रत्यक्ष की शक्ति का अस्तित्व सिद्ध कर दिया है। वे लिखते हैं, "अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष एक ऐसा तथ्य है जिसका वस्तुत: प्रदर्शन किया जा सकता है" (*Extra-Sensory Perception*, पृ० २२२)। डा० राइन ने अपने हाल के ग्रन्थ "*The Reach of Mind*" में अपनी प्रयोगशाला में समय-समय पर किये गये अनुसन्धानों के निष्कर्षों को संक्षेप में इस प्रकार दिया है: "इनमें से प्रथम चरण में निष्कर्ष यह था कि किसी ज्ञात भौतिक माध्यम के बगैर दो मनों में परस्पर-क्रिया होती है। दूसरे ने जो कि अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष के बारे में है, यह प्रदर्शित किया कि किसी ज्ञात ऐन्द्रिय साधन के बिना मन का जड़ द्रव्य के साथ ज्ञानात्मक सम्बन्ध हो सकता है। तीसरे चरण में यह मालूम हुआ कि यह योग्यता देशातीत है और चौथे में यह कि यह कालातीत भी है।" दूसरे शब्दों में, डा० राइन ने प्रयोगात्मक छानबीन से यह स्थापित किया कि मन में विचार-संक्रमण, दूरदर्शन, पूर्वबोध और दूरक्रिया की वास्तविक शक्तियां हैं।

प्रो० एच० एच० प्राइस के अनुसार, "विचार-संक्रमण और दूरदर्शन के पक्ष में बहुत अधिक और अच्छा साक्ष्य है; और पूर्वबोध के पक्ष में भी जो कि अलौकिक तथ्यों में सबसे विरोधाभासपूर्ण है, काफ़ी साक्ष्य है" (Questions About Telepathy and Clairvoyance, in *Philosophy* Oct. 1940) टिरेल लिखता है: "परामनोविद्या का प्रायोगिक अंग अब ऐसी स्थिति में पहुँच गया है जिसमें यह कहा जा सकता है कि विज्ञान की कठोरतम परिस्थितियों में भी विचार-संक्रमण और पूर्वबोध ने स्वय को प्रकट किया है "*Personality of Man*"।

हियरवार्ड कैरिंगटन जिन्होंने आध्यात्मिक तथ्यों की छानबीन और अध्ययन में अपना जीवन लगा दिया, शरीर की मृत्यु के बाद मानव-व्यक्तित्व के अस्तित्व के साक्ष्य के बारे में लिखते हैं "प्राय: प्रत्येक परामनोविद्याविद् इस बात से सहमत है कि आत्मा की अमरता के पक्ष में अब इतना प्रमाण इकट्ठा हो चुका है कि इसे एक कामचलाऊ सिद्धान्त के रूप में ग्रहण करना उचित है" (*The Story of Psychic Science* पृ० ३२३)।

"मृत्यु के बाद आत्मा के अस्तित्व के पक्ष में प्रबल प्रमाण है" (वही पृ० ३२४)। इस अनुसन्धानकर्त्ता और अन्यों ने भी सबसे अद्भुत तथ्य, भौतिकीकरण (materialization) की सच्चाई के पक्ष में अपनी सम्मति दी। कहा है : "मेरे विचार से इसमें कोई सन्देह नहीं है कि भौतिकीकरण प्रकृति में होने वाला एक तथ्य है, यद्यपि यह अविश्वसनीय लगता है।......इसमें सन्देह करना तर्क संगत नहीं है कि शरीर के जीवित अवयव आँखों के सामने बन सकते हैं और समूचे शरीर भी बन सकते हैं जिन्हें उस समय छुआ भी जा सकता है" (वही पृ० १७४)।

एक अन्य अनुसन्धानकर्त्ता डा० गेली ने भौतिकीकरण के बारे में लिखा है, "मैंने चेहरे, हाथ या उंगली का पूरा भौतिकीकरण बहुत काफी देखा है। चरम दृष्टान्तों में जो अवयव निर्मित हुये हैं वे बिल्कुल जीवित अवयवों की तरह दिखाई दिये और उनके जैविक गुण भी वही पाये गये" (*Clairvoyance and Materialization* पृ० १८६)। हैमलीन गार्लैंड जिसने अपने ग्रन्थ को लिखने से पहले चालीस साल तक अनुसन्धान किया, भौतिकीकरण के बारे में लिखते हैं, "यद्यपि इसमें जादू मालूम होता है, तथापि ये ठीक उसी तरह हुये हैं जिस तरह मैंने उनका वर्णन किया है" (*Forty Years of Psychical Research*, पृ० ३८४)।

जिसे आजकल प्रायः दिव्य देह (astral body) कहा जाता है और प्राचीन भारत में "सूक्ष्म शरीर", "लिंगदेह" या "अतिवाहिक देह" कहा जाता था, उसके बारे में बहुत अनुसन्धान हुआ है। पश्चिम में इस अनुसन्धान का प्रारम्भ पेरिस के Col. De. Rochas ने किया और M. Hector Durville, Dr. Baraduc, Dr. Zealberg van Zeist (हालैंड के), Oliver Fon, "Yram" और Muldon प्रभृति कई अनुसन्धानकर्त्ताओं ने इसे आगे बढ़ाया। इस विषय पर कई ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं और अनुसन्धानकर्त्ता इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि आत्म-प्रक्षेप, जीवितों की छाया इत्यादि अनेक तथ्यों की व्याख्या एक दिव्य देह माने बिना नहीं हो सकती। *Story of Psychic Science* में कैरिंगटन ने लिखा: "परामनोविद्या के कई विद्यार्थी यह सोचते हैं कि भौतिक शरीर के अतिरिक्त मनुष्य का एक 'वायव्य', 'दिव्य' प्रतिरूप भी होता है जो सभी दृष्टियों से उसके सदृश होता है, जीवन-काल में कभी-कभी भौतिक शरीर से अलग हो सकने की योग्यता रखता है, और मृत्यु के बाद हमेशा के लिये उसे छोड़ देता है। यह जान लेना चाहिये कि यह स्वयं आत्मा नहीं है बल्कि आत्मा का वाहन है, जिस प्रकार भौतिक शरीर आत्मा का वाहन है यह वह देह है जिसमें, यह कहा जाता है कि मृत्यु के बाद कुछ समय तक आत्मा का निवास रहता है" (पृ०२८२)। "तबसे इस प्रकार के दिव्य शरीर के अस्तित्व के पक्ष में बहुत साक्ष्य इकट्ठा हो चुका है" (पृ० २८२)। पहिले पाश्चात्य लेखकों ने दिव्य देह को 'Soul' (जीव) कहा है और एक ओर भौतिक देह से और दूसरी ओर 'Spirit' (आत्मा) से इसका भेद किया है : एक महान फ्रैंच अनुसन्धानकर्त्ता फ्लेमेरियन इस निष्कर्ष पर पहुँचा है : "(१) जीव शरीर से स्वतन्त्र अस्तित्व रखता है, (२) इसकी शक्तियाँ विज्ञान को अब भी अज्ञात हैं, (३) ज्ञानेन्द्रियों की सहायता के बिना यह दूरस्थ वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त कर सकता है"

(*Before Death, at the Moment of Death aud After Death* पृ० ४५२)। अब आध्यात्मिक अनुसन्धानकर्त्ता दिव्य देह के तथ्य तथा परिकल्पना का उपयोग इन बातों की व्याख्या करने में लगे हैं: छायायें, प्रेतबाधा, तथा ऐसे अन्य तथ्य जिनमें मृतकों या जीवितों की ऐसे स्थान में उपस्थिति महसूस होती है जहाँ उनकी सत्ता नहीं है।

मन शरीर से श्रेष्ठ है तथा उसका शरीर और उसके अङ्गों के ऊपर अत्यधिक प्रभावपूर्ण नियंत्रण रहता है, यह सम्मोहन, मनोविश्लेषण, मनश्चिकित्सा, मनोदैहिक चिकित्सा, तथा प्रार्थना, मन्त्र और निर्देश के द्वारा अलौकिक रोग-विमुक्ति से स्पष्टतया सिद्ध हो चुका है। डा० फोर्बस विन्स्लो ने बहुत पहिले लिखा था: "यह एक सुस्थापित तथ्य है कि विशेष अङ्गों के ऊपर ध्यान को अत्यधिक केन्द्रित करने के फलस्वरूप ऊतियों में परिवर्तन हुये हैं:...आन्तरिक ऊतियों की रूग्णावस्था की लगातार मन में कल्पना करते रहने से निश्चय ही उनमें रक्त संचार असाधारण रूप से बढ़ जाता है, उनके विशेष व्यापारों में वृद्धि हो जाती है, उनकी संवेदनशीलता बढ़ जाती है और फलस्वरूप क्रमशः (१) रक्तवाहिनियों की अनुचित क्रिया (२) केशवाहिनियों में रक्तसंचय (३) स्नायु-शक्ति के विकास में आधिक्य तथा (४) स्थूल रचना-सम्बन्धी परिवर्तन होते हैं (*Obscure Diseases of the Mind and Brain*) इसके विपरीत, स्वस्थ होने की कल्पना और सुखद संवेग "रक्त और ग्रन्थि-न्यासर्गों की स्वस्थ अवस्था को पैदा करते हैं और स्वास्थ्य में सुधार करते हैं" Tuckey:(*Treatment by Hypnotism and Suggestion*, पृ० २४)। डा० कैनन के अनुसार, "Pleurisy, sciatica, lumbago, neuralgia, cancer, tabis, donsalis, gastric ulcer, duodenal ulcer, appendicities आदि अनेक भयंकर रोगों तक में सम्मोहन से पीड़ा दूर हो सकती है (Alexander Connon: *Hypnotism* पृ० २३)। सम्मोहन के साहित्य में ऐसे दृष्टान्तों का प्राचुर्य है जिनमें भौतिक शरीर के अन्य गम्भीर रोगों की भी सम्मोहन द्वारा चिकित्सा हुई है। एफ० डवल्यू० एच० मायर्स और ए० टी० मायर्स ने एक लेख में उल्लेख किया है कि कैसे पानी मात्र को दवा मानकर एक रोगी के शरीर पर छाये हुये मस्से ठीक हो गये। उनका निष्कर्ष है: "यह निर्भीक प्रयोग इस बात का उदाहरण है कि यदि मन को उचित रूप से उत्तेजना दी जाय तो कभी-कभी शरीर की ऐसी रूग्ण अवस्थाओं में भी प्रभाव होता है जिनको दूर करना दवा और शल्य-चिकित्सा के लिये समस्याजनक है" (Malcolm Grant: *A New Argument for God and Survival*, पृ० २६२)। डा० इमाइल कू ने अपने अनुभव के आधार पर लिखा है: "निर्देश के द्वारा कोई भी आदमी रक्त के बहने को रोक सकता है, कब्ज को ठीक कर सकता है, सूजन को हटा सकता है, स्तम्भ, क्षय के घाव, शिराओ के फोड़े को दूर सकता है, इत्यादि" (*Self-Mastery Through Conscious Auto-Suggestion*)।

भारत और यूरोप में प्रार्थना, मन्त्र और आशीर्वाद से चमत्कारपूर्ण रोग-विमुक्ति की बात प्रसिद्ध ही है। कुछ स्थानों में चिकित्सकों ने ऐसे दृष्टान्तों का खूब अध्ययन किया है और उनके बारे में निष्पक्ष लेख प्रकाशित हुये हैं। Dr. E. le. Bec. के ग्रन्थ

"*Medical Proofs of the Miraculous*" में साधारण चिकित्सकों और शल्य-चिकित्सकों द्वारा असाध्य घोषित कर दिये जाने वाले ऐसे गम्भीर रोगों के दूर होने का विस्तृत वर्णन है जिसके दृष्टान्त योरप के (Lourdes) नामक स्थान में घटित हुये। इनके बारे में प्रसिद्ध चिकित्सावैज्ञानिक और नोबेल-प्राइज-विजेता डा० अलेक्सिस कैरेल ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ *Man the Unknown* में लिखा है: "रोग से उत्पन्न व्रणों के ऊपर प्रार्थना का प्रभाव पड़ने के बारे में हमारी जो वर्तमान धारणा है वह ऐसे रोगियों के निरीक्षण पर आधारित है जो रोगों से लगभग तत्काल चंगे हो गये और इनमें से कुछ रोग ये हैं: Peritonial tuberculosis, cold abscesses, ostaitis, suppurating wounds, lupus, cancer इत्यादि। इस चमत्कार की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें क्षतियों के पुनर्निर्माण की क्रिया त्वरित हो जाती है।...इसके होने का एकमात्र कारण है प्रार्थना। किन्तु, यह आवश्यक नहीं है कि रोगी स्वयं प्रार्थना करे।... उसके आस-पास किसी का भी प्रार्थना करना पर्याप्त है" (पृ० १४४-४५)।

अलौकिक तथ्यों, अनुभवों और रोगविमुक्तियों के वर्तमान वैज्ञानिक अध्ययन पर जितने प्रामाणिक ग्रन्थ हैं उनसे इस तरह के असंख्य उद्धरण लिये जा सकते हैं। लेकिन इतना ही यहाँ पर्याप्त होगा। इन निरीक्षणों में जो बात गर्भित है वह दार्शनिक तथ्यों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। स्वयं को दार्शनिक बताने वाला कोई भी व्यक्ति इसकी उपेक्षा नहीं कर सकता। इस महत्वपूर्ण अनुसन्धान के प्रकाश में मानव-स्वभाव को नये तरीके से समझना अभी बाकी है, क्योंकि तथ्यों के निष्पक्ष वैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित इसकी खोजें भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान और मनोविज्ञान के वर्तमान ज्ञान के ऊपर आधारित मानव-स्वभाव-विषयक हमारी धारणाओं को उलट देती हैं। परामनोविद्या के निष्कर्ष निश्चित रूप से प्राचीन भारत में प्रचलित दार्शनिक और मनोविज्ञान दृष्टिकोण की ओर जाते हैं, न कि उसकी ओर जो भौतिक विज्ञानों ने आधुनिक मनुष्य के मन में पैदा कर दिया है। इन विज्ञानों ने जिस सामान्य दृष्टिकोण को जन्म दिया है वह परामनोविद्या के खोजे हुये अलौकिक तथ्यों की उपस्थिति में खोखला मालूम पड़ता है। टिरेल ने ठीक ही लिखा था: "आध्यात्मिक तथ्यों की वैज्ञानिक परीक्षा ने सुप्रमाणित तथ्यों के ऐसे समूह को प्रस्तुत करके जो अब तक के ज्ञान-भण्डार से मेल नहीं खाता, असाधारण परिस्थिति उत्पन्न कर दी है" (*Science and Psychic Phenomena*, पृ० १५२) कैरिंगटन ने भी लिखा है: "यदि जीवन का मनो-रासायनिक या यांत्रिक दृष्टिकोण सही है तो किसी भी तरह की अलौकिक घटनायें नहीं हो सकतीं" (*The Story of Psychic Science*, पृ० ३३२) "फिर भी वे होती हैं......।" "ये तथ्य असन्दिग्ध सिद्ध हो चुके हैं।"

परामनोविद्या द्वारा स्थापित तथ्यों को मानते हुये और उनका असाधारण, धार्मिक और सामाजिक मनोविज्ञान के उन तथ्यों के साथ विचार करते हुये जिनके कारण फ्रायड को मनुष्य के लघु चेतन मन के अचेतन मन की कल्पना करनी पड़ी, युंग को सामूहिक अचेतन या जातिगत मन की और मैकडूगल को समूह-मन (group mind) की, हमको यह मानने के लिये बाध्य होना पड़ता है कि इस तरह की किसी वस्तु की सत्ता

है जिसको प्राचीन भारतीय दार्शनिक 'आत्मा' कहते थे और जो प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर रहने वाला अति-भौतिक, अति-मानसिक और अति-वैयक्तिक तत्व है । एफ० डबल्यू० एच० मायर्स ने, जिन्होंने इस दिशा में सर्वप्रथम विधिवत् विचार किया है, अपने उच्च-कोटि के ग्रन्थ *Human Personality* में इसी तरह की एक परिकल्पना की ओर संकेत किया है । वे लिखते हैं: "हममें से प्रत्येक के चेतन आत्मा में हमारे अन्दर रहने वाली सम्पूर्ण चेतना या शक्ति की समाप्ति नहीं हो जाती । इससे भी अधिक व्यापक चेतना या गहरी शक्ति का हमारे अन्दर अस्तित्व है जिसका अधिकाँश अव्यक्त रहता है" (संक्षिप्त संस्करण, पृ० १३) ।

भारत में आत्मा को, जो कि हम सब का वास्तविक स्वरूप है, अमर, विभु, सर्वत्र और सर्व शक्तिमान माना जाता है: और अपने शरीर, इन्द्रियों और बुद्धि की सीमाओं का अतिक्रमण करके जितना ही अधिक हम इस सत्य को समझते हैं उतना ही अधिक ज्ञान और क्रिया की शक्ति हममें आ जाती है । आत्म-अनुभूति की इस प्रक्रिया का सामान्य नाम योग है । योग-साधन के ऊर्ध्वमुखी मार्ग में योगी उनसे भी अधिक शक्तियों का प्रदर्शन करता है जितनी परामनोविद्या को ज्ञात है । पतंजलि ने योग-सूत्र, तृतीय अध्याय में निम्नलिखित शक्तियों का उल्लेख किया है:—अतीत और अनागत का ज्ञान (Psychometry and premonition) (सूत्र १६); सर्वभूतरुतज्ञान (सूत्र १७); पूर्वजातिज्ञान (१८); परचित्तज्ञान (Telepathy: Thought-reading) (१९); अन्तर्धान (शरीर का अदृश्य होना) (२१); अपरान्तज्ञान (मृत्यु का पूर्व ज्ञान) (२२) हाथी इत्यादि का बल (२४); सूक्ष्म-व्यवहित-विप्रकृष्ट-ज्ञान (Clairvoyance) (२५); भुवनज्ञान (२६); ताराव्यूहज्ञान (२७); तारागतिज्ञान (२८); कायव्यूहज्ञान (X-Ray Clairvoyance (२९); क्षुत्पिपासानिवृत्ति (३०); स्थैर्य (३१); सिद्धदर्शन (३२); परशरीरावेश (३८); जल-पङ्क-कण्टक आदि से असंग और उत्क्रान्ति (Levitation) (३९); ज्वलन (शरीर का दीप्तिमान होना) (४०); आकाशगमन (४२); भूतजय (४४); अणिमा, लघिमा, महिमा, गरिमा, प्राप्ति प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व, इन आठ सिद्धियों का प्रादुर्भाव (४५); रूप, लावण्य, बल और वज्र के समान संगठन, इस काय-सम्पत् की प्राप्ति (४६); इन्द्रियजय (४७); सर्वभावाधिष्ठातृत्व और सर्वज्ञत्व (४९) ।

भारत में कई दर्शनों ने अलौकिक या यौगिक प्रत्यक्ष को स्वीकार किया है । जैन दर्शन में अवधि (Clairvoyance) मन: पर्याय (telepathy) और सर्वज्ञत्व को ज्ञान के प्रकार माना गया है ।

आध्यात्मविद्या के ऊपर लिखे गये अब तक के ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ योगवासिष्ठ के अनुसार हम सब का मन सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् है और प्रत्येक जन अपने मन की इन नैसर्गिक शक्तियों का प्रयोग कर सकता है । यदि हम ऐसा नहीं कर सकते तो यह हमारा ही दोष है । योगवाशिष्ठ में मन की शक्तियाँ संक्षेप में इस प्रकार बताई गई हैं: "मन सर्वशक्तिमान् है (३.९१.१६) मन के अन्दर सर्जन शक्ति है (३.६६.६) । अपने लिये स्वयं एक संसार का निर्माण करने में मन बिल्कुल स्वतन्त्र है (३.४.७८) !...देश का विस्तार और काल की स्थिति हमारे विचार और संवेगों पर निर्भर है (४.१३.१३)...

हमारा बाह्य जगत् हमारी कल्पना का प्रक्षेप और हमारी इच्छाओं की पूर्ति मात्र है (३.९६.८-१०)। शरीर मन की सृष्टि है और किसी भी अवस्था में बदला जा सकता है। शरीर के अधिकांश रोग मानसिक उपद्रवों से पैदा होते हैं तथा सम्यक् विचार और मन के प्रशिक्षण से दूर किये जा सकते हैं (४.४५.७; ४.११.१६; ६ (पू०). २८.३४)।"
(B. L. Atreya: *Yogavasistha and its Philosophy*, पृ० ६४-६५)

श्री कृष्ण सबसे बड़े जन्मसिद्ध योगी (medium) माध्यम थे। महाभारत, विष्णु, भागवत, और अन्य पुराणों में उनकी जिन लीलाओं और चमत्कारों का वर्णन है वे दुनिया में देखी गई अलौकिक शक्तियों के सर्वोत्कृष्ट दृष्टान्त हैं। हम श्री कृष्ण के जीवन को अपने धर्म-ग्रन्थों की अपेक्षा आधुनिक परामनोविद्या से अधिक समझ सकते हैं। मैं यह कह सकता हूं कि सभ्यता के इतिहास में हम अब ऐसे समय में पहुँच गये हैं जबकि परामनोविद्या और भारतीय विचार-धारा का तुलनात्मक अध्ययन तुरन्त शुरु कर देना आवश्यक है। मेरा विचार है कि मनुष्य-जाति के किसी भी अन्य प्रयत्न की अपेक्षा यह पूर्व और पश्चिम, अतीत और वर्तमान, विज्ञान और धर्म का समन्वय स्थापित कर देगा।

अध्याय ९

प्राग्ज्ञान : तथ्य और सिद्धान्त

सब परामानसिकीय तथ्यों में से शायद प्राग्ज्ञान सर्वाधिक समस्याजनक है। जीवन के प्रति जो विज्ञानमूलक दृष्टिकोण है उसके लिए यह सबसे अधिक घातक है। प्राग्ज्ञान ऐसी भावी घटनाओं का असाधारण ज्ञान है जिनकी सूचना किसी भी वर्तमान घटना से नहीं मिलती। डा० राइन के अनुसार "प्राग्ज्ञान किसी ऐसी भावी घटना का ज्ञान है जिसको जानना अनुमान की तार्किक प्रक्रिया से संभव नहीं है। साल्टमार्श का कथन है कि प्राग्ज्ञान सूचना या अनुमान पर आश्रित न रहते हुए भावी घटनाओं का प्रत्यक्ष या बोध है।" जी० एन० एम० टिरेल ने प्राग्ज्ञान को "भावी घटनाओं का अनानुमानिक ज्ञान" कहा है।

अपने ग्रंथ 'एन्साइक्लोपीडिया ऑफ साइकिक साइन्स' में नैन्डोर फोडोर ने प्राग्ज्ञान को "आसन्न घटनाओं का अलौकिक ज्ञान" कहा है। प्राग्ज्ञान की एक अधिक स्पष्ट और पूर्ण परिभाषा यह है कि वह किसी व्यक्ति का होने वाला ऐसा प्रत्यक्ष या बोध है जो उसी या किसी अन्य व्यक्ति के भावी इन्द्रियानुभव के अनुरूप होता है और सूचना या अनुमान की तार्किक प्रक्रिया से प्राप्त नहीं माना जा सकता। इस परिभाषा के अन्तर्गत वे मामले आ जाते हैं जिनमें भावी अनुभव किसी घटना में व्यक्ति के स्वयं शामिल होते या उसका समाचार सुनने के रूप में होता है तथा वे भी आ जाते हैं जिनमें किसी अन्य व्यक्ति का भविष्य प्राग्ज्ञान और मनःपर्यय के मिले—जुले रूप से जाना जाता है।

प्राग्ज्ञान के निम्नलिखित प्रकार हो सकते हैं :—

(१) जाग्रत अवस्था का प्राग्ज्ञान : जब किसी ऐसी घटना की जो भूतकाल में नहीं घटी और न वर्तमान में घट रही है बल्कि कुछ समय बाद घटती है, हमें झलक मिलती है या उसका स्पष्ट विचार हमारे मन में प्रकट होता है या उसका प्रत्यक्ष हमें होता है और वह ठीक उसी रूप में घटती है जिस रूप में मन को उसका प्रत्यक्ष हुआ था, तो इसे हम जाग्रत् अवस्था का प्राग्ज्ञान कह सकते हैं। हाल में मेरे एक छात्र को अपने अध्ययन-कक्ष में बैठे-बैठे एक लड़का रेलगाड़ी के नीचे कुचला जाता हुआ "दिखाई दिया—यह घटना उसके इस प्रकार "दिखाई देने" के लगभग तीन घंटे बाद वस्तुतः घटी।

(२) स्वप्नावस्था का प्राग्ज्ञान : 'ऐन ऐक्सपेरीमेन्ट विद टाइम' के लेखक जे० डब्ल्यू० डन्न ने ऐसे स्वप्नों का गहन अध्ययन किया है जो उनके मत से प्रायः होते हैं। यदि

इसी प्रकार का अध्ययन हम अपने स्वप्नों का कर सकें तो हम देखेंगे कि उनमें से कई प्रत्यक्ष या प्रतीकात्मक रूप में उन घटनाओं की ओर संकेत करते हैं जो भविष्य में घटित होती हैं और जिनका न वर्तमान में अस्तित्व है और न भूतकाल में अस्तित्व था। मेरे जिस विद्यार्थी ने एक लड़के के नीचे कुचले जाने की घटना को उसके वस्तुत: घटित होने के तीन घंटे पहले देख लिया था, एक विचित्र और अप्रत्याशित स्वप्न का, जो थोड़े दिन बाद सच्चा सिद्ध हुआ, इस प्रकार वर्णन किया : "सन १९५४ में मैं राष्ट्रीय प्रतिरक्षा अकादमी में एक प्रशिक्षणार्थी था और वहीं १० अगस्त १९५४ को मुझे स्वप्न हुआ कि मैंने इस्तीफा दे दिया है तथा वापस घर जाकर एम० ए० में मनोविज्ञान की पढ़ाई शुरू कर दी है। ....उसी वर्ष १४ अगस्त को मेरे हृदय में पीड़ा हुई। प्रत्येक उपाय किया गया और हर संभव इलाज किया, लेकिन कोई लाभ न हुआ। १९अगस्त १९५४ को मैं इस्तीफा देकर घर आ गया और मैंने मनोविज्ञान में एम० ए० प्रथम वर्ष में प्रवेश ले लिया।" लेडी लिटलटन ने अपनी रोचक पुस्तक 'सम केसेज ऑफ प्रिडिक्शन' में स्वप्नावस्था के प्राग्ज्ञान के अनेक दृष्टान्त दिए हैं।

(३) प्रतीकात्मक प्राग्ज्ञान : कभी-कभी भावी घटनाओं का प्रतीकों के द्वारा पूर्वाभास होता है और ऐसा जाग्रत् या स्वप्नावस्था के अनुभव में होता है। प्रतीकात्मक प्राग्ज्ञान की आम घटनाओं पर ही भारतीयों का शकुनों में विश्वास आधारित है, मनोविश्लेषण के विद्यार्थी भली भाँति जानते हैं कि प्रतीकों का हमारे जीवन में कितना अधिक भाग होता है। इस प्रसंग में उनके बारे में अलौकिकता इस बात में है कि वे भूतकाल में घटी हुई या इस समय घटनेवाली घटना का नहीं बल्कि निकट भविष्य में घटनेवाली घटना की सूचना देते हैं। इस प्रकार का एक प्रतीकात्मक स्वप्न यह है : एक महिला को स्वप्न हुआ कि एक अमरुद का पेड़ है जिस पर केवल एक फल है और एक हाथी उस एकमात्र फल से आकर्षित होकर पेड़ की तरफ बढा चला आ रहा है। उसने पेड़ पर एक भारी चोट की और फल को गिराकर उसे खा डाला। जागने पर उस महिला को सूचना मिली कि उसके मामा के घर एक बच्चा बीमार पड़ा था। उसकी हालत खराब होती चली गई और उसी दिन अपराह्न में मृत्यु ने उसे छीन लिया। यहां अमरूद बच्चे का प्रतीक था और हाथी मृत्यु का और यह स्वप्न प्राग्ज्ञापक था, क्योंकि बच्चे की मृत्यु स्वप्न के होने के काफी बाद हुई।

(४) माध्यमीय प्राग्ज्ञान : पाठक माध्यमीय समाधि से पहले ही परिचित हो चुका है। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सुपरनॉर्मल फैकल्टीज इन मैन' में ऑस्टी ने ऐसे अनेक मामलों का उल्लेख किया है जिनमें भविष्य में होनेवाली घटनाएं माध्यमों के द्वारा अपनी समाधि की अवस्था के वचनों में बता दी गई थीं। उसने एक उदाहरण ऐसे स्वविषयक प्राग्ज्ञान का दिया है। "इसके घटित होने के दो वर्ष पूर्व माध्यम ने इसे (घटना को) इस प्रकार व्यक्त किया : "अहो ! कुछ समय बाद मृत्यु का खतरा—शायद एक दुर्घटना—किन्तु तुम बच जाओगे, तुम्हारा जीवन चलता रहेगा।" चार मास पूर्व : "सावधान रहो। तुम्हारे साथ शीघ्र ही एक गंभीर दुर्घटना होगी। मैं एक भयानक धक्का सुन रहा हूं। सौभाग्य की बात है। तुम्हें कोई चोट नहीं लगेगी। ...मुझे एक आदमी जमीन में खून से

लथपथ दिखाई दे रहा है। वह कराह रहा है और उसके चारों ओर कुछ चीजें बिखरी हुई हैं। मैं नहीं जानता क्या चीज़ें हैं।" यह भविष्यवाणी एक माध्यम ने मार्च १६११ में की थी। ऑस्टी आगे कहता है: "१५ अगस्त १६११ को मैं अपनी कार में धीरे-धीरे जा रहा था। तभी नशे में धुत एक रोटीवाला गुस्से में बग्घी चलाता हुआ सामने से आया और उसके गलत ढंग से लगाम खींचने पर उसकी कार से टक्कर हो गई। धक्का इतनी जोर का था की सामने के शीशे के फ्रेम से टकरानेवाला डंडा चूर-चूर हो गया और बग्घी का एक पहिया बॉनेट के ऊपर चढ़ गया तथा उसने बॉनेट का कचूमर निकाल दिया। मेरा दोस्त जो मेरे साथ था और स्वयं मैं भी दुर्घटना की आकस्मिकता तथा सौभाग्य से साफ बच निकलने से आश्चर्य से हक्के-बक्के रह गए। जब मुड़े तो देखा कि घोड़ा भागा जा रहा है, बग्घी गड्ढे में है, उसके पहिए ऊपर की ओर है तथा रोटीवाला सड़क के बीच में पड़ा खून से लथ-पथ कराह रहा है और रोटियां उसके इर्द-गिर्द बिखरी पड़ी हैं।"

(५) प्रयोगात्मक प्राग्ज्ञान: अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष-से संबंधित प्रयोगों में राइन, सोल, टिरेल और स्वयं हमने (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की प्रयोगशाला में) यह पाया कि कुछ प्रयोज्य तत्काल खुले हुए कार्डों को उतनी अच्छी तरह नहीं देख पाते जितनी अच्छी तरह उन कार्डों को जो तुरंत खोले जाएंगे या कुछ देर में खोले जाएंगे। इसे साधारण अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष की अपेक्षा प्रयोज्य की प्राग्ज्ञान- संबंधी अधिक क्षमता का फल कहा गया है, ऐसे मामलों की संख्या इतनी अधिक है कि संयोग के आधार पर उनकी व्याख्या नहीं की जा सकती।

उपर्युक्त सभी शीर्षकों के अंतर्गत उल्लिखित प्राग्ज्ञान की घटनाएं यदा-कदा अधिकतर लोगों के साथ घट चुकी हैं। अब यह मानते हुए कि वे घटती हैं, हम पूछ सकते हैं कि उनकी किस तरह व्याख्या की जाए? परामानसिकीय अनुसंधानकर्ताओं ने अनेक प्रकार की व्याख्याएं प्रस्तुत की हैं। उनका निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत वर्गीकरण किया जा सकता है:—

(क) विविध अतिसामान्य व्याख्याएं:—

साल्टमार्श, जिसने प्राग्ज्ञान का गहन अध्ययन किया है, का कहना है कि 'मेरे मत से संयोग इत्यादि सामान्य विकल्पों के अलावा चार विशेष वैकल्पिक व्याख्याएं संभव हैं जो कुछ मामलों में लागू हो सकती हैं। ये चार है: (१) मन:पर्यय, (२) आत्म-संसूचन, (३) अवसीम ज्ञान और उससे अनुमान, तथा (४) अतिसंवेदिता (अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों की असाधरण शक्ति)' (Saltmarsh: Fore Knowledge पृ० २६)। अब हम इन पर एक-एक करके विचार करेंगे।

(१) मन:पर्यय और दूरदर्शन: प्राग्ज्ञान के ऐसे दृष्टान्त जिनकी व्याख्या के रूप में मन:पर्यय को प्रस्तुत किया जा सकता है, वे हैं जिनमें प्राग्ज्ञाता से भिन्न कुछ व्यक्ति इस बात की सामान्य जानकारी रखते थे कि प्राग्ज्ञात घटना होगी अथवा किसी विशेष प्रकार से काम करने का इरादा रखते थे। पहले प्रकार की घटनाओं में सबसे आम वे हैं जिनमें किसी पत्र का लेखक जानता है कि उसका पत्र जा रहा है और अंत में जिसको लिखा है उसके पास पहुँचेगा, तथा इस ज्ञान को मन:पर्यय से उस व्यक्ति को दे देता है। निश्चय

ही यह मन:पर्ययात्मक संदेश अवचेतन मन भेजता है । कुछ मामलों में प्राग्ज्ञाता का अवचेतन मन दूरदर्शन से जान लेता है कि पत्र लिखा जा रहा है या डाक में छोड़ा जा रहा है और यह ज्ञान स्वप्न या विभ्रम की अवस्था में प्रत्यक्ष के रूप में चेतना में पहुँच जाता है । इस संभावना को बहुत गंभीर रूप में नहीं लेना चाहिए, क्योंकि इसमें संयोग का एक बड़ा अंश होता है । मन:पर्यय के मामले में पत्र-लेखक और प्राग्ज्ञाता के मध्य पहले से ही एक चेतन कड़ी होती है, जबकि दूरदर्शन में कोई कड़ी नहीं होती और प्राग्ज्ञाता तथा लेखक को जोड़ने के लिए हमें संयोग मात्र पर निर्भर रहना पड़ता है । लेकिन दोनों प्रकार के मामले यथार्थ रूप से प्राग्ज्ञान के वर्ग में नहीं आते ।

(२) आत्म-संसूचन : इस प्राक्कल्पना के अनुसार यह विश्वास किया जाता है कि प्राग्ज्ञाता के मन में किसी घटना के भविष्य में होने का विचार आ जाता है और यह विचार आत्म-संसूचन के बतौर इस प्रकार सक्रिय हो जाता है कि जिस घटना का पूर्वाभास हुआ था वही वस्तुत: घट जाती है। स्पष्ट है कि ऐसी घटना वहीं हो सकती है जहां आत्म-संसूचन परिस्थितियों को प्रभावित करने में समर्थ हो और प्रत्याशित परिवर्तनों को लाने में साधन बन सकता हो । शरीर और मन के स्वास्थ्य के संबंध में ऐसा आसानी से हो सकता है ।

साल्टमार्श ने अपनी पुस्तक 'फोरनॉलेज' में एक उदाहरण दिया है जिसकी आत्म-संसूचन के आधार पर व्याख्या की जा सकती है । प्रो० ब्रुक का एक लड़का बीमार पड़ गया था और कुछ समय पहले ठीक हो गया । उसने अपनी माँ को बताया कि उसने अपने एक मित्र की जो हाल ही में मर गया था,छाया देखी,जिसने उसे बताया कि ५ दिसंबर को ३ बजे अपराह्न में उसकी हृदय-रोग से मृत्यु हो जाएगी । परिवार के सभी लोग और पारिवारिक चिकित्सक इस बात पर हँसे, क्योंकि वह उस समय बिल्कुल ठीक था, और उन्होंने उसे चिन्ता न करने के लिए कहा । फिर भी लड़के को विश्वास था कि छाया की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध होगी । ४ दिसम्बर को लड़का अपने सभी मित्रों से मिला उन्हें उसने फूल अर्पित किए और उनसे परलोक जाने के लिए बिदा माँगी । ५ दिसंबर को सुबह जागने पर वह बिल्कुल ठीक था और उसने अन्य दिनों की तरह नाश्ता और दोपहर का भोजन लिया । लेकिन दोपहर के भोजन के समय उसे चक्कर आने लगा और दोपहर बाद ३ बजकर १० मिनट पर हृदय-पेशी-स्तंभ से उसकी मृत्यु हो गई । इस घटना में आत्म-संसूचन का बड़ा भाग माना जा सकता है । लड़के की मृत्यु शायद उसके दृढ़ विश्वास के कारण हुई ।

(३) अवसीम ज्ञान : आधुनिक मनोविज्ञान ने यह खोज की है कि जितने की हमें चेतना रहती है उससे कहीं अधिक हम जानते हैं । हमारे ऐन्द्रिय अनुभव तक का बहुत बड़ा अंश चेतना की देहली के नीचे रहता है । अपने ध्यान के केन्द्र के किसी बिन्दु पर हम जितना अधिक एकाग्र रहते हैं उतनी ही अधिक हम प्रान्तस्थ संवेदनों की उपेक्षा करते हैं । यदि कुछ संवेदन अत्यधिक बलवान् हैं तो वे कम बलवान् संवेदनों को उस समय चेतना में आने से रोकते हैं । लेकिन फिर भी सभी संवेदन,चाहे वे कितने ही निर्बल और अल्पस्थायी हो, मन पर अंकित होते हैं और स्मृति में बने रहते हैं । जब उपयुक्त अवसर आता है या अन्य संवेदनों से संयुक्त होकर वे बल प्राप्त कर लेते हैं और इस प्रकार एक प्रबल ग्रंथि का निर्माण

कर देते हैं, तब उनका स्मरण हो आया करता है। संवेदन और विचार दोनों के रूप में यह अवसीम ज्ञान हमारे चेतन प्रत्यक्ष और अनुमान को बहुत बड़ी सीमा तक प्रभावित करता है। हमारे प्रत्यक्ष और अनुमान में अवसीम के प्रभाव का ज्ञान हमें न रहने से जिसे हम प्राग्ज्ञान कहते है उसकी हम उपर्युक्त प्रकार से अपने अवसीम ज्ञान पर आधारित प्रत्यक्ष या अनुमान के रूप में व्याख्या कर सकते हैं। निम्नलिखित मामले की व्याख्या अवसीम ज्ञान के आधार पर की जा सकती है : एक महिला पेरिस में अपने एक संबंधी के यहां, जो बिल्कुल स्वस्थ था, रह रही थी। एक बार जब वह चारपाई पर लेटी थी, उसे दिखाई दिया कि उसका संबंधी बहुत क्षीण हो गया है, उसका शरीर अंशत: जड़ हो गया है, वह मूढ़-सा दिखाई देता है और कमरे के अन्दर चला आ रहा है। उस समय उसका संबंधी चारपाई में सोया हुआ था। इस घटना के बाद जल्दी ही उस संबंधी का मस्तिष्क विकृत हो गया और उसकी आकृति बदलकर वैसी ही हो गई जैसी उस महिला को विभ्रम में दिखाई पड़ी थी। महिला ने जो कुछ देखा था उसकी व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है कि वह उसके अवसीम मन का चेतन मन के द्वारा उपेक्षित संबंधी की अवस्था के अवसीम संवदनों के आधार पर निकाला हुआ अनुमान था। क्योंकि हम अधिकतर अपने अवसीम या "अचेतन" मन के बारे में अनभिज्ञ रहते हैं, इसलिए प्राग्ज्ञान की घटनाओं की व्याख्या करने में चाहे वे कितनी ही दुर्लभ हों, हम इस प्राकल्पना का अधिक उपयोग नहीं कर सकते। दुर्लभ बातों को काल्पनिक नहीं माना जा सकता। यदि ऐसा होता तो विज्ञान में कोई प्रगति न हुई होती।

(४) अतिसंवेदिता : इसका अर्थ है कुछ प्रभावों के प्रति अत्यधिक संवेदनशीलता। यह उसके अवसीम ज्ञान का, जो इतना हल्का होता है कि चेतना में उसकी अनुभूति नहीं हों सकती, ठीक उल्टा है। अतिसंवेदिता में हमें कुछ प्रभावों का उससे अधिक बोध होता है जितना सामान्य रूप से हमें होना चाहिए। अतिसंवेदिता से प्राग्ज्ञान के अनेक मामलों की व्याख्या की जा सकती हैं। यहां एक ऐसा मामला दिया जा रहा है जिसकी इस प्रकार संतोषजनक रूप से व्याख्या की जा सकती है :

"एक महिला को जो रॉकीज में एक लकड़ी के मकान में रहती थी, एक दिन बरामदे में बैठे-बैठे बहुत दूरी पर आग लगने का दृश्य-सा दिखाई दिया। दस मिनट तक देखते रहने के बाद उसे एक हलकी तड़कने की-सी आवाज सुनाई दी। इस विभ्रम से, जिसे उसने उस समय दूरी पर घटित होनेवाली वास्तविक घटना समझा घबड़ाकर वह पता करने के लिए बाहर निकली और उसने देखा कि उसका अपना ही मकान जल रहा है, वह ठीक समय पर निकली और उसने अपने बच्चे को बचा लिया। आस पास अन्यत्र कहीं आग नहीं लगी थी।"

(ख) विविध सामान्य व्याख्याएँ :

इस वर्ग में आनेवाली प्राग्ज्ञान की व्याख्याएँ (१) संयोग, (२) स्मृति-भ्रम और (३) छल पर आधारित हैं।

(१) संयोग : संयोग वस्तुत: कोई व्याख्या नहीं है। यह एकाकी या अकस्मात होने-वाली ऐसी घटना ओं का नाम मात्र है जिनके कारणों के बारे में हम अनभिज्ञ होते हैं। यह एक नाम है जो हम अपने विचार, स्वप्न-बिम्ब या किसी प्रतीकात्मक घटना तथा

भविष्य में वस्तुत: होनेवाली किसी घटना के मध्य पाए जानेवाले आकस्मिक संपात को देते हैं—

ऐसा सपात हजारों ऐसे विचारों, स्वप्न-बिम्बों तथा घटनाओं को देखते हुए जो भविष्य में वस्तुतः घटनेवाली घटनाओं से नहीं जुड़े होते, असाधारण और दुर्लभ लगता है हमारे स्वप्न, हमारी अभिलाषाएँ और पूर्वलक्षणों से हमारे अनिष्टानुमान हजारों की संख्या में अपूर्ण रह जाते हैं। जो थोड़े-से पूरे हो जाते हैं वह सांयोगिक संपात मात्र हो सकता है न कि किसी कारण-संबंध या घटना-नियम के द्वारा निर्धारित फल। लेकिन यदि गंभीरतापूर्वक देखा जाय तो सांयोगिक संपात को प्राग्ज्ञान की सुप्रमाणित और स्वतःस्फूर्त घटनाओं या उन असंख्य प्रयोगात्मक घटनाओं की व्याख्या के लिए एक संतोषजनक प्राक्कल्पना के रूप में नहीं लिया जा सकता जिनको राइन, सोल और केरिन्गटन ने अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष पर अपने प्रयोगों के दौरान देखा और लेखबद्ध किया तथा जिनकी प्रायिकता गणितशास्त्र के आधार पर उससे अधिक पाई गई जितनी उन्हें संयोग मात्र मानने से होती।

(२) स्मृति-भ्रम : अपने अनुभव से हम अच्छी तरह जानते हैं कि हमारे जीवन में स्मृति-भ्रम अक्सर हो जाते हैं और उनके कारण घटनाओं का काल-क्रम गड़बड़ हो जाता है। इस तरह की बातों के एक उदहरण के रूप में साल्टमार्श ने अपने ही जीवन में घटी एक रोचक घटना बताई है। "मैंने अपने एक मित्र को डाक से एक पुस्तक भेजने का वचन दिया था और एक-दो मास के बाद जब मुझे प्राप्ति-स्वीकृति नहीं मिली तो मैंने पूछा कि पुस्तक मिली या नहीं, जिसका उत्तर मुझे यह मिला कि नहीं मिली। मुझे इस बात का बिल्कुल स्पष्ट और निश्चित स्मरण था कि मैंने पुस्तक को पैकेट में बन्द किया था और ऊपर पता लिखा था, लेकिन यह भ्रम था, क्योंकि मुझे पुस्तक आलमारी में मिल गई।" कुछ लोग सोचते हैं कि संभवत: बहुत-से मामलों को प्राग्ज्ञान स्मृति-विपर्यय और अनुभवों के काल-क्रम के बारे में भ्रम हो जाने के करण मान लिया जाता है। लेकिन यह व्याख्या बहुत थोड़े मामलों पर हो लागू हो सकती है, सब पर नहीं।

(३) छल : प्रागनुभवत: प्रग्ज्ञान के विरुद्ध विश्वास से प्रेरित होकर हम कह सकते हैं, और प्राय: कहते भी हैं, कि इस प्रकार की सब अधिसामान्य घटनाएँ कल्पित हैं। जो प्राग्ज्ञान में विश्वास रखते हैं वे दूसरों को उसका विश्वास कराने के लिए कल्पित कहानियां गढ़ते हैं। यह देखते हुए कि प्राग्ज्ञान-संबंधी तथ्यों की वास्तविकता और प्रामाणिकता का निश्चय करने के लिए सच्चा वैज्ञानिक प्रयत्न किय जा चुका है, इस प्रकार की व्याख्या निरर्थक लगती है।

(ग) तत्त्वमीमांसीय सिद्धान्त

अब हम संक्षेप में कुछ ऐसे तत्त्वमीमांसीय सिद्धान्तों का उल्लेख करेंगे जो हाल में प्राग्ज्ञान की व्याख्या के लिए प्रस्तुत किए गए हैं। ये हैं : (१) जे० डब्ल्यू डन्न द्वारा प्रस्तुत सन्ततिवाद, (२) सी० डी० ब्राड द्वारा प्रस्तुत समान्तरवाद (३) साल्टमार्श का प्रतत-वर्तमान-सिद्धान्त, (४) अतिरिक्त इन्द्रिय सिद्धान्त, और (५) जे० बी० राइन का चलाया हुआ अतीन्द्रिय-प्रत्यक्ष सिद्धान्त।

(१) सन्ततिवाद :'एक्सपेरिमेन्ट्स विद टाइम' के लेखक जे० डब्ल्यू० डन्न ने प्राग्ज्ञान की व्याख्या के लिए एक सूक्ष्म सिद्धान्त निकाला है जो कारण-संबंध पर आधारित इस आपत्ति का उत्तर देने की कोशिश करता है कि प्रत्येक घटना भूतकालीन घटनाओं से निर्धारित होती है। उन्होंने माना है कि प्रेक्षकों की एक बड़ी संख्या है और वास्तविक प्रेक्षक अनन्ती पर है; तथा यह कि तत्संबंधी कालों की एक सन्तति है। उन्होंने यह भी माना है कि काल की लम्बाई होती है और वह प्रवहमान है। इस प्रकार यदि काल काल की अवधि के ऊपर प्रवाहित होता है तो एक दूसरे प्रकार का काल होना चाहिए जिससे इस प्रवाह को मापा जा सके। इसे डन्न ने काल ३ कहा है और इसी प्रकार अनन्ती तक। उनका यह भी कहना है कि कालों की इस अनन्त सन्तति के प्रेक्षकों की भी प्रेक्षक १, प्रेक्षक २ इत्यादि अनन्त संख्या होनी चाहिए। अब हमें देखना है कि यह सन्ततिवाद प्राग्ज्ञान की व्याख्या कैसे करता है। डन्न का कथन है कि प्रेक्षक १ के जगत की तीन दिग्विमाएं लम्बाई, चौड़ाई और गहराई हैं और एक काल-विमा काल १ है। प्रेक्षक २ के जगत् में काल १ एक दिग्विमा में परिणत हो जाता है, जिससे उसकी दिग्विमाएं चार और कालविमा १ यानी काल २ है। इसी प्रकार प्रेक्षक ३ आदि के मामले में माना जाएगा। प्रत्येक प्रेक्षक के साथ विमाओं की संख्या बढ़ती जाएगी। इस तर्क-प्रक्रिया के द्वारा डन्न इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि प्रेक्षक २ के लिए जो ज्ञान होगा वह प्रेक्षक १ के लिए, यदि पहला उसे उस ज्ञान को प्रेषित करे तो, प्राग्ज्ञान होगा। डन्न ने इस बात पर भी जोर दिया है कि प्रेक्षक १ और २ इत्यादि भिन्न व्यक्ति नहीं बल्कि एक ही मन के विभिन्न स्तर हैं। मनुष्य का सच्चा आत्मा अनन्ती पर स्थित प्रेक्षक है।

(२) समान्तरवाद : इस सिद्धान्त को सी० डी० ब्रॉड ने प्रस्तुत किया है। उनका कहना है कि प्राग्ज्ञान अतीत के स्मरण का समान्तर मामला है; कि प्राग्ज्ञान ऐन्द्रिय अनुभव के बजाय स्मृति के सदृश अधिक है। प्राग्ज्ञान में हम भावी घटना को नहीं बल्कि भावी घटना की प्रतिनिधि रूप एक प्रतिमा को ग्रहण करते हैं। यह प्रतिमा सही होगी या गलत। यदि वह सही है तो हमारा ज्ञान प्राग्ज्ञान है और यदि गलत है तो वह भ्रम है।

(३) प्रतत-वर्तमान-सिद्धान्त : प्राग्ज्ञान की व्याख्या के लिए प्रस्तुत एक तीसरी प्राक्कल्पना 'फोरनॉलेज' के प्रसिद्ध लेखक एच० एफ० साल्टमार्श का प्रतत- वर्तमान-सिद्धान्त है।

साल्टमार्श ने अपने सिद्धान्त को इस मनोवैज्ञानिक धारणा पर आधारित किया है कि 'वर्तमान क्षण' एक बिन्दु नहीं है; वह एक ससीम कालावधि में फैला होता है। साल्टमार्श का सुझाव है कि वर्तमान का यह विस्तार थोड़े से अतीत और थोड़े से भविष्य में भी होता है। अतः प्राग्ज्ञान की क्रिया में वर्तमान का जो विस्तार होता है उसमें अतीत और भविष्य भी शामिल होते हैं। उनका कहना है कि हमारे प्रतत वर्तमान में का १, का २, का ३, शामिल रहते हैं और वह समसामयिक घटनाओं घ १, घ २, घ ३, में फैला होता है। अब यदि कोई अन्य चीज, यानी अवचेतन मन, ऐसी हो कि उसका प्रतत वर्तमान अधिक व्यापक हो, जैसे, क०, क१, क२, क३, क४, तथा उसमें घटनाएँ घ०, घ१, घ२, घ३, घ४, शामिल हों, तो घ० और घ४, अवचेतन मन के लिए वर्तमान होंगी परतु सामान्य

मन के लिए ये क्रमशः अतीत और भावी होगी । इस प्रकार अधिक व्यापक प्रतत वर्तमान की कल्पना के द्वारा साल्टमार्श ने प्राग्ज्ञान की व्याख्या की है ।

(४) अतिरिक्त-इन्द्रिय-सिद्धान्त : एक अन्य उल्लेखनीय प्रक्कल्पना वह है जिसे पहले-पहल डु प्रेल ने सुझाया था डु प्रेल कहता है : मान लीजिए कि एक आदमी ऐसा उत्पन्न होता है जो अन्धा हो और उसे दृष्टि की संभावना और प्रकृति का कोई ज्ञान न हो । यह आदमी किसी रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर खड़ा है और वह केवल गाड़ी के आने की आवाज सुन सकता है । अपने अतीत अनुभव से अनुमान करके वह जानता है कि ऐसी आवाज का मतलब है कि जल्दी ही एक गाड़ी स्टेशन से गुजरेगी । यह भविष्य का साधारण अनुमितिज्ञान है । लेकिन यदि इस आवाज के सुनाई देने से बहुत पहले उसका दोस्त गाड़ी को दूर से देखकर उसे गाड़ी आनेवाली है, यह बता देता है, तो उसका गाड़ी का ज्ञान अनानुमानिक अर्थात प्रग्ज्ञान होगा ।

(५) अतीन्द्रिय-प्रत्यक्ष-सिद्धान्त : डा० राइन के प्रयोगों से अब प्रकट हो चुका है कि मनुष्य में अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष की सामर्थ्य है, जिस पर देश-काल की सीमाएं लागू नहीं होती; और कि प्राग्ज्ञान प्रत्यक्ष का एक प्रकार मात्र है, अर्थात यह दूर या निकट भविष्य की घटनों का प्रत्यक्ष है ।

अध्याय १०

व्यक्तित्व के एक नए सिद्धान्त की ओर

अब हम संक्षेप में यह दिखाने की चेष्टा करेंगे कि कैसे हमने जिन असाधारण तथ्यों, घटनाओं और शक्तियों का सर्वेक्षण किया है वे व्यक्तित्व के एक ऐसे सिद्धान्त की दिशा में संकेत करते हैं जो पश्चिम के लिए "नया" हो सकता है किन्तु पूर्व के लिए, और विशेषत: भारत के लिए अपरिचित नहीं है।

परामानसिकीय अनुसन्धान और परामनोविद्या के क्षेत्र में छानबीन करने वाले अनेक सुप्रसिद्ध व्यक्तियों ने, जिनका तथ्यों में दिये तत्त्वमीमांसीय सिद्धांतों के बजाय तथ्यों में अधिक रुचि रखना ठीक ही है, यत्र-तत्र अपना यह मत प्रकट किया है कि उन्होंने जिन तथ्यों की खोज की है वे सब मिलकर आत्माविषयक भौतिकवादी और चिदणुवादी सिद्धांत के गलत होने का बहुत ही प्रबल प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, कि वैज्ञानिक छानबीन के अनन्तर जिन "तथ्यों" की स्थापना हो गई है उनकी मानव-व्यक्तित्व-विषयक साधारण मनोवैज्ञानिक मतों से व्याख्या नहीं हो सकती; कि वे तथ्य हमारे अन्दर रहने वाले एक ऐसी चीज की ओर इशारा करते हैं जो काल दिक् और शरीर तथा पर्यावरण की भौतिक सीमाओं से परे है, जो ज्ञान और क्रिया की बहुत ही असाधारण और ऊंची शक्तियां रखती है तथा जो किसी अचिन्त्य रूप में विश्व की प्रत्येक अन्य वस्तु से संपर्क रखती है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में नॉर्थ कैरोलिना-स्थित ड्यूक विश्वविद्यालय के परामानसिकी-विभाग के अध्यक्ष डा० जे० बी० राइन ने, जिनके कार्य का हम पहले उल्लेख कर चुके हैं, निर्भीकता और स्पष्टता के साथ अपने २० वर्ष से अधिक के अनुसंधान के आधार पर अपनी हाल में प्रकाशित पुस्तक "न्यू वर्ल्ड आफ माइन्ड" में अपना यह निष्कर्ष व्यक्त किया है कि "इस-जैसे महत्वपूर्ण विषय पर इन सीमित परिणामों का मृदु रूप से भी कथन आज के सर्वमान्य विज्ञानाश्रित दर्शन के लिए इतना क्रान्तिकारी है जितने की कल्पना की जा सकती है। ऐसे परिणामों की व्याख्या करने में कोई भी प्रचलित भौतिकीय सिद्धांत समर्थ नहीं है। न केवल यह बल्कि यह बात भी है कि उनका अस्तित्व

एक ऐसा कठोर और अविश्लेष्य तथ्य है जो मानव को अब तक ज्ञात भौतिक कारणता के प्रत्येक विश्वसनीय संप्रत्यय की पकड़ के बाहर है" (पृ० २०)। राइन का कहना है कि "अब वैज्ञानिक तरीकों से यह बात सिद्ध हो गई है कि मनुष्य के अन्दर एक भौतिकेतर तत्त्व है" (पृ० १६४) और कि "इस निष्कर्ष से हम बच नहीं सकते कि मनुष्य के अन्दर कोई ऐसी चीज काम करती है जो भौतिक नियमों से परे है और इसलिए किसी अभौतिक या आध्यात्मिक नियम का अस्तित्व स्पष्ट है" (पृ० १६५)। इस प्रकार राइन के कथन से प्रकट है कि मनुष्य दिक्काल के द्वारा मर्यादित परिच्छिन्न और भौतिक तथा यांत्रिक नियमों के द्वारा शासित एक भौतिक शरीर से बड़ी चीज है।

स्वर्गीय जी० एन० एम० टिरेल ने, जिन्होंने अपने जीवन का एक बहुत बड़ा भाग अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष, मनःपर्यय और भूत जैसे परामानसिकीय तथ्यों के वैज्ञानिक अनुसन्धान में लगाया, और जिन्होंने इस विषय पर अनेक वैज्ञानिक ग्रंथों की रचना की, अपनी हाल में प्रकाशित पुस्तक 'नेचर ऑफ ह्यूमन पर्सनलिटी' में मानव-व्यक्तित्व के स्वरूप पर काफी रोशनी डाली है। इस महत्वपूर्ण पुस्तक के थोड़े से अंशों को यहाँ उद्धृत करना उचित होगा। उनका कहना है: "इस प्रकार वास्तविक अनुभव इस मत का पोषण करता है कि आत्मा अपरिभाष्य, शब्दों के द्वारा व्यक्त न किया जा सकने वाला, और बुद्धि के लिए अगम्य है, जिसे हम उसी प्रकार नहीं समझ सकते जिस प्रकार पशु अवकल गणित को नहीं समझ सकता। आत्मविषयक चिदणुवादी सिद्धांत व्यावहारिक बुद्धि के ऊपर लादा गया एक व्यावहारिक भ्रम है" (पृ० ११४-१५)। परामानसिकीय अनुसंधान में अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष के नाम से ज्ञात शक्ति पर जो काम हुआ है उसको समग्र रूप से देखने पर दो महत्त्वपूर्ण तथ्य सामने आते हैं। पहला यह है कि इस शक्ति के अस्तित्व का प्रमाण असंदिग्ध है। दूसरा यह है कि इसकी ऐसी कोई अतिरिक्त इन्द्रिय नहीं है जैसी देखने, सुनने, स्पर्श इत्यादि की है। यह कोई ऐसी चीज नहीं है जो भौतिक उद्दीपनों के प्रति सीधी अनुक्रिया करे और न यह भौतिक जगत् में क्रियाशील है। यह ऐसी चीज नहीं है जिसकी भौतिक विज्ञान जड़ में पहुँचकर छानबीन कर सके। प्रमाणों से कुल इतना प्रकट होता है कि अतीन्द्रिय ज्ञान चेतना में अवचेतन, अचेतन, अतिचेतन या जो भी अन्य नाम हम आत्मा के दैनिक जीवन से संबंधित अंश से परे रहने वाले विस्तृत अंश को देना पसंद करें उससे आता है" (पृ० १५)। टिरेल के अनुसार अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष के बारे में जो अनुसंधान हुआ है वह "इस बात की ओर इशारा करता है कि जगत् इन्द्रियग्राह्य क्षेत्र की सीमाओं से परे बहुत दूर तक फैला हुआ है; और साथ ही वह इस बात की ओर भी इशारा करता है कि व्यावहारिक जीवन में जितना हम अपने संपूर्ण अहम् को मानने को बाध्य हैं उससे परे भी वह विस्तीर्ण है" (पृ० १६)। टिरेल के अनुसार माध्यमों से प्राप्त प्रमाण सब मिलाकर आत्मा के सतही दृष्टिकोण का खंडन करता है (पृ० ३६)। उससे हमें अपने अज्ञात अतीत में और अकल्पनीय रूप से दूर आगे पहुँचे होने की झाँकी मिलती है" (पृ० ३०)। छायाओं की इन घटनाओं का महत्त्व यह है कि वे भौतिक परिस्थितियों में जीवित रहने के लिए मनुष्य की रचना का जो भाग अनुकूलित है उससे परे रहने वाले भाग पर प्रकाश डालने के लिए खिड़की का काम करती हैं। वे यह प्रदर्शित करती हैं कि ऐन्द्रिय शक्तियां अपने व्यापार में मात्र वस्तुगत

कारणों तक ही सीमित नहीं रहतीं, और न वे उस बिन्दु पर आकर बिल्कुल रुक जाती हैं जहां उनका व्यावहारिक उपयोग समाप्त हो जाता है। असल में व्यावहारिक जीवन में वे एक अधिक व्यापक क्षेत्र से खंडित होकर एक विशिष्टीकृत रूप में काम करती हैं; और इस बात को समझ लेना महत्व रखता है, क्योंकि यह न केवल संवेदी शक्तियों पर बल्कि संपूर्ण मनुष्य पर लागू होती है" (पृ० ५६)। "इस प्रकार छायाओं का अध्ययन हमें उसी निष्कर्ष की ओर ले जाता है जिसकी ओर सामान्य परामानसिकीय अनुसंधान। इससे प्रकट होता है कि मानव-आत्मा अपनी प्रतीयमान सीमा से आगे भी पहुँचा हुआ है—कितनी दूर तक यह नहीं बताया जा सकता" (पृ० ६०)। "मनोमिति भूतद्रव्य के ऐसे गुणधर्मों के अस्तित्व की ओर संकेत करती है जिनका भौतिक साधनों से पता नहीं चल सकता और जो स्वयं भी भौतिक नहीं है। मनोदेहिकी नामक आधुनिक विषय भी इन्हीं दिशाओं की ओर संकेत करता है। भौतिकी के क्षेत्र में हुई आधुनिक खोजों तक से इसी निष्कर्ष को बल मिलता है, क्योंकि भूतद्रव्य के अन्तिम स्वरूप को मालूम करने के उद्देश्य से की गई खोजों से पता चलता है कि भूतद्रव्य के विषय में छानबीन जितनी आगे बढ़ती है उतना ही भूतद्रव्य का भौतिकत्व कम होता जाता है। अन्य शब्दों में जिसे हम 'भूतद्रव्य' कहते हैं वह भूतद्रव्य से कहीं बड़ी किसी चीज़ का अनुच्छेदीय पक्ष मात्र है। भूतद्रव्य अपने-आप में पूर्ण सत्ता नहीं है बल्कि ऐसे गुणधर्मों का चयन है जिनमें से अनेक हमें दिखाई देने वाले गुणधर्मों से बिल्कुल भिन्न हैं। यदि ऐसी बात है तो मनोदैहिक संबंधों की समस्या बिल्कुल बदल जाती है, क्योंकि मन और भूतद्रव्य ऐन्द्रिय अनुभव के पीछे कहीं एक हो सकते है, जहाँ भूतद्रव्य भूतद्रव्य जैसा नहीं रहता बलिक शायद विशुद्ध मानसिक प्रकार के गुणधर्मों से युक्त होता है। मन का निम्नस्तरीय सहजप्रवृत्यात्मक पक्ष और जिसे हम "जीवन" कहते हैं वह भी ऐसे गुणधर्मों से युक्त हो सकता है जो भूतद्रव्य के अज्ञात गुणधर्मों से निकट का सादृश्य रखते हों" (पृ० ६८)। इस प्रकार टिरेल के अनुसार "अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष दो दिशाओं में प्रकाश डालता है। उससे पता चलता है कि मनुष्य अपनी साधारण चेतना की सीमाओं से बहुत परे है, और यह भी पता चलता है कि विश्व दिक्काल के इन्द्रियगोचर ढाँचे से परे फैला हुआ है" (पृ० ७४)।

डब्ल्यू० व्हेटले केरिन्गटन मनुष्य की असाधारण शक्तियों का एक अन्य महान् खोजी है। उन्होंने अपने भाषण 'मीनिंग ऑफ सर्वाइवल' में कहा है: "भौतिक और अभौतिक को परस्पर-विरोधियों के रूप में नहीं सोचना चाहिए। वे एक दूसरे के पूरक हैं। वे परस्पर क्रियाशील, उपोत्पादस्वरूप या किसी अन्य रूप में द्वैतभाव पर आधारित नहीं है, बल्कि एक इकाई के अंग हैं। वे उतने ही अविच्छेद्य हैं जितने एक गोले का तल और आयतन। उपर्युक्त नियमों के अनुसार······अभौतिक और भौतिक दोनों ही क्षेत्रों में कुछ घनीभवन-केन्द्र हैं और इन्हें हम व्यष्टिगत चेतनाएं कहते हैं; लेकिन जैसे एक जलधारा के आवर्त्त परस्पर स्वतंत्र नहीं है वैसे ही ये भी स्वरूपत: नहीं हैं। वे विभिन्न मात्राओं में परस्पर क्रिया करते हैं और एक दूसरे में लीन हो जाते हैं। दूसरी उपमा यह है कि जिस प्रकार किसी द्वीपसमूह के द्वीप जलनिमग्न चट्टानों और पठारों से परस्पर जुड़े होते हैं उसी प्रकार ये भी नीचे अवस्थित अवचेतना के द्वारा विभिन्न स्तरों

पर निकटता की विभिन्न मात्राओं में जुड़े होते हैं। किसी भी क्षण में भौतिक शरीर के साथ सर्वाधिक व्यक्त रूप में जो तत्त्व संबद्ध होता है उसे हम चेतन कहते हैं; जो थोड़ा नीचे होता है उसे हम अवचेतन या अवसीम कहते हैं; परन्तु यदि हम काफी नीचे उतरें तो हम उन स्तरों में पहुँचते हैं जो सबमें समान हैं, और यही वह सर्वव्यापि चेतना है जिसके कारण हम सब असल में एक दूसरे के अंग हैं" (पृ० २०)।

प्रो० प्राइस मानव-मन की मन:पर्यय की शक्ति को असन्दिग्ध मानते हैं और कहते हैं कि मन:पर्यय "मानव व्यक्तित्व के बारे में जो भौतिकवादी धारणा है उसकी जड़ ही उखाड़ देता है।...इससे इस बात की कम से कम संभावना तो लगती ही है कि भौतिक शरीर के नष्ट हो जाने पर भी मनुष्य का मन अस्तित्व रख सकता है और अनुभव कर सकता है।" आगे कहते हैं कि "यद्यपि हमारे चेतन मन परस्पर पृथक् वस्तुएं हैं, तथापि हमें मानना होगा कि किसी अर्थ में एक सामान्य अचेतन अस्तित्व रखता है, जो सब मनों में और शायद पशु-मनों में भी समान है" तथा यह कि "यदि हम अचेतन की ओर गहराई में उतरें तो यह प्रश्न कि एक निर्दिष्ट प्रत्यय आपके मन में है या मेरे मन में, कोई स्पष्ट अर्थ नहीं रखता" (बी० बी० सी० से प्रसारित, १९४७; अमरीकी परामानसिकीय अनुसंधान-संस्था की पत्रिका में १९४७ अक्टूबर के अंक पृ० १५८ से)।

एक हाल की छपी पुस्तक में एक आस्ट्रेलियाई वैज्ञानिक डा० रेनर सी० जॉनसन परामानसिकीय अनुसन्धान के द्वारा ज्ञात हाल की वैज्ञानिक खोजों, तथ्यों और घटनाओं तथा सभी युगों के रहस्यविदों के विचित्र अनुभवों के तुलनात्मक और संश्लेषात्मक अध्ययन के आधार पर बहुत-कुछ वैसे ही निष्कर्षों पर पहुँचे हैं जैसे भारत में वेदान्त-दर्शन के हैं। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'इम्प्रिजन्ड स्पलेन्डर' में उन्होंने इस प्रकार लिखा है: "परामानसिकीय अनुसन्धान की सामग्री का मूल्यांकन करके एक आलोचनात्मक निष्कर्ष पर पहुँचने की कोशिश करने के बाद मेरा यह विचार हुआ है कि यदि मृत्यु के बाद अस्तित्व का बना रहना पक्की तौर से सिद्ध नहीं भी हुआ है तो भी उसकी संभाव्यता इतनी ऊँची मात्रा में सिद्ध हो चुकी है कि वह व्यावहारिक प्रयोजन के लिए मरणोत्तर अस्तित्व के सिद्ध होने के बराबर ही है" (पृ० २९३)। "मन एक ऐसी चीज है जो स्वतः अस्तित्ववान है; 'जीवितावस्था' में जिस शरीर से वह सम्बद्ध होता है उसके उपादान के साथ न वह जन्म लेता है और न मरता है" (पृ० ५७)। "निश्चय ही इस बात के प्रबल प्रमाण हैं कि अवस्थायी जगत् की प्रकृति मानसिक है। अवस्थायी जगत् को हम विश्व-मानस की, जिससे हमारे अपने व्यष्टि-मानस विशेष रूप से सम्बद्ध हैं, सदैव वर्तमान प्रधान पृष्ठभूमि मान सकते हैं" (पृ० २०६)। "कोई विश्व-मानस इस अवस्थायी जगत् को उत्पन्न और धारण करता है और व्यष्टि-मानस उससे सामुज्य-सा रखते हैं" (पृ० २०९)। "शायद छायाओं के हमारे अध्ययन से सिद्ध हो गया है कि मन और शरीर के मध्य व्यक्तित्व के अनेक भिन्न-भिन्न व्यापारों वाले जटिल स्तरों की श्रेणी है। इनमें शामिल वे सर्जनात्मक शक्तियां कम उल्लेखनीय नहीं हैं जो अस्थायी होने के बावजूद उन अधिक स्थायी और उदात्त रूपों की याद दिलाती हैं जो विश्व-मानस के द्वारा प्रचुर संख्या में रचे और बनाए रखे जाते हैं" (पृ० २१७)। "मेरा अपना मत

यह है कि आत्मा के प्रत्येक महत्व के स्तर का अन्य आत्माओं के तुल्य स्तरों के साथ संज्ञा का अपना विशेष प्रकार होता है और यह संज्ञापन उस स्तर के विश्व-उपादान या 'वि संरचना के द्वारा होता है" (पृ० २१४)। मनुष्य और विश्व की प्रकृति को समझने परामानसिकीय अनुसन्धान के योगदान को संक्षेप में बताते डा० जॉनसन ने कि है: "मन:पर्यय ने मन के संपूर्ण जगत् को भूतद्रव्य पर अनिवार्य रूप से निर्भर हुए कि क्रियाशील सिद्ध कर दिया है। उससे प्रकट हो गया है कि मन से मन का सम्बन्ध वत क्षण तक ही सीमित नहीं है और न वह दिक से प्रभावित ही प्रतीत होता है। सामग्री बर्गसाँ की इस धारणा को पुष्ट करती है कि मस्तिष्क मन को सीमित करनेवा एक अंग है। सांवेदनिक पक्ष से दूरदर्शन और गति-पक्ष से दूरक्रिया हमारा भूतद्रव्य मन के संबंध से परिचय कराते हैं। इससे हम दोनों के मध्यस्थ के रूप में चैत्त ईथर प्राक्कल्पना में पहुँचे। दूरस्थ वस्तु के ज्ञान को समझने के लिए यह प्राक्कल्पना आव प्रतीत हुई और प्रेतबाधा, छाया तथा भौतिकीकरण की घटनाओं में भी चैत्त ईथर मूलत: शामिल रहना प्रतीत हुआ। अत: हमें स्वयं मनुष्य की संश्लिष्ट रचना में ईथरीय तत्त्व को शामिल मानने में कोई संकोच नहीं है। ......मन के स्तर या मन जगत् के अपने विशेष उपस्तर होते है; जैसा कि छायाओं की घटनाओं से स्पष्टत: प्र हुआ। ......स्वप्न, माध्यमों की विचित्र समाधि-जैसी अवस्था और सम्मोहन की प्र तथा आत्मा की गहराई से आनेवाली सर्जनात्मक प्रेरणाओं को आकर देने का प्र करनेवाले कलाकारों इत्यादि के आन्तरिक अनुभवों से मन का कुछ ऐसा ही (या इ भी जटिल) उपविभाजन या स्तरीकरण प्रकट होता है। ...... जब हम मनुष्य सारभूत अंश की ओर, जो परम सत्ता से अभिन्न है, पहुँचते हैं, तब हमें मनुष्य उत्तरोत्त अधिक महत्त्व के तत्त्वों और विस्तारशील शक्तियों के रूप में दिखाई देता है" (पृ २६२) "जब एक परम गंभीर रहस्यानुभव के रूप में 'अहम्' के मूल का ज्ञान हो जाता है, तब इस पराभूत कर देनेवाली बात का पता चल जाता है कि 'अहम्' का यह मूल सब अन्य 'अहमों' जुड़ा हुआ है, क्योंकि सब ईश्वर से संयुक्त हैं" (पृ० ३३५)।

अपने ग्रन्थ टेलीपैथी ऐंड क्लेयरवायन्स' में टिश्चनर भी कुछ ऐसे ही निष्कर्षों प पहुँचे हैं। उनका कथन है: "यदि हम अपनी सतही चेतना से नीचे उतरें तो ह धीरे-धीरे मन के अवचेतन स्तरों में पहुँच जाते हैं, जो एक अकेले व्यष्टि के नहीं रहते यह ऐसा ही है जैसा यह कि यदि हम किसी नदी के मार्ग को पर्वत के अन्दरूनी भाग खोजें तो हम ऐसे स्थानों में पहुँच जाते हैं जहां नदी की एकता का लोप हो जाता और पानी हमारे चारों ओर व्याप्त मिलता है। इस प्रकार अवचेतन मन के ये ब गहराई में स्थित स्तर निर्वैयष्टिक या अतिवैयष्टिक मन के अंश हैं और इसलिए ऐसी बातों का ज्ञान रहता है जो वैयष्टिक मन के लिए बिल्कुल अगम्य और अनवबो हैं" (पृ० २१६)।

अपने ग्रंथ 'स्पिरिट ऑफ दि न्यू फिलॉसफी' में जॉन हर्मान रैन्डल ने मनुष्य-जा को प्राप्त नए वैज्ञानिक ज्ञान पर आधारित आत्मा के नए संप्रत्यय को इन सुन्दर श में व्यक्त किया है: "विज्ञान तेजी के साथ संपूर्ण विश्व की सर्वग्राही सत्ता की अटूट

पूर्ण आन्तरिक एकता को सिद्ध करने में सफल होता जा रहा है।......विश्व जिसमें मनुष्य भी शामिल है, अनन्त जैविक भागों के नानात्व में एक पूर्ण जैविक एकत्व है; वह अनेक के अन्दर एक है। वह परस्पर अलग अनेक जीवों और वस्तुओं की समष्टि मात्र नहीं है; वह न एक बाह्य संयोग मात्र है और न एक संघटन मात्र; इसके बजाय वह एक साकल्य, 'एक पूर्ण' और अविभाज्य अवयवी है" (पृ० १२५)। "हमारी मानवीय चेतना प्रकृति की चेतना है जो हमारे अन्दर व्यष्टिकृत हो गई है। हमारी मानवीय बुद्धि प्रकृति की सार्वभौम बुद्धि है जो स्वयं को हमारे द्वारा, अपने मस्तिष्कों और मनों के द्वारा व्यक्त करती है। हमारे मन मात्र हमारे मन नहीं हैं; एक वास्तविक और गहरे अर्थ में वे विश्व के मन हैं, और इस रूप में उनकी उससे तात्त्विक एकता होनी चाहिए" (पृ० १२६)। "जब हम आत्मा के रहस्य की ओर गहराई में उतरते हैं, तब यह मानते हुए भी कि सतह पर जीवात्मा परस्पर व्यावर्तक प्रतीत होते हैं, हम पाते हैं कि प्रत्येक आत्मा का अनुभव एक अधिक व्यापक अनुभव में शामिल है, कि प्रत्येक आत्मा अधिक व्यापक आत्मा का भाग है। इससे हम सचाई के केन्द्र में पहुँच जाते हैं। इससे अलावा अन्य कोई मत संभव नहीं है कि प्रत्येक व्यष्टि का असली आत्मा एक ऐसा रूप है जिसमें परम सत्ता, प्राणतत्व या ईश्वर अभिव्यक्ति पाता है। तब प्रत्येक आत्मा न केवल स्वतः विलक्षण है बल्कि इसी कारण 'सब वस्तुओं में व्याप्त' जो अन्तर्निहित परम तत्त्व है उसका एक परिच्छिन्न केन्द्र में विलक्षण आभास भी है। इस प्रकार हमें बाध्य होकर मानना पड़ता है कि आन्तरिकतम स्वरूप की दृष्टि से सब भाव एक हैं और सब वैयष्टिक आत्मा एक आत्मा है, तथा यह कि निजी, पृथक् और अन्यव्यावर्तक भावों या आत्माओं की कोई सत्ता नहीं है, और यदि है तो केवल गलत और भ्रामक विचारों में" (पृ० १५७)।

मनुष्य की असाधारण शक्तियों और मनुष्य के अन्दर रहनेवाले अतिप्राकृतिक तत्त्वों के वैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित मानव-व्यक्तित्व-विषयक यह मत कि हम परस्पर और सब प्राणियों से जुड़े हुए आध्यात्मिक जीव हैं तथा यह कि हम सब सर्वव्यापि, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान परम सत्ता से एक हैं और वही हमारा मूल है, वही मत है जो भारत में वेदों और उपनिषदों के प्राचीनतम युग से चला आ रहा है। भगवद्-गीता में इसकी संक्षेप में चर्चा है और योगवाशिष्ट में विस्तार से। थियोसोफी ने इसी मत को समस्त धार्मिक विश्वासों के आधार के रूप में स्वीकार किया है और इसकी विस्तृत व्याख्या की है। इस प्रकार परामानसिकीय अनुसन्धान आधुनिक पाश्चात्य मनो-विज्ञान और प्राचीन भारतीय मनोविज्ञान के बीच इस समय पाई जाने वाली चौड़ी खाई को पाटने का काम करता है।

अध्याय ११

परामानसिकी का ऐतिहासिक विकास

यद्यपि परामानसिकीय अनुसन्धान-संस्था की स्थापना १८८२ में हो चुकी थी, तथापि अधिसामान्य और विचित्र घटनाओं की वैज्ञानिक छानबीन व्यक्तियों और संस्थाओं ने बहुत पहले शुरू कर दी थी। एक प्रसिद्ध अंग्रेज गणित शास्त्री प्रो० डि मॉर्गन (१८०६-७१) ने प्रेतविद्या के तथ्यों की छानबीन की और उनकी सत्यता में उनका दृढ़ विश्वास हो गया। डा० एल्फ्रेड रसेल वालेस (१८२३-१९०३) १८४४ में प्रेतविद्या के तथ्यों में रुचि लेने लगे और पर्याप्त प्रमाणों के आधार पर उन्हें उन्होंने तथ्य मान लिया। पिछली शताब्दी के महानतम अंग्रेज भौतिकीविदों में से एक सर विलियम क्रुक्स (१८३२-१९१९) ने डी० डी० होम, फ्लोरेन्स कुक और स्टेन्टन मोज़ेज़ इत्यादि महान् माध्यमों की उपस्थिति में घटने वाला अधिसामान्य घटनाओं का वैज्ञानिक अध्ययन किया और वैज्ञानिकों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित किया। अमेरिका के प्रो० रॉबर्ट हेयर (१७८१-१८५८) ने ७२ वर्ष की आयु में छानबीन शुरू की। उन्होंने अनेक यंत्र बनाए जिन्होंने निर्णायक रूप से सिद्ध कर दिया कि प्रेतविद्या-संबंधी घटनाओं में प्रत्यक्ष रूप से शामिल व्यक्तियों से भिन्न कोई चेतन शक्ति काम करती है। अमेरिका के प्रो० मेप्स ने, जो कृषि-रसायन के प्रोफेसर के रूप में विख्यात थे, प्रेत विद्या के तथ्यों की छानबीन की और उन्हें उनकी सचाई में विश्वास हो गया। १८५७ के आसपास ट्रिनिटी कालेज, केम्ब्रिज के कुछ अध्येताओं ने एक 'प्रेत संस्था' शुरू की जिसका उद्देश्य "अस्पष्ट रूप से अलौकिक कहलाने वाले तथ्यों के स्वरूप की गम्भीरता और ईमानदारी के साथ छानबीन करना" था। १८५७ में लन्दन की डाइलेक्टिकल सोसाइटी ने ३३ सदस्यों की एक समिति यथा-कथित अलौकिक तथ्यों पर प्रयोग करने और उनकी छानबीन के उद्देश्य से बनाई। १८७५ में सार्जन्ट कॉक्स ने इसी उद्देश्य से ग्रेट ब्रिटेन की मनोवैज्ञानिक संस्था की स्थापना की। १८७८ में ब्रिटिश राष्ट्रीय संस्था ने एक अनुसन्धान परिषद की नियुक्ति की जिसने तत्कालीन प्रसिद्ध माध्यमों के विषय में परीक्षणात्मक परिस्थितियों में महत्वपूर्ण अनुसन्धान-कार्य किया।

इंग्लैंड और अमेरिका में किए गए इस तरह के छिटपुट प्रयत्नों के अनन्तर, जिनका प्रयोजन अधिसामान्य और अलौकिक प्रतीत होने वाले तथ्यों को समझना था, ब्रिटेन की परामानसिकीय अनुसन्धान संस्था की स्थापना हुई, जिसका उद्देश्य पहले बताया जा चुका है। इसी तरह की संस्थाएं यूरोप के अन्य देशों और अमेरिका में खोली गई और इन्होंने अपने अनुसन्धानों में परस्पर सहयोग से काम लिया। १९२६ में लन्दन में परामानसिकीय अनुसन्धान की राष्ट्रीय प्रयोगशाला खोली गई। बाद में इंगलैंड में परामानसिकीय विज्ञान कालेज और लन्दन परामानसिकीय प्रयोगशाला की स्थापना हुई, जिनमें उपयोगी और महत्त्वपूर्ण काम होता आ रहा है। फ्रान्स में परामानसिकीय अनुसन्धान के प्रथम केन्द्र के रूप में 'इन्स्टिट्यूट मेटासाइकिक इन्टरनेशनेल' खोला गया। अमेरिका में डा० जे० बी० राइन ने १९३० के आस-पास नार्थ कैरोलिना राज्य में ड्यूक विश्वविद्यालय में परामानसिकीय-प्रयोगशाला खोली।

परामानसिकीय अनुसन्धान-संस्था का शुरू का कार्य 'विचार-संक्रमण' की प्रयोगात्मक छानबीन से संबंधित था। खोज कर्त्ताओं ने इसे तथ्य के रूप में स्वीकार किया और इस संबंध में अनेक रिपोर्टें प्रकाशित हुई। 'फैन्टाजम्स ऑफ दि लिविंग' के प्रसिद्ध लेखकों, गर्नी, मायर्स और पॉडमोर ने एक बहुत ही रोचक और महत्त्व पूर्ण खोज की—वह यह कि व्यक्ति की मृत्यु और उसकी छाया के अन्यों को दिखाई पड़ने की घटनाओं के मध्य संबंध होता है। छाया का दिखाई देना कोई संयोग की बात नहीं है। इस संस्था की एक समिति की "विभ्रमों से संबंधित जनगणना" पर एक रिपोर्ट का भी यही निष्कर्ष है। गर्नी ने सम्मोहन पर खोज का काम सँभाला। अन्य खोजियों ने हिस्टीरिया, प्रेत-बाधित मकान, राइकेनबाकी तथ्य, गुप्तज्ञापन-यष्टि, बहुविध व्यक्तित्व, स्वयंलेखन और समाधि की अवस्था में भाषण पर खोज-कार्य अपने जिम्मे लिया। १८८५ में थियोसोफी के तथाकथित तथ्यों के बारे में प्रतिकूल रिपोर्ट प्रकाशित हुई। उसी वर्ष अमरीकी मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स ने संस्था का ध्यान मिसेज पाइपर की ओर खींचा। डॉ० हॉजसन को, जो संस्था की अमरीकी शाखा के तत्कालीन सचिव थे, मिसेज पाइपर के बारे में खोज का कार्य दिया गया। उन्होंने १८८७ से मिसेज पाइपर की मृत्यु के वर्ष १९०५ तक यह काम किया और विशेष रूप से मिसेज पाइपर के समाधि-अवस्था के वचनों पर अपना अध्ययन केन्द्रित रखा। परामानसिकीय अनुसन्धान के प्रारंभिक इतिहास में यह खोज-कार्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और स्मरणीय है, क्योंकि मरणोत्तर अस्तित्व की समस्या से इसका बहुत संबंध रहा। अनेक प्रसिद्ध परामानसिकीय अनुसन्धान कर्ताओं की मरणोत्तर अस्तित्व की समस्या मिसेज़ पाइपर के समाधि-अवस्था के वचनों से सुलझ गई और उन्हें ऐसे अस्तित्व के बारे में तथा मृतात्माओं के साथ समाधिस्थ माध्यम के शरीर के द्वारा संपर्क स्थापित होने में दृढ़ विश्वास हो गया। इस काल में कुछ प्रसिद्ध माध्यमों की परीक्षा की गई, उनका अध्ययन किया गया और कुछ को कपटी घोषित कर दिया गया। प्रेतोपद्रव की भी अनेक महत्वपूर्ण घटनाएँ देखी गईं और उनकी परीक्षा की गई। परामानसिकीय अनुसन्धान के इस प्रारंभिक काल में जो खोज-कार्य किए गए उनके अधिकतर निष्कर्ष एफ० डब्ल्यू० एच० मायर्स के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'ह्यूमन पर्सनेलिटी

एंड इट्स सर्वाइवल ग्रॉफ बॉडीली डेथ' में संग्रहीत हैं। इस संस्था के प्रथम ग्रध्यक्ष हेन्री सिजविक की १६०० में मृत्यु हो गई ग्रौर उसके कार्य के महान् संकलनकर्ता मायर्स की १६०१ में मृत्यु हो गई।

१६०१ में महान् अंग्रेज भौतिकीविद् सर ग्रोलिदर लॉज की इस संस्था के ग्रध्यक्ष-पद पर नियुक्ति के साथ इस संस्था का कार्य एक नई दिशा में शुरू हुग्रा। प्रसिद्ध माध्यम यूसेपिया पल्लाडिनो की उपस्थिति में घटनेवाली विचित्र ग्रौर ग्रधिसामान्य लगनेवाली भौतिक घटनाग्रों की पूरी तरह जाँच की गई ग्रौर यह ग्रनुमान किया गया कि "यूसेपिया की उपस्थिति में ग्रभिव्यक्त होनेवाली बातों की व्याख्या के लिए किसी ऐसी शक्ति का सहारा लेना जरूरी है जो यूसेपिया के शारीरिक कौशल मात्र से बिल्कुल भिन्न प्रकार की हो। "एक ग्रन्य महान् माध्यम ईवा सी० की खास तौर से प्रो० बैरन वॉन श्रेंक-नॉट्ज़िग द्वारा सतर्कतापूर्वक जाँच की गई। संस्था के एक भाग ने रोगों के दूर होने की ग्रसाधारण घटनाग्रों का ग्रध्ययन ग्रपने जिम्मे लिया ग्रौर विचार ग्रौर प्रार्थना के शारीरिक रोगों पर होने वाले प्रभाव के बारे में कुछ बहुत ही विचित्र निष्कर्ष प्राप्त किए। एक महान् मनोवैज्ञानिक मिटकेल ने ग्रध्ययन की इस दिशा में बड़ा भारी योगदान किया। फ्रायड ग्रौर युंग का इस क्षेत्र में ग्रपना ग्रलग ही मूल्यवान् योगदान है। मनःपर्यय ग्रौर स्वयंलेखन पर विस्तार ग्रौर ग्रत्यंत सतर्कता के साथ प्रयोग किए गए ग्रौर क्रॉस कॉरेस्पौन्डेन्स की प्रणाली से स्वयं भाषण ग्रौर स्वयंलेखन के संबंध में बहुत बड़ी सामग्री प्राप्त की गई, तथा इस सामग्री की पूरी जाँच की गई। इस सामग्री के ग्राधार पर व्यक्तित्व के मरणोत्तर ग्रस्तित्व की प्रतियोगी एक नई प्राक्कल्पना यह प्रस्तुत की गई कि माध्यम के मन पर बिल्कुल ग्रचेतन रूप से जीवित लोगों के ग्रवसीम मन के क्रिया करने के फलस्वरूप मनःपर्यय होता है। ये दोनों ही प्राक्कल्पनाग्रों के समर्थक रहे ग्रौर दोनों के ऊपर पूरा विवेचन ग्रौर विचार किया गया। भविष्यवाणियों की बहुत बड़ी संख्या में जाँच की गई। मिसेज़ लियोनार्ड ग्रौर मिसेज़ विलेट की समाधि-ग्रवस्था की घटनाग्रों का, जो मिसेज़ पाइपर की घटनाग्रों से भिन्न स्वरूप की थी, ग्रध्ययन ग्रौर परीक्षण किया गया। उनसे मानव- व्यक्तित्व के स्वरूप ग्रौर रचना के बारे में बहुत नई जानकारी मिली। उनसे यह संभावना प्रकट हुई कि ग्रनेक मन एकही भौतिक शरीर से जुड़े हो सकते हैं, ग्रौर यह बात एकही मन के विभिन्न स्तरों मात्र की बात से बिल्कुल भिन्न है। समाधि-ग्रवस्था में प्रकट व्यक्तित्वों से प्राप्त सूचना की व्याख्या के लिए मनःपर्यय को दूर रखने के लिए ग्रनेक परीक्षण निकाले गए, जैसे "पुस्तक-परीक्षण," "प्रॉक्सी सिटिंग परीक्षण", "शब्द-साहचर्य-परीक्षण," "गैल्वेनिक परीक्षण" तथा माध्यम ग्रौर समाधि ग्रवस्था में प्रकट व्यक्तित्व का मनोविश्लेषण। ये सभी परीक्षण मरणोत्तर ग्रस्तित्व की प्राक्कल्पना के बहुत जोरदार समर्थक पाए गए हालाँकि मनःपर्यय बनाम मरणोत्तर ग्रस्तित्व के प्रश्न का कभी निर्णायक रूप से निपटारा नहीं हुग्रा। इस काल में विविध भौतिक तथ्यों की भी छानबीन की गई, जिससे कुछ माध्यमों के ग्रन्दर बहुत ही विचित्र शक्तियों के होने का पता चला।

इन माध्यमों में से मुख्य ईवा सी० रूडी स्नीडर ग्रौर "मार्जरी" (मिसेज़ क्रैन्डन)

थीं। ईवा सी० के अध्ययन के दौरान प्रो० वॉन श्रेन्क-नॉट्जिंग, डा० गेले और मैडम बिस्सन ने एक्टोप्लाज्म की नई और चमत्कारी खोज की। एक्टोप्लाज्म एक रहस्यमय लचीला और जैविक द्रव्य है जो माध्यम की उपस्थिति में होने वाली भौतिकीकरण की प्रक्रिया के दौरान उसके शरीर से निकलता है और भौतिकीकरण के बन्द हो जाने पर उसके शरीर में समा जाता है। भौतिकीकृत आकृति के अंग या पूरा शरीर इसी द्रव्य से बनता है। एक ऐसे रहस्य की, जो परामानसिकीय अनुसन्धान के विद्यार्थियों को लम्बे समय तक चक्कर में डाले रहा, किसी सीमा तक इससे व्याख्या हो जाती है। पहले पहल यह खोज ईवा सी० के मालले में की गई और बाद में मार्जरी और श्नेडर-बन्धुओं जैसे भौतिकीकरण-माध्यमों के मामलों से इसकी पुष्टि हुई।

१९३२ में परामानसिकीय अनुसन्धान-संस्था की जुबिली मनाई गई और उसके तत्कालीन अध्यक्ष सर ओलिवर लॉज ने परामानसिकीय अनुसन्धान की स्थिति का इस प्रकार वर्णन किया: "इस संस्था की स्थापना के समय विज्ञान-जगत् का रवैया बिल्कुल ही शत्रुतापूर्ण था। मैं समझता हूं कि अब उतना नहीं है।" इस अवसर पर मिसेज हेन्री सिजविक ने इस संस्था के कार्य का सर्वेक्षण करते हुए कहा, "हमारा कार्य उन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्यों में से है जिनमें हम ज्ञान के विस्तार और मानवजाति की भलाई के लिए लग सकते हैं।" उन्होंने यह भी कहा कि यद्यपि किसी निश्चित निष्कर्ष पर अभी हम नहीं पहुँचे, तथापि अब तक मनःपर्यय, दूरदर्शन और समाधि-अवस्था के संज्ञापन के क्षेत्रों में बहुत खोज-कार्य हो चुका है।

१९३४ में इस संस्था के कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओं को बी० बी० सी० ने विभिन्न विषयों पर वार्ता प्रसारित करने के लिए बुलाया और इससे इस संस्था के कार्य को कुछ अधिक लोक प्रियता प्राप्त हुई। परामानसिकीय अनुसन्धान पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठियों ने भी, जो १९२७ से होनी शुरू हुई और जिनमें से अनेक अब तक योरप के विभिन्न देशों और नगरों में हो चुकी हैं, इस अनुसन्धान को लोकप्रिय बनाने में बहुत योगदान किया।

पिछले २५ वर्षों में परामानसिकीय अनुसन्धान, जिसे अब मनोवैज्ञानिक परामानसिकी या परामनोविद्या कहते हैं, न्यूनाधिक रूप से एक प्रयोगात्मक विज्ञान रहा है और इसके प्रयोग इंगलैंड, योरप और अमेरिका के विभिन्न विश्वविद्यालयों की साधनसम्पन्न और अच्छे प्रयोगकर्ताओं से युक्त प्रयोगशालाओं में हुए हैं। इन देशों में अनेक स्वतंत्र संस्थाएं भी इसी तरह का काम करती रही हैं। सभी वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं की तरह इन प्रयोगशालाओं में भी अनुसन्धान की प्रणालियों में नियंत्रित परिस्थितियों में सही-सही प्रेक्षण प्रेक्षित तथ्यों का यंत्रों द्वारा अभिलेखन, यांत्रिक, रासायनिक और विद्युत्-चुंबकीय साधनों का उपयोग, ठीक-ठीक माप और गणना, तथा सामग्री का बिल्कुल गणितीय और सांख्यिकीय मूल्यांकन शामिल हैं। हाल में राइन, टिरेल, सोल, हेटिन्जर ह्वेटले केरिन्गटन तथा इनके सहयोगियों ने वैज्ञानिक परामानसिकी के विकास में बहुत योगदान किया है। उनके कार्य का विवरण 'प्रोसीडिंग्स ऑफ दि सोसाइटी फॉर साइकिकल रिसर्च', 'जर्नल ऑफ पैरा साइकोलोजी,' तथा 'जर्नल ऑफ दि अमेरिकन

सोसाइटी फॉर साइकिकल रिसर्च' इत्यादि कई पत्रिकाओं में छपा है।

डा० नन्डोर फॉडोर, जिन्होंने एक पांडित्यपूर्ण ग्रन्थ 'एनसाइक्लोपीडिया ऑफ साइकिकल रिसर्च' लिखा है, थोड़े समय से मनोविश्लेषण के उपयोग से परामानसिकीय अनुसन्धान को एक नई दिशा दे रहे हैं। 'हाउन्टेड पिपल' नामक उनकी कृति इस विज्ञान के भावी विकास में एक 'भूचिह्न' सिद्ध होगी। अमेरिका के ख्याति प्राप्त मनोवैज्ञानिक गार्डनर मर्फी कुछ समय से परामानसिकी में एक विश्वव्यापी सहयोगपूर्ण अनुसंधान शुरू करने की कोशिश कर रहे हैं। राइन, टिरेल, सोल, ब्रॉड और वाल्थर के हाल के प्रकाशनों ने आजकल के सबसे महत्त्वपूर्ण विज्ञानों में परामानसिकी को सम्मानपूर्ण स्थान दिलाने में बहुत बड़ा योगदान किया है।

भारत में इस दिशा में कोई उल्लेखनीय कार्य किसी वैज्ञानिक ने नहीं किया है, हालाँकि अमृतबाजार पत्रिका प्रारंभ से ही परामानसिकीय बातों का प्रचार करके इसमें काफी रुचि जाग्रत करती रही है। इस पत्रिका के संस्थापक स्वर्गीय मोती लाल घोष और उनके उत्तराधिकारी परामानसिकीय अनुसंधान में सदैव रुचि लेते रहे हैं। कलकत्ता में तीसवीं इंडियन सायंस काँग्रेस के 'मनोविज्ञान और शिक्षाविज्ञान' भाग के अध्यक्ष-पद से लेखक ने जो भाषण दिया था, वह तथा कुछ पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखक के अन्य लेख और रेडियो वार्ताएँ भी इस विषय में थोड़ी रुचि पैदा करने में सफल रहे हैं। अनेक विश्वविद्यालय और हाल में स्थापित संस्थान इस क्षेत्र में अनुसंधान करवाने की बात सोच रहे हैं। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने एम० ए० (मनोविज्ञान) परीक्षा में परामानसिकी को भी एक विषय बनाया है तथा बी० ए० और एम० ए० उत्तीर्ण अनेक विद्यार्थियों को परामानसिकी के विषयों पर शोध-प्रबंध लिखने के लिए प्रोत्साहित किया है। आशा है कि निकट भविष्य में इस महत्त्वपूर्ण विज्ञान की ओर भारत-सरकार का ध्यान जाएगा और शायद जल्दी ही एक राष्ट्रीय परामानसिकी प्रयोगशाला भारत में खुले।